14 साल का कैदी

एक संस्मरण

सच्ची कहानी

थाईलैंड में कैद

लियो मारुइन

14 साल का कैदी
सभी देशों के लिए सभी अधिकार सुरक्षित हैं।
इस कृति का कोई भी भाग लेखक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना उपयोग, संग्रहण, पुनरुत्पादन या प्रसारण नहीं किया जा सकता है, सिवाय समीक्षाओं में प्रयुक्त संक्षिप्त उद्धरणों के, जैसा कि कानून द्वारा अनुमत है।

कानूनी जमा तिथि : जून 2025

लेखक का नोट
यह पुस्तक एक आत्मकथात्मक वृत्तांत है। यह मेरी यादों पर आधारित है— मैंने हर दिन, हर कठिन परिस्थिति में जो कुछ जिया और महसूस किया। यह पतन, प्रभाव, रेगिस्तान में भटकने... और प्रकाश की ओर धीरे-धीरे वापसी की कहानी बयां करती है।
निजता के स्पष्ट कारणों से, कुछ नाम, स्थान या तिथियों को जानबूझकर बदल दिया गया है। अन्य विवरणों को छोड़ दिया गया है—या तो इसलिए कि वे बहुत निजी थे, या इसलिए कि वे कथा को बोझिल बना देते। इससे मूल सत्य में कोई परिवर्तन नहीं होता।
यह गवाही किसी भी कीमत पर लोगों को चौंकाने या उनकी भावनाओं को भड़काने के लिए नहीं है। यह कोई शिकायत नहीं है, न ही किसी से हिसाब चुकता करना है। यह बस एक आम आदमी की आँखों से घटी घटना का कच्चा वर्णन है, जिसे एक विदेशी देश में, अपने घर से दूर, एक अकल्पनीय परिस्थिति का सामना करना पड़ा।
मैं वही बताना चाहती थी जो सच में हुआ था। बिना किसी लाग-लपेट के। अपने शब्दों में। अपनी कमियों के साथ। क्योंकि कभी-कभी, खुलकर बोलना भी एक तरह से घावों को भरने का काम करता है।
उन लोगों के लिए जो अन्याय, प्रतीक्षा, कारावास या निर्वासन से गुजर रहे हैं। उन लोगों के लिए जिन्होंने कभी यह जाने बिना प्रार्थना की थी कि कोई सुनेगा या नहीं। यह पुस्तक आपके लिए है।
उन सभी को धन्यवाद जिन्होंने अंधेरे में मेरा साथ दिया। और पाठक, इस कहानी को सुनने के लिए समय निकालने के लिए आपका भी धन्यवाद।
नोट: इस पुस्तक में और भी गहराई से डूबने के लिए, आपको अंत में पहले कभी प्रकाशित न हुई तस्वीरों की एक गैलरी मिलेगी। व्यक्तिगत तस्वीरें, स्थान, चेहरे, ठहरे हुए पल—इन पन्नों में बताई गई कहानी की दृश्य प्रतिध्वनियाँ। यात्रा पूरी होने के बाद मैं आपको इन्हें देखने के लिए आमंत्रित करता हूँ। नोट: इस पुस्तक में और भी गहराई से डूबने के लिए, पहले कभी न देखी गई तस्वीरों की एक गैलरी आपका इंतजार कर रही है।

व्यक्तिगत तस्वीरें, स्थान, चेहरे, ठहरे हुए पल - ये सभी उस कहानी की प्रतिध्वनि हैं जिसे आपने अभी पढ़ा है।
अंतिम पृष्ठ पर पहुँचने के बाद, मैं आपको इन्हें देखने के लिए आमंत्रित करता हूँ।

विषयसूची

प्रस्तावना – निर्णय

भाग I – खोया हुआ स्वर्ग

अध्याय 1 – पहला कदम
अध्याय 2 – पूरब की पुकार
अध्याय 3 – डूबती रेत

भाग II – नरक में उतरना
अध्याय 4 – खेल समाप्त
अध्याय 5 – दीवार
अध्याय 6 – भवन D5
अध्याय 7 – मेरे भीतर जो मरता है
अध्याय 8 – नया पिंजरा
अध्याय 9 – शब्दों का भार
अध्याय 10 – और गहराई में गिरना
अध्याय 11 – अज्ञात में छलांग
अध्याय 12 – बैंकॉक हिल्टन
अध्याय 13 – अंतिम दिन, पहला कदम

भाग III – मोचन
अध्याय 14 – धुंधला वापसी
अध्याय 15 – पुनः सीखना

प्रस्तावना: फैसला

अदालत कक्ष बहुत छोटा है। घुटन भरा। हवा पसीने, धूल और नमी से भरी है, जिससे हर सांस लेना भारी और मुश्किल हो जाता है। समय और थाईलैंड की उमस भरी गर्मी से पीली पड़ चुकी दीवारों पर शाही चित्र लगे हैं, जो जमे हुए, उदासीन आँखों से हमें घूर रहे हैं। कमरे में एक विद्युतीय तनाव छाया हुआ है—एक खामोश प्रतीक्षा जो इस छोटे से स्थान में ठसाठस भरे लोगों पर बोझ डाल रही है, जो इतने सारे टूटे हुए जीवन के लिए बहुत छोटा है।

मैं सबसे आगे वाली पंक्ति में बैठा हूँ, अपने जेल की वर्दी पर पसीने की बूंदें महसूस कर रहा हूँ। भूरी पैंट, धूल और पसीने से भीगी बेज रंग की टी- शर्ट—अपमान की वर्दी, आने वाले पतन की झलक। मेरा सिर अभी-अभी मुंडा हुआ है, फिर भी पसीने की बूंदें मेरी गर्दन के पीछे से बह रही हैं। मेरा चेहरा

तरह से बहते हैं, अक्षरों का एक समझ से परे जाप जिसे मैं मुश्किल से पहचान पाता हूँ। लेकिन मैं उनका भार महसूस करता हूँ। वे केवल ध्वनियाँ नहीं हैं।
वे मेरे भविष्य पर प्रहार हैं।
मेरे बगल में टोनी तनाव में आ जाता है, उसकी उंगलियां लकड़ी की बेंच को इतनी कसकर पकड़ लेती हैं कि उसकी उंगलियों के जोड़ सफेद पड़ जाते हैं। मार्को अपनी आंखें बंद कर लेता है। वह जानता है। वह पहले से ही जानता है।
मैंने अपने अनुवादक की ओर देखा। वह क्यों नहीं बोल रहा? यह चुप्पी क्यों है? मैंने उसकी ओर देखने की कोशिश की, लेकिन उसने मेरी ओर नहीं देखा—वह चुप था, ध्यान केंद्रित किए हुए। वह सुन रहा था। वह समझ रहा था। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा।
तभी एक चीख हवा में गूंज उठी। टोनी की पत्नी। उसके घुटने लड़खड़ा गए और एक धीमी सी आवाज के साथ वह गिर पड़ी। यह आवाज अदालत कक्ष में हथौड़े की चोट की तरह गूंजी—क्रूर, निर्णायक, अपरिवर्तनीय।
वह समझ गई। थाई उसकी मातृभाषा है। उसने न्यायाधीश के शब्दों को पहले ही वाक्य से समझ लिया। अनुवाद की कोई आवश्यकता नहीं। प्रतीक्षा करने की कोई आवश्यकता नहीं। वह जानती है। वह जानती है कि हमें अभी-अभी दोषी ठहराया गया है।
हम अब भी स्तब्ध हैं। उम्मीद से चिपके हुए हैं। लेकिन उसकी चीख उस सच्चाई की पुष्टि करती है जिसका हम सभी को डर था। उसका गिर जाना अनुवादक की चुप्पी का पहला स्पष्ट जवाब है।
फुसफुसाहट बढ़ती जा रही है, तेज होती जा रही है, मानो फटने ही वाली है।
सच्चाई धीरे-धीरे, दर्दनाक तरीके से सामने आ रही है।
फैसला आ चुका है।
मुझे अनुवाद की आवश्यकता नहीं है। मैंने इसे सुना है।
चौदह वर्ष।
यह शब्द मुझे भेदता है। एक नीरस लहर मेरे शरीर से टकराती है, हर विचार को निचोड़ लेती है।
चौदह वर्ष। यह एक अवधि नहीं है—यह एक अथाह खाई है। एक जीवनकाल। एक अनंत काल।
जूलिया को अब समझ आ गया है। चीखने से पहले उसके गले से एक कराह निकलती है, उसके हाथ मेरे दोस्तों की बाहों को जकड़ लेते हैं क्योंकि वे उसे रोकने की

कोशिश करते हैं। वह उनसे लड़ती है, इसे स्वीकार करने से इनकार करती है।
उसकी पीड़ा एक तलवार की तरह है, जो मुझमें और गहरी चुभन पैदा कर रही है।
मेरे बगल में, टोनी टूट जाता है। उसका शरीर आगे की ओर लुढ़क जाता है और सामने वाली बेंच से एक भयानक धमक के साथ टकराता है। मार्को उसे ठीक समय पर पकड़ लेता है - पीला पड़ा हुआ और कांप रहा है।
मैं वहाँ हूँ—पर नहीं। मेरा मन व्याकुल है, जो अभी-अभी घटी घटना की निरर्थकता को स्वीकार करने से इनकार कर रहा है। मैं जूलिया को ढूंढता हूँ, लेकिन वह पहले ही जा चुकी है, हमारे दोस्तों द्वारा इस बुरे सपने से दूर ले जाई जा चुकी है।
चौदह वर्ष।
मुझे टूट जाना चाहिए था। क्रोधित होना चाहिए था। भयभीत होना चाहिए था। लेकिन इसके बजाय, मेरे होठों पर एक मुस्कान आ जाती है। मुश्किल से दिखाई देने वाली—पर वास्तविक। एक खोखली, अर्थहीन मुस्कान। अकल्पनीय परिस्थिति में जीवित रहने की एक सहज प्रतिक्रिया। मैं टोनी और मार्को की ओर मुड़ता हूँ, उन्हें थोड़ी सी ताकत, साहस का एक भ्रम देने की कोशिश करता हूँ।
— “हम ठीक रहेंगे,” मैंने फुसफुसाते हुए कहा।
एक झूठ।
जज बिना हिले-डुले आगे बढ़ते रहे।
और शब्द। और हस्ताक्षर।
और मैं पहले ही जा चुका हूँ।
चौदह वर्ष।
यह अब कोई सजा नहीं है। यह एक लक्ष्मण रेखा है। एक नए जीवन की शुरुआत—एक ऐसा जीवन जहाँ हर दिन एक संघर्ष होगा। एक ऐसे नरक में अस्तित्व के लिए संघर्ष जिसकी मैं अभी कल्पना भी नहीं कर सकता।
मैं सांस लेता हूँ। हवा पहले से कहीं अधिक भारी है।
और लंबी यात्रा शुरू होती है।

भाग I: खोया हुआ स्वर्ग

अध्याय 1: पहले कदम

2007 की गर्मियों में पेरिस चिपचिपी गर्मी में तप रहा था, डामर भट्टी जैसा गर्म हो गया था और हवा लगभग सांस लेने लायक नहीं थी। यह बदलाव का दौर था, बेफिक्र किशोरावस्था और अनिश्चित भविष्य के बीच का मोड़। मैं अठारह साल की थी, नाथन उन्नीस साल का था, और हमने अभी-अभी अपना बैकलॉरिएट पास किया था। एक डिप्लोमा जिससे नए दरवाजे खुलने चाहिए थे, एक उज्ज्वल भविष्य का वादा होना चाहिए था, लेकिन इसके बजाय इसने हमें एक खालीपन का एहसास ही दिया। अब क्या? इस नई मिली आज़ादी का हम क्या करें?
हमारे परिवार, सादगी भरे लेकिन प्यार करने वाले, हमेशा यह सुनिश्चित करते थे कि हमें हर ज़रूरत की चीज़ मिले—भले ही कभी-कभी महीना जल्दी खत्म हो जाता था। हम 12 वें ज़िले में एक छोटे से आवासीय परिसर में, उन नीरस, चौकोर इमारतों में पले-बढ़े थे, जो अपने आप में एक अलग ही दुनिया थीं। उस मोहल्ले में, निजी जगह एक दुर्लभ विलासिता थी। दीवारें इतनी पतली थीं कि ऊपर वाले पड़ोसियों की बहस और सामने वाले अपार्टमेंट से बर्तनों की खनक सुनाई देती थी। लेकिन उस घनिष्ठता ने अटूट बंधन बना दिए थे।
नाथन और मैंने बचपन से ही सब कुछ साझा किया: आंगन में खेले जाने वाले कैज़ुअल फ़ुटबॉल खेल, देर रात तक चलने वाले वीडियो गेम मैराथन, इमारत के पीछे छिपकर सिगरेट के कश लगाना—और सबसे बढ़कर, दुनिया को और अधिक देखने की एक जैसी तीव्र इच्छा। हम दोनों में "कहीं और" जाने की भूख थी, अपनी दैनिक दिनचर्या की सीमाओं से परे भागने की लालसा थी।
हाई स्कूल हमारे लिए बस एक प्रतीक्षा कक्ष जैसा था—वास्तविक स्वतंत्रता प्राप्त करने से पहले का एक बेचैन ठहराव। हम बिल्कुल आलसी तो नहीं थे, लेकिन मेधावी छात्र भी नहीं थे। हम बस ठीक-ठाक अंक पाने के लिए न्यूनतम प्रयास करते थे और अपनी सारी ऊर्जा अपने शौक में लगाते थे। मेरे लिए, वह था मुक्केबाजी। उस खेल ने मुझे अनुशासन सिखाया, चोट सहना और पलटवार करना सिखाया। नाथन को संगीत से बेहद लगाव था। वह घंटों गिटार बजाता रहता था, गीत

लिखता रहता था जिन्हें वह कभी दूसरों के सामने गाने की हिम्मत नहीं करता था।
लगभग हर रात हम अपनी इमारतों की छतों पर बैठकर, नारंगी आसमान के नीचे धीरे- धीरे सो रहे पेरिस को देखते हुए बिताते थे। यही हमारी दिनचर्या थी। कंक्रीट की चौखट पर बैठकर, टांगें हवा में लटकाकर, हम दुनिया को नए सिरे से गढ़ते थे। हम यात्रा, बड़े सपनों और आज़ादी के बारे में बातें करते थे। "क्या तुम्हें लगता है कि हमारा भी हाल उन्हीं जैसा होगा?" नाथन ने एक बार हमारे आसपास के अपार्टमेंटों की रोशन खिड़कियों की ओर इशारा करते हुए पूछा था।
मैं समझ गया कि उसका क्या मतलब था। जीवन एक ही ढर्रे पर चलता रहता है: सुबह जल्दी उठने की अलार्म, हर सुबह वही रोज़ का सफ़र, वही थके हुए चेहरे। मैंने बिना किसी झिझक के जवाब दिया, "बिल्कुल नहीं। हम यहाँ से निकल जाएंगे। एक दिन।"
वह दिन हमारी उम्मीद से जल्दी आ गया।
यह सब अचानक से शुरू हुआ, बातचीत के दौरान मन में आया एक विचार। एक यात्रा।
एक असली रोमांच, पारिवारिक छुट्टियों और नीरस होटल के कमरों से बहुत दूर। एक संपूर्ण अनुभव। हमारे पास ज़्यादा पैसे नहीं थे, लेकिन हम इसे साकार करने के लिए एक-एक पैसा बचाने को तैयार थे।
अगस्त की एक दोपहर, हम एवेन्यू डाउमेस्निल पर एक ट्रैवल एजेंसी में गए। उस जगह से नए प्लास्टिक और चमकदार ब्रोशर पेपर की महक आ रही थी। दीवारें स्वर्ग का प्रचार करने वाले पोस्टरों से भरी हुई थीं: बाली, ब्राजील, डोमिनिकन गणराज्य...
लेकिन एक नाम ने हमारा ध्यान खींचा: थाईलैंड।
नीले रंग का समुद्र सफेद रेतीले तटों से टकराता है, सुनहरे मंदिर जंगल से निकलते हैं। एक ऐसा देश जो अभी भी कई लोगों की नजरों से ओझल है, जहां सब कुछ संभव लगता है।
ट्रैवल एजेंट—लगभग चालीस साल का एक आदमी जिसने थोड़ी तंग हवाईयन शर्ट पहन रखी थी—ने हमें विकल्पों के बारे में विस्तार से बताया।
“पटाया,” उसने मुस्कुराते हुए कहा। “तुम्हारे जैसे नौजवानों के लिए एकदम सही जगह है। नाइटलाइफ़, खूबसूरत समुद्र तट, रहने का खर्च बेहद कम। तुम्हें बहुत पसंद आएगा।”

हमने एक दूसरे की ओर देखा। यह बिल्कुल वही था जिसकी हमें तलाश थी।
बजट का जल्दी से जायजा लेने के बाद, हमने अपनी टिकटें बुक कर लीं। थाईलैंड में दस दिन। दुनिया को एक अलग नजरिए से देखने के लिए दस दिन।
अगले कुछ सप्ताह तैयारियों में ही बीत गए। बॉक्सिंग अभ्यास, दोस्तों के साथ विदाई समारोह और यात्रा मंचों पर बिताए गए घंटों के बीच, हमारा मन पहले से ही हजारों मील दूर की कल्पनाओं में खो गया था।
मुझे विशेष रूप से एक फोरम याद है जहाँ हमने प्रवासियों और साहसी लोगों के साथ बातचीत की थी। कुछ ने अपने अनुभव साझा किए, तो कुछ ने हमें देश के छिपे हुए खतरों के बारे में चेतावनी दी।
“धोखाधड़ी से सावधान रहें,” “बिगक्रिस 75” नाम के किसी व्यक्ति ने लिखा। “भोले-भाले पर्यटक जल्दी ही ठगे जाते हैं।”
मैंने जवाब दिया, "जब तक हम मुसीबत से बचे रहेंगे, तब तक सब ठीक रहेगा।" जिस पर किसी और ने यह जोड़ा:
"बात यह है कि थाईलैंड में मुसीबत अक्सर आपको ढूंढ लेती है, भले ही आप उसे ढूंढ न रहे हों..."
हमने उन चेतावनियों को गंभीरता से नहीं लिया। हम नासमझ बच्चे नहीं थे। हम तैयार थे।
उस खास दिन, हम चार्ल्स डी गॉल हवाई अड्डे पर पहुँचे, हमारे बैग रोमांच की उम्मीदों और सपनों से भरे हुए थे। हमारी उत्तेजना ने थकान को दूर रखा। बैंकॉक की उड़ान अंतहीन सी लग रही थी, भले ही एड्रेनालाईन के कारण हम जागते रहे। नाथन, जिसने कभी यूरोप नहीं छोड़ा था, अपनी आँखें उड़ान मानचित्र पर गड़ाए हुए था, मानो स्क्रीन पर धीरे-धीरे आगे बढ़ते छोटे हवाई जहाज को देखने से समय जल्दी बीत जाएगा।
“यार, हम भारत के ऊपर से उड़ रहे हैं!” उसने एक मौके पर अचानक कहा।
“हाँ… और तीन घंटे में हम अभी भी भारत के ऊपर से ही उड़ान भर रहे होंगे। वह देश बहुत बड़ा है, यार।”
जब विमान आखिरकार बैंकॉक में उतरने लगा, तो सबसे पहले जिस चीज़ ने हमें चौंकाया, वह थी शहर की रोशनी का विशाल नज़ारा। यह अंतहीन प्रतीत हो रहा था — निकट क्षितिज तक फैला हुआ नियॉन रोशनी का एक सागर।

लेकिन ज़मीन पर हमारा स्वागत उतना सुखद नहीं था। विमान से उतरते ही, गर्मी की एक लहर हम पर टूट पड़ी। यह फ्रांस की गर्मियों जैसी गर्मी नहीं थी—यह उमस भरी, घुटन वाली गर्मी थी जिसने कपड़ों को तुरंत त्वचा से चिपका दिया। "मेरा दम घुट रहा है यार। यहाँ तो बिलकुल सौना जैसा माहौल है," नाथन ने कराहते हुए अपनी कमीज़ को सीने से उतार दिया।
"एशिया में आपका स्वागत है!" मैं हँस पड़ा, उस अनुभूति से उतना ही अचंभित था।
सुवर्णभूमि हवाई अड्डे पर अव्यवस्था का माहौल था—यात्रियों की भीड़, थाई भाषा में लिखे संकेत और पीए सिस्टम पर अस्पष्ट घोषणाएँ गूंज रही थीं। हमने अपने बैग उठाए और बिना रुके बाहर निकलने की ओर चल दिए।
बाहर निकलते ही टैक्सी चालकों की भीड़ ने हमें तुरंत घेर लिया।
“तुम कहाँ जा रहे हो, मेरे दोस्त? टैक्सी! बहुत सस्ती! पटाया, 1500 बात! तुम्हारे लिए विशेष कीमत!”
नाथन ने भौंहें चढ़ा लीं। "क्या उन्हें लगता है कि हम बेवकूफ हैं?"
मैंने अपना फोन निकाला, जल्दी से एक फोरम चेक किया, और मुझे एहसास हुआ कि हां—1,500 बात सरासर घोटाला था।
मैंने नाथन से कहा, "अधिकतम 800," और फिर ड्राइवर की ओर मुड़ गया।
एक नाटकीय सौदेबाजी के दौर के बाद—हर बार "नहीं नहीं नहीं, बहुत महंगा है" कहने पर कीमत जादुई रूप से कम हो जाती थी—आखिरकार हम 850 बात में एक खटारा टोयोटा में सवार हो गए।
पटाया जाने का रास्ता अपने आप में एक रोमांचक सफर था। थाई राजमार्ग फॉर्मूला 1 और तैरते हुए बाज़ार के विचित्र मिश्रण जैसे थे: फलों, फर्नीचर, यहाँ तक कि जीवित जानवरों से लदी हुई ओवरलोडेड पिकअप गाड़ियाँ, ट्रैफिक के बीच से ऐसे निकल रही थीं मानो कोई वीडियो गेम चल रहा हो।
"क्या इन लोगों के पास ड्राइविंग लाइसेंस भी है?" नाथन ने पूछा जब हमारा ड्राइवर अपने फोन पर फेसबुक स्क्रॉल करते हुए दाईं ओर से एक ट्रक को ओवरटेक कर रहा था।
मैं चुपचाप बैठा रहा और बस धुंधले होते परिदृश्य को देखता रहा—आधुनिक ऊंची इमारतों के बीच बसे सुनहरे मंदिर, सड़क किनारे खड़ी कारों को भुनी हुई सीखें बेचते स्ट्रीट वेंडर… एक बिल्कुल अलग दुनिया।

दो घंटे और कुछ जानलेवा हादसों के बाद, हम आखिरकार पटाया पहुँच गए। वहाँ का माहौल तुरंत बदल गया। सड़कें नियॉन लाइटों, तेज़ संगीत और कारों के बीच से मिसाइलों की तरह दौड़ते स्कूटरों से भर गईं।
हमने अपना सामान ब्लू रूम में रखा, जो फिलिप द्वारा संचालित एक हॉस्टल-बार था। फिलिप एक फ्रांसीसी प्रवासी था जो कई वर्षों से थाईलैंड में रह रहा था। वह लगभग पचास साल का लंबा-चौड़ा आदमी था, जिसकी बाहों पर धूप से फीके पड़ चुके टैटू थे और दशकों से सिगरेट और थाई रम के सेवन के कारण उसकी आवाज थोड़ी कर्कश हो गई थी।
“तो लड़कों, क्या आप पहली बार थाईलैंड आए हैं?” उसने हमें दो ठंडी बियर देते हुए पूछा।
“हां, और हम इसका भरपूर फायदा उठाने की योजना बना रहे हैं,” नाथन मुस्कुराया।
फिलिप मुस्कुराया।
“ओह, आप इसका भरपूर आनंद उठाएंगे, यह तो पक्का है। बस सावधान रहना… पटाया एक जाल है। बहुत से लोग कुछ दिनों के लिए आते हैं और सालों तक यहीं बस जाते हैं।”
मुझे लगा कि वह मज़ाक कर रहा है—जब तक मैंने आसपास नहीं देखा और उसकी बातों में सच्चाई नहीं देखी। पास की एक मेज पर, फूलों वाली शर्ट और चप्पल पहने कुछ फ्रांसीसी लड़के ऐसे बातें कर रहे थे जैसे वे यहाँ सदियों से रह रहे हों।
मैंने दृढ़ता से कहा, "हम यहाँ सिर्फ दस दिनों के लिए हैं।"
“हां… हम सब यही कहते हैं,” फिलिप ने कंधे उचकाते हुए जवाब दिया और फिर हमें हमारे कमरे की ओर इशारा किया।
पटाया में हमारे शुरुआती दिन भावनाओं और खोजों से भरे हुए थे।
सुबह के समय हम समुद्र तटों की सैर करते थे। पानी का रंग लगभग अवास्तविक सा नीला था, लेकिन गर्मी इतनी असहनीय थी कि हम धूप का आनंद लेने के बजाय छाया ढूंढने में अधिक समय बिताते थे।
हमने स्थानीय व्यंजनों का भी भरपूर आनंद लिया—और यह हमारे लिए एक बिल्कुल नया अनुभव था।
"यार, मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं आग निगल रहा हूँ!" एक साधारण पैड थाई खाने के बाद नाथन हांफते हुए बोला।

मैंने बिना सोचे समझे ग्रीन करी का ऑर्डर दे दिया था, और इसका खामियाजा मुझे भुगतना पड़ रहा था। माथे पर पसीना आ रहा था, पेट में जलन हो रही थी, लेकिन सच में... वो बहुत स्वादिष्ट थी।
लेकिन जिस चीज ने हम पर सबसे ज्यादा छाप छोड़ी, वह थी यहाँ की नाइटलाइफ। रात होते ही पटाया का नजारा बदल गया। वॉकिंग स्ट्रीट हजारों नियॉन साइनबोर्ड से जगमगा उठी, बार फुटपाथों पर फैल गए और टेक्नो संगीत की गूंज एक शोरगुल में तब्दील हो गई।
"मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं जीटीए में हूँ," मैंने अराजकता को देखते हुए फुसफुसाया।
हम फिलिप द्वारा सुझाए गए एक बार में गए और तुरंत ही अन्य यात्रियों से मिले। वहाँ क्रिस था, एक ब्रिटिश व्यक्ति जिसने दावा किया कि उसने रियल एस्टेट में खूब पैसा कमाया है, लेकिन देखने में ऐसा लगता था जैसे उसने बीयर में पैसा कमाया हो; मार्को, एक मजबूत इतालवी बैकपैकर जो पाँच साल से अपने बैग में ही गुज़ारा कर रहा था; और पैट, एक बूढ़ा फ्रांसीसी जिसने कसम खाकर कहा कि वह खुफिया विभाग में काम करता था (हालाँकि, फिलिप के अनुसार, वह शायद सेवानिवृत्ति तक अपने सोफे से उठा ही नहीं था)।
बातचीत सुचारू रूप से चलती रही, बीयर लगातार आती रही, और हम खुद को पार्टी के माहौल में पूरी तरह से डूब जाने दिया।
लेकिन पटाया का एक काला पक्ष भी था।
एक रात, जब हम हॉस्टल लौटते समय एक अंधेरी गली से गुजर रहे थे, तभी एक स्कूटर पर सवार एक आदमी हमारे बगल में आकर रुक गया।
"अरे मेरे दोस्त, क्या तुम्हें कुछ खास चाहिए?"
उसकी जैकेट के अंदर नकली घड़ियां, सिगरेट... और सफेद पाउडर की छोटी-छोटी थैलियां थीं।
पहले तो नाथन को यह दृश्य मनोरंजक लगा—लेकिन जल्द ही उसे इसका मतलब समझ आ गया। हमने विनम्रतापूर्वक मना कर दिया और अपनी गति बढ़ा दी।
पटाया, अपने उत्सवपूर्ण और स्वर्ग जैसे आकर्षण के बावजूद, उन लोगों के लिए एक बहुत ही भयावह वास्तविकता को छिपाए हुए था जो वहां बहुत देर तक रुके रहते थे।
फिर भी, वो दस दिन पलक झपकते ही बीत गए। हमने दो सप्ताह से भी कम समय में जीवन भर के रोमांच को समेट लिया था।

फ्रांस लौटने पर बदलाव का असर बहुत गहरा लगा। धुंधला आसमान, मेट्रो में लोगों के भावहीन चेहरे, रोजमर्रा की जिंदगी की नीरस दिनचर्या—थाईलैंड की चहल-पहल के बाद सब कुछ नीरस लगने लगा।
भीड़भाड़ वाली मेट्रो में, मैंने नाथन की ओर देखा, जो मेरी ही तरह उदास दिख रहा था।
मैंने पूछा, "क्या आपको लगता है कि हम इस तरह की यात्रा के लिए तैयार थे?" उन्होंने जवाब देने से पहले कुछ पल का समय लिया।
“शायद नहीं। लेकिन क्या हम कभी तैयार हो पाते? ऐसी यात्राएँ आपको बदल देती हैं। शायद हम तैयार नहीं थे, लेकिन यही वजह थी कि हमें यह करना पड़ा।” मैंने सिर हिलाया। वह सही कह रहा था।
वह यात्रा तो बस शुरुआत थी।
“तो... अब हम क्या करें?” मैंने पूछा, अपने पुराने जीवन में वापस जाने के विचार से मेरा दिल बैठ गया।
नाथन ने दृढ़ निश्चय के साथ मेरी ओर देखा।
“हम काम करते हैं, पैसे बचाते हैं और जैसे ही मौका मिलता है, फिर से निकल पड़ते हैं। यह तो बस शुरुआत है, लियो। दुनिया इतनी बड़ी है कि यहाँ रुकना ठीक नहीं है।”
बात तय हो गई थी। हमने एक ऐसे अनमोल अनुभव का स्वाद चखा था जिसे हम खोना नहीं चाहते थे। वह पहली यात्रा तो उस कहानी का पहला अध्याय मात्र थी जिसे हम आगे भी लिखते रहने के लिए दृढ़ संकल्पित थे—चाहे कितनी भी बाधाएं क्यों न हों।

अध्याय 2: पूरब की पुकार
यह लगभग 2007 की बात है। एक ऐसा दौर जब दुनिया में बेफिक्री और आज़ादी का बोलबाला था, और दुनिया अभी भी तेज़ रफ़्तार इंटरनेट और पहले स्मार्टफ़ोन के दौर से गुज़र रही थी। फेसबुक अभी-अभी हमारी आदत बनना शुरू हुआ था, आईफोन ने अभी-अभी बाज़ार में कदम रखा था, और ऐसा लग रहा था मानो दुनिया हमारी आँखों के सामने सिमटती जा रही हो। हमारे लिए, यह पूर्ण स्वतंत्रता का स्वर्णिम युग था—कम लागत वाले हवाई टिकट और दूर-दराज के देशों के सपने बस एक क्लिक की दूरी पर थे।
थाईलैंड की हमारी पहली यात्रा के बाद के वर्ष परिवर्तन के एक लंबे दौर की तरह थे—एशिया भर में अंतहीन आना-जाना, हर पड़ाव मुझे उस नियति के और करीब ले जाता था जिसका आभास मुझे दुनिया के दूसरे छोर पर था। थाईलैंड, लाओस, कंबोडिया, वियतनाम… ये सभी मनमोहक स्थान हमारे लिए पलायन के ठिकाने बन गए, और हर यात्रा ने मानो मेरे भीतर के एक ऐसे पहलू को उजागर किया जिससे मैं अभी तक परिचित नहीं थी। वहाँ, दिनचर्या गायब हो गई, और उसकी जगह स्वतंत्रता की एक अतृप्त भूख ने ले ली।
पटाया के बाद, नाथन और मैंने अनगिनत एशियाई यात्राओं में खुद को झोंक दिया। हमारा बचपन का दोस्त एलेक्जेंडर भी आखिरकार हमारे साथ जुड़ गया। हमारी तरह, उसे भी यह इलाका बेहद पसंद आ गया। हमने जंगलों, नदियों और पहाड़ों को पार किया, खोज की प्यास से प्रेरित होकर, जहाँ हर मील एक आदर्श जीवन के एक कदम और करीब लगता था—फ्रांस से बहुत दूर। हम खुद को आधुनिक युग के खोजकर्ता मानते थे, जो कुल्हाड़ी और कंपास से नहीं, बल्कि बैकपैक और अटूट जिज्ञासा से लैस थे।
फ्रांस में नाथन और एलेक्जेंड्रे अपने करियर में आगे बढ़ रहे थे—नाथन एक आदर्श कर्मचारी के रूप में, एलेक्जेंड्रे एक होनहार इंजीनियर के रूप में — लेकिन मैं पेशेवर तौर पर अभी भी असमंजस में था। मैंने एक दिन बिना किसी खास पछतावे के और बिना किसी योजना के विश्वविद्यालय छोड़ दिया। मैं एक नौकरी से दूसरी नौकरी भटकता रहा, कभी भी अपनी जगह नहीं बना पाया। इसी तरह मैं एक बड़े फ्रांसीसी बैंक में बैंकिंग सलाहकार बन गया। मैं बुरी तरह ऊब गया था। क्रेडिट कार्ड बेचना, ओवरड्राफ्ट के बारे में समझाना, ग्राहकों की समस्याओं को संभालना—इन सबने मुझे ऐसा महसूस कराया जैसे मैं हर दिन थोड़ा-थोड़ा करके मुरझाता जा रहा हूँ। मैं खुली सड़कों, समुद्र तटों के

सपने देखता था, ऐसे जागने के सपने देखता था जिनके बारे में मुझे पता न हो कि दिन क्या लेकर आएगा। मुझे ताज़ी हवा चाहिए थी। उस घुटन भरी स्थिति से दूर, जीवन की गहरी साँसें, जिसमें मैं फंसा हुआ था।
2008 आया और चला गया। फिर 2009 आया। कुछ खास नहीं बदला—सिवाय इस एहसास के कि मैं दो जिंदगियों के बीच फंसी हुई हूँ, एक तरफ फ्रांस में व्यवस्थित, अपेक्षित जिंदगी, और दूसरी तरफ एशिया की धरती पर कदम रखते ही मुझे महसूस होने वाली बेफिक्री भरी, अनिश्चित, लेकिन जीवंत जिंदगी। मुझे पता था कि मैं अब और ज्यादा समय तक दिखावा नहीं कर सकती।
पूरब की पुकार तेज़ होती जा रही थी। और मैं लगभग अनजाने में ही उसकी ओर बढ़ रहा था।
सबसे पहले तो मेरे पिता ने ही मुझे इस अंधकार से बाहर निकाला। उनका आयात-निर्यात का व्यवसाय था, जिससे मुझे उम्मीद जगी कि मैं दुनिया में कहीं से भी दूर रहकर काम कर सकती हूँ। जब उन्होंने मुझे अपनी कंपनी में नौकरी की पेशकश की, तो मैंने इसे अपना सुनहरा मौका समझा—फ्रांस की जिंदगी से मुक्ति पाने का रास्ता। और देखते ही देखते, मेरे मन में एक शब्द चमकने लगा: थाईलैंड।
मेरे पिता के साथ मेरा रिश्ता हमेशा से जटिल रहा था। गुस्सैल, चिंतित और भावनात्मक रूप से दूर रहने वाले - उनमें स्नेह की कमी थी। मेरी माँ, जो दृढ़ता से मानती थीं कि एक बच्चे को हमेशा अपने पिता की ज़रूरत होती है, ने मुझे उनसे संबंध न तोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया, भले ही तलाक का दर्द सहना पड़ा और घरेलू हिंसा के आरोप लगे। मुझे उन्हें माफ़ करने में कई साल लग गए, लेकिन जब उन्होंने मेरे थाई प्रोजेक्ट के लिए आर्थिक सहायता देने की पेशकश की, तो मुझे हमारे बीच फिर से संबंध जोड़ने का एक मौका नज़र आया। उन्होंने पटाया में मेरे लिए एक छोटी सी दुकान खरीदी - स्मृति चिन्ह और रत्नों की दुकान। उन्हें रत्नों से बेहद लगाव था और वे मेरे माध्यम से उनके साथ काम करने का सपना देखते थे। दूसरी ओर, मुझे उस देश में आखिरकार उड़ान भरने का मौका मिला जिससे मुझे बेइंतहा प्यार हो गया था।
लेकिन इससे पहले कि मैं वहां पूरी तरह से बस पाता, एक बड़ी घटना ने लगभग सब कुछ बिगाड़ दिया।
हम एक आखिरी "परिवर्तनकालीन" यात्रा के लिए थाईलैंड लौट आए थे। नाथन और एलेक्जेंड्रे ने फ्रांस में कामकाजी जीवन में पूरी तरह से डूबने से पहले

आखिरी छुट्टी ली थी। दोनों थाई महिलाओं के साथ डेटिंग कर रहे थे और उन्हें फ्रांस वापस लाने पर गंभीरता से विचार कर रहे थे। मैं उस समय अपनी प्रेमिका के साथ यात्रा का आनंद ले रहा था। एक चिलचिलाती सुबह, हम पटाया के बिग सी में एक खराब डीवीडी प्लेयर बदलने के लिए स्कूटर पर सवार हुए। ट्रैफिक बेकाबू था: कारें, बाइक और स्कूटर एशिया में "ट्रैफिक नियमों" के नाम पर अव्यवस्थित नृत्य करते हुए टेढ़े-मेढ़े चल रहे थे।
“कसकर पकड़ो!” मैंने इंजनों की गर्जना के बीच चिल्लाकर कहा।
एक बार मैंने एक फूड कार्ट स्कूटर को ओवरटेक करने की कोशिश की—ये मॉडिफाइड बाइक होती हैं जो मोबाइल फूड स्टॉल का काम करती हैं। मैंने दूरी और गति का गलत अनुमान लगाया। जानलेवा गलती। हम कार्ट के पीछे जा टकराए। पलक झपकते ही स्कूटर पलट गया। हम 50 किमी/घंटे से भी ज़्यादा की रफ्तार से डामर पर फिसलते चले गए। मुझे याद है मेरे शरीर के नीचे फुटपाथ की चीख, मेरी बाहों में तेज़ दर्द, मेरा हेलमेट उड़ जाना, और मेरा माथा पके फल की तरह फट जाना। मेरी प्रेमिका ज़मीन पर बेसुध पड़ी थी।
मुझे लगा सब खत्म हो गया। सब कुछ धुंधला हो गया, और मेरे मन में एक अजीब सा ख्याल आया: "मैं इस मनहूस थाई सड़क पर ही मर जाऊंगा... वो बेवकूफ डीवीडी प्लेयर लौटाए बिना ही।" लेकिन तभी मेरी सहज प्रवृत्ति जाग उठी। मैं बड़ी मुश्किल से उठा। एक सोंगथाउ (मोटरसाइकिल टैक्सी) रुकी और हमें उसमें बिठा लिया। मुझे लोगों की एक भी बात समझ नहीं आ रही थी—बस हॉर्न की आवाज सुनाई दे रही थी और मैं अपनी प्रेमिका को जगाए रखने की कोशिश कर रहा था। मेरा शरीर दर्द से चीख रहा था, लेकिन एड्रेनालाईन ने मुझे गिरने से बचा लिया। उस “अमेरिकी” अस्पताल में, मैंने “मुस्कानों की धरती” का एक बिलकुल अलग ही रूप देखा: उन्होंने मुझसे तुरंत पैसे मांगे। पैसे नहीं तो इलाज नहीं। मैं दर्द से कांप रहा था, जबकि वे मेरे बटुए की तलाशी ले रहे थे और मेरी बचपन की तस्वीरों को देखकर घबराकर हंस रहे थे। उन्होंने मेरे घावों को टॉयलेट पेपर जैसी किसी चीज़ में लपेटा और फिर मुझे हस्ताक्षर करने के लिए एक क्रेडिट कार्ड स्लिप थमा दी। मुझे याद है, मैं सोच रहा था, “मैं आखिर कहां आ गया हूं?”
मेरी प्रेमिका को सर्जरी की ज़रूरत थी। एक महंगी सर्जरी। मेरे पास पैसे नहीं थे, इसलिए मैंने उसे सरकारी अस्पताल में भर्ती कराने का फैसला किया। कम से कम वहाँ उसका इलाज बिना मुझे गुर्दा बेचे हो सकता था। इस पूरे

घटनाक्रम ने मुझे भागने पर मजबूर कर दिया होता—लेकिन इसके बजाय, इसने मेरे फैसले को और भी पक्का कर दिया। मैं यहीं रहना चाहता था। भले ही मेरे मन में जो सपना था, वह पोस्टकार्ड पर छपी तस्वीरों जितना खूबसूरत न हो। ठीक होने में लंबा और दर्दनाक समय लगा। हर दिन, मुझे घावों की सफाई के लिए अस्पताल जाना पड़ता था। मेरी बांहें मोटी पट्टियों से लिपटी हुई थीं। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं चलती-फिरती लाश हूँ। मैं नहा नहीं सकती थी, कपड़े नहीं पहन सकती थी, और यहाँ तक कि अकेले खाना भी नहीं खा सकती थी। सौभाग्य से, नाथन छुट्टी पर था और उसने मेरी देखभाल की। हर सुबह, वह मेरे दांत साफ करने में मेरी मदद करता, मेरा चेहरा पोंछता और मेरे सिर पर टी- शर्ट पहनाता। इतनी बुनियादी चीजों के लिए एक दोस्त की ज़रूरत होना शर्मनाक था—लेकिन मैं दिल से आभारी थी।
"तुम्हें पता है ना कि मैं इसका इस्तेमाल करके तुम्हें ज़िंदगी भर ब्लैकमेल कर सकता हूँ?" नाथन ने मेरी शॉर्ट्स पहनने में मदद करते हुए मज़ाक किया।
"सावधान रहो। अगर तुम्हारी उम्मीद से पहले ही मेरे हाथ ठीक हो गए, तो तुम्हारी खैर नहीं।"
अरे वाह, ये तो बहुत प्यारा है। अभी से धमकियां देने लगे हो जबकि तुम एक कांटा भी नहीं उठा सकते।
मैं बस उसके साथ हंस सकता था। क्योंकि हंसने का मतलब था कि हम अभी भी आगे बढ़ रहे हैं।
दिन बहुत धीरे-धीरे बीत रहे थे—अस्पताल के चक्कर, पूरी तरह से बेबसी।
मुझे फिर से एक बच्चे जैसा महसूस हो रहा था, हर चीज के लिए मदद की जरूरत।
नाथन ने हमेशा की तरह मेरा हौसला बनाए रखने के तरीके ढूंढ लिए।
"सच कहूँ तो, लियो, मुझे लगता है कि तुमने अपना असली पेशा नहीं चुना।
तुम्हें किसी बैंडेज ब्रांड के लिए मॉडलिंग करनी चाहिए।"
"मज़ेदार। अगर तुममें मेरी आधी भी आकर्षण शक्ति होती, तो शायद तुम सिंगल न होते।"
“तुम सही कह रहे हो। अगली बार, मैं फुटपाथ पर मुंह के बल गिरूंगा—देखते हैं कि इससे मुझे उतना ही फायदा होता है जितना तुम्हें हुआ।”
हमें माहौल को हल्का-फुल्का बनाए रखने के लिए उन बेवकूफी भरे चुटकुलों की ज़रूरत थी। क्योंकि हम दोनों अंदर ही अंदर जानते थे: मैं फँस गया था। बुरी

तरह टूट चुका था। एक ऐसे देश में जो विदेशियों का खुले दिल से स्वागत नहीं करता। और मानो हालात पहले से ही काफी खराब न हों, पुलिस को भी इसमें दखल देना पड़ा।
यह सब एक फोन कॉल से शुरू हुआ। नाथन की प्रेमिका, मेरी चिंता में, ने अधिकारियों को दुर्घटना की सूचना दी थी। जो एक नेक इरादे जैसा लग रहा था, वह जल्दी ही... एक बेहद ही थाई स्थिति में बदल गया।
मुझे सोई 9 पुलिस स्टेशन से समन मिला। नाम सुनते ही अशुभ सा लगा। एक जर्जर इमारत, एक संदिग्ध मसाज पार्लर और एक 7-इलेवन के बीच फंसी हुई। साफ-सुथरी वर्दी पहने पुलिसकर्मी सोडा पीते हुए अंदर आने वाले विदेशियों को शक की निगाहों से देख रहे थे।
मैं थोड़ा घबराया हुआ सा काउंटर पर पहुंचा। एक अधिकारी ने मेरी तरफ मुश्किल से एक नज़र डाली और चिल्लाकर बोला, "पासपोर्ट।"
मैंने शांत रहने की कोशिश करते हुए उसे वह दस्तावेज़ सौंप दिया। उसने उसे बहुत धीरे-धीरे पलटा, मानो उसे उसमें कुछ आपत्तिजनक सबूत मिलने की उम्मीद हो। फिर उसने अपना फ़ोन निकाला और डायल किया।
“वह क्या कर रहा है?” मैंने नेथन से फुसफुसाकर पूछा।
मुझे कोई जानकारी नहीं है। उम्मीद है कि मसाज बुक नहीं करवा रहा हूँ।
कुछ ही सेकंड बाद, वह मेरी प्रेमिका से थाई भाषा में बात करने लगा। मुझे ज़्यादा कुछ समझ नहीं आया, लेकिन कुछ शब्द मेरे कानों में चुभ गए — "मुआवजा," "पैसा," "समस्या।" मेरा पेट मरोड़ उठा।
उसने फोन काट दिया और मेरी तरफ एक ऐसी मुस्कान के साथ मुड़ा जो अच्छे संकेत नहीं दे रही थी।
"तुम्हारी प्रेमिका का कहना है कि उसे पैसे नहीं चाहिए।"
मुझे राहत मिली। लेकिन यह राहत ज़्यादा देर तक नहीं रही। अधिकारी ने एक विशाल अंग्रेज़ी मैनुअल खोला, एक पन्ने पर इशारा किया और घोषणा की: "खतरनाक तरीके से गाड़ी चलाने पर आपको 5,000 बात का जुर्माना देना होगा।" नाथन और मैंने एक दूसरे की ओर देखा।
“तो यहाँ ऐसे ही चलता है? अगर तुम्हारी प्रेमिका तुम्हें लूटने की कोशिश करे तो कोई जुर्माना नहीं, लेकिन अगर वो ईमानदार है तो तुम फंस जाओगे?” मैंने झुंझलाते हुए बुदबुदाया।
"थाईलैंड में आपका स्वागत है, दोस्त।"

मैंने आह भरी और अपना कार्ड दे दिया। अब तक जो कुछ भी मैंने झेला था, उसके बाद अपना पासपोर्ट वापस पाने और और अधिक परेशानी से बचने के लिए 5,000 बात देना मुझे एक तरह से फायदे का सौदा ही लगा।
स्टेशन के बाहर मैंने गहरी सांस ली। पटाया की चिपचिपी गर्मी मुझे जकड़ रही थी, यह याद दिला रही थी कि मैं अभी भी खड़ी हूँ, यहाँ बसने का मेरा सपना अभी भी ज़िंदा है—भले ही वह थोड़ा डगमगा रहा हो।
पहली बार मैंने उस देश के बारे में सचमुच सवाल पूछना शुरू किया जिसे मैं अपना घर बनाना चाहती थी। थाईलैंड, वह स्वर्ग जिससे मुझे प्यार हो गया था, अपना असली चेहरा दिखा रहा था। एक ऐसी जगह जहाँ राष्ट्रवाद और विदेशियों से नफरत कभी भी भड़क सकती थी। जहाँ विदेशी कभी भी पूरी तरह सुरक्षित नहीं थे — हर पल एक मनमानी फैसले से तबाही का खतरा मंडरा रहा था। मुझे इसे आने वाले खतरे की चेतावनी समझ लेनी चाहिए थी। लेकिन मुझसे पहले कई लोगों की तरह, मैंने भी संकेतों को नज़रअंदाज़ कर दिया। खुद से कहा कि यह बस एक बार की घटना थी।
जब मेरे घाव आखिरकार ठीक होने लगे और मैं हर हरकत पर दर्द महसूस किए बिना चलने-फिरने में सक्षम हो गई, तो मैंने एक फैसला किया: अब थाईलैंड में स्थायी रूप से बसने का समय आ गया था।
मैं आखिरी तैयारियों को निपटाने के लिए पेरिस वापस लौट आया—अपना सामान शिफ्ट करना, कागजी कार्रवाई पूरी करना और अपना बचा हुआ सामान बेचना। फ्रांस से जुड़ी हर चीज़ धीरे-धीरे मुझसे दूर होती चली गई, बस कपड़ों से भरा एक सूटकेस, एक पासपोर्ट और एक तरफ़ा टिकट ही रह गया।
जब मैं थाईलैंड लौटा, तो मुझे पटाया में एक विला मिला। एक छोटा सा घर जिसमें एक बगीचा और एक स्विमिंग पूल था, जहाँ मेरा पूरा इरादा सूर्यास्त देखते हुए बीयर पीने का था।
— “बस यही है, नाथन,” मैंने सामने का दरवाजा खोलते हुए कहा। “मैं अपनी बाकी जिंदगी यहीं बिताने वाला हूँ।” — “यार, तुम्हारे पास अभी तक फर्नीचर भी नहीं है और तुम अभी से रिटायर हो चुके व्यक्ति की तरह बातें कर रहे हो।” वह गलत नहीं था। लेकिन मेरे लिए, वह घर सिर्फ सिर पर छत से कहीं अधिक मायने रखता था। यह इस बात का प्रमाण था कि मैंने तमाम बाधाओं के बावजूद फ्रांस को पीछे छोड़कर कहीं और कुछ वास्तविक बनाने में कामयाबी हासिल कर ली थी।

कुछ समय बाद ही मेरी शादी हो गई। एक सादा समारोह, कोई तामझाम नहीं—बस कुछ करीबी दोस्त। हमने दो कुत्ते और एक बिल्ली गोद ली, और देखते ही देखते मेरा घर एक असली घर बन गया।
लगभग उसी समय मैं टोनी के करीब आया।
टोनी दक्षिणी फ्रांस का रहने वाला एक फ्रांसीसी था, जो कई वर्षों से थाईलैंड में रह रहा था। वह स्कूटर किराए पर देने की दुकान चलाता था और उसका अपना जीवन दर्शन था:
— “चिंता मत करो, यहाँ सब ठीक हो जाएगा। तुम्हें बस कुछ पैसे और सही संपर्कों की ज़रूरत है।”
वह गलत नहीं था। थाईलैंड एक ऐसी जगह थी जहाँ अधिकांश समस्याओं का समाधान होता था... आमतौर पर वित्तीय समाधान।
टोनी और कुछ अन्य विदेशियों के साथ मिलकर हमने अपना एक छोटा सा समुदाय बना लिया था। उनमें मार्को नाम का एक इतालवी था, जिसने एक लॉन्ड्री खोली थी और अपना समय अजीबोगरीब व्यावसायिक विचारों को आजमाने में बिताता था। सेबेस्टियन और लुडोविक ब्लू रूम नाम का एक बार चलाते थे—जो सभी स्थानीय फ्रांसीसी लोगों का पसंदीदा अड्डा था।
शाम को हम बीयर पीते हुए मिलते थे, जीवन के बारे में बातें करते थे, अपनी परेशानियों और अच्छे सुझावों को साझा करते थे।
— “जानते हो लियो,” मार्को ने हमारे एक खुशनुमा पल के दौरान कहा, “थाईलैंड एक ईर्ष्यालु पूर्व प्रेमिका की तरह है। वह तुम्हें यह सोचने पर मजबूर कर देगी कि वह तुमसे प्यार करती है, फिर रात के 3 बजे फोन करके कहेगी कि तुमने सब गड़बड़ कर दिया।” — “तो मुझे उसके साथ रहने से पहले उसे व्हाट्सएप पर ब्लॉक कर देना चाहिए था?” मैंने जवाब दिया।
हम खूब हँसे। क्योंकि भले ही थाईलैंड ने हमें अपना काला पक्ष दिखा दिया था, फिर भी हम यहीं थे।
नाथन और एलेक्जेंडर फ्रांस लौट आए थे। नाथन अपनी थाई प्रेमिका को पेरिस वापस लाना चाहता था। एलेक्जेंडर थाईलैंड वापस आने के बारे में सोच रहा था — लेकिन इस बार एक बेहतर वित्तीय योजना के साथ।
जहां तक मेरी बात है, मुझे पता था कि मैं कहीं नहीं जा रहा हूं।
थाईलैंड मेरे लिए सिर्फ एक पर्यटन स्थल से कहीं बढ़कर था। दुर्घटना, पुलिस और अस्पताल के भयानक सपनों के बावजूद, यह मेरा घर बन गया था। मैं अपने पिता

मालिक जिसने अचानक दावा किया कि मुझे उसे अतिरिक्त पैसे देने हैं, जबकि मैं पहले ही पूरा किराया चुका चुका था।
— “चिंता मत करो यार। यहाँ ऐसा ही होता है। ये एक तरह का इम्तिहान है। वे देखना चाहते हैं कि वे तुम्हें कितना परेशान कर सकते हैं,” टोनी ने हाथ में बीयर लिए काउंटर पर झुकते हुए कहा।— “खैर, मैंने किसी बड़े दांव वाले पोकर गेम के लिए साइन अप नहीं किया है।”— “तो बेहतर होगा कि तुम झांसा देना सीख लो।”
वह सही था। थाईलैंड में हमेशा थोड़ी-बहुत सौदेबाजी होती है—कभी-कभी तो वहाँ भी जहाँ आप इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं करते। लेकिन उस समय मैं भोला था।
मैं यह मानना चाहता था कि क्योंकि मैं ईमानदार था, क्योंकि मैंने हर चीज का भुगतान समय पर किया था, इसलिए मेरे साथ कुछ भी बुरा नहीं हो सकता था।
मैं गलत था।
असली परीक्षाएँ तो अभी शुरू ही हुई थीं।

अध्याय 3: बदलती रेत
2012 तक, थाईलैंड मेरे लिए केवल एक विदेशी गंतव्य नहीं रह गया था। यह मेरी रोजमर्रा की हकीकत बन गया था—एक जागता हुआ सपना जहाँ हर दिन रोमांच, खोज और कभी-कभी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं का अपना हिस्सा लेकर आता था। और उस सपने के केंद्र में, पटाया एक अनूठे मृगतृष्णा की तरह चमक रहा था।
पटाया एक मोहक विरोधाभास था: विलासिता और आराम का मिश्रण, अराजकता और सहज आकर्षण का संगम। एक ऐसा शहर जहाँ पाँच सितारा होटल जर्जर अपार्टमेंट इमारतों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े थे, जहाँ हर गली के कोने पर मसाज पार्लर थे, और जहाँ ग्रिल्ड चिकन की खुशबू नमकीन हवा और फुटपाथ की गर्मी के साथ घुलमिल जाती थी।
जब मैं यहाँ पहुँचा तो मुझे सबसे ज़्यादा प्रभावित करने वाली चीज़ सिर्फ़ नियॉन लाइटें या चहल-पहल वाले बार ही नहीं थे—बल्कि पूर्ण स्वतंत्रता का वह अद्भुत एहसास था। यहाँ सब कुछ आसान था। कहीं जाना हो? बस एक उंगली हिलाकर मोटोटैक्सी पकड़ लो जो कुछ ही बात में तुम्हें कहीं भी ले जाएगी। भूख लगी है? दिन हो या रात, किसी भी समय मेट्रो टिकट से भी कम में पैड थाई, मसालेदार सूप या ताज़ा स्मूदी मिल जाएगी। गंदे कपड़े? पड़ोस का लॉन्ड्रोमैट उन्हें तुम्हारी माँ से भी बेहतर धोएगा, इस्त्री करेगा और तह करेगा—लगभग मुफ़्त में। थका हुआ महसूस कर रहे हो? वातानुकूलित सैलून में एक घंटे की मालिश तुम्हें तरोताज़ा कर देगी। आधी रात को जिम जाना है? कोई दिक्कत नहीं—बॉक्सिंग जिम तब भी खुला रहेगा। रात के 3 बजे भूख लग रही है? थाई नाइटलाइफ़ का चिरस्थायी रक्षक, भरोसेमंद 7-इलेवन, स्नैक्स, वैक्यूम-सील्ड अंडे, इंस्टेंट नूडल्स और आइस्ड कॉफी के साथ आपका इंतजार कर रहा था। हर दिन किसी वीडियो गेम के आसान मोड जैसा लगता था। न कोई बिल, न कोई टैक्स, न प्रशासनिक झंझट। जीवन सहजता से चलता रहा, आराम के इस सुखद माहौल में लिपटा हुआ।
और शायद यहीं जाल छिपा था: पश्चिमी दुनिया की बंदिशों से जितना आप दूर भागते, उतना ही आप एक तरह की कोमल, बचकानी बेफिक्री में डूबते चले जाते। सब कुछ मुमकिन लगता था, और कुछ भी खतरनाक नहीं लगता था। पटाया ने कभी ना नहीं कहा। वह हमेशा एक शरारती मुस्कान के साथ आपका स्वागत करता, आपको बहलाता, निहत्था करता और सुला देता।

मुझे अपनी लय मिल गई थी। मेरे पास घर था, दोस्त थे, एक जीवंत सामाजिक जीवन था, और सबसे बढ़कर, स्वतंत्रता का ऐसा एहसास था जो मुझे फ्रांस में कभी नहीं मिल सकता था। लेकिन जैसे-जैसे इस उष्णकटिबंधीय पोस्टकार्ड में दिन बीतते गए, एक अजीब सी भावना मन में घर करने लगी। एक हल्की सी बेचैनी। मानो कोई देख रहा हो, उस सारी सहजता की सतह के ठीक नीचे, हर सुख के पीछे जो मेरी पहुँच में था।
क्या इस थाई सपने के साथ कोई छिपी हुई कीमत भी जुड़ी हुई थी?
थाईलैंड अब सिर्फ मेरा खेल का मैदान नहीं रह गया था—यह फ्रांस में रहने वाले मेरे दोस्तों का अड्डा बन गया था। हर साल, मेरी कहानियों और ताड़ के पेड़ों के नीचे मस्ती भरी रातों के वादे से आकर्षित होकर वे अपनी छुट्टियां मनाने के लिए थाईलैंड आते थे।
मैं उनका अनौपचारिक मार्गदर्शक था, रोमांच के लिए उनका निजी पासपोर्ट। “लियो, तुम्हें पता है ना कि तुम असल में हमारी मुफ्त ट्रैवल एजेंसी हो?” मेरे बचपन के दोस्त पाओलो ने मजाक में कहा। “हाँ, लेकिन मेरे ऑल-इन्क्लूसिव पैकेज में, तुम्हें अपनी बीयर खुद खरीदनी पड़ेगी।”
हमने हर चीज का पता लगाया—भूल चुके मंदिरों से लेकर स्वर्ग जैसे द्वीपों तक, तैरते बाजारों से लेकर आसमान के ऐसे नज़ारों वाले रूफटॉप बार तक, जो आपको किसी निर्वासित राजकुमार जैसा महसूस कराते थे।
लेकिन उस जीवनशैली की एक कीमत चुकानी पड़ी। जब डेमियन, मेरा एक और पुराना दोस्त, मिलने आया, तो वह जल्दी ही थाई जीवनशैली में ढल गया: हर रात पार्टियां, बेहिसाब शराब, बिना हेलमेट के स्कूटर की सवारी (क्योंकि, उसके शब्दों में, "यह तो कायरों का काम है"), और मारियो कार्ट चलाने के अपने कौशल पर अंधविश्वास। मुझे इसका अंदाजा पहले ही हो जाना चाहिए था।
एक रात, अत्यधिक शराब पीने के बाद, डेमियन ने स्कूटर चलाने की ज़िद की, उसे पूरा यकीन था कि वह पूरी तरह से होश में है। लेकिन सच यह है कि वह होश में नहीं था। नतीजा? एक भयानक दुर्घटना और कोहनी बुरी तरह टूट गई। अस्पताल में बिल देखकर दिल भर आया: अनिवार्य सर्जरी, कुल खर्च 250,000 बात, यानी 7,000 यूरो से अधिक।
— “क्या?! क्या उन्होंने सोने की कोहनी लगा दी है या क्या?!” वह हांफते हुए बोला। — “थाई अस्पतालों के वीआईपी विंग में आपका स्वागत है, मेरे दोस्त।

अगर आपके पास बीमा नहीं होता, तो वे आपको एक पट्टी और एक टाइलेनॉल थमा देते।”
सौभाग्य से, उनके पास बीमा था जिससे सब कुछ कवर हो गया। लेकिन यह एक सरल सच्चाई की कठोर याद दिलाता है: थाईलैंड में, हर कोई मुस्कुराता है—लेकिन कुछ भी मुफ्त नहीं है।
मेरे दोस्तों की नियमित मुलाक़ातें मुझे सचमुच बहुत खुशी देती थीं। दुनिया के दूसरे छोर पर उन्हें देखना, उनके साथ स्थानीय व्यंजन का आनंद लेते हुए या समुद्र किनारे सूर्यास्त देखते हुए हँसना—ऐसा लगता था मानो मैं अपने घर का एक टुकड़ा उस जगह पर ला रहा हूँ जो अब भी मुझे पराई सी लगती थी। लेकिन उन साझा पलों के नीचे, एक और, शांत भावना मेरे भीतर पनप रही थी। मैंने खुश दिखने के लिए बहुत मेहनत की। चेहरे पर मुस्कान बिखेरने की कोशिश की, मानो मैं किसी सफल इंसान की तरह दिख रही थी। मैं चाहती थी कि लोग यह सोचकर जाएं कि मैं रोज़मर्रा की भागदौड़, भीड़भाड़ वाली मेट्रो और पेरिस की सर्द सर्दियों से बच निकली हूँ। कि मुझे रोशनी मिल गई है। लेकिन सच तो यह था कि यह छवि मैं सिर्फ अपने लिए बना रही थी। मैं उनके लिए दिखावा नहीं कर रही थी... मैं यह सब इसलिए कर रही थी ताकि मैं खुद टूट न जाऊं। मैंने खुद को एक कामयाब प्रवासी के रूप में पेश किया, इसलिए नहीं कि उन्हें मेरी ज़रूरत थी, बल्कि इसलिए कि मुझे यह विश्वास करना था कि इन सब का कोई मतलब है।
मन ही मन, घर से दूर असफल होने का ख्याल मुझे असहनीय लग रहा था। मुझे अपने निर्वासन को एक जीत की तरह दिखाना था। इसलिए मैंने हर छोटी-बड़ी बात को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया, अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी को मीठी-मीठी बातों से सजा दिया, हकीकत को किसी अति-सजाई हुई इंस्टाग्राम पोस्ट की तरह पेश किया। सफलता का वह भ्रम मेरा कवच बन गया। लेकिन किसी भी मृगतृष्णा की तरह, इसने किसी की प्यास नहीं बुझाई—मेरी भी नहीं।
सच कहूँ तो? मैं अपनी आमदनी से कहीं ज़्यादा खर्च कर रहा था। मैं अब भी अपने पिता के लिए काम कर रहा था, लेकिन पैसा अब पर्याप्त नहीं था। मेरा खाता ओवरड्राफ्ट हो चुका था, और मैं दिखावा कर रहा था कि सब ठीक है। मैं बाहर जाता, पैसे उड़ाता, और एक ऐसी जीवनशैली से चिपका रहता जो बाहर से अच्छी दिखती थी—भले ही अंदर से सब कुछ बिखर रहा था।

नशे में डूबी रातों के बीच, मैंने एक ऐसे खालीपन को भरने के लिए जो गैजेट खरीदे जिसे मैं नाम नहीं दे सकता था, अपनी चुप्पी से बचने के लिए खरीदे गए हवाई जहाज के टिकट, जिम की महंगी सदस्यताएँ—हर निर्णय ने गड्ढे को थोड़ा और गहरा कर दिया।
मैं धीरे-धीरे, लगातार आर्थिक संकट में डूबता जा रहा था। और इससे भी बुरा यह था कि मैं इसे देखने से इनकार कर रहा था। मैं एक ऐसी जीवनशैली में फंसा हुआ था जिसे मैं वहन नहीं कर सकता था, लेकिन हठपूर्वक उसे जारी रखे हुए था। स्वाभिमान के कारण। कंगाल दिखने के डर से। अपनी इज्जत बचाने की बेताब जरूरत के कारण।
यह महज एक मुश्किल दौर नहीं रह गया था—यह एक बेकाबू ट्रेन बन गई थी। एक ऐसी गिरावट जिसे मैं बेबस होकर घूमते हुए देख रहा था।
लेकिन धीमा पड़ना? बिलकुल नहीं। मैं लोगों को यह सोचने नहीं दे सकता था कि मैं भी बाकी सब जैसा ही हूँ—कि कुछ सालों बाद मैं भी संघर्ष कर सकता हूँ। असफलता का कोई विकल्प नहीं था। मुझे एक और रास्ता चाहिए था—तेज़, जोखिम भरा, साहसी।
तभी टोनी और मैंने गंभीरता से पैसे कमाने के "वैकल्पिक" तरीकों की खोज शुरू की। यह सब बीयर पीते हुए और बुरे दिनों में एक मजाक के तौर पर शुरू हुआ था - और फिर यह मजाक हकीकत बन गया।
डार्कनेट। यह शब्द कुछ समय से चर्चा में था। हमने इसे देर रात की खबरों, अधूरी डॉक्यूमेंट्री फिल्मों और लुभावने शीर्षकों वाले यूट्यूब वीडियो में देखा था। इंटरनेट का वह छिपा हुआ कोना जहाँ सब कुछ संभव लगता था... और उससे भी महत्वपूर्ण बात, अगर आपको पता हो कि कहाँ देखना है, तो सब कुछ आपकी पहुँच में था।
एक रात, हमने बस ज़ोर से कहा: "क्या होगा अगर हम सचमुच डार्कनेट को खोजने की कोशिश करें?"
हमें आश्चर्य हुआ कि यह इतना मुश्किल नहीं था। बस एक छोटा सा सॉफ्टवेयर - टोर - डाउनलोड करें, इसे पांच मिनट में इंस्टॉल करें, और बस। एक काली ब्राउज़र विंडो खुल जाती है। यह किसी सामान्य ब्राउज़र की तरह दिखती थी, लेकिन यह एक समानांतर ब्रह्मांड का पोर्टल था। असली चुनौती अंदर जाना नहीं थी। असली चुनौती यह जानना था कि एक बार अंदर जाने के बाद कहाँ जाना है।

हमें सही निर्देशिकाएँ, छिपे हुए मंच, फ़्रेंच भाषा के थ्रेड, गुप्त बाज़ार ढूँढ़ने पड़े। हमने पूरी रातें क्लिक करने, पढ़ने और सीखने में बिताईं। और धीरे-धीरे, हमें ऐसी चीज़ें मिलने लगीं जिनके बारे में हमने कभी सोचा भी नहीं था कि हम उन्हें देखेंगे: ड्रग बाज़ार, नकली पासपोर्ट, हैक किए गए बैंक कार्ड, पूरी पहचान डेटाबेस, धोखाधड़ी के ट्यूटोरियल, हर तरह की अवैध सेवाएँ। हर चीज़ की एक कीमत थी। हर चीज़ बिक रही थी।
हम मिठाई की दुकान में बच्चों की तरह थे, पूरी तरह से वर्जित चीज़ों से मोहित। ऐसा लग रहा था जैसे हम किसी विशाल, अंधेरे सुपरमार्केट में घूम रहे हों जहाँ नैतिकता का कोई अस्तित्व नहीं था, और केवल साहस और लालच ही मायने रखते थे। और जैसे-जैसे हम अंदर जाते गए, हम सोचने लगे - शायद यही हमारा रास्ता था। शायद यही हमारी मुक्ति का मार्ग था।
— “यार, ये देखो… ये लोग 300 डॉलर में फ्रांसीसी पासपोर्ट बेच रहे हैं।”— “धत् तेरे की, मैं नगर पालिका कार्यालय में बिताए उन घंटों को बचा सकता था।”
बेशक, इसमें से अधिकांश पूरी तरह से धोखाधड़ी थी। लेकिन फिर हमें कुछ ऐसा मिला जिसने वास्तव में हमारा ध्यान आकर्षित किया: नकली मुद्रा।
यह सब "पैसे कैसे कमाएं" शीर्षक वाले 15 डॉलर के ट्यूटोरियल से शुरू हुआ। पहले तो हम हँसे। फिर हमारे मन में सबसे खतरनाक विचार आया: "क्या होगा अगर...?"
हमें पता था कि हम एक सीमा पार कर रहे हैं, लेकिन फिर भी सब कुछ धुंधला सा लग रहा था। हम ड्रग्स नहीं बेच रहे थे। हम लोगों को लूट नहीं रहे थे। हम हिंसक नहीं थे। बस... कुछ नकली नोट थे। कोई बड़ी बात नहीं, है ना?
सच कहूं तो, यह प्रक्रिया बहुत ही सरल लग रही थी।
सबसे पहले, कागज़। वही पुराना A4... लेकिन कोई आम कागज़ नहीं। फ़ोरम के पुराने सदस्य एक सूती ब्रांड की तारीफ़ करते थे जो असली नोटों जैसा एहसास देता था। कोई अंग्रेज़ी कंपनी - मुझे नाम भी याद नहीं - जिसका इस्तेमाल बड़े-बड़े विश्वविद्यालय डिप्लोमा छापने के लिए करते थे। हमने इसे अमेज़न से पैक में मंगवाया। डिलीवरी गोपनीय थी। प्राइम का कमाल है!
फिर बारी आई डिजाइन की। हमने इसे बनाने के लिए भारत के एक फ्रीलांसर को काम पर रखा - उसे हमने एक 5 डॉलर की गिग साइट पर पाया था। उसने हमें 50 यूरो के नोट की एक हाई-रिज़ॉल्यूशन फोटोशॉप फाइल भेजी, जो इतनी यथार्थवादी थी कि

लगभग अपमानजनक लग रही थी। आज तक, मुझे आश्चर्य होता है कि उसने यह कैसे किया। शायद उसकी प्रतिभा और विवेकहीनता का मेल था।
प्रिंटिंग के लिए, हमने एक उच्च श्रेणी का इंकजेट प्रिंटर इस्तेमाल किया - जिस तरह के प्रिंटर जुनूनी शौकिया फोटोग्राफर इस्तेमाल करते हैं। दस इंक कार्ट्रिज, शानदार आउटपुट... और यह सेकंड-हैंड होने के कारण लगभग मुफ्त में मिल गया। सच कहूं तो, इसने अपना काम बखूबी किया।
असली पेचीदगी यूवी स्याही में थी। आप जानते हैं ना – वो स्याही जो सिर्फ ब्लैकलाइट में ही दिखाई देती है और प्रामाणिकता साबित करती है। फ़ोरम की बदौलत हमें किसी संदिग्ध पोलिश वेबसाइट से अदृश्य मार्कर और विशेष यूवी स्याही मिल गई। हमने सुरक्षा पैटर्न को अति पतली ट्रेसिंग शीट पर छापा और फिर उन्हें छपे हुए नोटों पर दूसरी त्वचा की तरह चिपका दिया।
स्क्रैच स्ट्रिप? एक घटिया सा DIY होल पंच। सिल्वर होलोग्राम? अलीबाबा से खरीदा हुआ कोई चीनी स्टिकर, जो कथित तौर पर ग्रामीण ग्वांगडोंग की किसी धातु विज्ञान कंपनी का है। आख़िरी टच? इसे सील करने और वो खास चिकनी चमक देने के लिए हेयरस्प्रे का एक स्प्रे।
और कटिंग? कुल मिलाकर एक घंटा कला और शिल्प में ही बीत जाता था। हम स्कूल के पेपर कटर का इस्तेमाल करते थे। किनारे कभी भी पूरी तरह से सीधे नहीं होते थे। कभी-कभी हम नोटों को थोड़ा-बहुत मोड़ भी देते थे - उन्हें हाथ से खुरदुरा कर देते थे - ताकि वे "पुराने" लगें।
वस्तुनिष्ठ रूप से? नतीजा बेहद घटिया था।
लेकिन आमने-सामने, शांत वातावरण में, थोड़े आत्मविश्वास और बहुत हिम्मत के साथ - यह काम कर गया।
हमने "गोपनीय सेवाओं" में विशेषज्ञता रखने वाले एक फ्रांसीसी फोरम पर अपनी पहचान बनाई, और फिर एक बड़े डार्कनेट बाज़ार में चले गए - जहाँ सभी स्टेरॉयड डीलर, नकली आईडी विक्रेता और प्रतिबंधित किताबों के विक्रेता सक्रिय थे। हमारी पिछली प्रतिष्ठा ने मदद की। घर पर बने रबर स्टैम्प और मांसपेशियों के पूरक बेचने के दिनों से ही हमें अच्छी समीक्षाएँ मिली हुई थीं। इससे हमें अपना काम शुरू करने में मदद मिली।
लोग एन्क्रिप्टेड मैसेजिंग के ज़रिए संपर्क करते थे — पूरी तरह से PGP का इस्तेमाल करते हुए। हमारे पास एक असली ऑनलाइन स्टोर की तरह एक छोटा सा

ऑटोमेटेड FAQ भी था: “48 घंटों के भीतर शिपिंग। गोपनीय पैकेजिंग। केवल क्रिप्टो करेंसी।”
हमने स्थानीय 7-Eleven से खरीदी पुरानी कॉमिक किताबों के अंदर नोट छिपा दिए। पृष्ठों के बीच में इस तरह रखे जैसे कोई बहुत खास बुकमार्क हो।
50 यूरो के नोट की कीमत? बारह यूरो प्रति नोट। और ऑर्डर की बाढ़ आ गई: स्पेन, आयरलैंड, जर्मनी, बेल्जियम…
मुझे अभी भी याद है कि हमने जो पहला बैच पूरा किया था - दस नोट। टोनी ने उन्हें ऐसे ऊपर उठाया जैसे उसने अभी-अभी ओलंपिक स्वर्ण पदक जीता हो।
— “यार, इसे देखो! हमने पैसे छाप दिए!” — “हाँ… अगर तुम अंधेरे में आँखें सिकोड़कर देखो, और तुम्हें पहले से ही मोतियाबिंद है — तो ज़रूर।”
लेकिन हम बेहतर हो गए। और जो एक बेवकूफी भरे मजाक के रूप में शुरू हुआ था, वह एक पूरी तरह से सफल व्यवसाय बन गया। कागज, स्याही... और भ्रम से बना एक व्यवसाय।
हमें यह नहीं पता था कि जब हम बोर्ड शॉर्ट्स पहनकर पूल के किनारे नकली नोट बनाने का खेल खेल रहे थे, तब कोई न कोई, कहीं न कहीं... हमें देख रहा था। बहुत जल्द, यह छोटा-मोटा काम हमें थका देने लगा। नोट छापना सचमुच मेहनत का काम था। पूरी रात नोटों को संवारने, उनमें सुधार करने, काटने-छांटने, मोड़ने और भेजने में बीत जाती थी। जो काम आसान लग रहा था, वह एक पूरी तरह से औद्योगिक काम में बदल गया था, जैसा कि किसी संदिग्ध भूमिगत कारखाने में होता है।
हम घंटों मेज पर झुके रहते, परतों को पूरी तरह से संरेखित करने की कोशिश करते, साफ किनारे काटते, स्याही का परीक्षण करते, और एक छोटी सी चूक होने पर फिर से शुरू करते। आपको बहुत सावधानी बरतनी पड़ती थी। सतर्क रहना पड़ता था। व्यवस्थित रहना पड़ता था। और सबसे बढ़कर, धैर्य रखना पड़ता था। हमारे पास उपकरण नहीं थे। हमारे पास विशेषज्ञता नहीं थी। बस दो अति सक्रिय दिमाग और ऐसे हाथ थे जो हमेशा सबसे सटीक नहीं होते थे।
फिर वो निर्णायक क्षण आया: हमारा प्रिंटर खराब हो गया। यह स्पष्ट रूप से इस तरह के अवैध प्रिंटिंग कार्य को संभालने के लिए नहीं बना था - और हमारे लगातार प्रिंटिंग सत्रों ने अंततः इसे पूरी तरह से नष्ट कर दिया।

— “यार, शायद ये ब्रह्मांड का कोई संकेत है?” मैंने टोनी से कहा, प्रिंटर को घूरते हुए, धुंआ निकलता हुआ और पूरी तरह से थका हुआ। — “ब्रह्मांड बस चाहता है कि हम एक बेहतर प्रिंटर खरीद लें,” उसने जवाब दिया।
लेकिन इस बार… हम हिचकिचाए।
हम पूरी तरह थक चुके थे। रातों की नींद हराम, डर, अधूरी उम्मीदें - इन सबका असर दिखने लगा था। फिर भी, रुकना नामुमकिन सा लग रहा था।
आसान पैसा नशे की तरह होता है। और हम पहले से ही इसके आदी हो चुके थे।
लेकिन कोई आपको यह नहीं बताता कि यह दवा झूठी है। यह आपको दुनिया भर के वादे करती है... और बदले में लगभग सब कुछ मिलने का कड़वा स्वाद देती है।
अंत में, हमने उतना भी नहीं कमाया। कुल बिक्री मुश्किल से 2,000 यूरो थी।
कुछ छिटपुट ऑर्डर, ढेर सारी मेहनत, लेकिन इनाम बहुत कम। दर्जनों नोट छपे - लेकिन उनमें से अधिकतर बेकार थे। फीके, बेतरतीब ढंग से छपे, असमान कट। पूरी मैनुअल प्रक्रिया एक बुरे सपने जैसी थी - लंबी, निराशाजनक और हताशा भरी। इससे भी बुरी बात यह थी कि हमने जो थोड़ी-बहुत कमाई की, उससे हमारी शुरुआती लागत भी पूरी नहीं हुई। स्याही, विशेष कागज, औजार, शिपिंग, गुप्त पैकेजिंग, और इसमें लगा समय... इन सब पर हमें घाटा ही हो रहा था।
लेकिन हमें उम्मीद थी कि हमारे छोटे-मोटे कामों का जाल—रबर स्टैम्प, बॉडीबिल्डिंग सप्लीमेंट्स, चोरी-छिपे बेची जाने वाली गोलियां—कभी न कभी फल देगा। लाखों नहीं। बस इतना कि बिना बॉस के जी सकें। बिना कुछ किए पैसे कमा सकें। सोते समय भी मशीन चलती रहे।
हम उस भ्रम में खो गए थे।
सच तो यह है कि हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा पैसों से नहीं मिली — वैसे भी हमें पैसे शायद ही कभी मिलते थे — बल्कि पहचान से मिली। फ़ोरम पर मिलने वाली शानदार टिप्पणियाँ, संतुष्ट ग्राहकों की समीक्षाएँ और खरीदारों से मिलने वाले प्रशंसा भरे गुप्त संदेश हमें प्रेरित करते थे।
हमें वह रुतबा बहुत पसंद था - सम्मान का वह भ्रम जो हम अंडरग्राउंड सीन में बनाना शुरू कर रहे थे।
हम अब सिर्फ दो कंगाल बच्चे नहीं थे - हम धीरे-धीरे एक समानांतर दुनिया में सम्मानित नाम बन रहे थे।
और शायद यही हमारी असली लत थी।

रोकना?
सिद्धांत में, हाँ - यह एक समझदारी भरा कदम था। लेकिन व्यवहार में... कहानी कुछ और ही है।
आसान पैसा एक विकृत भ्रम पैदा करता है - नियंत्रण का भ्रम। आप खुद को यकीन दिलाते हैं कि आप जब चाहें तब छोड़ सकते हैं, कि आप अभी भी सब कुछ नियंत्रित कर रहे हैं। आप खुद से कहते हैं कि चुनाव अभी भी आपका है। लेकिन वास्तविकता में? आप पहले ही बहुत गहरे फंस चुके हैं। बहुत अधिक निवेश कर चुके हैं। बहुत अधिक निर्भर हो चुके हैं।
और फिर वो जोश था—हर नए ऑर्डर, हर सफल शिपमेंट, हर फाइव-स्टार रिव्यू के साथ आने वाला वो अजीब सा रोमांच। हमें उन नोटों को छपते, पैक होते, किसी पुराने मंगा के पन्नों के बीच रखे हुए देखना अच्छा लगता था, जो यूरोप में कहीं जाने के लिए तैयार होते थे।
यह मूर्खतापूर्ण, जोखिम भरा, गैरकानूनी था — लेकिन इसने हमें जीवित होने का एहसास दिलाया।
— “यार, सोचो ज़रा… शायद हमारे बिलों में से कोई अभी पेरिस में किसी को कॉफ़ी पिला रहा हो,” टोनी ने एक बार सिगरेट लटकाए, दूर कहीं नज़रें गड़ाए हुए कहा।— “हाँ… या शायद किसी पुलिसवाले के हाथ में हो,” मैंने जवाब दिया।
हम हँसे। यही हमारा डर को दूर रखने का तरीका था। चिंता को दूर भगाने का तरीका था।
लेकिन भीतर ही भीतर, एक खामोश डर हमें कुतरने लगा था। एक छोटी सी आवाज जिसे हमने नजरअंदाज करने की कोशिश की - लेकिन वह हर रात लौट आती थी, पिछली रात से भी तेज।
हम जानते थे कि यह हमेशा के लिए नहीं चल सकता। लेकिन हम अभी तक इसका सामना करने के लिए तैयार नहीं थे। अभी नहीं।
डार्कनेट फ़ोरमों पर भारी मांग ने हमें जारी रखने के लिए प्रेरित किया। हमारे बिलों को अच्छा प्रतिसाद मिला और सकारात्मक समीक्षाएँ लगातार आती रहीं। कुछ खरीदार हमारी तरह छोटे-मोटे पुनर्विक्रेता थे, जो बस अपना गुजारा चलाने की कोशिश कर रहे थे। वहीं कुछ अन्य लोगों की योजनाएँ कुछ संदिग्ध थीं।

और फिर अजीबोगरीब संदेश आने लगे। कुछ लोग बड़े-बड़े ऑर्डर देना चाहते थे।
कुछ लोग आमने-सामने मिलने पर जोर दे रहे थे। कुछ लोग हमें थाईलैंड में "स्थानीय संपर्क" भेजने की पेशकश कर रहे थे।
टोनी और मैंने एक नियम बनाया था:
कभी भी स्थानीय स्तर पर बिक्री न करें।
सब कुछ हमसे दूर रखें।
कभी भी हमारे नाम को इसमें शामिल न करें।
लेकिन प्रलोभन… एक धूर्त और धोखेबाज चीज है।
एक दिन, एक व्यक्ति ने एक फोरम के माध्यम से हमसे संपर्क किया। उसने दावा किया कि वह फुकेत में रहने वाला एक फ्रांसीसी प्रवासी है, जिसके गहरे संबंध हैं और वह पहले से ही एक नेटवर्क चला रहा है।
— “मैं यहाँ सालों से पैसे का लेन-देन कर रहा हूँ। मेरे पास जगहें और लोग दोनों हैं। अगर आप वाकई में इच्छुक हैं, तो हम साथ मिलकर काम कर सकते हैं। क्या आप सच में पैसे कमाना चाहते हैं? हम मिलकर बहुत सारा पैसा कमा सकते हैं।”
और मेरे अंदर कुछ कस गया।
मुझे इस पर भरोसा नहीं था। बहुत ही सहज। बहुत ही आत्मविश्वासी। उसने सारी सही बातें कहीं। सारे सही शब्दों का इस्तेमाल किया। फिर भी, हर संदेश से मेरे पेट में थोड़ी और बेचैनी होने लगी।
मेरे मन में एक आवाज़ फुसफुसाई कि ऐसे सौदे आसमान से नहीं गिरते। लेकिन एक दूसरी आवाज़—धीमी, अधिक हताश—ने कहा कि शायद यही रास्ता हो। अपने पैरों पर फिर से खड़े होने का मौका। कर्ज़ चुकाने का मौका। जूलिया के सामने अपनी इज़्ज़त बचाने का मौका। यह दिखावा करने का मौका कि आखिरकार मुझे अपना रास्ता मिल गया है—भले ही वह टेढ़ा-मेढ़ा ही क्यों न हो।
इस बीच, टोनी पहले से ही पूरी तरह से तैयार था। उसने देखा कि नकदी के ढेर एक रैप वीडियो की तरह उड़ रहे हैं।
— “भाई, ये तो सुनहरा मौका है। कोई शिपिंग खर्च नहीं, कोई कस्टम ड्यूटी नहीं। और अगर वो पहले से ही सिस्टम से जुड़ा हुआ है, तो इसका मतलब है कि उसे सिस्टम की जानकारी है।” — “हाँ… या फिर वो कोई गुप्त पुलिसवाला है।”
हम हिचकिचाते रहे। काफी देर तक।
उसके हर संदेश में लालच झलक रहा था। लेकिन हे भगवान, यह कितना लुभावना था।

वह लगातार आग्रह करता रहा। मिलना चाहता था। भारी मात्रा में सामान बेचने के बारे में बात की।
दस हजार यूरो की नकली नकदी।
उन्होंने कहा कि वह इसे "आंखें बंद करके" भी पास कर सकते हैं।
लेकिन हम पीछे हट गए। हमने टालमटोल किया। हमने उनसे कहा कि हमारे पास क्षमता नहीं है। हमने कहा कि हम चुपचाप रहना पसंद करते हैं। हम कभी मिलने के लिए सहमत नहीं हुए।
अंततः हमने बातचीत बंद कर दी।
वीरता से नहीं। नैतिकता से नहीं। भय से नहीं। सहज प्रवृत्ति से नहीं।
और पहली बार हमें एहसास हुआ कि यह सब हमारे हाथों से फिसलने लगा है। यह अब सिर्फ दो लोगों का पसीने से तर बेडरूम में बैठकर किसी विचार पर काम करना नहीं रह गया था। यह बहुत बड़ा होता जा रहा था। बहुत खतरनाक। और अंदर ही अंदर, हम तैयार नहीं थे।
हम खुद ही डर गए थे। और शायद हमारी हड्डियों में दौड़ती वो सिहरन... एक चेतावनी थी।
थाईलैंड में किसी तरह गुजारा करने के लिए हम सिर्फ प्रिंटर और नकली नोटों का ही इस्तेमाल नहीं कर रहे थे।
यह सब एक साथ शुरू नहीं हुआ। डार्कनेट में कदम रखने से पहले ही हमने कुछ छोटे-मोटे काम शुरू कर दिए थे। कुछ भी गंभीर नहीं था। कुछ भी वास्तव में खतरनाक नहीं था। कम से कम, उस समय तो हमने खुद से यही कहा था।
सच तो यह है कि जाली नोटों से ही सब कुछ शुरू नहीं हुआ था।
हम उससे बहुत पहले ही इस दुनिया से नाता तोड़ चुके थे।
शुरुआती घोटाले। लगभग निर्दोष। उस समय वे हानिरहित लग रहे थे।
यह सब व्यापारिक डाक टिकटें बेचने से शुरू हुआ।
थाईलैंड में, डाक टिकट पवित्र माने जाते हैं। क्या आप कोई अनुबंध पर हस्ताक्षर करना चाहते हैं, बैंक खाता खोलना चाहते हैं, या कोई कंपनी शुरू करना चाहते हैं? आपको अपने व्यवसाय के नाम वाला एक आधिकारिक स्टाम्प चाहिए।
और जाहिर है, कुछ विदेशियों के पास थाई नौकरशाही की धीमी गति से निपटने के लिए समय या धैर्य नहीं था। इसलिए हमने उन्हें एक शॉर्टकट दिया।
एक शांत छोटा व्यवसाय। कोई हिंसा नहीं। कोई वास्तविक जोखिम नहीं।

बस… एक कदम बगल में हट जाइए।
फिर हमें एक और खजाना मिला: सप्लीमेंट्स।
वियाग्रा, स्टेरॉयड, बॉडीबिल्डिंग का सामान...
फ्रांस में जो कुछ भी चोरी-छिपे मिलता था, वह यहाँ बिना पर्चे के, बिना किसी सवाल-जवाब के आसानी से उपलब्ध था। हमने उन फ्रांसीसी ग्राहकों को पैकेज भेजे जो या तो बहुत तगड़े थे... या बहुत थके हुए थे।
यह पूरी तरह से गैरकानूनी नहीं था। बल्कि नियमों का उल्लंघन था। यह एक तरह से अस्पष्ट मामला था।
कुछ सौ यूरो यहाँ, कुछ सौ यूरो वहाँ।
और जब हमने देखा कि यह काम कर रहा है, जब हमने देखा कि इसकी वास्तव में मांग है... तो हमने कैटलॉग का विस्तार करना शुरू कर दिया।
अपने रिज्यूमे को आकर्षक बनाने के लिए फर्जी डिप्लोमा। टैक्स में हेराफेरी करने वाले फ्रीलांसरों के लिए फर्जी बिल।
कुछ खास नहीं। बस कुछ फोटोशॉप टेम्प्लेट, दो या तीन स्टैम्प सही जगहों पर।
बेडरूम स्तर की जालसाजी।
लेकिन लोगों को यह पसंद आया।
और इससे हमें थोड़ा पैसा मिला।
धीरे-धीरे, हम और अधिक पेशेवर होते गए... बिना इसका एहसास किए ही।
हमने यह नहीं सोचा, "हम धोखेबाज बन रहे हैं।" हमने खुद से कहा, "हम तो बस लोगों की मदद कर रहे हैं।"
और उस धुंधले माहौल में - जो झूठे अच्छे इरादों और छोटे लेकिन स्थिर मुनाफे से भरा हुआ था - आखिरकार नकली नोटों का विचार भी घर कर गया।
यह अगला स्वाभाविक कदम लगा। एक और छलांग। वह छलांग जो बहुत दूर थी।
हमें चेतावनी देने वाला कुछ नहीं था। हमें रोकने वाला भी कुछ नहीं था। इसके विपरीत, इसने हमें होशियार महसूस कराया। ऐसा लगा जैसे हम किनारे के पास खेल रहे हों... बिना वास्तव में गिरे।
लेकिन पीछे मुड़कर देखें तो, यहीं से सब कुछ शुरू हुआ था। यहीं से ढलान का खुलासा हुआ। और जब हमें पता चला कि नकली नोटों में कितनी क्षमता थी... हमें तो पता भी नहीं चला कि हम पहले से ही नीचे की ओर फिसल रहे थे।
उस समय हम इसके बारे में बात नहीं करते थे। हम इस विषय से बचते भी थे।

हम ज़्यादा बाहर जाने लगे। फिर से "सामान्य" महसूस करने की कोशिश कर रहे थे। सांस लेने के लिए।
हम अपने इतालवी दोस्त मार्को के साथ समय बिताते थे, बीयर पीते थे, गप्पे मारते थे - डार्कनेट को छोड़कर किसी भी चीज के बारे में बात करते थे।
लेकिन रहस्य हमेशा से वहीं था।
मेज के नीचे छिपा हुआ था।
— “यार, सोचो अगर मार्को को पता चल जाए कि हम क्या कर रहे हैं?” टोनी ने एक रात उससे पूछा, जब वह किसी बेवकूफी भरे मजाक पर हंस रहा था। — “वह सोचेगा कि हम पागल हैं। या फिर वह अपना हिस्सा मांगेगा।”
हमने इसके बारे में दोबारा बात नहीं की।
लेकिन हमारे अंदर कुछ टूटना शुरू हो गया था।
जो एक खेल, एक चुनौती, कुछ पैसे कमाने के एक तरीके के रूप में शुरू हुआ था... वह लगातार चिंता का स्रोत बनता जा रहा था।
हर अजीब आवाज, हर संदिग्ध नजर, मेरे घर के बाहर बहुत देर तक खड़ी रहने वाली हर कार मुझे बेचैन कर देती थी।
शुरुआत का रोमांच धीरे-धीरे एक रेंगते हुए, सर्वव्यापी भय में बदल गया था।
और फिर वो घातक गलती हुई: प्रिंटर।
हमारा बहुमूल्य कैश प्रिंटर—जिसने आसानी से पैसा कमाने के हमारे सपनों को हकीकत में बदल दिया था—कुछ ही हफ्तों के लगातार इस्तेमाल के बाद खराब हो गया।
एक तकनीकी खराबी। कोई बड़ी बात नहीं। लेकिन हमारे पूरे कामकाज को ठप करने के लिए काफी थी।
उस समय तक, टोनी और मैं पहले से ही बर्नआउट के कगार पर थे। जो एक रोमांचक, लगभग मनोरंजक अवसर के रूप में शुरू हुआ था, वह एक रसद संबंधी दुःस्वप्न में बदल गया था - तनाव, संदेह और रातों की नींद हराम करने का एक झंझट, जिसमें हम हर बिल को इस तरह काटते, समायोजित करते और पुनर्गठित करते थे मानो हमारा जीवन इस पर निर्भर करता हो। क्योंकि हम अंदर ही अंदर जानते थे कि ऐसा ही था।
हमने मन बना लिया था: सब खत्म हो गया था। यह सब हमें डराने लगा था। शुरुआती एड्रेनालाईन लगातार तनाव में बदल गया था। हमें अब ठीक से नींद नहीं आ रही

थी। डार्कनेट पर हर नया ग्राहक संदिग्ध लग रहा था। बाहर थोड़ी देर भी खड़ी रहने वाली हर स्कूटर हमारे दिमाग में खतरे की घंटी बजा देती थी।
टूटा हुआ प्रिंटर सब कुछ हमेशा के लिए बंद करने का एक सही बहाना लग रहा था। लेकिन एक समस्या थी - मेरे पास इसे अपने घर में रखने की जगह नहीं थी, और मैं एक नई शुरुआत चाहता था। एक नई शुरुआत। तभी हमें मार्को का ख्याल आया। मार्को - हमारा इतालवी दोस्त। हमेशा मदद के लिए तैयार रहता था, कभी ज्यादा सवाल नहीं पूछता था। "यार, हम इसे वैसे भी बेच देंगे। क्यों न इसे तब तक मार्को के पास रख दें," मैंने टोनी से कहा। "हाँ, और इसी बीच, चलो तुम्हारे घर की अच्छे से सफाई कर देते हैं। सब कुछ मिटा दो। अब और ये सब बकवास नहीं," उसने जवाब दिया।
हम इसे यूं ही कहीं फेंकना नहीं चाहते थे। आखिरकार, यह अभी भी एक अच्छा प्रिंटर था, और अगर कोई और इससे कुछ बिल (इस बार कानूनी बिल) निकाल सकता था, तो उन्हें और भी खुशी होती। लेकिन जल्दबाजी में हमने एक घातक गलती कर दी: हमने आखिरी होलोग्राम अंदर ही छोड़ दिए।
बस एक मामूली सी चूक। हमने जाँच करने के बारे में सोचा भी नहीं। हमारे लिए तो सब कुछ खत्म हो चुका था। अध्याय बंद। भूलने लायक एक और कहानी। हमें पूरा यकीन था कि सब कुछ बीत चुका है। हम गलत थे।
प्रिंटर अब हमारे पास नहीं था।
होलोग्राम? अभी भी अंदर ही सुरक्षित रखे हुए थे।
हम आगे बढ़ने के लिए तैयार थे, एक सामान्य जीवन को पुनः प्राप्त करने के लिए - एक ऐसा जीवन जो भय और तनाव से मुक्त हो।
लेकिन कुछ हफ्तों बाद, थाई पुलिस ने हमारे दरवाजे पर दस्तक दी।
जाल जोर से बंद हो गया था।
हमने सोचा था कि हम सावधान थे। हमने सोचा था कि हम होशियार थे। लेकिन थाईलैंड ऐसा देश नहीं है जहाँ आप बिना किसी परिणाम के कानून से खिलवाड़ कर सकते हैं।
और हम यह बात बहुत कठिन तरीके से सीखने वाले थे…

भाग II: नरक में उतरना

अध्याय 4: खेल समाप्त

सुबह 7:32 बजे।
दरवाजे पर ज़ोरदार दस्तक की गूंज पूरे घर में गूंज उठी, मानो सुबह की शांति कांच की तरह चकनाचूर हो गई हो। मैं झटके से जाग गया, दिमाग अभी भी धुंधला था, लेकिन एक भयानक डर ने मुझे तुरंत जकड़ लिया। उन दस्तकों में कुछ गड़बड़ थी। कुछ डरावना। वह कोई पड़ोसी नहीं था। वह कोई डिलीवरी वाला भी नहीं था। मेरे साथी का भाई भूत की तरह पीला पड़कर कमरे में घुस आया। वह एक सैनिक था, जो वापस अपने अड्डे पर जाने से पहले रात यहीं रुका था। उसने कांपते हाथों से मुझे हिलाया, उसकी आँखें घबराहट से चौड़ी हो गई थीं। "पुलिस है," उसने मुश्किल से सुनाई देने वाली फुसफुसाहट में कहा, मानो ज़ोर से बोलने से मामला और बिगड़ सकता है।
उन तीन शब्दों ने मुझे जैसे किसी डिफिब्रिलेटर से झटका दिया। मैं धड़कता हुआ दिल लेकर बिस्तर से उछल पड़ा। दरवाजा हमेशा की तरह थोड़ा खुला हुआ था, ताकि हमारे पालतू जानवर आज़ादी से घूम सकें। लेकिन इस बार बाहर कोई बिल्ली या कुत्ता इंतज़ार नहीं कर रहा था।
दूसरी तरफ से थाई भाषा में आवाजें गूंज रही थीं। कठोर। आदेशात्मक। "दरवाजा खोलो! पुलिस!"
मेरी पहली सहज प्रतिक्रिया पूरी तरह से अतार्किक थी: बाहर निकलने का रास्ता ढूंढो। मेरी आँखें कमरे में इधर-उधर दौड़ रही थीं, एक ऐसे निकास की तलाश में जो मौजूद ही नहीं था। लेकिन यह व्यर्थ था। भागना? कोई संभावना नहीं।
मैं लड़खड़ाते हुए प्रवेश द्वार की ओर बढ़ा, अभी भी नींद में था, मेरा दिमाग जो कुछ हो रहा था उसकी एक अलग व्याख्या खोजने की हड़बड़ी में कोशिश कर रहा था। लेकिन जैसे ही मैंने दरवाजा खोला, वास्तविकता ने मुझे सीने पर ईंट की तरह जोरदार प्रहार किया।
वहाँ पाँच आदमी खड़े थे। न वर्दी थी, न ही कोई हथियार दिखाई दे रहा था। बस ठंडी निगाहें और अधिकार का वह स्पष्ट आभास।
उनमें से एक ने मुझे कागज का एक टुकड़ा थमा दिया। मुझे बस एक नजर डालने की जरूरत थी।
वारंट ढूँढें।

मेरे पेट में एक बड़ा पत्थर गिर गया। बस यही था। खेल खत्म।
फिर मेरी नजर उनके पीछे खड़े दो लोगों पर पड़ी। दो आदमी। यूरोपीय चेहरे।
शानदार सूट। फ्रांसीसी दूतावास के एजेंट।
सन्नाटा ज्यादा देर तक नहीं रहा। थाई अधिकारियों ने मेरी पत्नी और उसके भाई से थाई भाषा में तीखे सवाल पूछे - इतने तेज़ कि मैं उन्हें समझ ही नहीं पाया। लेकिन फ्रांसीसी लोग? उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा। वे वहाँ ऐसे खड़े थे जैसे किसी फाँसी के तमाशबीन हों। उनमें से एक, लंबा, पत्थर जैसे चेहरे वाला, जिसकी निगाहें शीशा भी काट सकती थीं, मेरी ओर झुका। और एक फायरिंग स्क्वाड कमांडर जैसी तटस्थ आवाज में उसने बुदबुदाया:
“तुम गए काम से। तुम्हें 30 साल की सजा होगी। तुम्हारी जिंदगी खत्म हो गई।”
तीस वर्ष।
उन शब्दों ने मुझे अंदर तक झकझोर दिया। मैं बोलना चाहता था। चिल्लाना चाहता था। सब कुछ नकारना चाहता था। लेकिन मेरा गला सूख गया, और ठंडे, निर्मम भय से सुन्न हो गया।
यह बेतुका था। हमने तीन हफ्ते पहले ही काम बंद कर दिया था। पूरे तीन हफ्ते। थाई पुलिस ने बड़े ही सलीके से घर की तलाशी शुरू कर दी। वे आक्रामक या हिंसक नहीं थे—लगभग विनम्र थे—लेकिन उनकी शांत कार्यकुशलता में कुछ बेहद बेचैन करने वाला था। उन्होंने हर दराज खोली, हर वस्तु को पलटकर देखा, किसी पुख्ता सबूत की तलाश में। किसी निर्णायक प्रमाण की तलाश में।
लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला। एक भी बिल नहीं।
मेरी साथी, जो अभी भी अपनी नाइटशर्ट में थी, आँखें हैरानी से चौड़ी करके सवाल पूछने की कोशिश कर रही थी। उसे केवल संक्षिप्त, उपेक्षापूर्ण जवाब मिले। उसकी आँखें मेरी आँखों में खोई हुई, घबराई हुई सी थीं। "लियो... उन्हें क्या चाहिए?"
मैं जवाब नहीं दे सका। मैंने शर्म से अपना सिर नीचे कर लिया। मेरे मन में एक ही विचार गूंज रहा था: मैंने इसे इस स्थिति तक कैसे पहुंचने दिया? लेकिन अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था।
वे सब कुछ ले गए — मेरा लैपटॉप, मॉनिटर, टैबलेट, गेम कंसोल, यहाँ तक कि मेरी प्रेमिका द्वारा नेल पॉलिश करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक छोटी यूवी मशीन भी। और फिर, उन्हें वह मिल गया: घर में एकमात्र असली सबूत। मेरी

डेस्क की दराज में रखी कुछ डाक पर्चियाँ — जिनका इस्तेमाल शिपिंग बिलों के लिए फर्जी नामों से किया गया था। वे खुद पर बहुत खुश लग रहे थे।
कुछ घंटों बाद, जब मैं अभी भी इस कल्पना में डूबा हुआ था कि वे चुपचाप चले जाएंगे, तभी एक अधिकारी हथकड़ी लेकर मेरे पास आया।
उसने एक शब्द भी नहीं कहा। लेकिन मेरी कलाई के चारों ओर लिपटी ठंडी धातु ने मेरी बची-खुची सारी उम्मीदों को चकनाचूर कर दिया।
पुलिस स्टेशन मेरे लिए एक ठंडे थप्पड़ जैसा था। उन्होंने मुझे एक पूछताछ कक्ष में बिठाया जो किसी फ्रीजर जैसा लग रहा था - खाली दीवारें, कंप्यूटरों से भरी एक लंबी मेज।
और मैंने उन्हें वहीं देखा।
मार्को. टोनी. विक्टर. ये सभी पहले से ही वहाँ मौजूद हैं. पकड़े गए. बिल्कुल मेरी तरह.
मार्को का चेहरा पत्थर जैसा भावहीन था, वह तनाव में था मानो किसी मानसिक टूटन को दबा रहा हो। टोनी घबराकर कमरे का जायजा ले रहा था, मानो कहीं न कहीं कोई गुप्त द्वार जरूर हो। विक्टर... विक्टर किसी युद्धक्षेत्र में छोड़े गए खोए हुए बच्चे जैसा लग रहा था।
हम सभी एक ही कमरे में बंद थे — लेकिन हममें से प्रत्येक अपने-अपने निजी नरक में फंसा हुआ था।
मुझे अंदर आते देख टोनी ने बुदबुदाते हुए कहा, "धत् तेरे की..."
हमने एक दूसरे की ओर देखा।
बस यही था। खेल खत्म।
एक कागज़ घुमाया गया। नाम, पते, जन्मतिथि। मैंने बिना सोचे-समझे ही अपना नाम लिख दिया, जैसे कोई मशीन हो।
फिर थाई पुलिस ने एक घिनौनी चाल चली।
उन्होंने हमारी लिखावट ली और उसकी तुलना उन्हें मिले शिपिंग स्लिप से की।
एक भद्दा जाल। लेकिन प्रभावी।
एक अधिकारी ने मेरी ओर इशारा करते हुए ठंडे स्वर में कहा:
“यह वही है। वही बॉस है।”
उनका मतलब मुझसे था।
मैंने विरोध करने के लिए अपना मुंह खोला। लेकिन शब्द बाहर नहीं निकल पाए।
इसका क्या फायदा था?

उन्होंने पहले ही अपना मन बना लिया था।
पूछताछ शुरू हुई। और हैरानी की बात यह थी कि सबसे बुरे लोग थाई पुलिस नहीं थे। बल्कि फ्रांसीसी अधिकारी थे—ठंडे, निर्मम, लगभग अमानवीय।
हर शब्द, हर चुप्पी के साथ, वे मेरे करीब आते गए और मेरे कान में धमकियाँ फुसफुसाते रहे: “अगर तुम नहीं बोले तो वे तुम्हें यातना देंगे।” “तुम्हें पता है यहाँ विदेशियों के साथ क्या होता है?” “तुम्हें लेने कोई नहीं आ रहा। तुम जेल में सड़ोगे।”
उनका लहजा शांत था। भावहीन। मानो वे धमकी नहीं दे रहे थे—वे तो बस तथ्य बता रहे थे।
और फिर भी, थाई पुलिस… वे अलग थे। उन्होंने हमें नहीं मारा। उन्होंने कभी अपनी आवाज ऊंची नहीं की। उन्होंने हमें खाना भी दिया।
यह भयावह, लगभग अवास्तविक था। फ़्रांसीसी हमें कुचल रहे थे। थाई लोग हमारे साथ - अगर दयालुता से नहीं, तो कम से कम एक प्रकार के तटस्थ सम्मान के साथ व्यवहार कर रहे थे। बेतुका। लेकिन सच।
घंटे बीत गए। विक्टर, जिसके अपार्टमेंट में सबूत का एक भी टुकड़ा नहीं मिला था, को रिहा कर दिया गया। लेकिन हम बाकी लोग वहीं रह गए। फंदा कसता जा रहा था।
जैसे-जैसे समय बीतता गया, उम्मीद धूमिल होती गई। उन्हें कबूलनामा चाहिए था। यही उनका अंतिम लक्ष्य था। सबूत की तलाश में वे हमारे कंप्यूटर खंगाल रहे थे। सौभाग्य से, मेरे एक कंप्यूटर सेशन पर पासवर्ड लगा हुआ था और उन्होंने उसे खोलने की कोशिश भी नहीं की थी। अगर वे अंदर घुस जाते, तो उन्हें सब कुछ मिल जाता: 50 यूरो के नोट का टेम्पलेट, डार्क वेब से खरीदे गए ट्यूटोरियल... लेकिन फिलहाल, हम नियंत्रण के एक पतले से भ्रम को थामे हुए थे।
दिन बुरे सपने की तरह लंबा खिंचता चला गया। फिर रात हो गई।
वे हमें एक हिरासत कक्ष में ले गए।
नरक की एक झलक।
वह जगह गंदी, घुटन भरी और पसीने व नमी की दुर्गंध से लथपथ थी। एक भारी टैटू वाले व्यक्ति ने ठंडेपन और उदासीनता से हमारा स्वागत किया।
“पौचोहे।” जेल के पदानुक्रम में एक रहस्यमय व्यक्ति। एक भरोसेमंद कैदी, जिसे गार्डों द्वारा सेल का प्रबंधन करने के लिए चुना गया था। उसकी आँखें

कमरा एकदम शांत हो गया। किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन मार्को, अपने स्वभाव के अनुसार, नज़रें नहीं हटाईं।
— "हम यहाँ ज़्यादा देर तक नहीं टिक पाएंगे..." टोनी ने बुदबुदाते हुए कहा, बाहें क्रॉस किए हुए, घुटन भरी गर्मी के बावजूद वह थोड़ा कांप रहा था।
— "चुप रहो और देखो। हमें यह जानना ज़रूरी है कि हम किससे निपट रहे हैं," मैंने दांत भींचते हुए फुफकारा।
खतरा सिर्फ पहरेदारों की लाठियों या लोहे की सलाखों में ही नहीं था। यह उनकी आँखों में था। अनकही पदानुक्रमों में था। इस समानांतर दुनिया के अदृश्य नियमों में था।
हम अभी भी हिरासत में थे—नरक का द्वार। कुछ घंटों की बात थी, लेकिन घंटे रात में बदल गए। अभी भी वहीं थे। दर्जनों आदमियों के साथ कंक्रीट पर बंद, कोई खबर नहीं, कोई वकील नहीं, कोई स्पष्टीकरण नहीं।
समय का अस्तित्व ही रुक गया था। बस शरीरों की सरसराहट, कराहें और हमारे पसीने से तर चेहरों के आसपास भिनभिनाते मच्छर ही सुनाई दे रहे थे।
वह कोठरी किसी उबलते हुए मधुमक्खी के छत्ते जैसी लग रही थी—एक भीड़भाड़ वाला कंक्रीट का दलदल जहाँ हर कोई जीने के लिए थोड़ी सी जगह पाने के लिए संघर्ष कर रहा था।
द्वार के पीछे कदमों की आहट गूंजी। एक युवा कैदी आत्मविश्वास से भरा, घमंडी अंदाज में प्रकट हुआ। उसने कमरे का जायजा लिया।
— "तुम। इधर आओ।" उसने एक युवा कंबोडियाई लड़के की ओर इशारा किया।
लड़का पीला पड़ गया, उसके पैर कांप रहे थे। लेकिन इससे पहले कि वह हिल पाता, एक दूसरे आदमी ने उसका कंधा मजबूती से पकड़ लिया।
वह कैदियों का नेता था—पतला, चुस्त-दुरुस्त, पलकों तक टैटू से भरा हुआ।
उसने एक विकृत, सड़ी हुई मुस्कान दी।
— "तुम जानते हो कि वह क्या चाहता है, है ना?" उसने व्यंग्य करते हुए कहा।
लड़के ने अपना सिर नीचे कर लिया। नेता हँसा और उसे दूसरे आदमी की ओर धकेल दिया।
बच्चे ने हमारी तरफ देखा—एक पल के लिए। एक पल के लिए घोर हताशा। फिर वह उसके सामने झुक गया।
अकल्पनीय घटना घटी। वहीं, हमारे सामने। कोई चीख नहीं, कोई प्रतिरोध नहीं।

हम जम गए थे। कल मैं अपनी छत पर बैठकर बीयर पी रहा था। आज मैं किसी की मानवता का पूर्ण रूप से मिटते हुए देख रहा था।
क्या हम कुछ कर सकते थे? हस्तक्षेप? विरोध? नहीं। यहाँ दखल देना आत्महत्या के बराबर है।
उस रात मुझे कुछ समझ आया। यहाँ मानवता का कोई महत्व नहीं है।
मार्को ने लगभग सुनाई न देने वाली धीमी आवाज़ में कहा: "धत् तेरे की... हम यहाँ कैसे पहुँच गए?"
मैंने मुश्किल से सांस ली। हवा में पसीने, डर और अन्याय की दुर्गंध फैली हुई थी।
— "यह दो सप्ताह का परीक्षण होना था... हम बस कुछ अतिरिक्त पैसे कमाना चाहते थे।"
उसने अविश्वास से अपना सिर हिलाया। दबाए हुए गुस्से से उसका जबड़ा कस गया।
— "एक परीक्षा, है ना? कैसी घटिया परीक्षा है..."
उन्होंने मुझ पर चिल्लाया नहीं। उन्हें ऐसा करने की ज़रूरत भी नहीं थी। सब कुछ उनकी आँखों में झलक रहा था।
मैंने घबराकर हंसते हुए कहा— "हम डरे हुए थे, मार्को। शुरू से ही सब कुछ संदिग्ध लग रहा था। हमें ये सब शुरू ही नहीं करना चाहिए था। लेकिन मैं कसम खाता हूँ कि मैं तुम्हारे वकील का खर्च उठाऊंगा। हम यहाँ से निकल जाएंगे। मुझे पता है।"
उसने आह भरी और दीवार से टेक लगाकर बैठ गया। "बेहतर होगा कि तुम बैठ जाओ। क्योंकि मैंने तो बस एक प्रिंटर को इधर-उधर करने में तुम्हारी मदद की थी... और अब मैं यहाँ हूँ।"
उसने एक कड़वी मुस्कान दी। मैंने भी मुस्कुरा दिया। एक जीवित रहने वाली मुस्कान।
हमने हंसने की कोशिश की। क्योंकि अगर हम नहीं हंसते तो हम टूट जाते।
अब हमारी सारी उम्मीदें लिफ्ट पर टिकी थीं। जब आप थाईलैंड में बुरी तरह फंस जाते थे, तो वही भरोसेमंद आदमी था। एक समस्या सुलझाने वाला।
भ्रष्टाचार का दलाल।
आधिकारिक तौर पर, वह एक वीजा एजेंसी चलाते थे। अनौपचारिक रूप से, वह सही लोगों को रिश्वत देते थे और असंभव दरवाजे खोल देते थे।

उसने जल्दी निकलने का वादा किया था। "थोड़ा पैसा दो, और तुम कुछ ही दिनों में बाहर निकल जाओगे।" उसने यही कहा था।
मैं उस पर विश्वास करना चाहता था। मुझे करना ही पड़ा।
बाद में, मैंने नहाने का फैसला किया।
खैर… "नहाना।"
तार की जाली से बनी एक दीवार के पीछे, एक शौचालय के बगल में पानी की एक बाल्टी रखी थी।
— "यह कोई स्पा तो नहीं है, है ना?" टोनी ने एक जंग लगे नल से बाल्टी भरते हुए, बनावटी मुस्कान के साथ बुदबुदाया।
एक छोटी सी दीवार प्रतीकात्मक निजता प्रदान करती थी। एक फटी हुई चादर आधे- अधूरे मन से शालीनता के लिए लटकी हुई थी।
मैंने एक प्लास्टिक का कटोरा उठाया और अपने सिर पर बर्फीला पानी डाल लिया।
इस झटके से मैं कांप उठा। मेरे चारों ओर, अन्य कैदी चुपचाप नहा रहे थे।
यांत्रिक हलचलें। खाली निगाहें।
मार्को मेरे पास आया और मेरे बगल में बैठ गया। उसने एक शब्द भी नहीं कहा।
बस उसने कटोरा डुबोया और धीरे-धीरे अपनी गर्दन के पिछले हिस्से पर उड़ेल दिया।
— "मुझे उम्मीद है कि लिफ्ट प्रगति कर रहा होगा..." उसने अंततः फुसफुसाते हुए कहा, उसकी आवाज थकावट से कांप रही थी।
मैंने जवाब नहीं दिया। मैं इसके बारे में सोचना नहीं चाहता था।
एक कोने में, एक थाई कैदी पत्थर पर अपने कपड़े रगड़ रहा था, उन्हें उसी गंदे पानी में धो रहा था जिसका इस्तेमाल हम खुद को धोने के लिए कर रहे थे।
हवा में गंदगी और आत्मसमर्पण की गंध फैली हुई थी।
मैं उठा, अपनी गंदी कमीज को अपने चारों ओर लपेटा और वापस कोठरी में चला गया। मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं फिर कभी साफ नहीं हो पाऊंगा।
अगली सुबह, एक भयानक रात बिताने के बाद, थाई रेड क्रॉस के स्वयंसेवकों का एक समूह पहुंचा।
यह अंतर चौंकाने वाला था—साफ-सुथरे चेहरे, इस्त्री की हुई कमीजें, आंखों में दयालुता।
वे खाने से भरे थैले और पानी की छोटी बोतलें लेकर कोठरी में दाखिल हुए।
— "सभी को सुप्रभात। हम आपके लिए थोड़ी राहत लेकर आए हैं।"

किसी सामान्य इंसान की आवाज सुनना ही अवास्तविक सा लग रहा था।
एक कैदी दबे स्वर में आगे बढ़ा और अपना हाथ बढ़ाया। उसे सफेद ब्रेड का एक टुकड़ा और मीठा गाढ़ा दूध का एक डिब्बा मिला।
हमारे चारों ओर, कैदी भूखे कुत्तों की तरह भोजन की ओर लपके।
मैंने एक टुकड़ा उठाया और उसे अपने होठों से लगाया। मैंने इससे पहले कभी इतना फीका कुछ नहीं खाया था, फिर भी यह मुझे किसी दावत जैसा लगा। स्वयंसेवकों में से एक हमारे बगल में घुटनों के बल बैठ गया और फुसफुसाते हुए बोला: "क्या आप ठीक हैं?"
मार्को ने सिर हिलाया। "हम कुछ दिनों में निकल जाएंगे।"
वह मुस्कुराया। मुझे यकीन नहीं था कि वह अब भी इस पर विश्वास करता है या नहीं।
मैंने अपनी रोटी को धीरे-धीरे चबाया, और पिछली रात के बुरे सपने के बारे में न सोचने की कोशिश की।
हम अभी नाश्ता ठीक से खा भी नहीं रहे थे कि अचानक जेल की कोठरी के दरवाजे जोर से खुल गए।
दो थाई अधिकारी अंदर आए—उनके चेहरे भावहीन थे। उनके पीछे एक वरिष्ठ अधिकारी आया और हमें मवेशियों की तरह घूरने लगा।
— "तुम। हमारे साथ आओ।"
उसने मार्को, टोनी और मेरी ओर इशारा किया।
मुझे एक सिहरन सी दौड़ गई। अब क्या?
जब हम धीरे-धीरे उठे, मानो फांसी के तख्ते की ओर जा रहे हों, तो बाकी कैदी चुपचाप हमें घूरते रहे। हवा पहले से कहीं ज्यादा भारी लग रही थी।
वे हमें सशस्त्र पुलिस की सुरक्षा में बाहर ले गए। माहौल गंभीर और औपचारिक था।
मेरी नजर एक थाई कैदी पर पड़ी— दुबला-पतला, कोने में दुबका हुआ। उसकी निगाहें खोखली थीं। पराजित। यह इस बात की झलक थी कि हम क्या बन सकते हैं।
हम एक गलियारे से होते हुए एक स्टील के दरवाजे तक पहुंचे जो एक चमकदार रोशनी वाले कमरे में खुलता था।
अंदर, बीच में एक लंबी मेज रखी थी... जिस पर वे लोग सबूत होने का दावा कर रहे थे, वे चीजें रखी हुई थीं।
और वहाँ कैमरे मौजूद थे।

पत्रकार एक बैरियर के पीछे जमा हो गए, उनके लेंस हमारी ओर इस तरह से लगे हुए थे जैसे हम सर्कस में अजीबोगरीब लोग हों। एक के बाद एक फ्लैश हमारे चेहरों पर फूट रहे थे।
मैं एकदम जम गया, जैसे कोई हिरण तेज रोशनी के सामने आ जाता है।
वे हमें सबक सिखाने वाले थे।
हमारे सामने मेज पर: नकली 50 यूरो के नोट, एक प्रिंटर, खाली ए 4 पेपर... और ढेर सारी बिल्कुल असंबंधित वस्तुएं रखी थीं।
एक गेमिंग कंसोल। ऐसे सेलफोन जो हमारे थे ही नहीं। वो यूवी लैंप जिसका इस्तेमाल मेरी पत्नी अपने नाखूनों के लिए करती थी।
पूरा तमाशा।
टेबल के पीछे बैठे एक थाई पुलिस अधिकारी ने थाई भाषा में बोलना शुरू किया।
हमने मुद्रा जालसाजी में विशेषज्ञता रखने वाले एक आपराधिक गिरोह को गिरफ्तार किया है।
उन्होंने आगे बताया कि कैसे हमें रंगे हाथों पकड़ा गया (जो कि सरासर झूठ था), और कैसे जांचकर्ताओं ने हमारी गतिविधियों को खत्म करने के लिए इस बड़े अभियान की योजना बनाने में महीनों बिताए थे।
शुद्ध नाटक।
हमारे पीछे, फ्रांसीसी दूतावास के दो एजेंट हाथ बांधे, भावहीन चेहरे के साथ खड़े थे। उनसे किसी प्रकार की सहायता नहीं मिलने वाली थी।
जब एक पत्रकार सवाल पूछने के लिए खड़ा हुआ तो मेरा दिल तेजी से धड़क रहा था।
"सर, क्या आप इस बात की पुष्टि कर सकते हैं कि ये विदेशी किसी संगठित नेटवर्क का हिस्सा थे?"
अधिकारी ने गंभीरता से सिर हिलाया।
“जी हां। हमारे पास पुख्ता सबूत हैं कि वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जाली मुद्रा के गिरोह में शामिल थे।”
क्या मजाक।
मैंने मार्को और टोनी पर एक नज़र डाली। मार्को शांत था—लगभग ज़रूरत से ज़्यादा शांत। वह पूरे दृश्य को ऐसे देख रहा था जैसे किसी सम्मेलन में कोई उबाऊ पैनल चर्चा हो रही हो।

दूसरी ओर, टोनी का चेहरा पीला पड़ गया था। उसने अपना सिर नीचे झुका रखा था और अपने हाथों से अपना चेहरा छुपा रखा था।
एक पत्रकार ने अपना माइक हमारी ओर घुमा दिया।
“सज्जनों, क्या आप अपने बचाव में कुछ कहना चाहेंगे?”
मौन।
हमारे पास दो विकल्प थे: चुप रहना... या उस बात को समझाने की कोशिश करना जिसे समझाया नहीं जा सकता।
हमेशा की तरह अप्रत्याशित व्यवहार करने वाले मार्को ने हल्की सी मुस्कान दी और कंधे उचका दिए।
"क्या तुम सच में जानना चाहते हो?"
पत्रकारों ने उत्सुकता से सिर हिलाया, कलम तैयार रखी थी।
"खैर...हम निर्दोष हैं, जाहिर है।"
कमरे में कुछ घबराहट भरी हंसी गूंज उठी। मार्को ने बोलना जारी रखा।
लेकिन सच कहें तो... कोई हमारी बात पर यकीन नहीं करेगा, है ना?
थाई अधिकारी ने उसे गुस्से भरी नजरों से देखा और पूरी बातचीत को वहीं रोक दिया।
बैठ जाओ।
हमने आदेशों का पालन किया जबकि कैमरे लगातार चालू थे।
उस मीडिया के हंगामे के बाद, हमें अन्य कैदियों की हंसी भरी निगाहों के बीच वापस हमारी कोठरी में ले जाया गया।
उनमें से एक, एक गंजे थाई व्यक्ति ने हमारे गुजरते समय सीटी बजाई।
"विदेशी अब मशहूर हो चुके हैं।"
एक अन्य व्यक्ति जोर से हँसा।
"क्या आपने कैमरे के लिए कम से कम मुस्कुराया तो सही?"
हमने कोई जवाब नहीं दिया। अपमान तो पूर्ण था।
लेकिन नरक की शुरुआत तो अभी हुई थी।
दोपहर असहनीय सन्नाटे में बीतती रही। हमें अदालत ले जाया जाना था।
हमें अब भी उम्मीद थी। लिफ्ट को हस्तक्षेप करना था।
लेकिन घंटे बीतते गए… और कुछ नहीं हुआ।
आखिरकार, एक पुलिसवाला हमें लेने आया।

वह हमें एक तंग से दफ्तर में ले गया, जहाँ एक थाई अधिकारी ने हमें एक मोटी सी फाइल सौंपी - जो पूरी तरह से थाई भाषा में थी।
"यहाँ हस्ताक्षर कीजिए।"
मैंने दस्तावेज़ को अपने हाथों में पकड़ा। कोई अनुवाद नहीं। अंग्रेज़ी में कुछ भी नहीं।
मैंने अधिकारी की ओर देखा।
"यह क्या है?"
उसने झुंझलाहट भरे लहजे में कंधे उचका दिए।
“बस एक औपचारिकता।”
मेरी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई।
मुझे पता था कि बिना सोचे-समझे किसी चीज़ पर हस्ताक्षर करना ठीक नहीं है। लेकिन हम और क्या कर सकते थे?
इनकार करने से व्यवस्था नाराज हो सकती थी। हस्ताक्षर करने का मतलब था अनिश्चितता के सामने आत्मसमर्पण करना।
मैंने टोनी और मार्को की तरफ देखा। उनकी आँखों में भी वही भाव थे जो मुझमें थे—मुश्किल से काबू में रखी घबराहट, अनिश्चितता का एक बवंडर।
अंततः, उस क्षण के सन्नाटे में, हमने कलम उठाई और हस्ताक्षर किए।
तब हमें इस बात का अंदाजा नहीं था कि उस हस्ताक्षर की हमें कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी।
कुछ घंटों बाद पुलिस फिर आई।
इस बार हमें बाहर ले जाया गया, जहाँ एक मजबूत पिकअप ट्रक इंतजार कर रहा था।
बाहर की हवा मुझ पर एक लहर की तरह लगी। उस दुर्गंधयुक्त कोठरी में घंटों बंद रहने के बाद ऑक्सीजन की एक साँस जैसी।
लेकिन आजादी का वह भ्रम पल भर में ही गायब हो गया।
पुलिस स्टेशन के पार्किंग स्थल में लिफ्ट हमारा इंतजार कर रहा था, उसका चेहरा एकदम भावहीन था।
बर्फ जैसी ठंडी आवाज में उन्होंने हमारी आजादी की कीमत सुनाई:
"मार्को और टोनी के लिए 13 लाख बात। आपके लिए, लियो, 23 लाख - क्योंकि आपको नेटवर्क का मुखिया माना जाता है।"
यह सदमा बेहद भयानक था। यह रकम 30,000 यूरो से 45,000 यूरो के बीच थी—एक अविश्वसनीय राशि, जो हमारी क्षमता से कहीं अधिक थी।

मैंने हताशा में आकर बातचीत करने की कोशिश की।
“देखो, लिफ्ट… मैं तुम्हें 5,000 यूरो अग्रिम दे सकता हूँ, और बाकी रकम मैं तब दूंगा जब मैं बाहर निकल जाऊंगा। जरूरत पड़ने पर ब्याज सहित।”
उसने हल्की सी मुस्कान दी लेकिन कुछ नहीं कहा। मानो वह हमारी बेबसी का आनंद ले रहा हो।
समय बर्बाद किए बिना, मैंने लिफ्ट के फोन से अपनी पार्टनर को फोन किया और उससे जल्द से जल्द पैसे भेजने की गुहार लगाई—इस उम्मीद से कि शायद इससे हम इस नरक से बच सकें।
फिर हमें पुलिस की गाड़ी में धकेल कर अदालत ले जाया गया।
वाहन का पिछला हिस्सा? एक पिंजरा।
एक असली धातु का पिंजरा, ट्रक के पिछले हिस्से से इस तरह कसा हुआ था जैसे हम मवेशी हों।
पुलिसवालों ने हमें जबरदस्ती अंदर धकेल दिया।
"अंदर आना!"
हमारे पीछे धातु के तालों के जोर से बंद होने की आवाज आई, जिसने हमारे भाग्य का फैसला कर दिया।
अब हम थाई व्यवस्था की दया पर निर्भर थे।
जैसे ही ट्रक अदालत की ओर बढ़ा, मेरे मन में एक सवाल उठा:
क्या हम कभी दोबारा आजादी देख पाएंगे?
पटाया की सड़कों पर ट्रक तेज़ी से दौड़ रहा था, धूल उड़ाता हुआ हमें उस जगह की ओर ले जा रहा था जहाँ हमारा भाग्य तय होना था। इंजन की गर्जना हमारे कानों में किसी मातम की घंटी की तरह गूंज रही थी। हम पीछे पिंजरे में बंद थे, ठंडी धातु हमारी त्वचा से चिपकी हुई थी, हर मोड़ पर हम फलों और सब्जियों से भरी बोरियों की तरह धक्के खा रहे थे।
वाहन की गति धीमी हो गई।
हम पहुँच गए थे।
सलाखों के पार से मैंने एक विशाल, हल्के भूरे रंग की इमारत देखी, जो गंभीर और ठंडी थी, जिसके ऊपर एक बड़ा थाई झंडा लहरा रहा था। यह अदालत थी। वह जगह जहाँ सैद्धांतिक रूप से न्याय मिलता था। लेकिन थाईलैंड में हम पहले से ही जानते थे: न्याय कहीं और होता था। मेज़ों के नीचे सरकाए गए लिफाफों में, गुप्त रूप से किए गए सौदों में।

ट्रक अचानक रुक गया। सन्नाटा छा गया।
फिर एक पुलिसकर्मी ने अपनी लाठी से सलाखों पर जोर से प्रहार किया। क्लैंग क्लैंग क्लैंग।
"बाहर!"
दरवाजा चरमराते हुए खुला।
टोनी सबसे पहले बाहर निकला। वह एक पल के लिए हिचकिचाया, मानो उम्मीद कर रहा हो कि यह सब कोई लिपिकीय त्रुटि हो जो शायद बाद में ठीक हो जाए।
लेकिन कोई गलती नहीं हुई थी।
मार्को और मैं हथकड़ी पहने हुए उनके पीछे-पीछे चले, हमारी हरकतें बेढंगी और प्रतिबंधित थीं।
अवास्तविक।
यह स्थिति कैसे उत्पन्न हुई?
कुछ ही सप्ताह पहले हम स्वतंत्र और बेफिक्र थे। अब हमें युद्ध अपराधियों की तरह प्रदर्शित किया जा रहा था।
अधिकारी हमें एक चौड़े आंगन से ले गया जहाँ परिवार बाड़ के पीछे इंतजार कर रहे थे। औरतें रो रही थीं, बच्चे सलाखों को पकड़े हुए अपने पिताओं को पुकार रहे थे।
यह एक जीता-जागता दुःस्वप्न था।
अदालत के अंदर कोई न्यायाधीश मौजूद नहीं था।
कोई सुनवाई नहीं हुई। कोई कानूनी बहस नहीं हुई। मजिस्ट्रेट के सामने हमारे भाग्य पर चर्चा तक नहीं हुई।
इसके बजाय, हमें सीधे एक विशाल लोहे के पिंजरे में ले जाया गया और एक विशाल प्रतीक्षा कक्ष के केंद्र में रख दिया गया।
एक पिंजरा। चिड़ियाघर के जानवरों की तरह।
उन जंग लगी सलाखों के पीछे, कई कैदी पहले से ही इंतज़ार कर रहे थे—कुछ दीवारों से सटकर बैठे थे, कुछ खामोशी से, आँखों में खालीपन लिए बैठे थे।
उनमें थाई, कंबोडियाई, यूरोपीय लोग थे। कुछ ने तो अपनी किस्मत स्वीकार कर ली थी। अन्य लोग उसी दहशत से घिरे थे जो हमें अंदर ही अंदर खा रही थी।
ऊपर देखते ही मुझे हमारे प्रियजन दिखाई दिए।

हमारे परिवार एक अलग दीवार के पीछे खड़े थे। विरोधाभास स्पष्ट था: एक तरफ, कैदियों को जानवरों की तरह पिंजरे में बंद किया गया था; दूसरी तरफ, लोग अभी भी स्वतंत्र थे—लेकिन शक्तिहीन।
मेरी साथी वहीं थी, उसकी आँखें आँसुओं से सूजी हुई थीं। उसने मुस्कुराने की कोशिश की, लेकिन उसके चेहरे पर निराशा साफ झलक रही थी।
मुझे देखकर उसने पूछा, "आप कैसे हैं?"
उसकी आवाज कांप रही थी।
मैंने झूठ बोला, "मैं अभी भी टिका हुआ हूँ।"
उसने मेरे चेहरे को गौर से देखा, लेकिन मैंने नज़रें फेर लीं। मैं नहीं चाहती थी कि वह सच्चाई देखे: कि मैं अंदर से टूट रही थी।
पिंजरे से कुछ ही मीटर की दूरी पर, एक छोटी सी मेज को कैदियों के परिवारों के लिए एक वीआईपी बूथ में बदल दिया गया था।
यह एक ऐसा विशेषाधिकार था जिसकी कीमत चुकानी पड़ी।
एक गार्ड को गुपचुप तरीके से रिश्वत देकर, हमारे प्रियजन हमें खाना भेज सकते थे और निगरानी में हमसे थोड़ी देर बात कर सकते थे।
मेरे साथी ने चावल और तले हुए चिकन से भरा एक प्लास्टिक बैग दिखाते हुए कहा, "मैं खाना लाया हूँ।"
एक गार्ड ने पिंजरे का दरवाजा खोला और हमें हमारी थालियाँ थमा दीं।
गिरफ्तारी के बाद यह हमारा पहला असली भोजन था।
इसका स्वाद फीका था—लेकिन हमने चुपचाप खाना खाया, यह जानते हुए कि शायद यह लंबे समय तक बाहरी दुनिया से हमारा आखिरी संपर्क हो सकता है।
दो घंटे इंतजार करने के बाद भी, हमें रिहाई की उम्मीद अभी भी बाकी थी।
लिफ्ट, जिसे हमारा उद्धारकर्ता माना जा रहा था, को हमारी स्वतंत्रता के लिए बातचीत करनी थी।
“चिंता मत करो—हम इससे उबर जाएंगे,” मेरे साथी ने मुझे आश्वस्त किया।
“क्या आपको लिफ्ट से कोई खबर मिली?” मैंने धड़कते दिल से पूछा।
“हां…” वह हिचकिचाई। “वह कहता है कि उसे पूरी रकम चाहिए। कोई अग्रिम राशि नहीं।”
मेरा पेट खराब हो गया।
“उसे जाने मत दो! उसे फिर से फोन करो। मुझे यहाँ से निकलना होगा। सोचो, अगर मेरा अंत जेल में हुआ तो क्या होगा?”

उसने बेबसी से सिर हिलाया। उसी क्षण मुझे एहसास हुआ— हम अकेले थे।
तभी अचानक एक गार्ड ने पिंजरा खोला और चिल्लाकर कहा: "श्री टोनी रागिनो?"
टोनी चौंककर उछल पड़ा।
"हाँ?"
गार्ड ने उसे थाई भाषा में एक दस्तावेज दिया।
"यहाँ हस्ताक्षर कीजिए।"
हम दोनों एक दूसरे को देखकर अचंभित रह गए।
“यह क्या है?” टोनी ने इशारे से पूछा।
“तुम्हें रिहा करो,” गार्ड ने सपाट स्वर में उत्तर दिया।
ऐसा लगा जैसे टोनी के कंधों से एक बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो।
उन्होंने हमें विजयी भाव से देखा, उनकी आंखें आशा से चमक रही थीं।
“मैंने अपनी जमानत भर दी है, दोस्तों। मैं वादा करता हूँ—मैं बाहर से आपकी मदद करूँगा।”
मुझे विश्वास नहीं हो रहा था।
मैंने पूछा, "कैसे?"
मैंने लिफ्ट को अपना सब कुछ दे दिया।
सन्नाटा। अन्याय की आग सुलग रही थी।
वह क्यों, हम क्यों नहीं?
हम अभी भी यहाँ क्यों थे?
लेकिन वह क्षण ज्यादा देर तक नहीं टिक पाया।
एक घंटे बाद, कैदियों को ले जाने वाला एक ट्रक आकर रुका।
एक गार्ड ने पिंजरा खोला और टोनी की ओर मुड़ा।
ट्रक में बैठ जाओ।
टोनी का चेहरा पीला पड़ गया।
“रुको—नहीं! मैंने तो कागज़ पर हस्ताक्षर कर दिए हैं!”
“कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई है,” गार्ड ने सपाट लहजे में उत्तर दिया।
लेकिन मैंने भुगतान कर दिया! उन्होंने मुझसे कहा था कि मुझे रिहा किया जा रहा है!
गार्ड ने कंधे उचका दिए।

"क्षमा मांगना।"
और बस इसी तरह, हमें समझ आ गया।
वह दस्तावेज़ रिहाई का आदेश नहीं था—वह तो केवल जमानत के लिए एक अनुरोध था।
एक बेकार कागज का टुकड़ा। एक क्रूर भ्रम।
टोनी ने विरोध करने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने उसे ट्रक में धकेल दिया— बिल्कुल हमारी तरह।
"लानत है…"
उनकी उम्मीदें हमारी आंखों के सामने चकनाचूर हो गईं।
और इस तरह हम तीनों को जेल परिवहन वाहन में बिठा दिया गया।
गंतव्य: पटाया रिमांड जेल।
वह कुख्यात, भयावह जगह जिसके द्वार को पार करने की हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी।
लेकिन इस बार पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं होगा।

अध्याय 5: दीवार
जेल की वैन धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी, मानो जानबूझकर हमारी पीड़ा को बढ़ा रही हो। सड़क का हर झटका हमारे सीने पर भारी पड़ रहा था। हम चुपचाप बैठे रहे, धीरे-धीरे हममें से हर कोई इस बात की गंभीरता को समझ रहा था कि हमारे साथ क्या हो रहा है।
गाड़ी के अंदर का नजारा कूड़े का ढेर था। सड़े हुए खाने के टुकड़े, धातु के फर्श पर कुचले हुए सिगरेट के टुकड़े, कोनों में जमे हुए गहरे धब्बे जो करीब से देखने पर सूखे खून जैसे लग रहे थे। यह एक खामोश चेतावनी थी कि आगे क्या होने वाला है।
मैंने सामान्य रूप से सांस लेने की कोशिश की, लेकिन पसीने और नमी के दुर्गंधयुक्त मिश्रण से मुझे उल्टी आने लगी। मानव परिवहन के लिए बने वाहन को इतनी घिनौनी हालत में क्यों रखा गया था? उस समय मुझे समझ नहीं आया। यह मामूली सी लगने वाली बात बाद में कहीं अधिक स्पष्ट हो गई।
टोनी सदमे में था। कुछ ही मिनट पहले उसकी उम्मीदें चकनाचूर हो गई थीं, वह थोड़ा आगे-पीछे हिल रहा था और अस्पष्ट वाक्य बुदबुदा रहा था। "ऐसा नहीं हो सकता... मैंने हस्ताक्षर कर दिए थे... यह एक गलती है, वे मुझे रिहा करने वाले हैं..."
उसकी आवाज लगभग फुसफुसाहट जैसी थी, मानो वह आशा की आखिरी किरण से चिपटा हुआ हो।
दूसरी ओर, मार्को शांत रहा। वह तो आने वाली घटनाओं को लेकर उत्सुक भी लग रहा था। "चिंता मत करो," उसने टोनी से एक तरह के हास्यास्पद हल्केपन से कहा, जो किसी और संदर्भ में हास्यास्पद हो सकता था। "वे हमें कुछ दिनों के लिए एक गड्ढे में फेंक देंगे, फिर उन्हें एहसास होगा कि उन्होंने गड़बड़ कर दी है।"
मैंने अपने जबड़े भींच लिए। मार्को को अब भी किसी न किसी तरह के निष्पक्ष न्याय पर भरोसा था। लेकिन मैं बेहतर जानती थी। हम तो बस एक ऐसी जगह पर अजनबी थे जहाँ नियम हमारी रक्षा के लिए नहीं बने थे।
मेरे पास बैठा एक थाई कैदी चुपचाप अपनी कमर से एक पुराना फ्लिप फोन निकालकर बिना कुछ कहे मुझे थमा दिया। "जल्दी करो। एक संदेश भेजो।"

बिना सोचे-समझे, मैंने अपने साथी को आखिरी एसएमएस भेजा: "मुझे पटाया रिमांड में स्थानांतरित किया जा रहा है। वहां आकर मुझसे मिलो और वकील को सूचित कर दो।"
मैंने तुरंत मैसेज डिलीट कर दिया। किसी को पता नहीं चलना चाहिए था कि हमारे पास फोन था। उस आदमी ने मैसेज वापस ले लिया और ऐसे छिपा लिया जैसे कुछ हुआ ही न हो।
कुछ मिनट बाद, हम जेल के सामने रुक गए।
जब मैं अपने जीवन के उस दौर को याद करता हूँ, तो मुझे आज भी एक फ्रांसीसी कैदी के शब्द सुनाई देते हैं, जिसके साथ मैंने कैद के लंबे घंटे बिताए थे: "चाहे तुम उदास हो या खुश, दर्द में हो या मुस्कुरा रहे हो, दरवाजे जल्दी नहीं खुलेंगे। इसलिए बेहतर है कि तुम यहीं जीना सीख लो।" वह गलत नहीं था। दर्द कई रूपों में आता है, लेकिन सबसे क्रूर अक्सर वह होता है जो हमारी अपनी अपेक्षाओं से पैदा होता है।
हम सन्नाटे में बस से उतरे। हमारे सामने एक विशाल, भूरे रंग का किला खड़ा था, जिसकी दीवारें मानो द्वार पार करने से पहले ही हमें कुचल देंगी। एक बड़े बोर्ड पर लिखा था, "पटाया रिमांड जेल।" यह अब कोई अफवाह या फिल्मी कहानी नहीं थी। हम यहाँ थे।
लगभग बीस पुरुषों का एक समूह फटे-पुराने कपड़ों में नंगे पैर आंगन में खड़ा था। उनके चेहरे थकान और हताशा से भरे हुए थे। कुछ दीवार के सहारे झुके हुए थे, जबकि अन्य हमें एक अजीब तरह की जिज्ञासा से देख रहे थे। "इन्हें देखो... ताजा शिकार।"
सख्त चमड़ी वाले एक कैदी ने हमें देखते हुए ज़ोर से हँसा। उस मुस्कान में ज़रा भी दोस्तानापन नहीं था। हम शिकार थे।
“बैठ जाओ।” खाकी वर्दी पहने एक गार्ड ने, जिसकी लाठी लापरवाही से उसके कंधे पर टिकी थी, जमीन की ओर इशारा किया। हमने आज्ञा का पालन किया।
पालथी मारकर बैठने पर जमीन से हमारे पैर झुलस गए। जलती हुई सड़क की गर्मी हमारी त्वचा को झुलसा रही थी, लेकिन किसी ने शिकायत करने की हिम्मत नहीं की।
एक और गार्ड प्रकट हुआ—पहले से बड़ा, भारी। उसके कंधे पर तीन सितारे थे।
उसका चेहरा ठंडा और भावहीन था, लेकिन उसकी निगाहों ने कोई संदेह नहीं

छोड़ा: यहाँ हम कुछ भी नहीं थे। वह थाई भाषा में बोलने लगा। लंबा। बहुत लंबा।
हममें से किसी को एक शब्द भी समझ नहीं आया, लेकिन हम महसूस कर सकते थे कि वह नियम बना रहा था।
बाकी कैदी हिले-डुले नहीं। कुछ फर्श को घूर रहे थे, कुछ ने सिर हिलाया। मेरे बगल में, मार्को ने धीमी आवाज़ में कहा: "अगर किसी को यह समझ आ रहा है, तो हमें कोई संकेत दो..."
पास ही में एक कंबोडियाई कैदी ने फुसफुसाते हुए कहा: “वह कहता है कि अगर तुमने किसी गार्ड को छुआ तो वे तुम्हें हथकड़ी लगा देंगे। अगर तुमने चोरी की तो वे तुम्हें पीटेंगे। अगर तुमने कोई गड़बड़ की… तो तुम गायब हो जाओगे।” सरल। कारगर। क्रूर।
हमें इसे समझने का मुश्किल से ही समय मिला था कि एक गार्ड ने ताली बजाई। "उठो!"
हमने बिना किसी हिचकिचाहट के उनका अनुसरण किया। हमारे गीले कपड़े हमारी पसीने से तर त्वचा से चिपक गए थे, और हमारी पीठ पर बड़े-बड़े गीले धब्बे बन गए थे।
पहला द्वार खुला। धातु की खड़खड़ाहट अंतिम रूप से गूंज उठी। हम अभी-अभी एक दूसरी दुनिया में प्रवेश कर चुके थे।
वे हमें एक स्वागत कक्ष में ले गए। दीवारें हल्के पीले और नीले रंग से रंगी हुई थीं, मानो किसी ने इस नौकरशाही दुःस्वप्न को स्वागतयोग्य बनाने की कोशिश की हो। लेकिन सच्चाई को कोई नहीं छुपा सकता था।
समझ से परे आदेशों की सूची के बाद छाई खामोशी में, मेरे विचार अनिश्चित भविष्य की ओर भटक गए। मैं जानता था कि यह जगह चाहे कितनी भी कठोर क्यों न हो, हमें यहाँ जीवित रहना सीखना होगा; इस नए प्रकार के कष्ट को स्वीकार करना होगा, जो हमारे दैनिक जीवन में धीरे-धीरे प्रवेश करता है और निराशा और बेतुकेपन पर पनपता है। और शायद, एक दिन, इस पर हंसने की हिम्मत भी मिल जाए... भले ही, फिलहाल, एकमात्र रास्ता स्वतंत्रता के भ्रम और हमारी कैद की क्रूर वास्तविकता के बीच टकराव से पैदा हुए कड़वे हास्य में ही निहित प्रतीत होता हो।
यह वह कमरा भी था जहाँ कैदियों को अदालत में ले जाने से पहले हथकड़ी लगाई जाती थी। पीछे की तरफ, एक अजीब सी धातु की मशीन भयावह रूप से खड़ी थी। यह

किसी मध्ययुगीन कालकोठरी के यातना यंत्र जैसी लग रही थी। हमने उस समय इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। लेकिन बाद में, हम समझ गए।
सफेद पोलो शर्ट पहने कुछ आदमी तैयार खड़े थे: पाउचुए। भरोसेमंद कैदी। जेल व्यवस्था के वफादार प्रवर्तक, बिना किसी हिचकिचाहट के आदेशों का पालन करते हुए। उनमें से एक, जिसका सिर मुंडा हुआ था, ने खाली भाव से हमारी ओर देखा। "कपड़े उतारो।" यह आदेश हवा में एक अपरिवर्तनीय सजा की तरह गूंज उठा। किसी ने विरोध करने की हिम्मत नहीं की।
एक-एक करके हमने अपनी गरिमा के अंतिम अंशों को भी त्याग दिया।
जन्म के दिन की तरह नग्न, हमें उकड़ू बैठना पड़ता था, खांसना पड़ता था, फिर झुककर अपने नितंब फैलाने पड़ते थे।
कोई शर्म नहीं। कोई निजता नहीं।
बस एक सुव्यवस्थित मशीन, बिना एक शब्द बोले, बिना एक नज़र डाले चलती रहती थी।
वे लोग व्यवस्थित थे। उन्होंने हमें नैदानिक तटस्थता से परखा। हम अब पुरुष नहीं रहे थे। हम निरीक्षण के लिए शरीर थे, मांस के टुकड़े थे जिन्हें यह साबित करना था कि हम कुछ भी नहीं छिपा रहे हैं।
इस रस्म के तौर पर की गई अपमानजनक कार्रवाई, जिसे बेरहमी से अंजाम दिया गया, ने किसी भी प्रतिरोध की गुंजाइश नहीं छोड़ी। ये पाउचुए, जो गार्डों और व्यवस्था के प्रति कट्टर रूप से वफादार थे, ने विद्रोह की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी; उनमें से किसी एक को रिश्वत देना केवल मामूली एहसानों के लिए ही संभव था, इससे अधिक कुछ नहीं।
यह प्रक्रिया अनिश्चित काल तक चलती रही।
जब आखिरकार यह सब खत्म हुआ, तो उन्होंने हमें खुरदुरे कैनवास के कपड़े दिए: फटे-पुराने जेल के कपड़े, एक फीका, गंदा नीला रंग। उनमें पसीने और कैद की बदबू आ रही थी। हमने बिना किसी झिझक के उन्हें पहन लिया, बस अपनी खुली त्वचा को ढकने के लिए आभारी थे।
हममें से प्रत्येक को एक धातु की ट्रे दी गई। उसके अंदर एक पीला तरल पदार्थ था जिसमें चिकन की एक हड्डी तैर रही थी। उसके बगल में, चावल का एक अधिक पका हुआ टुकड़ा और कुछ पहचान न आने वाली रेशेदार हरी सब्जियां थीं, जो कड़वी और रबर जैसी थीं। यह एक भयावह दृश्य था।

मैंने थाली को घूर कर देखा, भूख गायब हो चुकी थी। टोनी मेरी ओर झुका, उसका चेहरा घृणा से जम गया था। "क्या हमें इसे खाना है?"
मार्को ने बस कंधे उचकाए और अपनी उंगलियाँ चावल में गड़ा दीं। "जिंदा रहना है यार।"
उसने एक निवाला मुंह में डाला, धीरे-धीरे चबाया, फिर मुंह बनाया। "धत् तेरे की... इसका स्वाद तो ऐसा है जैसे किसी कूड़ेदान में तीन दिन से पड़ा हुआ हो।" लेकिन उसने उसे निगल लिया।
मैंने गहरी सांस ली और वही किया। सूप का स्वाद बासी था, चिकन की हड्डी सिर्फ चिपचिपी उपास्थि थी, सब्जियों का टेक्सचर रबर जैसा था। मुझे इसे जबरदस्ती निगलना पड़ा।
हम पहुँच चुके थे। अब हम कैदी थे।
भोजन के बाद, हम एक कतार में, पहरेदारों और गार्डों की सुरक्षा में चले। हम जेल की इमारतों से घिरे एक लंबे रास्ते पर आगे बढ़े, जो कांटेदार तारों से घिरी जालीदार बाड़ों से अलग किए गए थे।
हमारे बाईं ओर, भवन संख्या 3 में पुस्तकालय था। कैदी पहले से ही हमें देख रहे थे। उनके दुबले-पतले चेहरे, बाड़ से टिके हुए उनके विशाल टैटू वाले शरीर, लगभग पशुवत जिज्ञासा से हमें निहार रहे थे। कोई नहीं बोला। न कोई धमकी थी, न कोई उपहास: बस एक गहरी चुप्पी थी जो अनकहे विचारों से भरी थी। हम नए थे। ताजा शिकार। और इस दुनिया में जहाँ मनुष्य पशुवत हो जाता है, हर नए आने वाले को घूरती निगाहों का सामना करना पड़ता है।
हम बिल्डिंग 4 से आगे बढ़े, फिर एक चौराहे पर पहुँचे। दाईं ओर, एक रास्ता कैंटीन और बिल्डिंग 6 की ओर जाता था। परिसर के बीच में, एक खुला मैदान था।
आगे बढ़ने पर, बिल्डिंग 1 और 2 थीं - एक महिलाओं की जेल के लिए, दूसरी एक प्रकार का जेल अस्पताल, जो पूरे परिदृश्य में एक भयावह परत जोड़ता था।
हमारे सामने बिल्डिंग 5 खड़ी थी।
हमारा नया घर।
अचानक, विशालकाय दोहरे स्टील के दरवाजे चरमराते हुए खुले, जिससे आंगन दिखाई दिया। सैकड़ों लोग बाड़ से चिपके हुए थे, हमारे आगमन को देख रहे थे।
सफेद पोलो शर्ट पहने कैदी दौड़कर आए और हमें एक तरफ हटने का आदेश दिया।
एक-एक करके, हमें कुख्यात मगशॉट फोटो सेशन के लिए बुलाया गया: हमारे बुरे सपने की आधिकारिक शुरुआत।

“यह तुम्हारा पासपोर्ट है, इसलिए खुलकर मुस्कुराओ,” एक कैदी ने टोनी से मजाक किया, जिसने अपनी घबराहट को एक चिड़चिड़े चेहरे से छिपाने की कोशिश की।
“ये लोग उन लोगों के लिए इतना बड़ा तमाशा कर रहे हैं जो शायद ज्यादा दिन तक टिक भी नहीं पाएंगे,” मार्को ने आधे मज़ाक और आधे हताशा के साथ बुदबुदाया। अफरा-तफरी के बीच, एक दयालु चेहरे वाला कैदी हमारे पास आया और मुस्कुराते हुए हमें कोला की एक बोतल भेंट की। "लो, इससे शायद तुम्हें थोड़ा आराम मिल जाए," उसने धीरे से कहा।
उस छोटे, अप्रत्याशित इशारे ने उस दुनिया में क्षणिक राहत प्रदान की जहाँ हम पहले से ही पिंजरे में बंद जानवरों की तरह महसूस कर रहे थे; ठंडी, भेदक निगाहों से देखे, विश्लेषण किए और तस्वीरें खींचे जा रहे थे। अन्य कैदी हमें उस परिचित आकर्षण से घूर रहे थे जो नए मांस में हमेशा देखने को मिलता है। समय के साथ, मैंने इस रस्म को उसके वास्तविक स्वरूप में देखना शुरू कर दिया। दिनचर्या का एक अपरिहार्य, निंदनीय हिस्सा।
अंतहीन फोटो सेशन के बाद, हमें इमारत के कमांडर के कार्यालय में ले जाया गया।
वहाँ बैठे हुए, दिल की धड़कनें तेज़ थीं, हमने उनका संक्षिप्त स्वागत भाषण सुना।
“पटाया रिमांड में आपका स्वागत है,” उन्होंने गहरी आवाज़ में कहा। “यहाँ आप जल्द ही सीख जाएँगे कि सम्मान कमाया जाता है। हमारे नियम भले ही सख्त हों, लेकिन वे आपकी सुरक्षा के लिए ही बनाए गए हैं।”
उनके शब्द आंगन की भारी हवा में गूंजते रहे, जिससे हमारे मन में व्याप्त भय को कम करने में कोई खास मदद नहीं मिली।
और इस तरह इस शत्रुतापूर्ण दुनिया में हमारा पतन शुरू हुआ: स्वागत कक्ष में गर्माहट के भ्रम से लेकर अपमानजनक तलाशी तक, हर छोटी से छोटी बात हमें याद दिला रही थी कि हम अभी-अभी नरक के द्वार से गुज़रे हैं। उन पहले पलों की घूरती निगाहें, घुटन भरी चुप्पी और क्रूर विडंबना हमारी यादों में अंकित हो गईं, जो पटाया रिमांड जेल के क्रूर, निर्दयी ब्रह्मांड में अपरिहार्य पतन के संकेत थे।
फिर अचानक, उस शोरगुल के बीच से एक आवाज़ उठी, जिसने हमारी तनावपूर्ण चुप्पी को तोड़ दिया: "अरे! तुम लोग फ्रांसीसी हो? तुम लोग फ्रांसीसी हो??"

थाई भाषा के शोरगुल और आदेशों के बीच उन शब्दों को सुनकर मैं चौंककर सिर ऊपर उठा लिया। "हाँ! हाँ, क्या आप हैं?" मैंने थोड़ी जल्दी में जवाब दिया, मानो वह एक संपर्क हमें किसी परिचित वास्तविकता से जोड़ देगा। "हाँ! हम मार्सिले से हैं! कल बात करेंगे। नरक में आपका स्वागत है!"
वह आखिरी पंक्ति आधी मजाक थी, आधी चेतावनी। उसमें सब कुछ समाहित था। मुझे समझ नहीं आया कि उसने "कल" क्यों कहा, दोपहर के मुश्किल से 2 बजे थे, लेकिन यह जानकर कि अन्य फ्रांसीसी यहाँ बच गए थे, मुझे आशा की एक किरण मिली। वे जीवित थे, और उन्होंने टिके रहने का तरीका खोज लिया था।
अचानक, एक तेज, तीखी और आदेशात्मक आवाज में बज उठा।
मानो किसी अनकही आज्ञा ने हवा में हलचल मचा दी हो, पूरा प्रांगण पल भर में खाली हो गया। कैदी बिना एक शब्द कहे, बिना किसी प्रतिरोध के इमारत में गायब हो गए। हम ही बचे थे—स्थिर, भ्रमित, एक ऐसी व्यवस्था के दर्शक जिसे हम अभी तक समझ नहीं पाए थे।
एक तीखे इशारे से हमें शावर की ओर जाने के लिए कहा गया।
अचानक, एक तेज़ बजर बजा, और पलक झपकते ही, पूरा आंगन सुनसान हो गया, चारों ओर एक गहरी, लगभग अवास्तविक खामोशी छा गई। कुछ ही क्षणों बाद, हमें इमारत के अंदर नहाने की अनुमति मिल गई।
"शॉवर" बाहर था। एक लंबा कमरा जिसकी छत से पीवीसी पाइप लटक रहे थे, जिनमें छोटे-छोटे छेद थे। उन छेदों से पानी की पतली धाराएँ टपक रही थीं, इतनी कोमल कि वे लगभग एक अमूर्त पैटर्न बना रही थीं: बस इतना पानी कि पाँच-पाँच कैदियों की चार पंक्तियाँ एक साथ नहा सकें।
"इसे देखो, यह तो एक सूक्ष्म वर्षा की तरह है," टोनी ने आधे आश्चर्य और आधे अविश्वास के साथ फुसफुसाते हुए कहा।
हवा उमस भरी और चिपचिपी थी, नमी लगभग महसूस की जा सकती थी। रुके हुए पानी के साथ पसीने की गंध ने पूरे माहौल को और भी घुटन भरा बना दिया था। हम बाकी कैदियों की चोरी-छिपे निगाहों से असहज होकर अजीब तरह से कपड़े उतार रहे थे।
मैं पानी की पतली धार के नीचे खड़ा हो गया और बर्फीले पानी को अपनी गर्दन पर गिरने दिया। यह बहुत दर्दनाक था। ठंड से मेरा शरीर कांप उठा। न साबुन, न एकांत। बस जमा देने वाला पानी, दिन भर के डर और अनिश्चितता को धोने की कोशिश कर रहा था।

यह हमारे द्वारा बहुत लंबे समय तक लिया गया सबसे शांत और सबसे लंबा स्नान था।
हमें एक विशाल इमारत में ले जाया गया, जो कच्ची कंक्रीट से बनी एक बहुमंजिला इमारत थी, जिसकी खिड़कियाँ मोटी, जंग लगी सलाखों से बंद थीं। जब भारी दरवाजा खुला, तो दम घोंटने वाली गर्मी की एक लहर ने हमें जकड़ लिया। हवा घनी थी, नमी से भरी हुई थी और उसमें फफूंद की दुर्गंध फैली हुई थी। प्रवेश कक्ष एक खाली कंक्रीट का डिब्बा था: न गद्दा, न आराम, न राहत। दीवार पर ऊँचाई पर लगा एक छोटा सा टीवी कोई समझ से परे थाई कार्यक्रम चला रहा था, जबकि एक थका हुआ पंखा गर्म, बासी हवा को इधर-उधर कर रहा था। बीच में एक खुला हुआ शौचालय था। उसके बगल में पानी की एक 20 लीटर की बाल्टी थी, जो रात के लिए हमारा एकमात्र सहारा था।
कमरे को संभवतः बीस कैदियों को रखने के लिए डिज़ाइन किया गया था, लेकिन इसकी क्षमता इस बात पर निर्भर करती थी कि अभी कौन अंदर आया है, कभी यह खाली होता था, कभी खचाखच भरा होता था।
वहाँ पहले से ही एक अलिखित पदानुक्रम स्थापित था। प्रभावशाली कैदी, कर्मचारी और विशेष रूप से सफेद पोलो शर्ट पहने कुख्यात 'पुचोई' (भरोसेमंद कैदी) सबसे अच्छी जगहों पर कब्जा जमा लेते थे, जो आमतौर पर टीवी के पास होती थीं, और उन्हें स्वतः ही सम्मान मिलता था।
एक कैदी, जो स्पष्ट रूप से नियमित कैदी था, हमारे पास आया। उसने हमें ऊपर से नीचे तक देखा, फिर कोठरी के पीछे की ओर इशारा किया।
"वहाँ पर।"
कोई निर्धारित बिस्तर नहीं, कोई विकल्प नहीं। नए आने वाले लोग पीछे, सख्त ज़मीन पर, मवेशियों की तरह ठसाठस भरे हुए सोते थे।
हमें दो पतले कंबल दिए गए।
“एक जमीन पर, एक खुद को ढकने के लिए। अगर ठंड लग रही है, तो मुश्किल है,” एक अन्य कैदी ने टेढ़ी मुस्कान के साथ बुदबुदाया।
मैं अपने कंबल पर लेट गया, नीचे कंक्रीट की हर ऊबड़-खाबड़ और दरार को महसूस कर रहा था। मैं बार-बार खुद से कह रहा था कि यह बस कुछ समय के लिए है, हम जल्द ही बाहर निकल जाएंगे। लेकिन हम वास्तव में यहाँ कब तक फंसे रहेंगे?

उस रात हम भाग्यशाली रहे: नए आने वालों की संख्या बीस से अधिक नहीं थी, जिसका मतलब था कि हममें से प्रत्येक को सोने के लिए लगभग एक वर्ग मीटर जगह मिल गई थी।
एक आदमी पास आया। उसके शरीर पर बने टैटू उसके अतीत का नक्शा बयां कर रहे थे। वह विशालकाय था, बिना शर्ट के था, और उसके शरीर पर जनजातीय डिज़ाइन और थाई प्रतीक बने हुए थे।
वह उस सेल का सरगना था।
उसकी निगाहें हम सब पर एक-एक करके टिकती रहीं। वह एक शिकारी की तरह अपने शिकार को परखते हुए हमारे चेहरों और शरीरों को गौर से देखता रहा।
उसका नाम जेट था। उसकी आँखें तेज और तीव्र थीं।
उनकी आवाज़, दृढ़ और भयावह रूप से ठंडी, एक-एक करके हमसे पूछताछ करने लगी: "आप कहाँ से हैं? आपने क्या किया?"
उस कोठरी की अंतरंगता में, हमें पता चला कि हर नए कैदी का एक अनौपचारिक "मूल्यांकन" होता था, जो अपने आप में एक विकृत न्याय प्रणाली थी। दबी आवाज़ में और घोर निराशावाद के साथ, किसी ने हमें "सामूहिक बलात्कार" के दोषी दो पुरुषों की कहानी सुनाई। औपचारिक रूप से सज़ा सुनाए जाने से पहले ही, उन्हें पूरी रात एक-दूसरे के साथ यौन संबंध बनाने के लिए मजबूर किया गया, एक घिनौनी सज़ा जिसका मकसद उन्हें "उनकी गलती का प्रायश्चित" कराना था। विडंबना यह थी कि वे दोनों निर्दोष निकले। दो महीने जेल में और अमानवीय स्वागत का आघात। यही उनकी एकमात्र सज़ा थी।
टोनी और मार्को ने मेरी तरफ एक नज़र डाली। मैं समझ गया कि हमें सोच-समझकर जवाब देना होगा, झिझकना नहीं, कमजोरी का कोई संकेत नहीं। मैं आगे बढ़ा और जितना हो सके आत्मविश्वास से बोला।
“नकली नोट। हमने नकली यूरो छापे और उन्हें प्रचलन में लाया। कोई हिंसा नहीं हुई।”
सेल के मुखिया ने अपनी भौंहें उठाईं, फिर हल्की सी मुस्कान बिखेरी।
“अरे वाह... धोखाधड़ी, है ना? हिंसा की जगह बुद्धि का इस्तेमाल। यह तो सराहनीय है।”
उसका पूरा हावभाव एकदम सहज हो गया, मानो हमने कोई अदृश्य परीक्षा पास कर ली हो। उसने हल्की सी हंसी भी हंसी और आसपास के अन्य कैदियों की ओर देखा।

“ये लोग, हम इन्हें हाथ नहीं लगाते। बस कुछ होशियार बच्चे हैं, बदमाश नहीं।”
कमरे में सहमति की लहर दौड़ गई। हमें अभी-अभी "स्वीकार्य" कैदियों की श्रेणी में रखा गया था। कोई उत्पीड़न नहीं, कोई अपमान नहीं। बस कुछ उत्सुक निगाहें, कोई शत्रुतापूर्ण रवैया नहीं। मुझे लगा जैसे मेरे कंधों से एक बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो।
“क्या तुम्हें भूख लगी है?” बॉस ने खड़े होते हुए पूछा।
हमने सिर हिलाया। उसने किसी को इशारा किया, और एक कैदी खाने से भरी बाल्टी लेकर आया। चावल, आधी कुतरी हुई चिकन की हड्डी और कुछ ज़्यादा पकी हुई सब्ज़ियों का बेतरतीब मिश्रण। देखने में स्वादिष्ट नहीं लग रहा था, लेकिन गर्म था, और कुछ तो था।
सिर्फ मैंने ही खाना खाया। टोनी और मार्को दीवार से सटकर चुपचाप बैठे थे, उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं था, सिगरेट उनके होठों से लटक रही थी। वे धीरे- धीरे सिगरेट पी रहे थे, मानो किसी वास्तविक चीज़ से खुद को जोड़ रहे हों। ये सिगरेट उन फ्रांसीसी लोगों के पैकेट से थीं जिन्होंने पहले हमारा स्वागत किया था। एक छोटा सा इशारा, जो इस दुनिया में सोने के बराबर था।
हर किसी ने इस भयावह स्थिति को अपने-अपने तरीके से समझा। कोई कुछ नहीं बोला। खामोशी ने हमारे लिए बोल दिया।
रात जल्दी ही हो गई। हम सीधे कंक्रीट पर लेट गए, एक कंबल को गद्दे की तरह और दूसरे को अपने ऊपर ओढ़ने के लिए इस्तेमाल किया। थकावट के बावजूद नींद नहीं आई। कोठरी में हर आवाज़, हर हलचल मुझे बेचैन कर रही थी। फिर भी, एक ही विचार मेरे दिमाग में बार-बार आ रहा था: यह सब बस कुछ समय के लिए है। हम जल्द ही यहाँ से निकल जाएँगे।
सुबह बहुत जल्दी हो गई।
सुबह 6 बजे, जेल की कोठरियों के खुलने की धातु की खड़खड़ाहट गूंज उठी।
इमारत में हलचल मच गई। दर्जनों कैदी बाहर भागे, कुछ नहाने के लिए गए, तो कुछ 10 लीटर की बाल्टियाँ लेकर आंगन के एक कोने की ओर दौड़ पड़े।
हम असमंजस में पड़कर यह सारा दृश्य देखते रहे।
“ये लोग आखिर कर क्या रहे हैं?” मार्को ने पूछा।
टीवी के पास सुस्त मुद्रा में बैठा सेलफोन बॉस ने मुस्कुराते हुए अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।

"हकीकत में आपका स्वागत है, लड़कों। अगर आपको नहाने के लिए पानी चाहिए, तो इसके लिए लड़ना ही पड़ेगा।"
हम भीड़ के पीछे-पीछे चलते हुए सुबह-सुबह एक खाली आंगन से गुज़रे। दूर से हमने अपने साथी फ्रांसीसी नागरिक स्वान और अब्देल को एक दूसरे आश्रय स्थल से हमें हाथ हिलाते हुए देखा।
"चलो दोस्तों! हमें कुछ बातें समझानी होंगी।"
भवन संख्या 5, हमारा नया "घर", एक विशाल और भयावह इमारत थी। संभवतः 200 कैदियों के लिए निर्मित, इसमें वास्तव में 1400 से अधिक लोग रहते थे। अत्यधिक भीड़भाड़ दम घोंटने वाली थी। दीवारें फीकी, फफूंदी लगी हुई धूसर थीं, जिनमें सीलन भरी हुई थी। एक के बाद एक कतारों में उकड़ू शौचालय लगे थे, न कोई अलग-अलग स्टॉल थे, न कोई विभाजक, बस पुरुष अपना काम करते थे और बाकी लोग देखते रहते थे। निजता नाम की कोई चीज नहीं थी। यह अब एक दूर की याद जैसी लगने लगी थी।
हम स्वान और अब्देल के साथ एक छोटी सी छत के नीचे बैठ गए। उन्हें यहाँ आए एक महीना हो गया था, जिससे हमें लगा कि वे अनुभवी हैं। वे काफी शांत और सहज दिख रहे थे।
ज़मीन पर गंदे पानी की पतली परत बिछी हुई थी, संभवतः सार्वजनिक स्नानघरों से आया पानी। चूहे इधर-उधर बेपरवाह होकर दौड़ रहे थे। छत में छोटे-छोटे छेद थे जिनसे दुर्गंधयुक्त हवा अंदर आ रही थी, लेकिन गर्मी दम घोंटने वाली थी।
“तुम्हें जल्दी सीखना होगा,” अब्देल ने हमसे कहा। “खाना घटिया है, नियम स्पष्ट नहीं हैं, और अगर तुमने कोई गलती की तो तुम्हें तुरंत पता चल जाएगा।”
“तो… अब तुम्हें अपनी असलियत का एहसास होने लगा है?” स्वान ने मजाक में कहा।
मैंने जवाब दिया, "अभी पूरी तरह नहीं। लेकिन हमें धीरे-धीरे स्थिति समझ में आने लगी है।"
वे हँसे, फिर अपनी कहानी सुनाने लगे। क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी के आरोप में पकड़े जाने के बाद, वे फ्रांस में कार्ड चुराते थे, उनकी नकल बनाते थे और थाईलैंड में राजाओं की तरह खर्च करते थे। संगठित अपराध में माहिर। यह कोई संयोग नहीं था। यह कोई गलती नहीं थी।

यह उनका निजी मामला था।
और जेल? यह तो बस ऐसा करने की कीमत का एक हिस्सा है।
हम मंत्रमुग्ध होकर सुनते रहे। ये लोग फिल्मों में दिखने वाले अपराधियों जैसे लग रहे थे, जिनके बारे में आप सुनते तो हैं लेकिन जिनसे कभी मिलते नहीं। और फिर भी, वे ठीक हमारे बगल में, उसी नरक में फंसे हुए थे।
“ठीक है, बहुत बातें हो गईं,” अब्देल ने आगे कहा। “यहाँ कुछ नियम हैं जिनका आपको पालन करना होगा। सबसे पहले, दाढ़ी और बाल रखना मना है। अगर कमांडर दो उंगलियों के बीच आपके बाल का एक गुच्छा भी पकड़ ले, तो आपको सीधे तहखाने में भेज दिया जाएगा।”
“सचमुच?” मैंने पूछा।
स्वान ने सिर हिलाया।
"बिल्कुल सच। चलो, हम तुम्हें बिल्डिंग के नाई के पास ले जा रहे हैं।"
वह "नाई" एक कैदी था जिसे कोने में एक पुराने ज़माने की बिजली की कैंची से खड़ा किया गया था। कुछ ही मिनटों में हमारे सिर मुंडे हुए थे। अपने बालों को ज़मीन पर गिरते देख मुझे एक अजीब सा एहसास हुआ, जैसे मेरा सब कुछ छिन गया हो, जैसे सिर्फ़ आज़ादी ही नहीं, बल्कि मेरी पहचान भी छिन रही हो।
जब हम वहां से बाहर निकले, तो वास्तविकता ने हमें पेट में मुक्के की तरह जोरदार झटका दिया।
हम आधिकारिक तौर पर कैदी थे। सिर्फ अस्थायी आगंतुक नहीं। सिर्फ जल्दी रिहाई की प्रतीक्षा करने वाले लोग नहीं।
हम अंदर थे। और किसी को नहीं पता था कि हम कब बाहर निकलेंगे।
इस जगह पर, जहाँ हर हावभाव, हर नियम एक क्रूर व्यवस्था को कायम रखने के लिए सोच-समझकर बनाया गया प्रतीत होता था, हम अपने नए जीवन की बेरहम वास्तविकता को समझने लगे थे। अपमानजनक पूछताछ, घटिया भोजन और हमारे पहनावे पर लगे सख्त नियमों के बीच, हर पल हमें याद दिलाता था कि हम सिर्फ एक इमारत के कैदी नहीं थे, बल्कि एक निर्दयी व्यवस्था के कैदी थे जो हमें धीरे-धीरे तोड़कर, हमारी कमजोरियों का फायदा उठाकर फलती-फूलती थी।

अध्याय 6: डी5 का निर्माण
पटाया रिमांड जेल की मुख्य इमारत वर्षों की उष्णकटिबंधीय नमी के कारण जर्जर हो चुकी धूसर कंक्रीट की एक विशाल संरचना थी। बाहर से देखने पर यह एक आत्माहीन स्तंभ जैसी लगती थी: जंग लगे कांटेदार तारों और बिखरे हुए पहरेदार टावरों से घिरी एक ठंडी, कठोर संरचना। अंदर जाते ही इसकी जर्जरता भयावह रूप से स्पष्ट हो जाती थी। टूटी हुई सीमेंट की पट्टियों से बना फर्श भूरे धब्बों और रुके हुए पानी के गड्ढों से भरा हुआ था। अंधेरे कोनों से घुटन भरी दुर्गंध आ रही थी, जो फफूंद, पेशाब और बिना धुले शवों की मिली- जुली गंध थी।
इमारत में चार मंजिलें थीं, जिनमें से प्रत्येक में मोटी, काली धातु की सलाखों के पीछे कतारों में बनी कोठरियाँ थीं। प्रवेश कक्ष, जहाँ हमें रखा गया था, भूतल पर था। नीची छत ने सब कुछ और भी घुटन भरा बना दिया था, जिससे पूर्ण कैद की अनुभूति और भी तीव्र हो गई थी।
इमारत के बाईं ओर एक आंगन फैला हुआ था, एक संकरा सा स्थान जो देखने में भले ही मामूली लगे, लेकिन कैदियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। यह आंगन एक तरह से उनका अपना इलाका था, एक स्वायत्त क्षेत्र जहाँ प्रत्येक समूह, प्रत्येक "परिवार" अपना क्षेत्र स्थापित करता था। इन "घरों" को लटकते कंबलों, अस्थायी गद्दों और कपड़े के टुकड़ों से चिह्नित किया जाता था, जो प्रतीकात्मक सीमाओं का काम करते थे। एक बार किसी समूह द्वारा किसी स्थान पर अपना अधिकार जमा लेने के बाद, वह पवित्र हो जाता था, जहाँ अलिखित नियम और नाजुक गठबंधन कायम रहते थे।
आंगन के ठीक सामने एक विशाल कंक्रीट की दीवार खड़ी थी, जो किसी भी दृश्य को अवरुद्ध कर रही थी और केवल कुछ ही सूर्य की किरणें अंदर आने दे रही थी। लगभग दस मीटर ऊंची वह दीवार इस बात की निरंतर याद दिला रही थी कि भागना संभव नहीं था। पास ही में, जंग लगी टिन की एक छोटी सी झोपड़ी जेल के नाई की दुकान के रूप में काम करती थी। वहीं पहुँचते ही हमने चिपचिपे बालों और गंदगी के बीच, एक कैदी की उदासीन निगाहों के नीचे, एक पुराने जमाने के हेयर क्लिपर से अपने बाल मुंडवाए।
मुख्य भवन के पीछे एक विशाल खुला क्षेत्र फैला हुआ था, जो कंक्रीट के ब्लॉकों के ढेर और नालीदार धातु की छतों से भरा हुआ था। यह लेडीबॉयज़ का इलाका था, जो ट्रांसजेंडर कैदी थे और जिन्होंने अपने स्थान को लगभग सैन्य

सटीकता के साथ व्यवस्थित किया था। उनके "घर" जो कुछ भी उन्हें मिलता था, उससे सजाए गए थे: रंगीन कपड़े, अस्थायी वेदी, यहाँ तक कि दीवारों पर लटके टूटे हुए दर्पण भी।
मुख्य प्रवेश द्वार के सामने प्रवेश द्वार था, जो जंग लगा लोहे का बना एक द्वार था और अक्सर गाड़ियों और बाल्टियों से अवरुद्ध रहता था। इसके बगल में एक छोटी सी झोपड़ी थी जो पहरेदार चौकी और भवन पर्यवेक्षक के कार्यालय का काम करती थी। पास ही एक छोटे से गलियारे में दो पुराने फ्रिज रखे थे, जिनका इस्तेमाल ठंडे पेय या बर्फ खरीदने में सक्षम कैदी ही कर सकते थे। यहीं से भोजन की आपूर्ति भी होती थी, एक जटिल व्यवस्था जहाँ भुगतान और मोलभाव ही एक अच्छा भोजन पाने के एकमात्र तरीके थे।
इमारत के दाईं ओर वह जगह थी जिससे हमें सबसे ज़्यादा डर लगता था: शौचालय और स्नानघर। एक कतार में बीस छोटे शौचालय थे, जिनमें कोई विभाजन नहीं था, और उन्होंने एक घिनौना आयताकार बना रखा था। फर्श हमेशा गीला रहता था और उस पर गहरे रंग का फिसलन भरा कीचड़ जमा था। कोनों में मानव मल जमा था, जिस पर मक्खियों का झुंड मंडराता रहता था। बदबू असहनीय थी, जिससे हर बार शौचालय जाना किसी यातना से कम नहीं था। यहाँ कोई निजता नहीं थी: आपको अपना काम दूसरे कैदियों की निगाहों के सामने करना पड़ता था, जो हँसने या टिप्पणी करने में ज़रा भी संकोच नहीं करते थे।
उस भयानक मंजर के ठीक बगल में, शावर थे। छत से लटकी पीवीसी पाइपों से बना एक साधारण सा ढांचा, जिसमें छोटे-छोटे छेद थे जिनसे ठंडा पानी निकलता था। पूरे सिस्टम को एक "शावर बॉस" चलाता था, जो एक खास कैदी होता था और पानी की सप्लाई को कंट्रोल करता था। हर सीटी बजने पर तीस सेकंड के लिए पानी बहता था। बस इतना ही। आपको जल्दी से साबुन लगाना होता था और उस छोटे से समय में ही नहाना होता था। अगर आप जल्दी नहीं कर पाते, तो पूरे दिन साबुन लगे रहते। शौचालय और स्नानघर एक ही जगह पर थे, उनके बीच केवल एक मीटर ऊंची छोटी सी दीवार थी। स्नानघरों का गंदा पानी अक्सर शौचालयों के छलकने के पानी के साथ मिल जाता था, जिससे एक घिनौना गड्ढा बन जाता था जिसमें हमारे नंगे पैर हर कदम पर धंस जाते थे। इन दोनों जगहों की निकटता ने एक परेशान करने वाली अंतरंगता पैदा कर दी थी—एक ऐसा वातावरण जहां स्वच्छता और गरिमा का नामोनिशान मिट चुका था।

इस जेल में, हर चीज़ शरीर और आत्मा दोनों को कुचलने के लिए बनाई गई थी। हर जगह, हर गंध, हर आवाज़ हमें याद दिलाती थी कि हम महज़ संख्याएँ हैं, एक बंद, घुटन भरी दुनिया में परछाइयाँ हैं। इमारत 5, अपनी कंक्रीट की पीड़ा और अलिखित नियमों के साथ, केवल एक कैदखाना नहीं थी। यह एक समानांतर ब्रह्मांड था जहाँ बाहरी दुनिया के नियम लागू नहीं होते थे, और जीवित रहना अवलोकन, अनुकूलन और मौन पर निर्भर था।
यहां हर चीज सीमित मात्रा में, नापी-तुली और नियंत्रित थी। पानी। जगह। हवा। सम्मान।
पटाया रिमांड जेल के भवन 5 में आपका स्वागत है।
सिर और दाढ़ी को एक-एक मिलीमीटर तक मुंडवाने के बाद, आखिरकार हमें नाई की झोपड़ी से छुट्टी मिली। उमस भरी गर्मी में पसीने और चिपके बालों के कारण हमारी नई मुंडी हुई खोपड़ी में खुजली हो रही थी। मार्को ने अपने सिर पर हाथ फेरा और दर्द से कराह उठा।
"धत् तेरे की, ऐसा लग रहा है जैसे मैंने अपना सिर लॉनमूवर के नीचे रख दिया हो।"
हम घबराहट में हंस पड़े, मानो उस एक बेवकूफी भरे मजाक ने पागलपन की तीव्रता को कम करने में मदद की हो।
हमारे फ्रांसीसी मेज़बान, स्वान और अब्देल, अपने "घर" के पास एक छायादार कोने में हमारे लिए एक साधारण नाश्ता लेकर इंतज़ार कर रहे थे: "मामा" इंस्टेंट नूडल्स के पैकेट और नरम सफेद ब्रेड के टुकड़े। हमने चुपचाप बैठकर उस सादे लेकिन सुकून भरे भोजन के हर निवाले का स्वाद लिया।
“हम आपको समझा देंगे कि यह जगह कैसे काम करती है,” स्वान ने अपने नूडल्स हिलाते हुए कहा। “यह फ्रांस नहीं है। अगर आपके पास पैसे नहीं हैं, तो कुछ भी नहीं है। सिगरेट चाहिए? शैम्पू चाहिए? साबुन चाहिए? आपके परिवार को नकद भेजना होगा।”
“अगर वे ऐसा नहीं करते तो?” टोनी ने संदेहपूर्वक पूछा।
“तो फिर तुम भूख से नहीं मरोगे,” अब्देल ने मुस्कुराते हुए कहा, “तुम घृणा से मरोगे। हाँ, दिन में दो बार मुफ्त खाना मिलता है, चिकन की हड्डी और थोड़े से चिपचिपे चावल के साथ भूरा पानी का सूप। लेकिन यकीन मानो, एक हफ्ते बाद, स्वाद खत्म होने से बहुत पहले ही तुम्हारी उम्मीदें खत्म हो जाएँगी।”

तभी हमें एहसास हुआ: यहाँ पैसा ही सब कुछ था। बाहरी मदद के बिना, न तो अच्छा खाना था, न स्वच्छता, न कंबल। यह जेल सिर्फ एक भौतिक पिंजरा नहीं थी, बल्कि अपने आप में एक विकृत अर्थव्यवस्था थी। हर चीज़ की कीमत थी: सिगरेट, इंस्टेंट कॉफी, छोटे-मोटे काम, धूप या छांव के लिए सबसे अच्छी जगह।
मैंने पूछा, "पुलिस का क्या होगा?"
“पुलिस?” स्वान हँसा। “नहीं, यहाँ पुलिस नहीं, गार्ड हैं। वे डर से राज करते हैं। वे निगरानी रखते हैं, अपना हिस्सा लेते हैं, और जब तक शांति रहती है, तब तक सब कुछ नज़रअंदाज़ कर देते हैं। लेकिन अगर मामला बिगड़ जाए? तो सीधे लाठी से मार। या इससे भी बुरा, एकांत कारावास। ज़रा सोचिए, एक ऐसी जगह जहाँ कोई रोशनी नहीं है, छत मुश्किल से चार फीट ऊँची है, और आपको छह महीने तक पैरों में जंजीरें डालकर वहाँ रहना पड़ता है। यहाँ डर ही नियम बनाता है।”
स्वान ने गंभीर स्वर में कहा, "जितना अच्छा वकील मिल सके, ले लो। यहाँ आना तो बहुत आसान है। लेकिन बाहर निकलना? वो तो बिल्कुल अलग लड़ाई है। हमें एक महीना हो गया है, और हर दिन हमें जेल में बंद रखने का कोई न कोई नया बहाना मिल जाता है।"
“लेकिन लिफ्ट ने वादा किया था कि वह हमें बाहर निकाल देगा,” मैंने भोलेपन से जवाब दिया, जिसका मुझे जल्द ही पछतावा हुआ। “वह पुलिस को जानता है, उसने हमसे कहा था कि वह इसका ख्याल रखेगा।”
अब्देल जोर से हंस पड़ा। “यहां वादे शावर में साबुन की तरह होते हैं, उंगलियों से फिसल जाते हैं। बेहतर होगा कि आप योजना से ज्यादा समय तक रुकने की तैयारी शुरू कर दें।”
नाश्ते के बाद, अपने दो फ्रांसीसी गाइडों के साथ, नहाने का समय आ गया था। ठीक सुबह 7:30 बजे, जब शावर खुले, तो हम उस मुश्किल भरे रास्ते पर दौड़ पड़े। कल्पना कीजिए एक अंतहीन कतार, बेसब्र लोगों की भीड़, हर कोई जानता था कि सुबह 8 बजे गिनती अनिवार्य थी। इतनी सुबह भी तेज़ धूप में, हम कतार में दुबके खड़े थे, ठंडे पानी के साठ सेकंड की उम्मीद हमें आगे बढ़ा रही थी। "जल्दी करो, कोई चारा नहीं!" तनाव कम करने के लिए एक फ्रांसीसी व्यक्ति ने हल्की मुस्कान बिखेरते हुए मजाक में कहा।
"पलक झपकाने जितना ही समय है—और सारी गंदगी धुल जाएगी," टोनी ने माथे से पसीना पोंछते हुए बुदबुदाया।

हमने फ्रांसीसियों से साबुन उधार लिया था, जो इस जगह पर एक विलासिता की वस्तु थी। बर्फीली फुहार के नीचे आते ही समय एक साथ धीमा और तेज़ होता चला गया: भीगने में 20 सेकंड, साबुन लगाने में 20 सेकंड, और धोने में 20 सेकंड। शावर के संचालक की हर सीटी किसी सर्वाइवल गेम में उलटी गिनती की तरह बज रही थी।
और फिर आया सबसे अजीब हिस्सा: तौलिए नहीं थे। हमें अपने ही कपड़ों से खुद को सुखाना पड़ा। हमारे पास जो पतले-पतले कपड़े थे, उन्हीं से हमने तौलिए का काम चलाया और वही हमारे दिन भर के कपड़े बन गए। और उस हास्यास्पद क्षण में, जब हम हाजिरी के लिए पहनी जाने वाली कमीजों से ही अपनी त्वचा सुखा रहे थे, हमारे बीच एक अजीब सी दोस्ती पनपने लगी।
"लगता है हमें सूखे कपड़े ही मिलेंगे... या नहीं!" किसी ने चुटकी लेते हुए कहा, जिससे धुंधले, भाप से भरे शॉवर रूम में दबी हुई हंसी गूंज उठी।
वह क्षण, संक्षिप्त, बेतुका, तीव्र, ने हमें तात्कालिकता, सैन्य अनुशासन और एक ऐसे काले हास्य से शासित जीवन का पहला अनुभव दिया जो दैनिक नरक में जीवित रहने के लिए आवश्यक हो गया था।
शावर के दाईं ओर एक बड़ा कमरा था जिसने तुरंत हमारा ध्यान खींचा: लॉकर ज़ोन। लगभग 50 सेंटीमीटर चौड़े और 60 सेंटीमीटर गहरे छोटे-छोटे धातु के डिब्बों की एक सख्त, निराशाजनक कतार। हर कैदी को एक डिब्बा रखने का अधिकार था, हालांकि उनमें से अधिकांश आधे खुले या पूरी तरह से खाली थे।
स्वान ने हमारी जिज्ञासा को भांप लिया और हमारी ओर झुक गया।
“लॉकर ही आपकी तिजोरी है। क्या आप अपनी सिगरेट या कॉफी रखना चाहते हैं? तो बेहतर होगा कि आपके पास एक अच्छा ताला हो।”
"अगर हम ऐसा नहीं करते तो क्या होगा?"
“तो फिर ‘जबरन एकजुटता’ में आपका स्वागत है। आप जो कुछ भी छोड़ देंगे, वह सामुदायिक संपत्ति बन जाएगा।”
अब्देल ने आगे कहा, "वहीं पर आप अपना सामान छिपाते हैं। अगर आपके पास छिपाने के लिए कुछ है भी तो।"
कमरे में एक धीमी, बेचैन ऊर्जा का संचार हो रहा था। यहाँ हमेशा ही अतिरिक्त आय का एक सिलसिला चलता रहता था। धनी कैदी अपने सामान, किताबों या दुर्लभ सुख-सुविधाओं के लिए कई लॉकर किराए पर लेते थे। गरीब कैदियों के पास तो साबुन तक रखने को नहीं होता था।

"अगर आप कोई भी चीज बाहर छोड़ देते हैं, तो वो गायब हो जाती है," स्वान ने कहा। "अगर वो चोरी नहीं होती, तो उसे रौंद दिया जाता है या कूड़े में फेंक दिया जाता है।"
मैंने धातु के बक्सों की उन पंक्तियों को ऐसे देखा मानो वे ढहने से बचाने वाली छोटी ढालें हों। इस पागलखाने में, एक लॉकर होना किसी विलासिता जैसा लग रहा था। स्थिरता का एक दयनीय, लेकिन अनमोल प्रतीक।
अचानक, पानी बंद हो गया, एक तेज़ सीटी की आवाज़ के साथ। शावर का मुखिया, एक दुबला-पतला, गंभीर स्वभाव का आदमी, सामने आया और उसने कमरे का जायज़ा लिया। “पानी खत्म हो गया! यहाँ से निकल जाओ!”
सभी ने तुरंत आज्ञा का पालन किया। एक भी शिकायत का मतलब सज़ा हो सकता था। हम चुपचाप उनके पीछे-पीछे चले, यह समझते हुए कि अब हमारा जीवन कितना हद तक एक सीटी, एक जंग लगे गेट... या किसी शक्तिशाली कैदी की मनमर्जी पर निर्भर था।
सुबह 8 बजे, जेल में एक तेज़ सायरन गूंज उठा। सभी कैदी प्रांगण में इकट्ठा हो गए और चिलचिलाती धूप में पालथी मारकर ज़मीन पर बैठ गए। भीड़ से ऊपर एक चबूतरे पर खड़े गार्ड, अपनी लाठियाँ हमारी ओर ताने ज़ोर-ज़ोर से गिनती कर रहे थे।
“एक हजार चार सौ अठहत्तर… एक हजार चार सौ उनहत्तर…”
यह प्रक्रिया चालीस मिनट से अधिक समय तक चली। उस दौरान पूर्ण मौन अनिवार्य था। अगर कोई कैदी कुछ फुसफुसाता भी तो उसे तुरंत पहचान लिया जाता। एक गार्ड चबूतरे से नीचे उतरता, उसके पास जाता और बिना कुछ कहे, लाठी से उसके सिर के पिछले हिस्से पर वार करता।
प्रहार की गूंज सुनाई दी, उसके बाद एक दबी हुई कराह सुनाई दी। कोई नहीं हिला। कैदी सिर झुकाए बैठा रहा।
“सुनहरा नियम,” स्वान ने फुसफुसाते हुए कहा। “तुम सब कुछ देखो, लेकिन कुछ मत कहो।”
हमने सिर हिलाया, हमारे पेट में अजीब सी बेचैनी थी। इस नई वास्तविकता का बोझ धीरे-धीरे हम पर हावी हो रहा था। और यह तो बस शुरुआत थी।
हर दिन, दो हाजिरी हमारी दिनचर्या का हिस्सा होती हैं: एक सुबह 8 बजे और दूसरी दोपहर 2 बजे। हाजिरी खत्म होते ही हम सीधे अपनी कोठरियों में चले जाते हैं। चाहे मूसलाधार बारिश हो या भीषण गर्मी, नियम वही रहता है। अगर आप

वह बुनाई कर रहा था।
हमारी मुलाकात अली से भी हुई, जो एक ईरानी कैदी था और एक बार में हुई लड़ाई के बाद एक साल और दो महीने से जेल में बंद था। वह भी रिहाई की उम्मीद कर रहा था।
उन्होंने कहा, "हम कामयाब होंगे। शायद आज नहीं, लेकिन एक दिन हम अपनी कहानियां दुनिया को सुनाएंगे।"
हम सबने मिलकर जेल का दौरा किया और वहाँ की दुकान का पता लगाया। लंबे समय से जेल में बंद कैदी वहाँ व्यापार करते थे, कैंटीन से सामान खरीदते और उसे आसमान छूती कीमतों पर बेचते थे। यहाँ पैसे का लेन-देन अजीबोगरीब था: सिगरेट और इंस्टेंट कॉफी के पैकेट मुख्य मुद्रा थे। एक पूरी तरह से गुप्त अर्थव्यवस्था पनप चुकी थी। जेल में एक "बैंक" भी था जहाँ कैदी अपनी "संपत्ति" सुरक्षित रूप से रख सकते थे और उसे बाहरी खातों में असली पैसे में बदल सकते थे। गार्ड इस बैंक का प्रबंधन करते थे और खुलेआम अपना हिस्सा लेते थे, बिना इसे छिपाने का दिखावा भी किए।
“तुम्हारे पास सिगरेट है, तुम्हारे पास ताकत है,” अली ने कंधे उचकाते हुए कहा। “इसके बिना तुम कुछ भी नहीं हो।”
हमें यह भी पता चला कि कैंटीन से मंगवाया गया खाना जेल में नहीं पकाया जाता था। इसे जेल के बाहर पहरेदारों की पत्नियाँ बनाती थीं। हर दिन, आप कागज़ की छोटी पर्चियों पर अपना ऑर्डर दे सकते थे, और तीन दिन बाद आपका खाना पहुँच जाता था। एक छोटा सा पारिवारिक व्यवसाय, जो व्यवस्था में पूरी तरह से समाहित था।
उस सुबह मुझे अपना सारा सामान बेचना पड़ा, मेरी पोलो शर्ट, मेरी जींस... वो सब कुछ जो इस दम घोंटने वाली गर्मी में बेकार था। उदाहरण के लिए, स्नीकर्स पर प्रतिबंध था। हमें उनके तलवे काटकर उन्हें चप्पल में बदलना पड़ा। आखिरकार, हम फ्लिप-फ्लॉप और शॉर्ट्स में रह गए। कुछ थाई कैदियों ने तो हमारे पुराने कपड़े खरीद लिए ताकि रिहा होने पर उन्हें पहन सकें।
एक रोचक लेकिन महत्वपूर्ण तथ्य: कैदियों और लेडीबॉयज़ (ट्रांसजेंडर कैदी, जिनका "तीसरा लिंग" थाईलैंड में आधिकारिक रूप से मान्यता प्राप्त है) के बीच कई जोड़े बने। योनि प्रत्यारोपण करवा चुके कई लेडीबॉयज़ को महिला जेल में रखा गया था, जिससे इस अन्यथा नीरस दुनिया में कुछ रंग और रौनक आ गई थी।

फिर सैन्य अभ्यास शुरू हुआ, चिलचिलाती धूप में एक घंटे का जबरन शारीरिक श्रम। गर्मी से बेहाल हम सभी चुपचाप घर से खबर आने की उम्मीद कर रहे थे। जेल के केंद्रीय प्रांगण पर सूरज की तपती गर्मी से मिट्टी का फर्श जलकर धूल की पपड़ी बन गया था। हम कतारों में खड़े थे, एक जर्जर लकड़ी की झोपड़ी के सहारे, जो बीते जमाने की निशानी थी। हर हवा के झोंके से टिन की छत चरमराती थी, और अगर हम ज़रा भी झुकते तो लकड़ी के टुकड़े हमारे कंधों में चुभने का खतरा था।
"सीधे खड़े हो जाओ!" गार्ड ने धूल भरी जमीन पर अपनी बांस की छड़ी पटकते हुए चिल्लाकर कहा।
बहस की कोई गुंजाइश नहीं थी। जेल के बीचोंबीच स्थित खुला मैदान अभ्यास क्षेत्र के रूप में इस्तेमाल होता था, एक आयताकार क्षेत्र जिसकी दीवारें गंदी थीं और उन पर भित्तिचित्र बने थे और काले हाथों के निशान थे। चित्रित बुद्ध की धुंधली लाल छवि के नीचे, हम अपनी स्थिति बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रहे थे।
सैन्य अभ्यास शारीरिक क्षमता के बारे में नहीं थे। वे नियंत्रण के बारे में थे, हमारे दिमाग में अनुशासन बिठाने के बारे में थे, हमारी रगों में अधीनता पैदा करने के बारे में थे। बिना किसी प्रश्न के आज्ञापालन। बिना सोचे समझे अनुपालन। अवज्ञा का कोई भी संकेत मिलते ही तुरंत दंड दिया जाता था।
"उठो!"
नंगे पैरों और फटी चप्पलों में लिपटे पुरुषों की कतारें एक-दूसरे के ऊपर गिर पड़ीं। धूल हमारे पसीने से तर पैरों से चिपकी हुई थी।
“एक मिनट बाद—खड़े हो जाओ!”
हम बेढंगे तरीके से उछल पड़े। कुछ लोग कोशिश करते-करते गिर पड़े। एक गार्ड एक युवा कंबोडियाई लड़के के पास गया, जिसकी उम्र शायद अठारह साल से भी कम थी, जो उठने के लिए संघर्ष कर रहा था।
"तुम्हारी समस्या क्या है?"
“मैं… मैं थक गया हूँ, महोदय।”
लाठी हवा में तेज़ी से गुज़री। उसकी पसलियों में ज़ोरदार आवाज़ हुई। बच्चा हांफते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा।
“यहाँ कोई थकता नहीं है। तुम्हें आज्ञा माननी है। समझ गए?”

कैदी ने सिर हिलाया और खुद को समेट लिया। हम सबने नज़रें फेर लीं, मन ही मन प्रार्थना कर रहे थे कि कहीं हमारा चेहरा अगला निशाना न बन जाए।
हमारे बीच एंड्री भी था, जो चालीस वर्ष की आयु का एक हट्टा-कट्टा रूसी व्यक्ति था, जिसकी पतली मूंछें थीं और सिर पर बाल कम हो रहे थे। वह गांजा रखने के जुर्म में दो साल की सजा काट रहा था, लेकिन जेल में वह एक वरिष्ठ नेता की तरह व्यवहार करता था।
“देखो दोस्तों,” उसने अंग्रेजी में फुसफुसाते हुए कहा, “यहाँ, बात मांसपेशियों की नहीं है। सब कुछ दिमाग का खेल है। अगर तुम डरे हुए हो, तो तुम्हारा खेल खत्म।”
“ओह, सच में?” मैंने मुस्कुराते हुए कहा। “और तुम्हारी मूंछें तुम्हारी मानसिक ढाल हैं?”
वह जोर से हंस पड़ा।
एंड्री, जो हमेशा अपना ज्ञान साझा करने के लिए उत्सुक रहते थे, ने पूरी घटना के दौरान टिप्पणी जारी रखी:
“देखो लड़कों, ये ज़िंदगी की तरह है। जो डटे रहते हैं, वही कामयाब होते हैं। और अगर तुम्हें यहाँ टिके रहना है, तो तुम्हें इन अभ्यासों से प्यार करना सीखना होगा... भले ही इनसे तुम्हें सुस्ती महसूस हो!”
कुछ दबी हुई हंसी निकल गई, और मैं भी इस विडंबना पर मुस्कुराए बिना नहीं रह सका।
जैसे-जैसे दिन बीतते गए, सैन्य अभ्यास एक विचित्र प्रकार की रस्म बन गया, जिसमें दर्द के साथ-साथ भाईचारे की भावना भी समाहित थी। सीटी बजने के बीच हम कहानियाँ साझा करते, गार्डों की नज़र से बचने के तरीके या प्रशिक्षण के बाद आराम करने के लिए सबसे अच्छी जगह खोजने के सुझाव आपस में बाँटते। “ऊपर!” कमांडो की आवाज़ हमारी बातचीत को चीरती हुई तलवार की तरह निकली। हम फिर से उछले—इस बार और भी कम ऊर्जा के साथ।
अभ्यास एक घंटे तक चला। स्क्वैट्स, पुश-अप्स, जंपिंग जैक्स। यह सब चिलचिलाती धूप और गार्ड की लगातार चिल्लाहट के बीच हुआ। अभ्यास खत्म होने के बाद हमें सीधे ज़मीन पर बैठने की अनुमति दी गई। जिस झोपड़ी से हम टिके हुए थे, वह जर्जर थी और उस पर पेंचों या नुकीली कीलों से खरोंच कर भित्तिचित्र बनाए गए थे: तारीखें, गालियाँ और कभी-कभार आशा भरे संदेश। “हिम्मत मत हारो,” मार्को ने जोर से पढ़ा।

“हाँ, मुझे यकीन है कि जिसने यह लिखा है वह अभी भी यहीं है,” मैंने जवाब दिया।
हमने कड़वी हंसी हंसी।
दूर से, लेडीबॉयज़ अपने आंगन में इकट्ठा होकर बेफिक्र हाई स्कूल की लड़कियों की तरह बातें और हंसी-मजाक कर रहे थे। उनमें से एक, मीना, एक लंबी, आकर्षक थाई महिला, नए कैदियों की ओर कामुक निगाहें डाल रही थी। वह उस ब्लॉक की प्रभावशाली हस्तियों में से एक थी, जिसे उसके जेल परिवार और कुछ गार्डों का संरक्षण प्राप्त था।
“उनसे पंगा मत लो,” अब्देल ने चेतावनी दी। “अगर तुम उनके कबीले के नहीं हो, तो तुम निशाने पर हो।”
“सचमुच?” मैंने पूछा।
“मैं बिल्कुल गंभीर हूं,” स्वान ने पुष्टि की। “वे आपकी जिंदगी नरक बना सकते हैं। यहां सब कुछ गठबंधनों पर निर्भर करता है।”
हम धीरे-धीरे यह जान रहे थे कि इन दीवारों के पीछे, शारीरिक बल का कोई खास महत्व नहीं था। इस जगह के अपने नियम थे, एक अदृश्य पदानुक्रम था, एक नाजुक संतुलन था जो अलिखित कानूनों और निर्मम प्रक्रियाओं द्वारा कायम था।
दम घोंटने वाली गर्मी से हम पहले ही थक चुके थे, पसीने से भीगे कपड़े हमारी त्वचा से चिपक रहे थे, फिर भी अपनों से कोई खबर मिलने की उम्मीद थी। लेकिन हमें कोई जानकारी नहीं थी। हमें यह भी नहीं पता था कि वे हमें ढूंढने की कोशिश कर रहे हैं या नहीं। हवा उमस भरी थी, धूल और नमी से भरी हुई, हमारे कंधों पर भारी दबाव डाल रही थी और हर कदम को संघर्ष बना रही थी। इस तरह कई दिन, या यहाँ तक कि कई हफ्ते बिताने का ख्याल ही अवास्तविक लग रहा था। दोपहर 2 बजे तक, एक आखिरी हाजिरी और अंतहीन प्रतीक्षा के बाद, गार्ड वापस आ गए। उन्होंने एक तीखे इशारे से हमें अपना थोड़ा-बहुत सामान इकट्ठा करने का आदेश दिया। एक बार फिर, हमें कतार में खड़ा किया गया और मुख्य कोठरियों की ओर ले जाया गया। सौभाग्य से, मैं मार्को के साथ था, लेकिन टोनी इतना भाग्यशाली नहीं था। उसे एक अलग कतार में ले जाया गया, उसका पीला, तनावग्रस्त चेहरा भीड़ में गुम हो गया।
प्रभारी गार्ड ने एक विशाल जंग लगा हुआ गेट खोला। धातु की कर्कश आवाज किसी अंतिम संस्कार की घंटी की तरह गूंजी, और हमारे सामने था: सेल नंबर 2।
"अंदर आओ!" उसने अपनी लाठी लहराते हुए चिल्लाकर कहा।

यह सदमा हमें सीने में मुक्के की तरह लगा। हमें लगभग 70 वर्ग मीटर के एक कमरे में धकेल दिया गया, जो 250 कैदियों से खचाखच भरा हुआ था। गर्मी दम घोंटने वाली थी, मानो एक अदृश्य दीवार बन गई हो जिससे हर सांस पिछली सांस से ज़्यादा मुश्किल हो रही थी। हवा पसीने और पेशाब की दुर्गंध से भरी हुई थी, एक घिनौनी गंध जो दीवारों से चिपकी हुई थी और रोम-रोम में समा रही थी। लगातार गूंजती आवाज़ें, कराहें और दो टीवी पर तेज़ आवाज़ में चल रहे थाई धारावाहिकों ने उस जगह को और भी घुटन भरा बना दिया था।
कंक्रीट का फर्श, खुरदरा और धूल से सना हुआ, दिन की गर्मी को अभी भी सोख रहा था, और उखड़ी हुई दीवारों से नमी रिस रही थी। यह एक बंद दुनिया थी, शोर, दुर्गंध और गर्मी में डूबी हुई, हमें शिकंजे की तरह जकड़ रही थी।
छत की छड़ों से फटी-पुरानी चादरें और रस्सियाँ लटकी हुई थीं, जिनसे कामचलाऊ झूले और लटके हुए शरीरों का एक उलझा हुआ जाल बन गया था।
“हे भगवान… ये सच नहीं हो सकता,” मार्को बुदबुदाया। “हम यहीं मर जाएंगे।” चेहरे हमारी ओर मुड़ गए। जिज्ञासु। सतर्क। भावहीन। अनिद्रा से धंसी हुई आँखें हमारे आगमन को घूर रही थीं। कुछ शत्रुतापूर्ण लग रहे थे, कुछ उदासीन, लेकिन उन सभी में वर्षों के अभाव से गहरी लकीरें उभरी हुई एक ही थकावट झलक रही थी। हवा में एक हल्का तनाव गूंज रहा था, जो फुसफुसाहट और दूर से आती जंजीरों की सरसराहट से और बढ़ गया था।
फिर पीछे से एक आवाज आई:
"विदेशियों, इधर आइए, हम आपको सारी जानकारी दे देंगे।"
लगभग पचास वर्ष का एक थाई कैदी, बिना कमीज पहने और सिर से पैर तक टैटू से ढका हुआ, ने हमें अपने पास बुलाया। हम सावधानी से उसकी ओर बढ़े।
“यह विदेशियों का इलाका है,” उसने समझाया। “शांत रहो। कोई हंगामा मत करो। नए लोग बीच में सोते हैं, जब तक कि आपके पास जगह खरीदने के लिए पैसे न हों। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप थाई हैं या विदेशी। यहाँ पैसा ही सब कुछ है।”
कमरे का मध्य भाग कंक्रीट का एक खाली आयताकार टुकड़ा था, जहाँ कोई व्यक्तिगत स्थान नहीं था, कोई विभाजन नहीं था। इसके चारों ओर, परिवारों ने कंबल और बोरियों को अस्थायी गद्दों की तरह इस्तेमाल करके अपने-अपने क्षेत्र बना रखे थे। हर किसी के पास अपनी जगह थी। और हम, नए आने वाले, महज़ अस्थायी घुसपैठिए थे।

फिर सेल का मुखिया पास आया। एक गठीला थाई आदमी जिसके बाएं गाल पर एक निशान था। उसकी बर्फीली निगाहें हम पर घूम गईं।
“मैं इस जगह का मालिक हूँ। रात 9 बजे के बाद कोई शोर नहीं। कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं। कोई बकवास नहीं। अगर कुछ चाहिए तो पैसे दो। वरना खुद ही देख लो। समझ गए?”
हमने चुपचाप सिर हिलाया।
समय धीरे-धीरे बीत रहा था। दोपहर 3 बजे से रात 9 बजे तक, हम वहाँ जमे बैठे रहे, चुपचाप सिगरेट पीते रहे, आँखें खालीपन से आसमान को घूरती रहीं, यह समझने की कोशिश करते रहे कि हमारे साथ क्या हो रहा है। मार्को और मैंने एक-दूसरे को हैरानी भरी निगाहों से देखा, कभी-कभी घबराहट भरी हंसी हंसते रहे, वैसी हंसी जो तब आती है जब स्थिति इतनी बेतुकी हो जाती है कि तर्क शक्ति काम नहीं करती। हमारे चारों ओर, थाई कैदी एक-दूसरे से सटकर सो रहे थे, जबकि गर्मी और पसीने की बदबू हमें याद दिला रही थी कि यह सचमुच एक वास्तविक नरक था।
रात करीब 9 बजे, टीवी अचानक बंद हो गए, जिससे सेल में सन्नाटा छा गया। सेल का सरगना हाथ में लाठी लिए फिर प्रकट हुआ।
लेट जाओ! चलो, जल्दी करो!
फिर अफरा-तफरी मच गई। हर कोई ज़मीन पर जगह पाने के लिए धक्का-मुक्की करने लगा। पुराने लोग जानते थे कि कहाँ जाना है, लेकिन नए लोगों के लिए यह एक भयानक पहेली थी। सेल लीडर, अपनी लाठी लहराते हुए, लोगों के बीच घूमता रहा, नए लोगों को अपने पैर से धक्का देता रहा, और हमें किनारों में ठूंसने के लिए मजबूर करता रहा। हर खाली इंच भरना ज़रूरी था, चाहे इसका मतलब किसी के पैर या पसलियों को कुचलना ही क्यों न हो। हर सेंटीमीटर मायने रखता था। एक बार ठूंस-ठूंस कर भर जाने के बाद, अगर आपने उठने की हिम्मत की, तो आपकी जगह हमेशा के लिए चली जाती।
“करवट लेकर लेट जाओ,” मार्को ने फुसफुसाते हुए कहा। “चलो, यही करके देखते हैं।”
हम आमने-सामने लेट गए, किसी इंसानी पहेली की तरह एक-दूसरे से लिपटे हुए।
मेरा पैर उसके ऊपर था, उसका मेरे नीचे फंसा हुआ था। एक गार्ड पास से गुजरा और उसने हमें पैर से धक्का देकर और भी कसकर दबा दिया।
"अगर तुम हिले तो तुम्हारी खैर नहीं," मार्को ने बुदबुदाते हुए कहा।

कोठरी के बीचोंबीच, तीन ऊंचे शौचालय भद्दे वेदियों की तरह खड़े थे। कैदी रात भर बारी-बारी से उनका इस्तेमाल करते, कभी उकड़ू बैठते तो कभी खड़े होते, उन्हें इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि कोई उन्हें देख रहा है। कुछ तो अत्यधिक थकान के कारण गंदी टाइलों पर ही सो जाते थे। उनके ऊपर, छत की सलाखों से झूले लटके हुए थे, जो उन लोगों के लिए थोड़ा बेहतर विकल्प थे जो फर्श पर कुचले जाने की बजाय बदबू को सहना पसंद करते थे।
कठोर कंक्रीट ने हमारी पसलियों को कुचल दिया। मैंने करवट बदलने की कोशिश की, लेकिन हर हरकत से दर्द भरी चीखें और गालियां निकलती थीं। मेरे पीछे एक थाई कैदी ने गुस्से में कहा:
"हिलो मत! तुम सो जाओ!"
मैं जम गया। मार्को, अब भी किसी तरह मुस्कुरा रहा था, फुसफुसाते हुए बोला: "क्या आपने यह नहीं कहा था कि आपको बंद जगहों से डर लगता है?"
“हां… लेकिन अभी तो मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं एक डिब्बे में बंद मछली हूँ।”
कुछ कैदी पहले ही सो चुके थे, क्योंकि वे इस सुनियोजित पीड़ा के आदी हो चुके थे, जबकि मार्को फुसफुसा रहा था:
“मैं कसम खाता हूँ, यह पूरी तरह से धोखा है। कल हमें बिस्तर के लिए मोलभाव करना होगा। हमें कोई समाधान चाहिए।”
अंतर्दृष्टि।
"ठीक है, लेकिन मैं फिर भी शौचालय जाने की कोशिश करूंगा। अगर मैं वापस आकर देखूं कि मेरी जगह गायब हो गई है, तो कोई बात नहीं।"
शौचालय की व्यवस्था भी बाकी सब चीजों की तरह ही बेतुकी थी। ये खुले छेद, जो छोटी-छोटी पट्टियों से अलग किए गए थे, बैठने के लिए नहीं बने थे। बैठने के लिए एक पैर ऊपर उठाना पड़ता था। ज्यादातर लोग गंदगी में गिरने से बचने के लिए किनारे पर ही खड़े रहते थे। कुछ लोग शौचालय पर ही सो जाते थे, तो कुछ खुशकिस्मत लोग लगातार बदबू के बावजूद सलाखों के पास लगे झूलों में सो जाते थे। यह छोटी सी बात यहाँ के दैनिक जीवन की घोर निराशा को दर्शाती थी। सिगरेट के कश के बीच, हम लगभग बीस लोग इस रात की रस्म में शामिल थे, हम दुनिया भर की बातें दोहराते थे। मैंने मार्को के कंधे पर हाथ रखा और उसकी हालत पर अफ़सोस जताया, हालाँकि हमारी इस बेतुकी स्थिति में उसका कोई दोष

नहीं था। फिर भी वह मज़बूती से खड़ा रहा, वफ़ादार, इस विश्वास के साथ कि हम जल्द ही इस नरक से बाहर निकल जाएँगे।
टोनी को एक अजनबी के बगल में सोना पड़ा और उसने कसम खाई कि वह खुद ही इसका कोई समाधान ढूंढ लेगा।
समय अंतहीन रूप से खिंचता चला गया। आधी रात के करीब, मैंने हार मान ली और शौचालयों की ओर चल पड़ा। लोगों की भीड़ से खुद को निकालते हुए, मैं तीन खुले गड्ढों तक पहुँचा। मुझे कंक्रीट पर सिकुड़कर सो रहे किसी व्यक्ति को जगाना था।
“माफ़ कीजिए… मुझे क्षमा कीजिए…” मैंने धीरे से फुसफुसाते हुए उसे हल्का सा धक्का दिया।
उसने अपनी एक धुंधली सी आँख खोली, कराहते हुए करवट बदल ली। दुर्गंध तुरंत ही मेरे गले में उतर आई, दिल दहला देने वाली। मैं उकड़ू बैठ गया, पास में सिगरेट पी रहे लोगों की घूरती निगाहों को नज़रअंदाज़ करने की कोशिश कर रहा था।
भोर होते ही, ऊपर लगे स्पीकरों से एक बौद्ध प्रार्थना की गूंज सुनाई दी, जो शोर के कारण थोड़ी विकृत लग रही थी। भिक्षु का एकरस मंत्र कोठरी में गूंज रहा था, अजीब और गंभीर, मानो आध्यात्मिकता का कोई भूत हमारे कंक्रीट के नरक में भटक रहा हो। मंत्रों का जाप हम सब के ऊपर तैर रहा था, मानो एक अलौकिक ठहराव का आभास दे रहा हो। कुछ कैदी प्रार्थना में अपनी हथेलियाँ जोड़ रहे थे; कुछ आँखें बंद करके चुपचाप बैठे थे, कुछ पल की आंतरिक शांति की तलाश में। जाप ने धीरे-धीरे हमें हमारी सुस्ती से बाहर निकाला।
फिर चरमराहट के साथ द्वार खुल गया।
और शरीर हिलने लगे।
मार्को और मैं लड़खड़ाते हुए बाहर निकले, हमारे हाथ-पैर अकड़े हुए और सुन्न थे। हमने स्वान और अब्देल को उनके "घर" के पास इंतजार करते हुए पाया। जेल में, "घर" शब्द, या थाई भाषा में "बान", का अर्थ निजी कोठरी या चारदीवारी वाला कमरा नहीं होता। यह एक प्रतीकात्मक स्थान है, जिसे कैदियों द्वारा फर्श पर बिछाए गए कपड़ों, कंबलों या गत्ते के टुकड़ों से परिभाषित किया जाता है। जो भी पहले वहाँ पहुँचता है, या जिसका कुछ प्रभाव या सम्मान होता है, वह उस छोटे से स्थान पर अपना अधिकार जताता है—वह उसका इलाका बन जाता है।

यह "घर" एक वर्ग मीटर का भी हो सकता है या दस वर्ग मीटर का, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वहां कितने लोग रहते हैं और "मालिक" का सामाजिक प्रभाव कितना है। यह एक अदृश्य लेकिन कड़ाई से सम्मानित सीमा है। एक छोटा सा कोना जिसे आप अपना कह सकते हैं, ऐसी जगह में जहां और कुछ भी आपका नहीं है।
“तो, तुम्हारी पहली रात कैसी रही?” स्वान ने मुस्कुराते हुए पूछा।
मैंने जवाब दिया, "एक असली स्लीपओवर... बस उसमें पजामा और मस्ती नहीं होगी।"
हम जोर से हंस पड़े। एक पल के लिए माहौल में हल्कापन लौट आया। लेकिन हम जानते थे कि यह तो एक लंबे बुरे सपने की शुरुआत थी।
"हमें सोने के लिए कोई अच्छी जगह ढूंढनी होगी," मार्को ने थकावट के बावजूद दृढ़ निश्चय दिखाते हुए बुदबुदाया।
"हां, मैंने सुना है कि मार्सिले के लोगों ने अपनी जगह पक्की करने के लिए सिगरेट के कुछ पैकेट दिए थे," स्वान ने व्यंग्य भरे लहजे में जवाब दिया। हल्के नारंगी रंग से रंगा आकाश, हमारे चारों ओर फैले कंक्रीट के भूरे रंग से बेरहमी से टकरा रहा था। थके हुए चेहरे और झुके हुए शरीरों की भीड़ एक ऐसी गतिमान भीड़ का रूप धारण किए हुए थी, जो उस दिनचर्या के वश में थी जिसे हम अभी-अभी समझना शुरू कर रहे थे।
"ठीक है, आज तुम्हें सोने के लिए बिस्तर का इंतजाम करना होगा," अब्देल ने हमें कड़वी, गाढ़ी काली कॉफी का मग देते हुए कहा।
“हाँ… क्योंकि बीच में सोना एक बार का ही मौका होता है,” स्वान ने हाथ से बनी सिगरेट जलाते हुए कहा।
हमने सिर हिलाया, जली हुई कॉफी का स्वाद हमारे सूखे होठों पर अभी भी बना हुआ था।
उस पहली रात ने हमें पूरी तरह थका दिया था, और दोबारा ऐसा करने का ख्याल ही डरावना था। जब हम बातें कर रहे थे, कैदियों के समूह दिन की तैयारियों में जुट चुके थे। कुछ लोग पिघली हुई प्लास्टिक की बोतलों से बनी कामचलाऊ बिजली की केतलियों में पानी उबाल रहे थे। वे बोतलों को एक टिन के डिब्बे में रखते, आग जलाते, और गर्मी इतनी होती कि लगभग दस मिनट में थोड़ी मात्रा में पानी उबल जाता। एक टूटे हुए बर्तन का निचला हिस्सा उबलते पानी को रखने के लिए इस्तेमाल होता था, जिससे दो कप इंस्टेंट कॉफी बन जाती थी।

अन्य लोगों ने अपना थोड़ा-बहुत सामान छोटे-छोटे लॉकरों में पैक कर लिया, जबकि लेडीबॉयज़ ने रंगीन चादरों और व्यक्तिगत गहनों से सजे अपने सजावटी कोनों को सावधानीपूर्वक फिर से व्यवस्थित किया।
अस्थायी दिखने के बावजूद, यह प्रांगण जेल का धड़कता दिल था। बाईं ओर, बोरियों और कंबलों से चिह्नित विभिन्न "घर" कतारबद्ध थे। प्रत्येक की अपनी पहचान, अपनी सीमाएँ थीं। नए आने वाले लोग उन्हें पार करने की हिम्मत नहीं करते थे, अन्यथा उन्हें तुरंत मार खानी पड़ती। हमारे सामने, एक विशाल कंक्रीट की दीवार ने दृश्य को अवरुद्ध कर दिया था, जो हमें याद दिला रही थी कि क्षितिज अब हमारे लिए एक विलासिता थी, जो अब हमारे पास नहीं थी।
दीवार के पास, एक जर्जर लकड़ी की झोपड़ी सैन्य अभ्यास के अड्डे के रूप में काम करती थी। उसका रंग उखड़ रहा था और नालीदार धातु की छत हवा के हर झोंके से चरमराती थी। सुबह के प्रशिक्षण के लिए हमें वहीं पहुंचना था।
“चलो, विदेशियों! लाइन में लगो!” एक गार्ड ने झोपड़ी पर अपनी लाठी पटकते हुए चिल्लाकर कहा।
समूह आगे बढ़ने लगा। मार्को और मैंने थकी हुई निगाहों से एक-दूसरे को देखा और कतार में लग गए। प्रशिक्षण मैदान पत्थरों और कचरे से भरा एक ऊबड़-खाबड़ इलाका था। असमान ज़मीन पर जगह-जगह पानी के गड्ढे और सूखे पैरों के निशान थे।
खाकी वर्दी पहने, हट्टे-कट्टे कद के थाई कमांडर ने हाथ बांधकर हमें तिरस्कार भरी निगाहों से देखा।
“यह कोई छुट्टी मनाने वाला क्लब नहीं है,” उसने टूटी-फूटी अंग्रेजी में कहा। “यह अनुशासन है! अब, पुश-अप्स करो!”
कैदियों ने तुरंत आज्ञा का पालन किया, कुछ ने आसानी से, कुछ ने मुंह बनाते हुए। मार्को और मैं ज़मीन पर बैठ गए, हाथ खुरदरी मिट्टी में गड़े हुए थे। पहले राउंड में तीस पुश-अप्स करने थे। पंद्रह तक पहुँचते-पहुँचते मेरी बाहें कांपने लगी थीं।
“तुम ठीक हो?” मार्को हांफते हुए बोला।
"लगभग... अभी भी सही सलामत है।"
पुश-अप्स, सिट-अप्स, स्क्वैट्स, फिर आंगन के चक्कर। सुबह की गर्मी असहनीय थी, और हमारे पैरों से उड़ने वाली धूल दम घोंटने वाले धुएं में बदल गई।

कमांडर बिना पलक झपकाए देखता रहा। जो भी धीमा पड़ता, उसे अपनी छड़ी से पिंडलियों पर एक जोरदार प्रहार करना पड़ता।
एक घंटे की कड़ी मेहनत और मशक्कत के बाद, आखिरकार हमें आराम करने की इजाजत मिली। मार्को झोपड़ी के सहारे बैठ गया और सिगरेट जला ली।
“मैंने अपनी जिंदगी में कभी इतना पसीना नहीं बहाया,” उसने धीरे से कहा। मैंने आगे कहा, "ऐसा लग रहा है जैसे हमने किसी गर्म पानी के टब में मैराथन दौड़ लगाई हो।"
“और यह तो हर रोज ऐसा ही होता है,” स्वान पास आते हुए बोला। “अगर आप मार से बचना चाहते हैं, तो किसी कुत्ते से दोस्ती कर लें। वे हर बात का हिसाब रखते हैं।”
हमने सिर हिलाया और माथे से पसीना पोंछा।
सुबह की गिनती एक निर्मम दिनचर्या बन चुकी थी। अभ्यास के बाद, हम चिलचिलाती कंक्रीट पर पालथी मारकर बैठ जाते थे। गार्ड पंक्तियों के बीच चक्कर लगाते हुए हर कैदी को गिनते और बार-बार गिनते थे। यह उनके मिजाज के अनुसार एक घंटे या उससे अधिक समय तक चल सकता था। इस बीच, गर्मी से हमारे मुंडे हुए सिर झुलस रहे थे और हवा में पसीने और धूप में पके सीमेंट की दुर्गंध फैली हुई थी।
मैंने मार्को से धीरे से कहा, "ऐसा लग रहा है जैसे मैं ओवन में पक रहा टर्की हूँ।"
"एकदम बढ़िया टर्की," उसने मेरी सिगरेट की ओर इशारा करते हुए चुटकी ली। यहां आने के बाद से मैंने पहले से कहीं ज्यादा सिगरेट पीना शुरू कर दिया था। तनाव, डर, अंतहीन इंतजार, इन सब से राहत उन सिगरेट के कशों में मिलती थी, उन तीखे धुएं में जो डर को कुछ पल के लिए ही सही, सुन्न कर देते थे। गिनती खत्म होने के बाद, हमारी मुलाकात स्वान और अब्देल से दोबारा हुई। हमारे विपरीत, वे शुरू से ही संगठित थे। केंद्र में सोने के बजाय, उन्होंने सेल बॉस के साथ समझौता कर लिया था। अब्देल ने समझाया:
“हमने मुखिया बून को सिगरेट के सौ पैकेट दिए। उसने किनारे पर जगह पाने वाले दो लोगों को निकाल दिया। बस यूं ही। उन्हें कुछ पैकेट दिए और उनकी जगह हमें दे दी।”
“और उन्होंने शिकायत नहीं की?” मैंने अचंभित होकर पूछा।

“क्या आपने कभी किसी मछली को शार्क से बहस करते देखा है?” स्वान हँसते हुए बोला। “यह न्याय नहीं है। यहाँ तो पैसा ही सब कुछ तय करता है।”
एक ही सौदे में वे प्रभावशाली कैदी बन गए थे। सिगरेट के उन सौ पैकेटों ने उन्हें पल भर में विशेषाधिकार प्राप्त लोगों की श्रेणी में पहुंचा दिया था। उनके पास अपना कमरा था, उनका सामान करीने से रखा हुआ था, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उन्हें कोठरी के बीचोंबीच नरक जैसी रातें नहीं गुजारनी पड़ती थीं।
हम तो अब भी कोई सस्ता विकल्प ढूंढ रहे थे। हफ्ते में पांच पैकेट खरीदना हमारे बस की बात नहीं थी। लेकिन हार मान लेने का मतलब था दर्द और नींद की कमी से भरी रातों को सहना। हमें जल्द से जल्द कोई रास्ता निकालना था, इससे पहले कि थकान हमें पूरी तरह तोड़ दे।
आखिरकार, उस दिन हमें जेल के और भी कोनों को देखने और अपनी सुरक्षा के उपाय खोजने का मौका मिला। तभी मुझे शौचालयों के साथ अपना पहला अनुभव याद आया। जब से हम आए थे, मैं शौचालय नहीं गया था, और इसके बारे में सोचते ही मेरा पेट खराब हो गया। बीस-तीस बड़े-बड़े छेदों के सामने पहले से ही एक लंबी लाइन लगी हुई थी। कुछ लोग सिगरेट पी रहे थे, कुछ सिगरेट के टुकड़े एक-दूसरे को फेंक रहे थे, उनकी आँखों में कोई भाव नहीं था। यहाँ निजता नाम की कोई चीज नहीं थी, एक-दूसरे को शौच करते देखना रोज़मर्रा की दिनचर्या का हिस्सा था।
मैं ज़मीन से लगभग एक मीटर ऊपर बने एक ऊंचे शौचालय के पास गया। बैठने के लिए मुझे अपना एक पैर किनारे से इस तरह लटकाना पड़ा जैसे मैं घोड़े पर चढ़ रहा हूँ। मेरे सामने बैठा थाई कैदी, जो अपने काम में पूरी तरह मग्न था, ने मुझे एक समझदारी भरी नज़र से देखा और अपनी सिगरेट साझा करने की पेशकश की। मैं मुस्कुराया, क्योंकि इसमें कुछ ऐसा बेतुकापन था कि यह लगभग हास्यास्पद लगने लगा। उसके लिए निजता का अभाव सामान्य बात थी। हम फ्रांसीसी लोगों के लिए, कुछ सेंटीमीटर की निजी जगह भी पवित्र लगती थी, ठीक वैसे ही जैसे बिस्तर के वो 70 प्रतीकात्मक सेंटीमीटर, जिनकी रक्षा हर कोई ऐसे करता था जैसे अपनी जान उस पर निर्भर हो।
एक बार पोर्सिलेन के चबूतरे पर बैठते ही मुझे पूरी तरह से उकड़ू बैठना पड़ा। सबसे शर्मनाक बात क्या थी? नंगे हाथों से खुद को साफ़ करना। यहाँ टॉयलेट पेपर नहीं था। पानी की एक बोतल, जो बहुत कीमती और सीमित थी,

स्वच्छता के लिए हमारा एकमात्र साधन थी। आपको बाद में हाथ धोने के लिए पर्याप्त पानी बचाना पड़ता था और अपनी बची-खुची इज़्ज़त को बचाना पड़ता था। पहली बार तो बहुत बुरा लगा। लेकिन, इस जगह की हर चीज़ की तरह, यह धीरे- धीरे मेरे और सबके लिए... सामान्य हो गया।
बाद में, एक गार्ड ने बातूनीपन दिखाते हुए बताया कि थाई संस्कृति में कैदियों का खुलेआम शौच करना बिल्कुल सामान्य बात है, यहाँ तक कि शॉवर या अन्य सार्वजनिक स्थानों में भी। उदासीनता, व्यंग्य और नियतिवाद का वह मिश्रण इन दीवारों के अंदर के जीवन का सार बयां करता था।
जब मैं बाहर निकला, तो अपमान का दर्द अब भी मुझ पर हावी था। शौचालय का वह पहला अनुभव मेरे मन पर गहरा असर छोड़ गया था। जले हुए प्लास्टिक और मानव मल की तीखी गंध मेरी नाक में बस गई थी। मैंने पानी की एक कीमती बोतल से हाथ धोए और उस याद को मिटाने की कोशिश की। लेकिन इस जगह पर, पानी का स्वाद भी निराशा से भरा था।
पानी की बोतलें चर्चा का मुख्य विषय बन गई थीं। उन्हें इकट्ठा किया जाता, साफ़ किया जाता, बेचा जाता या अदला-बदली की जाती। आमतौर पर ये पुरानी 1.5 या 2 लीटर की सोडा की बोतलें होती थीं जिन्हें पेय खत्म होने के बाद दोबारा इस्तेमाल किया जाता था। इनका इस्तेमाल तब किया जाता था जब दिन में एक बार, अनिश्चित समय के लिए, पाइप चालू किए जाते थे। पानी गंदा और गर्म होता था, पीने लायक बिल्कुल नहीं। लेकिन कुछ कैदियों के पास कोई और विकल्प नहीं था। मुझे यह बात तब पता चली जब मैंने उस पानी से अपने दांत साफ किए और कई दिन पेट दर्द से जूझते हुए बिताए।
जब मैं मार्को और टोनी के पास वापस लौटा, तो सूरज पहले से ही बहुत तेज चमक रहा था, जिससे कंक्रीट एक तवे की तरह गर्म हो गया था।
“तो, आपका भव्य प्रीमियर कैसा रहा?” मार्को ने चिढ़कर कहा, उसके होंठों से एक सिगरेट चिपकी हुई थी।
मैंने आह भरते हुए कहा, "मुझे नहीं लगता कि मैं जल्दी ठीक हो पाऊँगी। ये... कुछ अजीब सा है।"
हम घबराकर, बेतहाशा हँसे, मानो हम इस सब की निरर्थकता को नकारने की कोशिश कर रहे हों। तनाव, निरंतर भय, घुटन भरी चिंता... इन सबका असर दिखने लगा था।
लाउडस्पीकर की कर्कश आवाज ने हमें हमारे विचारों से बाहर निकाल दिया।

“जिन कैदियों की मुलाकातें निर्धारित हैं, वे मुख्य प्रवेश द्वार पर उपस्थित हों।”
मुलाकात का समय हो गया था। वकीलों से भी मुलाकात का समय था। इमारत के एक पहरेदार की साफ आवाज में आगंतुकों के नाम दो बार पुकारे गए, ताकि सब कुछ ठीक हो जाए। फिर भी, एक गार्ड हममें से हर एक को लिखित समन लेकर आया, खासकर विदेशियों को। उन्होंने बताया कि यह राजनयिक शिकायतों से बचने और यह सुनिश्चित करने के लिए था कि दुर्व्यवहार करने वाले थाई कैदियों को दंडित किया जा सके या महीनों के लिए मुलाकात पर प्रतिबंध लगाया जा सके।
हम तीनों के नाम पुकारे गए। दिल की धड़कनें तेज़ थीं, हम एक पाउचूई (पारंपरिक स्कॉटिश गाइड) की मदद से प्रवेश द्वार पर कतार में खड़े हो गए। हमारे प्रियजन आखिरकार आ गए थे। उनके साथ, आज़ादी की उम्मीद भी। शायद लिफ़्ट या किसी और ने कोई चमत्कारिक समाधान ढूंढ लिया हो। शायद हम एक घंटे में बाहर निकल जाएंगे। उम्मीद की वह भोली सी लौ क्षणिक ही रही।
हमने वही रास्ता अपनाया जिस पर हम अपनी गिरफ्तारी के दिन गए थे। एक लंबा, बाड़ से घिरा गलियारा एक विशाल फुटबॉल मैदान के समानांतर चलता था, जिसकी देखभाल कैदी करते थे। घास जगह-जगह से उखड़ी हुई और धूप से फीकी पड़ गई थी, जिस पर धुंधली सफेद रेखाएं बनी हुई थीं। यह वह जगह भी थी जहां कई जेल टूर्नामेंट होते थे जो हमारे अन्यथा अर्थहीन दिनों को एक ढांचा प्रदान करते थे।
चौथी इमारत और फिर तीसरी इमारत से गुज़रते हुए, हम अंततः उस विशाल द्वार के पास पहुँचे जो स्वतंत्रता का प्रतीक था—या कम से कम उसके सपने का। लेकिन इस बार, हम दाईं ओर मुड़कर मुलाक़ात कक्ष में प्रवेश कर गए।
मुलाकात भवन दो भागों में बंटा हुआ था: एक भाग पुरुषों के लिए, दूसरा महिलाओं के लिए। हमारा भाग बाईं ओर था। अंदर, लगभग तीस फोनों से सजी एक लंबी अंडाकार काउंटर के सामने मोटी धातु की जाली और मजबूत कांच लगा था। दूसरी ओर, हमारे आगंतुक इंतजार कर रहे थे। सलाखों और प्रतिबिंब की परतों के कारण उनके चेहरे पहचानना लगभग असंभव था।
हम अपनी निर्धारित सीटों पर बैठ गए। लेकिन उससे पहले, हमें जेल वार्डन के कार्यालय की ओर झुकना पड़ा, जो सम्मान का प्रतीक था, और एक थाई वाक्यांश बुदबुदाना पड़ा जिसे हम समझते भी नहीं थे। वार्डन ने मुश्किल से ही ऊपर

देखा। फिर भी, यह इशारा करना अनिवार्य था। हमारी सीटों को दर्शाने के लिए हमारे हाथों पर संख्याएँ लिखी हुई थीं।
जैसे ही मैं अंदर दाखिल हुआ, मैंने आवाज़ लगाई:
“तुम यहाँ हो! तुम सचमुच यहाँ हो!”
मैं तेजी से अपनी जगह पर पहुंचा, मेरी निगाहें दूसरी तरफ धुंधली आकृतियों पर टिकी हुई थीं।
और फिर, आखिरकार, मेरी प्रेमिका का चेहरा शीशे के पार से दिखाई दिया, धुंधला लेकिन स्पष्ट। हम तुरंत बातचीत में जुट गए।
"आप कैसे हैं? क्या नया है?" मैंने पूछा, मेरे पास कहने के लिए कहानियों और बातों का अंबार लगा हुआ था, हालांकि हमारे पास केवल 20 मिनट ही थे।
मैंने रिसीवर उठा लिया।
“हेलो? क्या सच में आप हैं?” मैंने उमड़ती भावनाओं को छिपा न पाने के कारण पूछा।
“हां, मैं ही हूं… मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मैं आपकी आवाज सुन रहा हूं। क्या आप ठीक हैं?”
मेरा पेट तुरंत सिकुड़ गया। वह आवाज़, मैंने उसे कई दिनों से नहीं सुना था। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं, आँसू रोकने के लिए संघर्ष करती रही।
“हम किसी तरह टिके हुए हैं। बस किसी तरह। कोई खबर है? क्या लिफ्ट ने कोई प्रगति की है?”
“वह कहता है कि मामला अटक गया है। पुलिस और पैसे मांग रही है। बहुत ज्यादा पैसे।”
मैंने घबराहट को दबाने की कोशिश करते हुए गहरी सांस ली।
"कितना?"
“तुम्हारे लिए तीन मिलियन बात। मार्को और टोनी के लिए डेढ़-डेढ़ मिलियन बात।”
“तीन मिलियन? ये तो अविश्वसनीय है!”
मुझे पता है। मैं अपनी तरफ से हर संभव कोशिश कर रहा हूं, लेकिन इसमें समय लगेगा।
"कोई और खबर है?"

“ज्यादा कुछ नहीं। लेकिन तुम्हारे माता-पिता… वे बहुत परेशान हैं। वे अगले हफ्ते आ रहे हैं। वे फ्रांस में यूं ही बैठे नहीं रह सकते और कुछ नहीं कर सकते।”
मेरा पेट और भी कस गया। ज़ाहिर है वे घबरा रहे थे। मैंने अपनी माँ की कल्पना की, जो नींद से वंचित थीं, और मेरे पिताजी अंदर ही अंदर टूटते हुए भी खुद को शांत रखने की कोशिश कर रहे थे।
“धत् तेरे की… मैं ये नहीं चाहता था। मुझे इस हालत में देखकर वे और भी डर जाएंगे।”
“उन्हें यहां होना जरूरी है। वे एक वकील से भी बात करना चाहते हैं।” "वकील" शब्द सुनते ही लिफ्ट और उसके सारे झूठे वादे याद आ गए।
“सुनो, मैं चाहता हूँ कि तुम लिफ्ट से अपना पैसा वापस ले लो। उसे भूल जाओ। वह एक धोखेबाज है। वह बस हमारा सारा पैसा लूट रहा है।”
“मुझे यही उम्मीद थी,” उसने हार मानते हुए कहा। “लेकिन अब क्या?”
“मेरे पास नाम हैं। यहाँ के लोगों ने मुझे भरोसेमंद संपर्क दिए हैं। असली वकील। बिचौलिए नहीं। इन्हें लिख लो: मी सुचार्ट, मी विचाई और मी प्रसोंग। इनके बारे में पता करो। देखो कि कौन असली है।”
उसने शीशे के पीछे से सिर हिलाया, शायद वह सब कुछ लिख रही थी।
ठीक है। मैं पता लगाऊंगा। मैं आपको अपडेट देता रहूंगा।
कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया। मैं उसकी बातें सुनना जारी रखना चाहती थी, भले ही वो बस हल्की-फुल्की बातें ही क्यों न हों। बस कुछ मिनटों के लिए इस जगह से दूर जाना चाहती थी।
अंत में उसने कहा, "मैंने तुम्हारे खाते में कुछ पैसे डाल दिए हैं। तुम कैंटीन से अपनी ज़रूरत का सामान ले सकते हो।"
"कितना?"
“इतना काफी है कि आपका काम चलता रहे। चिंता मत करो।”
मैंने कृतज्ञता से सिर हिलाया। उस पैसे से सब कुछ बदल सकता था। "बहुत-बहुत धन्यवाद... सचमुच।"
मुझे बताओ तुम्हें क्या चाहिए।
समय कम होता जा रहा था। मैंने हमारी निगरानी कर रहे गार्ड पर एक नज़र डाली, जो ऊबा हुआ था लेकिन सतर्क भी था। मैंने जल्दी से सूची सुना दी:

“सिगरेट। साफ-सफाई का सामान। साबुन, टूथपेस्ट, रेजर… ऐसी कोई भी चीज जो टिकाऊ हो और खराब न हो। खाना। इंस्टेंट कॉफी भी।”
“समझ गया। मैं देखता हूँ कि मुझे क्या मिल सकता है। और मैं कुछ और सिगरेट भी मंगवा लूँगा।”
मैंने हल्की सी मुस्कान दी। "ये यहाँ मुद्रा के समान हैं।"
उसने सिर हिलाया।
"हिम्मत मत हारो, ठीक है?"
लाउडस्पीकर से एक बार फिर कर्कश आवाज आई, जो मुलाकात के अंत का संकेत था।
“मुझे जाना होगा…” मैंने भारी मन से फुसफुसाया।
हम जल्द ही बात करेंगे। वादा है।
मैंने अपने जबड़े भींच लिए, मैं उसे यह बताने में असमर्थ थी कि मैं उस कांच के बिना उसे देखने के लिए कितनी बेताब थी।
मैंने धीरे से कहा, "अपना ख्याल रखना।"
और फिर लाइन कट गई।
मैं कुछ पल वहीं जम सा गया, रिसीवर अभी भी मेरे कान से लगा हुआ था। मार्को ने मेरे कंधे पर थपथपाया।
"चलो, समय समाप्त हो गया है..."
रिसीवर अपनी जगह पर वापस आ गया। उनकी परछाइयाँ—मेरी साथी, उसका भाई, हमारा दोस्त—आगंतुकों की भीड़ और बाड़ की अंतहीन परतों में पहले ही धुंधली हो रही थीं।
मैं वहां एक पल और खड़ा रहा, जब तक कि एक गार्ड ने मुझे बाहर जाने का इशारा नहीं किया।
बीस मिनट की ऑक्सीजन। बस इतना ही। लेकिन अगली मुलाकात तक उम्मीद बनाए रखने के लिए यह काफी था।
आंगन तक वापस जाते समय सन्नाटा पसरा हुआ था। हमारी आज़ादी की कीमत, मेरे माता-पिता के आने का डर, वकील को लेकर शंकाएँ... ये सब बातें मुझ पर भारी पड़ रही थीं। मैंने एक और सिगरेट जलाई और बड़ी मुश्किल से अपनी घबराहट को काबू में रखते हुए कश लगाए। जेल अब हमारी नई हकीकत थी। और हमें हर हाल में जीना सीखना था। हवा में अनिश्चितता छाई हुई थी, और सिगरेट के बेतहाशा कश भी मुझे शांत नहीं कर पा रहे थे। यही अब हमारा जीवन था। अब पीछे मुड़ने का कोई रास्ता नहीं था। हमें यहाँ जीने का तरीका ढूंढना ही था।

जब हम इमारत में वापस लौटे, तो स्वान और अब्देल बाहें मोड़े, दीवार से टिके हुए हमारा इंतज़ार कर रहे थे। उनके चेहरे के भाव सब कुछ बयां कर रहे थे। वे पहले भी इस दौर से गुज़र चुके थे, एक मुलाक़ात के बाद उम्मीद और घोर निराशा के इस मिले-जुले एहसास से। यहाँ से कोई भी आसानी से नहीं निकल पाता था। वे यह बात हमसे बेहतर जानते थे।
“तो?” स्वान ने सिगरेट जलाते हुए पूछा। “कुछ नया नहीं,” मैंने बुदबुदाते हुए कहा। “बस और वादे और उससे भी बड़ी रकम जुटानी है...” “हाँ, हमें यही लगा था,” अब्देल ने सिर हिलाते हुए जवाब दिया। “हकीकत में आपका स्वागत है।” शुक्र है, एक-दूसरे का साथ हमें हिम्मत देता रहा। उनके बिना, यह अकेलापन हमें बहुत जल्दी तोड़ देता। मुझे धीरे-धीरे एहसास हो रहा था कि यहाँ जीवित रहने की कुंजी जुड़ाव है, हर दिन उठने का एक कारण होना, छोटे-छोटे लक्ष्य निर्धारित करना, चाहे वे कितने भी बेवकूफी भरे क्यों न हों।
लेकिन अभी हमारा एक ही लक्ष्य था: कोठरी के बीचोंबीच सोना बंद करना। हमें अपनी खुद की जगह चाहिए थी, एक घर, एक "घर"। हमने देखा था कि स्वान और अब्देल ने अपने कोने के लिए कैसे पैसे दिए थे, और हम जानते थे कि हमें भी ऐसा करने का कोई तरीका ढूंढना होगा।
जैसे ही हम आंगन से गुजरे, हमारी मुलाकात निड से हुई, जो चालीस वर्ष का एक टैटू से ढका हुआ थाई व्यक्ति था। वह हमारी कोठरी में था और कैदियों के बीच उसका कुछ सम्मान प्रतीत होता था। उसने मुस्कुराते हुए हमारा अभिवादन किया।
“अरे, फ्रांसीसी लोगों! क्या हालचाल है? आप लोग किस जुर्म में यहाँ हैं?” मैंने ईमानदारी से जवाब दिया, “नकली नोट। आपका?” उसने ऐसे कंधे उचकाए जैसे उसके अपराध का कोई महत्व ही न हो। “हत्या। मैं यहाँ सात साल से हूँ।”
सात साल। यह संख्या अवास्तविक लग रही थी। भला कोई इस जगह पर इतने लंबे समय तक बिना अपना मानसिक संतुलन खोए कैसे जीवित रह सकता है? लेकिन निड शांत दिख रहा था। लगभग शांति में।
“आप लोगों को अभी तक सेल में जगह नहीं मिली है, है ना? क्या आप हमारे साथ रहना चाहेंगे?” यह मौका इतना अच्छा था कि हम इसे छोड़ नहीं सकते थे। हमने तुरंत हाँ कह दी।
निड एक पोउचुए (वे कैदी जो सीधे गार्डों के लिए काम करते थे) नहीं था, लेकिन उसे मजदूर का दर्जा प्राप्त था। वह बिल्डिंग 3 में स्मृति चिन्ह की

दुकानों के लिए छोटी-छोटी मूर्तियाँ बनाता था। यह यहाँ "वेतन" कमाने के कुछ ही तरीकों में से एक था, भले ही यह नाममात्र का ही क्यों न हो; प्रतिदिन आठ घंटे के काम के लिए महीने में 500 से 1000 बात, लगभग दस यूरो।
फिर भी, इससे उन्हें अधिकारियों से एक निश्चित सम्मान प्राप्त हुआ और उन्हें स्वतंत्रता और उद्देश्य का एक धुंधला सा भ्रम मिला। निड ने हमें अपने छोटे से "परिवार" के बाकी सदस्यों से मिलवाया:
“ये चैड हैं। इनकी उम्र 70 साल से ज़्यादा है। कोई नहीं जानता कि ये यहाँ क्यों हैं, लेकिन ये अच्छे इंसान हैं।” चैड ने थकी हुई मुस्कान के साथ हमसे हाथ मिलाया। जेल में एक बूढ़ा आदमी, ये एक अजीब नज़ारा था, लेकिन यहाँ कुछ भी मुमकिन था। “और ये बदत खान हैं, लेकिन सब इन्हें बद कहते हैं। ये ऑर्डर और खाना संभालते हैं। बिल्कुल हमारे रसोइए की तरह।”
बैड, एक गंजे सिर वाला लड़का, नोटबुक में कुछ लिखते हुए हमें जल्दी से सिर हिलाकर इशारा किया। "और यह ल्यूक है। वह 19 साल का है, ड्रग तस्करी के आरोप में जेल में है।"
ल्यूक घबराया हुआ लग रहा था, मानो उसे अभी तक अपनी जगह नहीं मिली हो। उसकी नज़रें इधर-उधर घूम रही थीं, लेकिन फिर भी उसने शर्मीली मुस्कान के साथ हमारा अभिवादन किया।
हम उनके आंगन के छोटे से कोने में बस गए, जो तीन वर्ग मीटर का एक छोटा सा टुकड़ा था और बाकी फ्रांसीसी लोगों के ठीक बगल में था। यही हमारा नया "घर" था।
निमंत्रण के पीछे का असली कारण जल्द ही स्पष्ट हो गया। बैड भोजन और आपूर्ति के ऑर्डर का प्रभारी था। उसने अपनी नोटबुक निकाली और बताया कि यह सब कैसे काम करता है।
“क्या आपके खाते में पैसे आ गए हैं?” उसने पूछा। “हाँ, मेरे साथी ने आज सुबह कुछ पैसे भेजे हैं।” उसने सिर हिलाया, फिर सामानों से भरी एक सूची खोली, जिनमें से अधिकांश पर पहले से ही निशान लगे हुए थे। “यह आसान है, हम अपने दैनिक ऑर्डर गार्डों के माध्यम से देते हैं। खाना, स्वच्छता, आपको जो भी चाहिए। तो, क्या चाहिए?”
मैंने गहरी सांस ली और सूची पर नज़र डाली। हर कल्पना योग्य चीज़ उसमें मौजूद थी, सिगरेट, साबुन, टूथपेस्ट, कंबल, डिब्बाबंद खाना, इंस्टेंट

नूडल्स, कॉफी... बाहर की दुनिया की तुलना में हर चीज़ की कीमत बहुत ज़्यादा थी, लेकिन यहाँ हर वस्तु अनमोल थी।
“मेरे बिल में अधिकतम राशि लगा दो और जितना हो सके उतना सामान ले लो। खाना, साफ-सफाई का सामान… और सिगरेट। ढेर सारी सिगरेट।” बैड ने जल्दी से लिख लिया। “ठीक है। आपका बिल बन गया।”
हमें जल्द ही पता चल गया कि यहाँ विदेशियों को स्वाभाविक रूप से अमीर समझा जाता था। थाई कैदी यह मान लेते थे कि अगर हमारे पास कोई मिलने आता है, तो हमारे पास पैसा है। लेकिन ऐसा हमेशा नहीं होता था। बहुत से विदेशी कैदी, नाइजीरियाई, ईरानी, कंगाल थे। उन्हें दूसरों की मदद करके या अन्य तरीकों से अपना गुजारा करना पड़ता था।
जैसे ही ऑर्डर आया, हमारे छोटे से "घर" में अचानक एक नयापन आ गया। आमतौर पर, थाई लोग खाने का एक पैकेट तीन या चार लोगों में बाँटकर खाते थे। अब वे राजाओं की तरह खा रहे थे—चावल के और पैकेट, अंडे, डिब्बाबंद टूना... खाना थाई था और बहुत मसालेदार था, लेकिन कम से कम खाने के लिए तो था।
दोपहर 2 बजे, सेल में वापस जाने का समय हो गया था। यह समय अलग था, आखिरकार हमें जगहें आवंटित कर दी गई थीं।
जैसे ही हम अंदर दाखिल हुए, निड ने उस जगह की ओर इशारा किया जहाँ हम सोने वाले थे। "तुम लोग वहाँ, पीछे दाईं ओर हो।"
कोशिका को विभिन्न स्तरों में व्यवस्थित किया गया था:
● मेज़ानाइन: ऊपरी स्तर, जो लंबे समय से कैद में रहने वाले कैदियों
या बड़ी रकम का भुगतान करने वालों के लिए आरक्षित थे।
● फर्श: कैदियों के प्रत्येक परिवार का अपना एक छोटा सा क्षेत्र था, जिसे पतली रेखाओं और कंबलों से चिह्नित किया गया था।
● केंद्र: नरक। यहीं पर नए कैदी या दिवालिया कैदी सोते थे—जानवरों
की तरह ठूंस-ठूंस कर भरे हुए।
हमारी नई जगह शौचालयों के ठीक बगल में, नीचे तीन "छेद" की ओर जाने वाली सीढ़ियों के पास थी।
मेरी जगह शौचालयों के सबसे करीब थी, लेकिन सच कहूँ तो, मुझे परवाह नहीं थी।
यह मेरी जगह थी।
मेरे ठीक बगल में: मार्को।

“खैर, यह विलासिता तो नहीं है,” मार्को ने अपना बैग नीचे रखते हुए बुदबुदाया, “लेकिन कम से कम हम बीच में तो नहीं फंसे हैं।” “और इसके लिए हमें सिगरेट के 100 पैकेट भी नहीं देने पड़े,” मैंने स्वान और अब्देल के बारे में सोचते हुए मजाक किया।
चाड और ल्यूक को उनके घरों से निकाल दिया गया था और वे हमारे लिए झूलों में रहने लगे। यहाँ, जब कोई अधिक पैसे वाला व्यक्ति आता था, तो दूसरों को बाहर निकाल दिया जाता था। उच्चतम बोली लगाने वाले का नियम।
रात होने वाली थी, और हमें घर के बने तकिए दिए गए—पुराने कपड़े फटे हुए तकिए के कवर में लपेटे हुए थे। यह बहुत ज्यादा तो नहीं था, लेकिन कुछ न होने से बेहतर था।
उस कोठरी में दो टीवी पर थाई धारावाहिक चलते थे। बिल्डिंग 1 का एक व्यक्ति तय करता था कि कौन से चैनल चलेंगे। कभी-कभी वे विदेशी फिल्में चलाने के लिए सहमत हो जाते थे, लेकिन केवल तभी जब उन्हें सिगरेट या नकदी से रिश्वत दी जाती थी।
उस रात, हमने एक थाई ड्रामा देखा। पता नहीं था कि वह किस बारे में था, लेकिन फिर भी हमने उसे देखा - कहानी के लिए नहीं, बल्कि अपने विचारों से ध्यान हटाने के लिए।
एक बार जब हम अपनी नई जगह पर व्यवस्थित हो गए, तो आखिरकार हमें चैन की सांस मिली। यह आलीशान तो नहीं था, लेकिन यह हमारा अपना था - शहर के केंद्र से दूर, जहाँ नए लोग मवेशियों की तरह जमा हो जाते थे। यहाँ, भले ही जगह तंग थी, हम कम से कम बिना किसी के हमारी पसलियों को कुचले लेट तो सकते थे।
हमारे नए कैदी साथी—निड, बैड, चैड और ल्यूक—सभी का जीवन हमसे बिल्कुल अलग था।
हमारे विपरीत, वे मानो शांत और संतुष्ट थे, मानो समय का उन पर कोई नियंत्रण न रह गया हो। उन्होंने अपने भाग्य को स्वीकार कर लिया था, चाहे वह कितना भी लंबा चले। “तुम विदेशी लोग तो हमेशा जल्दी निकलने की हड़बड़ी में रहते हो,” निड ने सिगरेट जलाते हुए कहा। “हम जानते हैं कि हम यहाँ लंबे समय तक रहने वाले हैं। इसलिए, हम खुद को ढाल लेते हैं।”
वह गलत नहीं था। हम निरंतर चिंता में जीते थे, हर दिन किसी चमत्कार की उम्मीद करते थे। लेकिन उन्होंने जेल को एक तरह की व्यावहारिकता के साथ

देखा। वे व्यस्त रहते थे। वे काम करते थे। उनके लिए, जेल दैनिक जीवन था - कोई सजा नहीं।
चाड, बूढ़ा आदमी, अभी भी जाग रहा था, दीवार के सहारे पालथी मारकर बैठा था। वह कहीं और खोया हुआ लग रहा था, विचारों में डूबा हुआ।
“क्या तुम्हारा परिवार तुमसे मिलने आता है, चैड?” मार्को ने पूछा। “कभी- कभी,” उसने शांत भाव से उत्तर दिया। “लेकिन यहाँ आना महंगा पड़ता है। वे मुझे पत्र लिखते हैं।”
उन्होंने दुख नहीं दिखाया—बस शुद्ध, शांत स्वीकृति। इस तरह का लचीलापन प्रेरणादायक और भयावह दोनों था।
सबसे छोटा, ल्यूक, अधिक चिंतित दिख रहा था। उन्नीस साल का, ड्रग तस्करी के आरोप में जेल में बंद, और उसे कोई अंदाजा नहीं था कि उसे कब रिहा किया जाएगा।
“मुझे लगा था कि मैं यहाँ एक साल रह सकता हूँ,” उसने अपनी आँखें नीचे करते हुए कहा। “लेकिन अब मुझे यकीन नहीं है कि मैं अंत तक टिक पाऊँगा।”
बैड ने उसके कंधे पर थपथपाते हुए कहा, “इतना सोचना बंद करो। हम सब की तरह एक-एक दिन करके आगे बढ़ो। मुझे देखो—मैं यहाँ आठ साल से हूँ। अभी भी खड़ा हूँ।”
हम बातें करते रहे, बाहर की दुनिया में बिताए अपने जीवन की कहानियाँ सुनाते रहे, और यह भी बताते रहे कि बाहर आने के बाद हम क्या करेंगे। यह एक खतरनाक खेल था, लेकिन ज़रूरी भी था—खुद को पागल होने से बचाने के लिए।
जब हम बात कर रहे थे, बैड ने हमारी तरफ देखा और खिलखिलाकर हंस पड़ा। "तुम्हें क्या लगता है कि मैं तुम्हें नंगी कंक्रीट पर सोने दूंगा?" उसने अंगड़ाई लेते हुए कहा।
उन्होंने समझाया कि वे कई कंबलों को एक साथ सिलकर गद्दे बना सकते हैं, और अगर हमें कम से कम आराम चाहिए तो हमें ऑर्डर देना होगा।
“कुछ मोटे कंबल ले आओ, बिल्कुल भारी वाले। कुछ दिनों में मैं तुम्हारे लिए एक असली गद्दा बना दूंगा,” उसने कहा।
हमने इसे तुरंत अपनी अगली खरीदारी सूची में शामिल कर लिया, साथ ही कुछ कपड़ा भी जिसमें चिथड़े भरकर कामचलाऊ तकिए बनाए जा सकें।
"यह फाइव-स्टार तो नहीं है, ठीक है," उसने मुस्कुराते हुए कहा, "लेकिन यकीन मानिए, इससे बहुत फर्क पड़ता है।"

"क्या आप इस तरह की और भी चीजें बना सकते हैं?" मैंने सचमुच प्रभावित होकर पूछा।
"जो चाहो, बस तुम्हारे पास सिगरेट के पैसे होने चाहिए," उसने आँख मारते हुए जवाब दिया।
बैड और निड के बिस्तर को देखकर यह समझना आसान था कि वे इतने आत्मविश्वास से क्यों बात कर रहे थे। उनका गद्दा एक अस्थायी सिंहासन जैसा था—दर्जनों कंबलों को सिलकर बनाया गया एक मोटा तकिया, जो नए कैदियों के लिए बिल्कुल असंभव आराम का स्तर था।
जिन परिवारों के पास थोड़ी बहुत भी दौलत या प्रभाव था, उनमें से अधिकांश के पास अच्छे गद्दे थे, और हमें धीरे-धीरे एहसास हुआ कि उनकी उदारता पूरी तरह से निस्वार्थ नहीं थी। हमें अपने घर में पनाह देकर, बैड और निड को अब भोजन या आपूर्ति की चिंता नहीं करनी पड़ी—हम उनके लिए ऑर्डर संभालने और उनकी सुविधा के लिए आंशिक रूप से धन जुटाने के लिए मौजूद थे।
सेल में कभी पूरी तरह अंधेरा नहीं होता था। छत पर एक विशाल एलईडी लाइट लगी हुई थी जो रात भर जलती रहती थी। तेज, ठंडी और चकाचौंध पैदा करने वाली यह लाइट इस तरह से डिज़ाइन की गई थी कि गार्ड बिना अंदर कदम रखे ही सब कुछ देख सकें।
"लगता है हमें इसकी आदत डालनी पड़ेगी," मार्को ने अपनी बांह अपनी आंखों पर रखते हुए बुदबुदाया।
थाई कैदियों पर इसका कोई असर नहीं दिख रहा था, मानो उन्होंने बहुत पहले ही असली नींद से मुंह मोड़ लिया हो। लेकिन हमारे लिए आंखें बंद करना नामुमकिन था।
मैंने बुदबुदाते हुए कहा, "कल मैं एक स्लीप मास्क बनवा रही हूँ।"
बैड ने मुस्कुराते हुए ऊपर देखा। "अगर आप चाहें तो मैं आपके लिए एक बना सकता हूँ।"
अंततः, हम लेट गए।
आराम नाममात्र का था, पास के शौचालयों की दुर्गंध हमेशा बनी रहती थी, और तेज रोशनी हमारी पलकों को चुभती थी। फिर भी, यह एक बड़ी राहत थी।
अब हम बीच में ठसाठस नहीं भरे थे, अजनबियों से सटकर नहीं बैठे थे, हमारे पास अपनी खुद की जगह थी।
एक छोटी सी जीत। लेकिन जेल में हर जीत मायने रखती है।

कोठरी में रात के खाने का एक अनोखा माहौल होता था।
दिन के बाकी समय के विपरीत, जब हमें अपने हाल पर छोड़ दिया जाता था, रात का खाना लगभग पवित्र होता था, एक ऐसा क्षण जब हर कैदी, जो इसे वहन कर सकता था, उस भोजन का आनंद ले पाता था जिसे उसने कई दिन पहले ऑर्डर किया था।
शाम करीब सात बजे, तंग कमरे में खाने की खुशबू फैलने लगी।
हर कोई जहाँ-जहाँ जगह बना सका, वहाँ से सामान निकालकर अपनी छोटी-छोटी प्लास्टिक की थैलियों में से जो कुछ भी उन्होंने खरीदा था, उसे बाहर निकालने लगा। बातचीत तेज़ होती चली गई। पहली बार, माहौल में बोरियत या तनाव नहीं, बल्कि एक स्वादिष्ट भोजन का क्षणिक आनंद छाया हुआ था।
रात का खाना खास तौर पर इसलिए खास था क्योंकि उसे कोठरी के अंदर लाया जा सकता था। दूसरी ओर, दोपहर का खाना आंगन की चिलचिलाती धूप में बाहर खाया जाता था। इसलिए रात का खाना ही एकमात्र ऐसा समय था जब आप शांति से, धूप से दूर, भागदौड़ से दूर, खाना खा सकते थे।
शाम करीब 6 बजे, बैड हमेशा की तरह फैशन के हिसाब से देर से पहुंचा।
जेल के अंदर उनकी नौकरी ने उन्हें थोड़ा-बहुत घूमने-फिरने की आजादी दी थी, और उन्हें अक्सर शॉवर की देखभाल करने और जेल परिसर में चीजों की मरम्मत करने का काम सौंपा जाता था।
उस रात, वह अपनी हमेशा की तरह पेंट की बाल्टी और चावल का अस्थायी बर्तन लेकर गया था।
“ठीक है लड़कों, दावत का समय हो गया है!” उसने बाल्टी नीचे रखते हुए और बड़ी मुस्कान के साथ कहा।
अंदर, नीचे चिपचिपे चावलों का एक ढेर लगा था, जो अभी भी गर्म था। उसके बगल में, वह खाना था जिसका हम इंतजार कर रहे थे - दर्जनों छोटी-छोटी प्लास्टिक की थैलियाँ बंधी हुई थीं, जिनमें से कुछ से सॉस टपक रहा था।
प्रत्येक व्यंजन की कीमत लगभग 35 बाट थी और इसे एक छोटे से प्लास्टिक बैग में कसकर पैक करके भेजा गया था।
उस पहली रात हमने ज़्यादा खाना नहीं मंगवाया था। कुछ तो पैसों की कमी के कारण, लेकिन ज़्यादातर इसलिए क्योंकि हमने पहले से योजना नहीं बनाई थी।
अंत में हमारे पास ढेर सारा चावल और खाने के सिर्फ़ दो छोटे पैकेट बचे जिन्हें हमें आपस में बाँटना पड़ा।

फिर भी, यह बुरा नहीं था। एक बैग में एक तरह की चिकन करी थी, जो तैलीय थी और उसमें मसाले की मात्रा बिलकुल सही थी।
दूसरा व्यंजन सब्जियों की सब्ज़ी की सब्ज़ी थी, जो सादी लेकिन पेट भरने वाली थी।
हमने चावल को छोटे-छोटे कटोरे में निकाला, खाना आपस में बाँटा और खाना शुरू कर दिया।
“बुरा नहीं है, है ना?” मैंने एक निवाला चबाते हुए पूछा।
मार्को ने सिर हिलाया, उसकी आँखों में संतुष्टि की एक चमक थी।
"सच कहूं तो, सिर्फ इससे भी मन को सुकून मिल जाता है," उन्होंने निवाले लेते हुए कहा।
यह एक साधारण सा दृश्य था, लेकिन इसमें एक अलग ही गर्माहट थी। हमारे कमरे के कोने में बनी एक अस्थायी मेज के चारों ओर बैठकर हमने अपना-अपना खाना बाँटा, अपनी योजनाओं के बारे में बातें कीं, अपने पुराने जीवन की कहानियाँ सुनाईं और कल्पना की कि आगे क्या हो सकता है।
हम अभी भी आने वाले भव्य समारोहों से बहुत दूर थे, लेकिन जेल के फीके सूप की तुलना में, यह किसी शाही भोज जैसा लग रहा था।
कुछ ही दिनों में, भोजन के साथ हमारा रिश्ता पूरी तरह बदल गया।
हमारे परिवारों द्वारा भेजे गए पैसों की बदौलत, अब हम हर बार दस या उससे अधिक बोरियों का बड़ा ऑर्डर देने में सक्षम हो गए हैं।
"हम अब मुनाफे के लायक बन रहे हैं," मार्को ने शरारती मुस्कान के साथ फुसफुसाया।
और वह सही था। इस छोटी सी जेल जैसी दुनिया में, धन का माप नकदी में नहीं, बल्कि सिगरेट, भोजन और स्वच्छता उत्पादों में किया जाता था।
अब हमारे छोटे से "परिवार" को किसी चीज की कमी नहीं थी। हमारी उपस्थिति ही हमारे लिए एक संपत्ति बन गई थी। बैड और निड को अब भोजन न मिलने की चिंता नहीं करनी पड़ती थी, हमारे पास आपूर्ति बनाए रखने के साधन थे।
लेकिन भोजन के कुछ नकारात्मक पहलू भी थे।
गंदगी और स्वच्छता की पूर्ण कमी ने उस कोठरी को हर तरह के कीड़े-मकोड़ों के लिए स्वर्ग बना दिया था।
कोनों में बचा हुआ खाना ढेर हो गया था, प्लेटें शौचालयों में धोई जा रही थीं, और चिपचिपी फर्श पर बीते भोजन की गंदगी चिपकी हुई थी।

"वहाँ चिड़ियाघर देखो," मैंने कोठरी के एक अंधेरे कोने की ओर इशारा करते हुए बुदबुदाया।
जूठे खाने के पास विशालकाय तिलचट्टे घूम रहे थे, चींटियाँ हर टुकड़े पर धावा बोल रही थीं, और आवारा बिल्लियाँ मंडरा रही थीं, खाने का एक टुकड़ा चुराने के जरा से भी मौके की प्रतीक्षा कर रही थीं।
"यहां, आपको यह चुनने का अधिकार नहीं है कि आपके साथ रात का खाना कौन खाएगा," बैड ने दीवार पर रेंगती चींटियों की एक कतार की ओर इशारा करते हुए मजाक किया।
कीड़ों को दूर रखने का एकमात्र कारगर तरीका था जल्दी खाना खाना और अच्छी तरह सफाई करना। लेकिन फिर भी, वे हमेशा वापस आ जाते थे।
हमें जल्द ही एहसास हो गया कि रात का खाना, चाहे वह कितना भी उत्सवपूर्ण क्यों न हो, गंदगी के खिलाफ एक दैनिक लड़ाई भी थी।
लेकिन उस पल, पेट भरा होने और थोड़ी सी राहत मिलने से हमें कुछ दुर्लभ चीज मिली: मुस्कुराने का एक कारण।
कल एक और लड़ाई होगी।
रात 9 बजे बत्ती बंद करने की घंटी बजी।
सेल लीडर ने बीच में मौजूद कैदियों को पैर से धक्का देना शुरू कर दिया, ताकि हर किसी को सोने के लिए जगह मिल सके। यह एक रोज़ाना की रस्म थी, परेशान करने वाली, लेकिन यहाँ आम बात थी।
फर्श के अपने कोने पर लेटे हुए, मैंने एक गहरी सांस छोड़ी।
रात लंबी खिंचती चली गई। मैंने एक और सिगरेट जलाई, थकावट और निराशा के अजीब मिश्रण के आगे हार मानते हुए, जिसमें आशा की एक हल्की सी किरण भी थी। उमस, असुविधा और हमारे आसपास के कठोर वातावरण के बावजूद, फ्रांसीसी कैदियों के साथ या उनके बिना, हमने जो पल साझा किए, वे विस्मृति से बचने की हमारी आखिरी उम्मीद थे। पटाया रिमांड के इस नरक में, हर मिनट, हर बातचीत, हर आदेश, हमारी गरिमा और सबसे बढ़कर, हमारी मानवता को बचाए रखने की लड़ाई थी।
वह सुबह कुछ अलग थी। इस बार हमारे पास अपना घर था।
आखिरकार हमें अपनी एक जगह मिल गई, निड और बैड के शामियाने के नीचे हमारा छोटा सा कोना। तीन वर्ग मीटर कंक्रीट का वह टुकड़ा जिसे हम अपना कह सकते थे। एक ऐसी जगह जहाँ हम बिना किसी डर के अपना सामान रख सकते थे कि वह पल भर में गायब हो जाएगा।

कंक्रीट पर, पूरी तरह खुले में बैठकर, हम नहा रहे थे जबकि सब लोग हमारे पास से गुजर रहे थे। लेकिन किसी को कोई फर्क नहीं पड़ा। यहाँ शर्म-हया नाम की कोई चीज नहीं थी।
फिर भी, इतना कम पानी होने के बावजूद, समय निकालकर आराम से समय बिताने का मौका मिलना, मानो एक पवित्र अनुभव था। अफरा-तफरी के बीच शांति का एक क्षण। जैसे-जैसे हम जेल में घूमते रहे और अपने आसपास के माहौल को समझते रहे, हमें उन लोगों के बारे में समझ आने लगी जिनके बीच हम रह रहे थे।
जेल विरोधाभासों की दुनिया थी। एक तरफ, अमीर अपराधी, वे लोग जिन्होंने बाहर बड़े-बड़े कारनामे किए थे, जो जानते थे कि उन्हें जेल जाना होगा और उन्होंने यह सुनिश्चित कर लिया था कि उनके परिवारों का ख्याल रखा जाएगा। दूसरी तरफ, गरीब लोग, वे लोग जो मजबूरी में चोरी करते थे, जो अनजाने में हत्या कर देते थे, जो थोड़ी-बहुत ड्रग्स के साथ पकड़े जाते थे और थाईलैंड में इसके लिए भारी कीमत चुकाते थे। उनमें बीमार, विकलांग और उपेक्षित लोग भी शामिल थे। कोई आगंतुक नहीं। कोई पैसा नहीं। कोई भविष्य नहीं। “तुम्हें लगता है कि वे कभी बाहर निकल पाएंगे?” मैंने मार्को से पूछा। “बाहर… कहाँ?” उसने सपाट स्वर में उत्तर दिया। “उनमें से अधिकांश के पास तो वापस जाने के लिए कोई जगह ही नहीं है।”
हमें सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाली बात थी उनका धैर्य। थाई कैदी हमसे कहीं ज्यादा व्यावहारिक थे। हम विदेशी लगातार चिंता में डूबे हुए थे— जल्द रिहाई की उम्मीद लगाए बैठे थे। उन्होंने जेल को अपना भाग्य मान लिया था। उन्होंने खुद को हालात के अनुसार ढाल लिया, दिनचर्या बना ली और ज्यादा भावनाएं नहीं दिखाईं। कई लोगों के लिए, यह जीवन का एक और चरण था, चाहे वह कितना भी लंबा चले। कुछ की पत्नियां और बच्चे बाहर बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। कुछ जानते थे कि वे अपने परिवार को फिर कभी नहीं देख पाएंगे, लेकिन इससे उन्हें जीने की हिम्मत नहीं मिली।
उस सुबह, हमने एक बेहद अप्रत्याशित खोज की। थाईलैंड में कैदियों में शर्म-हया नाम की कोई चीज नहीं थी। वे नग्न अवस्था में नहाते थे, सबके सामने शौच करते थे। और हम, विदेशियों के रूप में, इस क्रूरतापूर्ण निजता के अभाव के आदी होने के अलावा हमारे पास कोई विकल्प नहीं था।
लेकिन जिस चीज़ ने हमें सचमुच चौंका दिया, वह थीं विकृतियाँ। “मार्को, क्या तुमने वह देखा?” मैंने फुसफुसाते हुए एक कैदी की ओर इशारा

किया जो खुद को धो रहा था। “क्या?”
“उनका… मेरा मतलब है, देखो।”
पहले तो हमने इस बारे में मजाक करना शुरू किया। लेकिन जल्द ही, जिज्ञासा हावी हो गई। सूजे हुए जननांग, अजीब आकार के, कुछ में त्वचा के नीचे उभरी हुई गांठें... यह स्वाभाविक नहीं था।
“तुम्हें लगता है कि यह किसी तरह का यौन संचारित रोग है?” “नहीं,” मार्को ने कहा। “मुझे लगता है कि वे खुद ही ऐसा करते हैं।”
हमने निड से इसके बारे में पूछा। बिना किसी झिझक के उसने अपनी पैंट उतार दी। जो हमने देखा वह भयावह था। उसका लिंग बहुत बड़ा था, विकृत मांस का एक भद्दा ढेर। हमारे अचंभित चेहरों को देखकर वह जोर से हंस पड़ा।
“यहाँ ये चलन है,” उसने गर्व से कहा। “ये लोग त्वचा के नीचे वैसलीन इंजेक्ट करते हैं या सिरेमिक मोती डालते हैं।” “क्या?!” मैं भयभीत होकर चिल्लाई। “महिलाओं को खुश करने के लिए,” उसने मुस्कुराते हुए कहा। “लेकिन… उनमें से कुछ तो राक्षस जैसे दिखते हैं!” “ये लोग हद से ज़्यादा करते हैं,” निड हँसते हुए बोला। “कुछ तो अब खड़े भी नहीं हो पाते।”
हमारी कोठरी में एक आदमी हद से ज़्यादा बिगड़ गया था, उसकी त्वचा जगह-जगह से फट गई थी। हर सुबह, वह आँगन में हमारे पास बैठता और अपने घावों पर लाल एंटीसेप्टिक लगाता। पहले तो हमें घिन आती थी। आखिरकार, यह जेल जीवन का एक और विकृत हिस्सा बन गया। एक काला मज़ाक जो चलता रहता था।
“खैर, इस बात की तो मुझे कभी चिंता नहीं होगी,” मार्को बुदबुदाया। “हाँ, वहाँ कोई खतरा नहीं है,” मैं हँस पड़ा, मेरे चेहरे पर हंसी और डर का मिला- जुला भाव था।
यह एक नरसंहार था। लेकिन इस विचित्र, क्रूर पारिस्थितिकी तंत्र में, यह किसी तरह सामान्य हो गया।
थाईलैंड में सप्ताहांत घर की तरह उत्साहजनक नहीं होते थे। उनका मतलब था सामूहिक कैद। कोई डाक नहीं, कोई मुलाकात नहीं, कोई काम या कक्षाएं नहीं। बस कैदियों की भीड़, गर्मी में एक साथ ठसाठस भरी हुई।
“तुम्हें पता चल जाएगा,” निड ने हमें चेतावनी दी। “तभी तुम्हें पता चलेगा कि ‘नरक’ का असली मतलब क्या होता है।”

और वह सही था। सप्ताहांत तो मानो नरक था। कोई मनोरंजन नहीं। कोई जगह नहीं। कोई बचने का रास्ता नहीं। सप्ताह के दौरान, कुछ कैदी काम पर या स्कूल जाते थे। लेकिन सप्ताहांत में, सभी लोग आंगन में फंसे रहते थे, धूप में तपते रहते थे। सन्नाटा घुटन भरा था।
हमेशा की तरह, बैड काम पर लग गया। उसने एक प्लास्टिक की बोतल पकड़ी, उसे बीच से काट दिया और गत्ते के एक टुकड़े से आग लगा दी। पिघलते हुए प्लास्टिक से फुफकार निकली और घना, काला जहरीला धुआं निकला।
“सच में शानदार,” मार्को ने मुस्कुराते हुए कहा। “कोई चारा नहीं। हम यहाँ पानी इसी तरह गर्म करते हैं,” बैड ने कंधे उचकाते हुए कहा।
उसने एक धातु का डिब्बा आग पर रखा, और कुछ ही मिनटों में पानी उबलने लगा। “कॉफी?” उसने हमें इंस्टेंट कॉफी का एक पैकेट और मीठे गाढ़े दूध का एक डिब्बा देते हुए पूछा।
यह हमारी सुबह की रस्म बन गई थी: पतले पानी में इंस्टेंट कॉफी, गाढ़े दूध में डूबी सफेद ब्रेड। बच्चों के लिए उपयुक्त नाश्ता, एक ऐसी जगह पर मासूमियत का मीठा-कड़वा स्वाद जहाँ मासूमियत का कोई स्थान नहीं था।
हम कंक्रीट के अपने हिस्से पर बैठे, जेल को धीरे-धीरे जागते हुए देख रहे थे। बाल्टियों की खड़खड़ाहट। नंगी त्वचा पर पानी के छींटे पड़ने की आवाज़। आंगन में गूंजती थाई आवाज़ों की गुनगुनाहट। हर सुबह एक जैसी थी, और हर सुबह, हमें एहसास होता था कि हम यहाँ न जाने कब तक के लिए हैं।
लटकती चादरों के पीछे, लेडीबॉय और उनके "ग्राहक" छिपे हुए थे। हवा में खाना पकाने की अव्यवस्थित गंध, पसीने की बदबू और सीवेज की गंध फैली हुई थी। हम जानते थे कि सप्ताहांत लंबा होगा...
लेकिन कम से कम उन्होंने हमें आपस में मेलजोल करने का समय तो दिया। तभी हमारी मुलाकात रेजा से हुई।
तीस वर्ष का एक ईरानी युवक, दुख-तकलीफों के बावजूद चेहरे पर एक उज्ज्वल मुस्कान लिए हुए था। वह यहाँ दो साल से था, उसे मादक पदार्थों के आरोप में सात साल की सजा सुनाई गई थी।
“अभी पाँच और बाकी हैं,” उसने मुस्कुराते हुए कहा। “लेकिन मैं मन से पहले ही मुक्त हो चुका हूँ।”
उनकी ऊर्जा आश्चर्यजनक रूप से सकारात्मक थी। उन्होंने जिस तरह से अपने भाग्य को स्वीकार किया, उसने हम सभी को गहराई से प्रभावित किया। मैंने

पूछा, "क्या आप बहुत प्रभावित नहीं हैं?" उन्होंने कहा, "बिल्कुल हूँ। लेकिन इसका क्या फायदा? आपको आगे बढ़ना होगा, यार। अगर आप अपना सारा दिन खुद पर तरस खाते हुए बिताएंगे, तो आप यहीं मर जाएंगे।"
हमें उनका दर्शन पसंद आया, खासकर इसलिए क्योंकि हम अभी भी शीघ्र रिहाई की भोली उम्मीद से जुड़े हुए थे।
फिर हमारी मुलाकात एंड्री से हुई, एक ऐसा किरदार जिसे हम कभी नहीं भूलेंगे।
चालीस वर्ष का एक रूसी व्यक्ति, जिसमें माफिया बनने की चाहत थी। “सज्जनों,” उसने नाटकीय अंदाज़ में घोषणा की, “क्या आप एक अच्छे वकील की तलाश में हैं?”
हमें बिलकुल भी पता नहीं था कि वह जेल में क्यों था। ड्रग्स? धोखाधड़ी? कौन जानता था। लेकिन उसने एक पेशेवर की तरह भूमिका निभाई, बड़े-बड़े हाथ के इशारे किए और अपनी आवाज को इस तरह धीमा किया जैसे वह राज्य के रहस्य उजागर कर रहा हो।
“मेरी बात सुनो। असली वकील, ताकतवर वकील, वे अदालत में आम लोगों की तरह केस नहीं लड़ते।” “ओह, सच में?” मार्को ने भौंहें चढ़ाते हुए जवाब दिया। “नहीं, नहीं, नहीं!” एंड्री ने उंगली हिलाते हुए कहा। “वे जजों के साथ खाना खाते हैं। वे अभियोक्ता के साथ गोल्फ खेलते हैं! देखा?”
उसने नामों की एक सूची गिनाई, ऐसे कथित चमत्कारिक लोग जो रातोंरात किसी मामले को गायब कर सकते थे। "वह वाला? जीनियस। उसने हत्या का आरोप गायब कर दिया। पलक झपकते ही! गायब!"
यह पूरी तरह से नाटक था। “तो तुम अभी भी यहाँ क्यों हो?” मार्को ने आधा हंसते हुए पूछा।
एक विराम।
“तकनीकी कारणों से,” एंड्री ने कंधे उचकाए।
हम हँस पड़े। हो सकता है वह कोई धोखेबाज हो या फिर पक्का झूठा हो—लेकिन उसने हमें बहुत ज़रूरी मनोरंजन दिया।
हर सुबह, टोनी हमसे हमारे "घर" पर मिलता था। वह हमारी कोठरी में नहीं था, लेकिन अब वह अपना अधिकांश समय हमारे साथ ही बिताता था, और अन्य विदेशियों के साथ उसका संपर्क लगभग न के बराबर ही होता था।
हम उसे धीरे-धीरे कमजोर होते हुए देख रहे थे।

वह मुश्किल से ही कुछ बोलता था, और धीरे-धीरे और अधिक अलग-थलग पड़ता जा रहा था, मानो जेल उसे पूरी तरह से निगल रही हो।
“तुम ठीक से सोए?” मैंने पूछा। “ठीक-ठाक…”
उसने दिखावा करना भी छोड़ दिया था। उसने अपनी किस्मत स्वीकार कर ली थी, जबकि हम अभी भी बाहर निकलने के भ्रम से बुरी तरह चिपके हुए थे।
हमने उसे अपने करीब रखने के लिए हर संभव प्रयास किया। उसे गहरे अंधकार में डूबने से बचाने के लिए। अपने सबसे कठिन क्षणों में भी, हमें थोड़ा सा ही सही, यह विश्वास था कि हम एक दिन मुक्त हो जाएंगे। टोनी को अब किसी भी चीज़ पर विश्वास नहीं रहा।
सुबह का समय धीरे-धीरे बीत रहा था। सूरज और ऊपर चढ़ता जा रहा था, कैद और अनुभवहीनता से कमजोर हमारी त्वचा झुलस रही थी। हम दैनिक गिनती के आदी हो चुके थे, एक घुटन भरी रस्म जिसमें हमारी इमारत के सभी 1,500 कैदी सशस्त्र गार्डों की निगाहों के नीचे चुपचाप कतार में खड़े हो जाते थे। यह हमें हर दिन याद दिलाता था कि अब हम कौन हैं। कैदी। व्यवस्था की संपत्ति।
दोपहर के आसपास, ऊब हावी हो गई।
तभी आंगन में एक अप्रत्याशित घोषणा गूंजी: "मुक्केबाजी का मुकाबला!" तुरंत ही भीड़ जमा हो गई। हम धक्का-मुक्की करते हुए पास पहुंचे और एक आदमी को वार्म-अप करते देखा। एक गठीला थाई फाइटर, जिसकी आंखें तलवार की तरह तेज थीं।
मेरे पीछे से किसी ने फुसफुसाते हुए कहा, "वह कभी चैंपियन हुआ करता था। उसने 250 से अधिक मुकाबले लड़े थे।"
सट्टेबाजी का उन्माद तुरंत शुरू हो गया। सिगरेट, नकदी और कॉफी के पैकेट एक हाथ से दूसरे हाथ में उड़ने लगे।
फिर अगली कॉल आई: "कौन उससे लड़ना चाहता है?"
मौन।
और फिर मुझे महसूस हुआ, निगाहें मेरी ओर मुड़ गईं। “आगे बढ़ो,” मार्को ने मुस्कुराते हुए मुझे कोहनी मारी। “उन्हें दिखाओ कि तुम क्या कर सकते हो।” मैंने गहरी सांस ली। "ठीक है... मैं तैयार हूँ।"
कुछ ही सेकंड में दांव दोगुना हो गया। मैच शुरू हो गया था।

अब—किसी महाकाव्य फिल्मी दृश्य की कल्पना मत कीजिए, जिसमें मैं जयकारे लगाते हुए ग्लेडिएटर की तरह आगे बढ़ रहा हूँ। नहीं। यह हॉलीवुड नहीं था। यह बिल्कुल कच्चा था। असली था। हताश।
मैं झूठ नहीं बोलूंगा, मुझे थोड़ा फायदा तो था ही। थाई मुक्केबाज बेशक दिग्गज था। लेकिन जेल ने उसे तोड़ दिया था, बारह साल अंदर रहने से उसका शरीर कुपोषण और अंतहीन नीरसता से बर्बाद हो गया था। मैं? मैं तो अभी भी तरोताजा था। मुझमें अभी भी वो ऊर्जा थी जो हार न मानने वाले इंसान में होती है। मैंने किशोरावस्था से ही पश्चिमी मुक्केबाजी का प्रशिक्षण लिया था। मेरे मुक्के तेज थे, मेरे पैरों की चाल एकदम सही थी।
और यह मुए थाई नहीं था। यह मेरा इलाका था।
फिर भी, मुझे पता था कि घमंड करना ठीक नहीं है। पहले ही वार से मुझे एहसास हो गया था—उसने ट्रक की तरह वार किया। हर वार से मेरी हड्डियाँ काँप उठीं। मुझे बहुत ताकत लगानी पड़ी। सचमुच बहुत ताकत।
क्योंकि जेल में कमजोरी माफ नहीं की जाती। अगर मैं गिर जाता, अगर मैं पीछे हट जाता, तो मैं सिर्फ लड़ाई ही नहीं हारता। मैं अपनी जगह खो देता। निशाना बन जाता। इसलिए मैंने एड्रेनालाईन, डर और जीने की सहज प्रवृत्ति से प्रेरित होकर पलटवार किया। मेरी सांसें तेज हो गईं, लेकिन मेरा शरीर अपने आप चलता रहा। मैंने वार से बचता रहा, पलटवार करता रहा और वार करता रहा।
फिर, मुझे मौका मिला और मैंने जोरदार दाहिना मुक्का मारा।
दरार।
यह सीधे उसके जबड़े पर लगा। वह गिर पड़ा। नॉकआउट।
मौन।
फिर आंगन में शोर मच गया। जयकारे, चीखें, हवा में उठी मुट्ठियाँ। अली, जो प्रवेश कक्ष में इकलौता ईरानी था, ने मुझे एक ट्रॉफी की तरह पकड़ लिया।
"तुम जीत गए, मेरे भाई!" वह हंसते हुए चिल्लाया।
भीड़ छोटे-छोटे समूहों में बंट गई, लोग मेरी पीठ थपथपा रहे थे, मुस्कुरा रहे थे और बहुत तेजी से बातें कर रहे थे।
तकनीकी रूप से यह लड़ाई "कानूनी" नहीं थी, लेकिन सप्ताहांत में गार्ड इसकी अनुमति देते थे, बशर्ते इसमें खून-खराबा न हो।
बिना अराजकता फैलाए तनाव कम करने का एक तरीका।

हमने बड़ी जीत हासिल की थी। दांव में मिली रकम सिगरेट के रूप में थी, जो यहाँ एक बड़ी दौलत थी। लेकिन उससे भी ज़्यादा महत्वपूर्ण बात यह थी कि हमने सिगरेट से भी कहीं ज़्यादा दुर्लभ चीज़ हासिल की थी: सम्मान।
अब लड़के हमें देखकर मुस्कुरा रहे थे। सहमति में सिर हिला रहे थे। दोस्ताना हाथ मिला रहे थे। हम अगले स्तर पर पहुँच चुके थे।
और फिर आया सबसे बढ़िया हिस्सा: आइसक्रीम। जी हाँ, आइसक्रीम। कभी-कभी जेल में डिब्बे भर-भरकर आइसक्रीम आती थी, फैक्ट्री में बनी हुई, वैसी ही जैसी सुपरमार्केट में मिलती है। यह सोने के समान थी। इस भीषण गर्मी में एक ठंडा चमत्कार।
मैंने अपना टुकड़ा दांतों से काट लिया, पैरों में उठ रहे दर्द का मुझे ज़रा भी एहसास नहीं हुआ। क्योंकि मेरे पैर? खून बह रहे थे।
हमें जो सस्ते और सख्त जूते दिए गए थे, उन्होंने लड़ाई के दौरान मेरी त्वचा को बुरी तरह से छील दिया था। छाले पड़ गए थे। घाव हो गए थे। हर जगह खून ही खून था।
लेकिन मुझे परवाह नहीं थी।
जीत का स्वाद किसी भी आइसक्रीम से मीठा था। मैंने साबित कर दिया था कि मैं सिर्फ एक और कैदी नहीं था। मेरा अस्तित्व था। मैं बच गया था। मैंने मार्को और टोनी की ओर देखा। वे मुझ पर गर्व से मुस्कुरा रहे थे।
“यह आधिकारिक है,” मार्को ने अपने होठों से सिगरेट लटकाए हुए कहा। “अब हम कुछ बन गए हैं।”
मैंने अपनी सिगरेट का एक लंबा कश लिया। और पहली बार, मुझे शांति के करीब कुछ महसूस हुआ। एक ऐसी जगह पर नियंत्रण का एक नाजुक एहसास, जहाँ कुछ भी हमारा नहीं था, यहाँ तक कि हमारा समय भी नहीं।
मुझे अभी तक यह नहीं पता था कि यह लड़ाई सब कुछ कितना बदल देगी।
लेकिन ठीक उसी क्षण, जब पिघली हुई आइसक्रीम मेरी उंगलियों से नीचे बह रही थी, मैंने उस पल को अपने ऊपर हावी होने दिया।

अध्याय 7: मेरे भीतर क्या मरता है
उत्साह के क्षणों के बावजूद, मार्को, टोनी और अन्य लोगों के साथ साझा की गई हंसी के बावजूद, मेरे भीतर हमेशा एक अदृश्य बोझ बना रहता था। एक ऐसा भार जो मेरे सीने पर दबाव डालता था। एक प्रकार का निरंतर, कुचलने वाला तनाव। कुछ भी न सुनने का डर। बाहर न निकल पाने का डर। भुला दिए जाने का डर।
मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं बाहरी दुनिया से कट गया हूँ, मानो जेल ने हमें समय से परे एक अलग ही आयाम में खींच लिया हो, जहाँ हर दिन अंतहीन रूप से दोहराया जाता था और आशा जगाने के लिए कुछ भी नहीं था। दूसरी ओर, थाई कैदी इस वास्तविकता से कम प्रभावित प्रतीत होते थे। शायद यह सांस्कृतिक था, शायद भाग्य के साथ समझौता करने का एक तरीका मात्र। वे आपस में ही रहते थे, एक घनिष्ठ समुदाय, सलाखों के पीछे एक छोटा सा गाँव जैसा। लेकिन हम, विदेशी, कभी भी वास्तव में वहाँ के नहीं थे। हालाँकि हमारा अपना एक छोटा सा दायरा था, फिर भी हम एक ऐसी दुनिया में अजनबी थे जिसे हम नहीं समझते थे, जहाँ अलिखित नियम और अदृश्य संहिताएँ सब कुछ नियंत्रित करती थीं।
और अलगाव की इस भावना को और भी बदतर बनाने के लिए, सुधार विभाग (डीओसी) ने हमें बाहरी दुनिया से पूरी तरह अलग करने के लिए लगभग एक ऑर्वेलियन प्रणाली लागू कर दी थी। थाई जेलों में किसी भी प्रकार की सूचना का रिसाव प्रतिबंधित था। समाचार चैनलों पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। टीवी पर केवल पहले से रिकॉर्ड किए गए कार्यक्रम और फिल्में ही दिखाई जाती थीं। हाल के समाचार पत्रों पर भी रोक थी। जो समाचार पत्र हमें उपलब्ध थे, वे एक वर्ष से अधिक पुराने, बेकार, अप्रचलित और वास्तविकता से पूरी तरह कटे हुए थे। केवल उपन्यास या शैक्षिक सामग्री ही पढ़ने की अनुमति थी। वास्तविक दुनिया के बारे में कुछ भी नहीं। ऐसा लगता था मानो यह प्रणाली कैदियों को बचकाना बनाने और उन्हें दबाने के लिए जानबूझकर बनाई गई हो।
बाहर क्या हो रहा था, इसका कोई अंदाज़ा न होने के कारण, हम पहरेदारों पर निर्भर रहने के लिए मजबूर थे, जो एक प्रकार की आत्मसंतुष्ट गंभीरता के साथ थोड़ी-थोड़ी खबरें देते रहते थे, मानो उनके पास ही सारी जानकारी हो। यह कुछ उत्तर कोरिया जैसी व्यवस्था थी, जहाँ अज्ञानता नियंत्रण का एक साधन थी। मुझे लगा कि यह व्यवस्था थाई कैदियों पर तो शायद ठीक काम कर रही होगी, जो इसी व्यवस्था में पले-बढ़े थे। लेकिन हम विदेशियों के लिए? यह मानसिक यातना थी। एक प्रकार का बौद्धिक घुटन जिसने हमें धीरे-धीरे पागल कर दिया।

इसलिए, सौहार्द के क्षणों के बावजूद, भूलने के प्रयासों के बावजूद, मैं केवल एक ही बात के बारे में सोच सकता था:
सोमवार। एक मुलाकात।
समय बिताने के लिए, मैंने जेल के नाई के पास जाने का फैसला किया। यह घमंड के कारण नहीं, बल्कि खुद का सामना करने के लिए, उस छवि का सामना करने के लिए जिससे मैं बचता रहा था।
वहाँ, जेल के इकलौते शीशे में, टूटे-फूटे, टेढ़े-मेढ़े आयताकार कांच में, मैंने अपना प्रतिबिंब देखा… और मुझे जो दिखा वो मुझे पसंद नहीं आया। पीला पड़ा हुआ। थका हुआ। भारी। सिर्फ़ तीन दिन हुए थे, और मेरा वज़न पहले ही बढ़ गया था। तनाव, डर, ऊब, इन सबने मेरा सारा नियंत्रण छीन लिया था। मैंने बहुत ज़्यादा चावल खा लिए थे, ज़रूरत से ज़्यादा। और व्यायाम न करने और दम घोंटने वाली गर्मी के कारण, मेरा शरीर फूलने लगा था। लेकिन सबसे ज़्यादा चौंकाने वाली बात मेरी आँखें थीं। बेजान। उदास।
मेरा सिर मुंडा हुआ था। मेरा चेहरा तनावग्रस्त था। मेरा शरीर भारी था, मानो यहाँ हर दिन मेरे वजन में एक और किलो वजन बढ़ रहा हो। मैंने गहरी सांस ली।
मुझे हिम्मत रखनी पड़ी। मुझे मुस्कुराते रहना पड़ा। अपने लिए। अपने प्रियजनों के लिए। बिखरने से बचने के लिए।
सोमवार की सुबह। मैं केवल एक ही चीज़ का इंतज़ार कर रहा था: सैन्य अभ्यास समाप्त होने का, हमें बैठने के लिए कहे जाने का, और लाउडस्पीकर पर मेरे नाम की आवाज़ आने का।
और जब आखिरकार ऐसा हुआ, तो मेरा दिल खुशी से उछल पड़ा। उन्होंने हमें फोन किया—मार्को, टोनी और मुझे। आखिरकार, कुछ खबर मिली।
हमने जेल के प्रांगण को पार किया, जालीदार बाड़ों से घिरे उस परिचित रास्ते पर वापस चलते हुए, उस फुटबॉल मैदान को पार किया जो अब भी किसी न किसी तरह हमारे लिए स्वतंत्रता का प्रतीक था।
और फिर, हम मुलाकात कक्ष में दाखिल हुए।
मोटे शीशे के पीछे मेरे माता-पिता थे। उनकी उपस्थिति ने मेरे दिल को सुकून दिया… लेकिन कुछ गड़बड़ थी। उनकी आँखें। चिंतित। थकी हुई। गंभीर।

मेरी माँ ने मेरी ओर देखे बिना अपने हाथ मल लिए। मेरे पिता फर्श की ओर घूर रहे थे, स्पष्ट रूप से थके हुए। मैंने फोन उठाया, मेरी साँसें तेज़ चल रही थीं।
मैंने कांपती हुई आवाज में पूछा, "आप कैसी हैं?"
मेरी माँ ने जल्दी से सिर हिलाया। "और तुम?" उसने धीरे से पूछा। "हम किसी तरह गुज़ारा कर रहे हैं... जैसे-तैसे काम चला रहे हैं।"
सन्नाटा। गहरा सन्नाटा। यह बहुत कुछ कह रहा था। "तो...?" मैंने पूछा। "कोई अपडेट? क्या आप किसी से मिले? मामले में क्या हो रहा है?"
मेरे पिता ने गहरी सांस ली। "हम दूतावास के किसी व्यक्ति से मिले थे।" मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा।
“और?”
“उन्हें आपकी फ़ाइल मिल गई है। उन्होंने हमें बताया कि…”
मेरी मां ने अपनी निगाहें झुका लीं, ऐसे शब्द ढूंढने की कोशिश कर रही थीं जो मुझे पूरी तरह से तोड़ न दें।
“वह क्या?” “आपने पुलिस स्टेशन में एक कागज़ पर हस्ताक्षर किए थे।”
मेरी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। “हाँ…?”
आखिरकार उसने ऊपर देखा। "वह कागज़ अपराध स्वीकार करने का पूर्ण प्रमाण था।"
मेरी सांस रुक गई। “क्या?!”
मेरा दिमाग चकराने लगा। वह कागज़। वही जिस पर हमने पुलिस स्टेशन में हस्ताक्षर किए थे। वही जिस पर लिफ्ट ने बिना सवाल पूछे हस्ताक्षर करने को कहा था। उसने कहा, बस एक सामान्य फॉर्म। एक औपचारिकता।
लेकिन सच्चाई तो यह है कि हमने खुद ही अपने लिए सजा के हस्ताक्षर किए थे। मेरे पिता ने अपनी बात जारी रखी, उनका जबड़ा कसकर भींचा हुआ था। "इसी वजह से, दूतावास का कहना है कि आपको जमानत पर रिहा होने की संभावना बेहद कम है।"
“लेकिन… ये तो गलती है! हमें पता नहीं था! हमें तो ये भी समझ नहीं आया कि उस पर क्या लिखा था!” “इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।”

मेरी माँ ने सिर हिलाया, उनकी आँखों में आँसू आ गए। "थाई अधिकारी आपके हस्ताक्षर को एक स्वीकारोक्ति मानते हैं।"
मेरे अंदर क्रोध उबलने लगा। "लेकिन लिफ्ट ने हमें बताया था—" "लिफ्ट ने आपको धोखा दिया।"
और बस यूं ही कुल्हाड़ी गिर पड़ी। मेरी सांसें थम गईं। मैंने मुंह खोला, लेकिन कोई शब्द नहीं निकले। सब कुछ दर्दनाक रूप से स्पष्ट हो गया।
लिफ्ट ने कभी हमारी मदद करना नहीं चाहा। उसे बस हमारा पैसा चाहिए था। और हम मूर्खों की तरह उसके जाल में फंस गए।
मैंने गुस्से से कांपते हुए अपने मुंडे हुए सिर पर हाथ फेरा। "तो अब क्या?" मैंने फुसफुसाते हुए कहा।
मेरी माँ एकदम सीधी खड़ी हो गई, मानो किसी चीज़ को, किसी भी चीज़ को, कसकर पकड़े हुए हो। "हम तुम्हें वहाँ से निकाल लेंगे।" "कैसे?"
मेरे पिता ने दृढ़ निश्चय के साथ सिर हिलाया। "हम एक असली वकील नियुक्त करेंगे।" "इस बार एक उचित वकील," मेरी माँ ने कड़वाहट से कहा।
मेरे मन में आशा की एक किरण जगी। "ठीक है... मुझे एक नाम मिल गया है।" "कौन?" "मिस्टर कांग।"
मेरा साथी, जो अब तक चुप था, आखिरकार बोला। "वह कौन है?" "मैंने यहाँ जो सुना है, उसके अनुसार वह सर्वश्रेष्ठ वकीलों में से एक है। एक प्रभावशाली वकील जो व्यवस्था को भली-भांति जानता है। लेकिन हमें यह जाँच करनी होगी कि यह वैध है या नहीं।"
उसने सिर हिलाया। "मैं इस बारे में पता लगाऊंगी।" "अगर वह वाकई उतना ही अच्छा है जितना लोग कहते हैं, तो उसे काम पर रख लो। चाहे कितनी भी कीमत चुकानी पड़े, हमें यहाँ से निकलना ही होगा।"
मेरी माँ मान गईं। "हम अपनी तरफ से हर संभव प्रयास करेंगे।"
बीस मिनट पलक झपकते ही बीत गए। एक गार्ड ने चिल्लाकर मुलाकात खत्म होने का ऐलान किया और हमें फोन रखने का आदेश दिया। लेकिन मैं वहीं जम गया, रिसीवर को पकड़े रहा, मानो शीशे के उस पार से उम्मीद की एक आखिरी किरण को थामे हुए था।
“हम तुमसे प्यार करते हैं,” मेरी माँ ने फुसफुसाते हुए कहा। “मज़बूत रहो,” मेरे पिता ने कहा। मेरी साथी ने मुझे आखिरी बार देखा, उसके होठों पर एक बनावटी मुस्कान थी।

और फिर…वे चले गए। और मैं वहीं रह गया। उस कांच के पीछे फंसा हुआ। इस लानत जेल में फंसा हुआ।
मुलाकात के बाद मेरा गला रुंध गया था। मैंने अपने माता-पिता के सामने खुद को संभाला, मैं रोई नहीं, मैं मजबूत बनी रही। लेकिन अंदर ही अंदर मैं टूट रही थी।
मेरी साथी भी हर मुलाकात के साथ और दूर होती जा रही थी। वह अब भी आती थी, लेकिन उसकी पुकारें छोटी और अधिक यांत्रिक होती जा रही थीं। मुझे पहले से ही इसका एहसास हो रहा था। वह दूर होने लगी थी।
यह अपरिहार्य था। थाईलैंड में कैदियों का कोई इंतज़ार नहीं करता।
पत्नियाँ आगे बढ़ जाती हैं। परिवार वाले पन्ने पलट देते हैं। और कैदी अकेला रह जाता है, उसके साथ केवल यादें और दर्द ही रह जाते हैं।
मार्को और टोनी को भी कोई अच्छी खबर नहीं मिली थी। हम सभी अनिश्चितता के उसी चक्र में फंस गए थे।
जब हम इमारत में वापस आए, तो फ्रांसीसी लोग पहले से ही वहाँ मौजूद थे। कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी। वे पहले से ही जानते थे। उन्होंने हमसे पहले दर्जनों लोगों में वही खाली नज़र देखी थी।
हम अपने "घर" के पास हार मानकर बैठ गए। टोनी और भी पीछे हट गया। वह अपने कोने में खाली आँखों से, झुके कंधों के साथ बैठा रहा। मुझे पता था कि उसे बहुत तकलीफ हो रही है। लेकिन उस समय मुझमें उसे उठाने की ताकत नहीं थी। मैंने चुपचाप एक सिगरेट जलाई, और उसके धुएं को झुलसा देने वाली जेल की हवा में फैलने दिया। मुझे बस किसी तरह टिके रहना था। एक और दिन। एक और हफ्ता। चाहे जितना भी समय लगे।
अगले कुछ दिन निराशा से भरे रहे। यह विचार कि हमें उम्मीद से कहीं अधिक समय तक यहाँ रहना पड़ सकता है, धीरे-धीरे हमारे मन में बैठ गया था। और अब जब गुस्सा शांत हो गया था, तो बस अनुकूलन की आवश्यकता ही बची थी।
सुबह के समय, हम स्वान और अब्देल से मिलते थे, जो नई दिनचर्या में ढलने लगे थे। टोनी धीरे-धीरे खामोशी में डूबता जा रहा था, हर दिन थोड़ा और अंधेरे में डूबता जा रहा था।
थाई कैदियों को ऐसा कष्ट नहीं झेलना पड़ा। उन्होंने लगभग विचलित कर देने वाले व्यावहारिकता के साथ अपने भाग्य को स्वीकार कर लिया। कुछ लोग तो

रिहाई की तारीखों के बारे में सोचने लगे थे। अन्य लोगों को तो अब इसकी परवाह भी नहीं थी।
“तुम्हें इसकी आदत पड़ जाएगी,” निड ने चावल चबाते हुए मुझसे कहा। “किसकी आदत?” “हर चीज़ की।” उसने आंगन पर नज़र घुमाई। “अब यही हमारी दुनिया है। बाकी सब… उसका कोई अस्तित्व नहीं है।”
मैंने सिर हिलाया। “नहीं। मैं यहाँ से जा रहा हूँ।” उसने मुस्कुराते हुए कहा, मानो उसने यह वाक्य सैकड़ों बार सुना हो। “शायद।” उसने कंधे उचकाए। “शायद नहीं।”
मैं अब भी स्तब्ध, थका हुआ और विचारों में डूबा हुआ था। जो कुछ अभी-अभी हुआ था, उसे समझना मुश्किल था। मेरे परिवार ने जो उम्मीद जगाने की कोशिश की थी, वह दूर और धुंधली सी लग रही थी, मानो डूबते हुए आदमी से कोई वादा फुसफुसाया गया हो।
लेकिन जेल में आपको सोचने-समझने का समय नहीं मिलता था। आपको आगे बढ़ते रहना पड़ता था।
हर सुबह की तरह, मैं अभी भी अधनी नींद में अपने अस्थायी गद्दे से कूदकर शॉवर की ओर भागा, इस उम्मीद में कि मैं लंबी कतार से बचने के लिए सबसे पहले नहाने वालों में शामिल हो सकूं। आंगन पिछली रात की बारिश से अभी भी नम था, हवा में फफूंद और गीली मिट्टी की गंध फैली हुई थी। मैं हमेशा की तरह नंगे पैर था, मेरी चप्पलें कल ही घिसे हुए कंक्रीट के दबाव से फट गई थीं।
और तभी यह घटना घटी।
मैं दौड़ रहा था, सहज रूप से पानी के गड्ढों से बचते हुए, तभी मेरा पैर आंगन में बिखरे उन बदकिस्मत नालियों में से एक में फंस गया। समय और उपेक्षा से बना एक गड्ढा। मेरा शरीर तो अपनी गति बनाए रखा, लेकिन मेरा पैर नहीं। एक ज़ोरदार धमाका, एक चटकने की आवाज़, और असहनीय दर्द।
मैं गिर पड़ा और मेरा घुटना कठोर कंक्रीट से टकरा गया। मेरी पिंडली में जलन सी दौड़ गई। "धत् तेरे की!"
मेरी आवाज ने सुबह की खामोशी को तोड़ दिया। मुझे यह समझने का भी समय नहीं मिला कि क्या हुआ था - मेरी टांग खून से लथपथ थी, मेरी पिंडली पर एक साफ चीरा लगा हुआ था।
मैं स्तब्ध रह गया, दर्द मेरे पूरे शरीर में फैल गया।

और फिर, आश्चर्यजनक रूप से, मेरे आस-पास के थाई कैदी हरकत में आ गए। उनमें से एक, एक बूढ़ा कैदी, एक गंदा पुराना तौलिया लेकर दौड़ा और खून बहना रोकने के लिए उसे घाव पर दबा दिया। "ताओ ताओ, लियो लियो!" (जल्दी, जल्दी!) उसने दूसरे कैदी को चिल्लाकर कहा, जो भाग गया।
कुछ ही सेकंड बाद, वह इमारत में मौजूद इकलौती व्हीलचेयर लेकर वापस आया। वह जंग लगी हुई, टेढ़ी-मेढ़ी थी—शायद मुझसे भी पुरानी—लेकिन कुछ न होने से तो बेहतर थी।
उन्होंने मुझे सावधानीपूर्वक उस पर उठाया और मुझे अस्पताल की ओर ले गए। मार्को और टोनी, जो मेरे ठीक पीछे थे, दौड़कर आए।
“अरे यार, खून बह रहा है!” मार्को ने मुझे कंधों से उठाते हुए कहा। टोनी घुटनों के बल बैठ गया और चिंता और निराशा के मिले-जुले भाव से घाव का मुआयना करने लगा। “तुम्हें टांके लगवाने पड़ेंगे।”
यह सोचकर ही मुझे कंपकंपी छूट गई। “यहाँ? अस्पताल में?” मैंने दर्द से कराहते हुए पूछा। “क्या तुम्हें सच में लगता है कि वे तुम्हें यहाँ टाँके लगा देंगे?” “धिक्कार है…”
अब दर्द हर जगह था—गहरा, धड़कता हुआ—लेकिन मुझे पता था कि सबसे बुरा तो अभी आना बाकी है।
यहां कोई अस्पताल नहीं था। इमारत के पीछे बस एक छोटा सा कमरा था, जो बीमारों, घायलों और उम्मीद से चिपके लोगों से भरा हुआ था।
कैदियों के साथ किसी भी तरह के सीधे संपर्क से बचने के लिए, एक असली डॉक्टर सप्ताह में एक बार कांच के पैनल के माध्यम से बेहद तेजी से परामर्श करने आता था।
बाकी समय, "पौचुए" लोग उस जगह का संचालन करते थे। ये विशेषाधिकार प्राप्त कैदी थे जिन्हें चिकित्सा का एक त्वरित पाठ्यक्रम दिया गया था, एक सप्ताह में बुनियादी बातें सीखने के लिए: घाव को कैसे साफ करना है, संक्रमण की पहचान कैसे करनी है, सबसे आम बीमारियों को कैसे पहचानना है।
कहने की जरूरत नहीं, मुझे आत्मविश्वास महसूस नहीं हो रहा था।
उन्होंने मुझे एक अस्थायी स्ट्रेचर पर लिटाया, जो एक पुराना धातु का बिस्तर था और उस पर एक मैली-कुचैली चादर बिछी हुई थी जिसे गद्दे के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता था।

पुचोए जनजाति का प्रभारी, एक लंबा थाई व्यक्ति जिसका सिर मुंडा हुआ था, बिना किसी भावना के मुझे घूर रहा था। बिना कुछ कहे, उसने सीधे मेरे घाव पर शराब डाल दी।
जलन तुरंत हुई और असहनीय थी। मैंने चीखने से बचने के लिए अपनी पीठ को मोड़ा और दांत भींच लिए।
“टांके नहीं लगेंगे। जरूरत नहीं है,” उन्होंने सपाट स्वर में कहा।
मैं उसे अवाक होकर देखता रहा। "क्या तुम्हें यकीन है?" उसने कंधे उचका दिए। "मुझे लगता है।"
महान।
भयानक उदासीनता के साथ, उसने जल्दी से मेरे पैर पर एक पट्टी बांधी, उसे मेडिकल टेप की एक पतली पट्टी से चिपकाया जो मुश्किल से चिपकी थी, और फिर मेरे घुटने को थपथपाते हुए कहा, "अब तुम जाने के लिए तैयार हो।"
“रोजाना सफाई करें। कीटाणुनाशक का प्रयोग करें। यदि संक्रमण हो जाए, तो घाव को काट दें।”
मुझे लगभग हंसी आ गई, लेकिन बात एकदम गंभीर थी। "और मुझे कीटाणुनाशक कैसे मिलेगा?" "खुद ही पता लगा लो।"
ज़बरदस्त।
तो अब मुझे इस समस्या को खुद ही संभालना था—जो कुछ भी मुझे मिल सके उसका इस्तेमाल करके—ऐसी जगह पर जहां स्वच्छता का कोई नामोनिशान नहीं था और जहां चींटियां और तिलचट्टे किसी भी खुले घाव को चूसकर अपना पेट भरते थे। मार्को और टोनी ने मुझे लंगड़ाते हुए इमारत तक वापस लाने में मदद की। “तुम गए काम से यार,” मार्को ने मज़ाक किया। “चुप रहो।” “नहीं, सच में, अगर उसमें संक्रमण हो गया, तो वे उसे काट देंगे, है ना?” वह हंस रहा था, लेकिन मुझे पता था कि यह पूरी तरह से मज़ाक नहीं था। मैंने पहले ही ऐसे लोगों को देखा था जिनके घाव गंदी रहने की स्थितियों के कारण हड्डी तक सड़ गए थे। और सबसे बुरा तो अभी आना बाकी था: रात।
जैसे ही कोठरी के दरवाजे ज़ोर से बंद हुए, दर्द ने सब कुछ अपने कब्जे में ले लिया। मैं अपने अस्थायी गद्दे पर लेटा हुआ था, मेरा पैर जल रहा था, हर धड़कन खुले घाव से दर्द की ढोल की थाप की तरह धड़क रही थी। मैंने गंदी पट्टी हटाई और एक गहरा, रिसता हुआ घाव देखा जो जमने से इनकार कर रहा था।
खून और पसीने की गंध मुझसे चिपकी हुई थी।

जैसे ही मैं दोबारा लेटी, दर्द फिर से भड़क उठा। मेरी टांग की हर नस धड़क रही थी, मानो घाव मेरे दिल की धड़कन के साथ तालमेल बिठाकर धड़क रहा हो। पट्टी ठीक से नहीं लगी थी, और मैं पहले ही देख सकती थी कि खून कपड़े से रिस रहा था। मैं इसे दोबारा लगाना चाहती थी, लेकिन एंटीसेप्टिक के बिना इसका क्या फायदा? मेरे पास बस पानी की एक गंदी बोतल और एक मैला-कुचैला कपड़ा था, जिसका इस्तेमाल शायद पोछे के रूप में किया गया था।
“धत् तेरे की, मैं यहीं मर जाऊँगा।” मैंने दर्द को कम करने की कोशिश में अपनी आँखें बंद कर लीं। लेकिन जल्द ही एक नई समस्या सामने आ गई। चींटियाँ। खून की वजह से आकर्षित होकर वे मेरे गद्दे पर चढ़ने लगीं और धीरे-धीरे मेरी टांग पर रेंगने लगीं। हर बार जब मैं कुछ मिनटों के लिए सो जाता, तो उनकी छोटी-छोटी टांगें मेरी त्वचा पर रेंगती हुई महसूस करके जाग जाता। मैंने उन्हें मारने, कुचलने की कोशिश की, लेकिन वे हमेशा वापस आ जाती थीं। मैं तंग आ चुका था। नींद नहीं आ रही थी, दर्द था, संक्रमण का डर था... सब कुछ बढ़ता जा रहा था।
मेरे बगल में सो रहा मार्को थके हुए चेहरे के साथ उठ बैठा। “तुम ठीक नहीं लग रहे हो, है ना?” मैंने आह भरी। “मैंने इससे बेहतर रातें भी देखी हैं।” उसने एक पल सोचा, फिर फुसफुसाते हुए कहा, “कल हम ब्लैक मार्केट से कुछ दवाइयाँ लाने की कोशिश करेंगे। और अगर वह नाकाम रहा, तो हम किसी बूढ़े आदमी को तुम्हारी टांग पर प्रार्थना करने के लिए पैसे देंगे।” मैंने कड़वी हंसी हंसी। “जब तक घाव भर जाए, मैं तैयार हूँ।” मैंने खुद को कंबल में लपेट लिया, जितना हो सके खुद को बचाने की कोशिश की। नींद रुक-रुक कर आ रही थी, दर्द के झटकों और कीड़ों के झुंड से टूट रही थी। मुझे पता था कि सुबह होते-होते हमें कोई न कोई उपाय ढूंढना होगा। जल्दी। क्योंकि यहाँ एक छोटा सा घाव भी मौत का कारण बन सकता है।
मुझे हिम्मत रखनी पड़ी। रात अंतहीन लग रही थी। हर स्थिति असहनीय थी। अगर मैं पैर मोड़ती, तो दर्द चीख उठता। अगर मैं उसे सीधा रखती, तो चींटियाँ वापस आ जातीं। अब मुझे संक्रमण से डर नहीं लग रहा था। मुझे अपने मानसिक संतुलन खोने का डर सता रहा था।
जागना बेहद दर्दनाक था। मेरी पिंडली में आग की तरह दर्द हो रहा था, हर हरकत के साथ और तेज़ होता जा रहा था। मैं अपनी त्वचा से चिपकी हुई गीली, चिपचिपी

पट्टी को महसूस कर सकता था, मुझे पता था कि वह खून से लथपथ है। मार्को अभी भी सो रहा था, या कम से कम सोने की कोशिश कर रहा था। वह भी टूटने लगा था। हमें यहां आए ज़्यादा समय नहीं हुआ था, लेकिन थकावट, तनाव, गंदगी, गर्मी... ये सब हमें अंदर से खा रहे थे।
मैंने अपना पैर उठाने की कोशिश की और तुरंत दर्द से कराह उठा। मैं उस पर वजन नहीं डाल पा रहा था। बैड, जो पहले ही जाग गया था, पास आया और उसने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा, "रात खराब गुज़री या तुमने अपने बिस्तर पर चींटियों का झुंड बुला लिया?" मैंने हल्की सी हंसी हंसी। "लगता है दोनों ही हो गए।" वह नीचे झुका और धीरे से पट्टी उठाई, फिर मुंह बनाते हुए पीछे खींच ली। "धत् तेरे की... इसमें से तो संक्रमण जैसी बदबू आ रही है।" मैं कराह उठा। "और मुझे यहां क्या मिलने वाला है? कोई विश्व-प्रसिद्ध सर्जन? कोई आईसीयू विशेषज्ञ?"
मार्को अंगड़ाई लेते हुए कराहते हुए उठा। “हम कुछ न कुछ हल निकाल लेंगे। एक घटिया नाली के गड्ढे की वजह से अपना पैर खोना बेवकूफी होगी।” मेरे शरीर में सिहरन दौड़ गई। सबसे बुरी बात? यह एक बहुत ही वास्तविक संभावना थी। जेल में सब कुछ खरीदा या बेचा जा सकता था—यहाँ तक कि दवाइयाँ भी। कोई आधिकारिक फार्मेसी नहीं थीं, लेकिन अगर आपके पास सही संपर्क हों और अदला- बदली करने के लिए पर्याप्त धन हो, तो आपको कुछ भी मिल सकता था। हम रेजा नाम के एक ईरानी को जानते थे, जो पिछले दो सालों से मादक पदार्थों की तस्करी के आरोप में जेल में बंद था। सात साल की सजा काटने के बावजूद, वह हमेशा मुस्कुराता रहता था और अपनी स्थिति से अजीब तरह से संतुष्ट प्रतीत होता था। मैंने उसे उसके "घर" के पास, आश्रय स्थल के नीचे, इंस्टेंट नूडल्स के पैकेट छाँटते हुए देखा।
“रेज़ा, मुझे एक काम करवाना है।” वह अपनी हमेशा वाली मुस्कान के साथ ऊपर देखने लगा। “एक काम? या कोई सेवा?” मैंने आह भरी। यहाँ शब्दों का महत्व था। “एक सेवा। मैं भुगतान कर सकता हूँ।” उसने मेरी पट्टी बंधी टांग को देखते हुए आँखें सिकोड़ीं। “तुम्हें दवाइयाँ चाहिए, है ना?” मैंने सिर हिलाया। “एंटीबायोटिक्स, एंटीसेप्टिक… कुछ भी जिससे यह और खराब न हो।” उसने धीरे से सिर हिलाया। “मैं ला सकता हूँ। लेकिन यह सस्ता नहीं है। तुम जानते हो कि यह कैसे काम करता है।” यहां…”“मुझे पता है। बस मुझे बता दो कितने पैसे

लगेंगे।” उसने एक पल सोचा। “एंटीबायोटिक्स के पाँच पैकेट। एंटीसेप्टिक के दो।” बहुत ज़्यादा। लेकिन क्या मेरे पास सच में कोई विकल्प था?
“मैं इन्हें कल सुबह तक आप तक पहुंचा दूंगा,” उसने आगे कहा, “लेकिन अगर आपको जल्दी चाहिए तो एंड्री से पूछ लेना।” “क्या आपको लगता है उसके पास कुछ होगा?” “ओह, उसके पास हमेशा कुछ न कुछ होता है। लेकिन उसके साथ, मिलने की संभावना पचास-पचास होती है।” टोनी हँस पड़ा। “उस आदमी से आपको असली गोलियां मिल सकती हैं… या प्लास्टिक में लिपटा हुआ चाक पाउडर।” लेकिन मेरे पास इंतजार करने का समय नहीं था।
हमने एंड्री को आंगन के एक कोने में एक गंदे पुराने गद्दे पर बैठे हुए पाया, उसके दोनों ओर दो अन्य रूसी बैठे थे जो उसकी हर बात ध्यान से सुन रहे थे।
“आह, मेरे दोस्तों!” उसने पुकारा। “काम कैसा चल रहा है?” “बुरा। मुझे एंटीबायोटिक्स चाहिए।” उसने एक भौं उठाई और तुरंत अपना शातिर चेहरा बना लिया। “ओह, तुम सही आदमी के पास आए हो! मेरे पास तुम्हारी ज़रूरत की चीज़ है। लेकिन मेरे लिए तुम्हारे पास क्या है?” “सिगरेट।” उसने सोच-समझकर सिर हिलाया। “हम्म… तुम्हें असली चीज़ चाहिए, या… देसी वाली?” मार्को ज़ोर से हँस पड़ा। “ये ‘देसी’ क्या होती है?” “बस इतना समझ लो… कुछ दवाइयाँ यहाँ घर पर ही बनती हैं।” मैंने हाथ उठा दिए। “नहीं।” मुझे असली चीज़ चाहिए।” वह मुस्कुराया। “तो फिर दस पैकेट।” मैंने मुश्किल से निगल लिया। रेज़ा की कीमत दुगनी। “मज़ाक कर रहे हो?” वह हँसा। “मेरे दोस्त, यहाँ हर चीज़ की कीमत होती है। मैं गुणवत्ता प्रदान करता हूँ।”
मैंने मार्को की ओर देखा। “क्या हमें रेज़ा के साथ जाना चाहिए?” “ठगे जाने से बेहतर है इंतज़ार करना।” मैं एंड्री की ओर मुड़ा। “हम इस बारे में सोचेंगे।” उसने मुस्कुराते हुए कंधे उचकाए।

“जैसी तुम्हारी इच्छा। लेकिन याद रखना… जेल में समय तुम्हारे पक्ष में नहीं होता।”
और वह गलत नहीं था।
आश्रय के नीचे वापस आकर, मैं अंदर ही अंदर गुस्से से उबल रहा था। "धत् तेरे की, हमारे पास कुछ नहीं है। अगर मैं एक और दिन इंतज़ार करूँ, तो हालात और बिगड़ सकते हैं।" मार्को मेरे बगल में बैठ गया। "चलो रेज़ा के साथ चलते हैं। वह कल तक सब कुछ बता देगा, बात खत्म।" टोनी ने सिर हिलाया। "अगर हालात ज़्यादा बिगड़ गए, तो हम जेल के डॉक्टर से सलाह लेंगे।" मैंने भौंहें ऊपर उठाईं। "और आप यह कैसे करेंगे?" उसने कंधे उचकाए। "गार्ड भी हमारी तरह ही पैसे के दीवाने होते हैं। बस सही शब्द बोलने होते हैं।"
मैंने आह भरी, थकी हुई, चिंतित, लेकिन कम से कम हमारे पास एक योजना तो थी। एक और नींदहीन रात मेरा इंतजार कर रही थी, लेकिन पहली बार, मुझे आशा की एक किरण दिखाई दी।
इस जेल में स्वास्थ्य सेवा समेत सब कुछ स्व-प्रबंधन पर चलता था। यहाँ न तो कोई योग्य कर्मचारी थे, न ही कोई नामोनिशान था। बस कैदी थे जिन्होंने अपनी- अपनी भूमिकाएँ निभा ली थीं और जैसे-तैसे उन्हें पूरा कर रहे थे।
इमारत का चिकित्सक भी एक आम कैदी ही था, जिसके पास कोई वास्तविक चिकित्सा प्रशिक्षण नहीं था, लेकिन वह यह भूमिका निभाने के लिए सहमत हो गया था। एक तरह से वह "स्वयंसेवक" था। या शायद सिर्फ एक अवसरवादी।
हर दिन दोपहर करीब 1 बजे, दोपहर के लिए हमें हमारी कोठरियों में बंद करने से ठीक पहले, वह अपना छोटा सा अस्थायी क्लिनिक खोलता था। वह आंगन के पास एक दीवार की छाया में, इस्तेमाल की हुई जालीदार पट्टियों, शराब की बोतलों और घिसे हुए लेबल वाली छोटी बोतलों से ढकी एक जर्जर लकड़ी की मेज पर बैठा रहता था। मानो एक छोटी सी अवैध दवा की दुकान हो।
लेकिन कतार अंतहीन थी।
उस कतार में हर तरह के लोग थे—जिनके घावों का ठीक से इलाज नहीं हुआ था, जिन्हें संक्रमण था, गर्मी और स्वच्छता की कमी के कारण चकत्ते थे, और सबसे बढ़कर... वे लोग जो कुख्यात फी नामक भयानक फोड़े का इलाज कराने आए थे, जिनके बारे में हम बाद में बात करेंगे।
मुझे सबसे ज्यादा घृणा "चिकित्सा कार्यालय" में स्वच्छता की कमी से नहीं हुई। नहीं।

यह तरीका था।
जेल के चिकित्सक का व्यवहार बिल्कुल भी सौम्य नहीं था।
"अगला!" वह चिल्लाया और अपने औजारों को ठीक से साफ किए बिना ही दूसरे मरीज का इलाज करने लगा।
एक थाई व्यक्ति दर्द से कराह उठा जब चिकित्सक ने बिना किसी एनेस्थेटिक या चेतावनी के उसके फोड़े को फोड़ दिया।
मैं उसके पीछे कतार में खड़ा था और बढ़ते हुए भय के साथ उस दृश्य को देख रहा था।
"क्या सिर्फ मुझे ही ऐसा लग रहा है," मार्को ने फुसफुसाते हुए मुझे कोहनी मारी, "या वह हर किसी पर एक ही तरह का क्लैंप इस्तेमाल कर रहा है?"
मैंने मुश्किल से अपनी सांस रोकी जब मैंने उसे एक गंदे कपड़े से जंग लगे क्लैंप को पोंछते हुए और फिर उसे सीधे किसी और के घाव में घुसाते हुए देखा। “क्या तुम वाकई यह करना चाहते हो?” मार्को ने पूछा।
मैंने अपना सिर जोर से हिलाया।
“बिल्कुल नहीं। मैं अपने दम पर ही जोखिम उठाऊंगा।”
समस्या यह थी कि मैं रुके हुए पानी और गंदे कपड़ों के टुकड़ों से अपना इलाज तो नहीं कर सकती थी। मुझे असली दवा की ज़रूरत थी। और वह भी जल्दी।
लेकिन मेरे पास पैसे नहीं थे। इसलिए आखिरकार, मैंने हार मान ली और लाइन में लग गया।
जब आखिरकार मेरी बारी आई, तो चिकित्सक ने मेरी ओर देखा, फिर मेरी टांग पर लगी अस्थायी पट्टी को देखा।
"खोलो इसे।"
मैंने मुंह बनाया लेकिन मेरे पास कोई विकल्प नहीं था।
उसने एक पुरानी कैंची उठाई, कपड़े को सावधानीपूर्वक काटा और चुपचाप घाव का मुआयना किया। उसने जीभ से एक आवाज़ निकाली, सिर हिलाया और रबिंग अल्कोहल की बोतल उठाई।
"इससे बहुत दर्द होगा।"
उसने उसे सीधे खुले घाव पर डाल दिया, और मुझे चीखने से रोकने के लिए अपने होंठ काटने पड़े। आग की एक लहर मेरे पैर से गुज़र गई।
“धत् तेरे की…” मैंने कराहते हुए मुट्ठी भींच ली।

वह चुपचाप काम करता रहा, आयोडीन में भीगी हुई एक पुरानी रुई से घाव को थपथपाता रहा और फिर उसे एक साफ पट्टी से लपेट दिया।
"इसे हर दिन साफ करो, वरना इसमें संक्रमण हो जाएगा।"
मैंने दांत पीसते हुए सिर हिलाया।
"धन्यवाद।"
यह कुछ खास नहीं था—पर कुछ न होने से तो बेहतर था। जब तक मुझे सही दवा नहीं मिल जाती, तब तक वह पट्टी ही मुझे गंभीर संक्रमण से बचा रही थी।
हमें अभी भी रेजा और उनके बहुप्रतीक्षित एंटीबायोटिक सौदे से उम्मीद थी, लेकिन इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि यह समय पर पूरा हो जाएगा।
मुझे एक बैकअप प्लान की जरूरत थी।
तभी टोनी ने एक दिलचस्प सुझाव दिया:
"अगर हम सीधे गार्डों के बीच से ही गुजर जाएं तो क्या होगा?"
मैंने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।
"तुम्हारा मतलब है... गार्डों से दवाइयां खरीदना?"
"बिल्कुल।"
लेकिन वे ये सब चीजें नहीं बेचते।
टोनी मुस्कुराया।
“आधिकारिक तौर पर नहीं। लेकिन उनके पास हर चीज की पहुंच है।”
वह गलत नहीं था। गार्डों के बाहर संपर्क थे। अगर आपको दवाइयां, सप्लीमेंट्स, विटामिन या यहां तक कि ब्लैक मार्केट की सिगरेट चाहिए होती, तो उन्हीं से बात करनी पड़ती थी।
इसका नकारात्मक पहलू क्या था? इसमें बहुत अधिक खर्च आया।
लेकिन अगर जंग लगे क्लैंप से किसी अनाड़ी द्वारा मेरी टांग को चीरने से बचने के लिए यही करना पड़ा, तो ठीक है।
उसी शाम, मैंने एक गार्ड को वहां से गुजरते हुए देखा और उसे चुपके से एक तरफ खींच लिया।
“बॉस, क्या आप दवाइयाँ ला सकते हैं?”
उसने मुझे संदेह भरी निगाहों से ऊपर से नीचे तक देखा।
“किस तरह की दवाइयां?”
“एंटीबायोटिक्स। कीटाणुनाशक।”
वह सोचते हुए अपनी बाहें मोड़कर बैठ गया।

"आप कितना भुगतान कर सकते हैं?"
"सिगरेट के दस पैकेट।"
उसकी भौंहें तन गईं। स्पष्ट रूप से, इससे उसका ध्यान आकर्षित हुआ। "तुम्हें जल्दी है, है ना?"
मैंने कोई जवाब नहीं दिया। वह पहले से ही जानता था कि मैं बहुत परेशान थी। “ठीक है,” उसने आखिरकार कहा। “मैं इसे कल सुबह आपको दे दूंगा।”
"सौदा।"
लेकिन अगर आप लाइन में सबसे पहले आना चाहते हैं तो कीमत दोगुनी हो जाएगी।
मैंने अपने जबड़े भींच लिए। कमीना।
लेकिन मेरे पास कोई विकल्प नहीं था।
"सौदा।"
उसने सिर हिलाया और मुझे मेरे विचारों के साथ अकेला छोड़कर चला गया।
वह रात नरक समान थी।
सोना नामुमकिन था।
मेरे पैर में लगातार दर्द के झटके लग रहे थे, हर हरकत ऐसी महसूस हो रही थी जैसे घाव में कोई धारदार हथियार घुमाया जा रहा हो।
मैं पसीने से भीगा हुआ था, कोठरी की घुटन भरी गर्मी में दम घुट रहा था, शौचालयों के पास अपने कोने में दुबका हुआ था और जेल जीवन की लगातार गूंजती हुई आवाज़ें सुन रहा था।
खर्राटे। फुसफुसाहट। कहीं चूहों के खरोंचने की आवाज़। दीवारों पर तिलचट्टों के रेंगने की आवाज़। और वह धिक्कार है उस फ्लोरोसेंट लाइट की जो पूरी रात जलती रही, जिससे कोठरी एक ठंडी, निर्जीव चमक से भर गई।
मैंने दर्द को शांत करने के लिए एक आरामदायक स्थिति खोजने की कोशिश की।
कोई फायदा नहीं हुआ। मैंने बाहरी दुनिया के बारे में सोचकर मन को शांत करने की कोशिश की। स्थिति और भी खराब हो गई। मैंने फिर भी सोने की कोशिश की। बस एक कल्पना।
भोर होते-होते मैं एक चलता-फिरता मुर्दा बन चुका था।
सुबह गार्ड ने अपना वादा निभाया। उसने मुझे एक छोटी प्लास्टिक की थैली थमा दी जिसमें कुछ गोलियां और बीटाडीन की एक बोतल थी। “लो। इसे ले लो और अपना मुंह बंद रखो।” मैंने सिर हिलाया और सिगरेट के पैकेट उसे सौंप दिए।

दिन की शुरुआत हमेशा एक जैसी होती थी: सुबह 6 बजे गार्डों की चिल्लाहट से जगाया जाता था। सादा नाश्ता: मीठी कॉफी और सफेद ब्रेड के साथ मीठा दूध। चिलचिलाती धूप में गिनती के लिए कतार में खड़ा होना। अनिवार्य सैन्य अभ्यास, जिसमें पीछे रह जाने वाले किसी भी व्यक्ति को लाठी से मारा जाता था। जल्दी से शावर के नीचे नहाना, जब तक कि आप हमारी तरह भाग्यशाली न हों और आपको बैड से पानी की बाल्टी न मिल जाए।
लेकिन हर दिन बोझिल होता जा रहा था। मक्खियाँ हमारे पसीने और गंदगी की ओर आकर्षित होकर हमारे चारों ओर मंडरा रही थीं। तिलचट्टे दीवारों पर बेपरवाह होकर इधर-उधर भाग रहे थे, उन्हें कुचलने के हमारे प्रयासों से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। सड़े हुए भोजन, उफनते शौचालयों और बिना धुले शरीरों की दुर्गंध मिलकर एक घिनौने कोहरे का रूप ले रही थी, जिसके साथ जीने के अलावा हमारे पास कोई विकल्प नहीं था।
और सबसे बुरी बात... इंतज़ार। हमेशा वही इंतज़ार।
उस दिन, जब हम आश्रय के नीचे बैठे थे, एक नया कैदी हमारे क्षेत्र में आया।
वह फ्रांसीसी था, संभवतः तीस वर्ष का, धंसी हुई आँखों वाला और उसके चेहरे पर गहरे काले घेरे थे।
स्वान ने उसे सबसे पहले देखा।
“देखो, एक नया लड़का।” वह लड़का हिचकिचाते हुए पास आया, अपने आस-पास के माहौल को एक नौसिखिए की तरह देख रहा था।
“अरे… आप लोग फ्रांसीसी हैं?” “हाँ, आप?” “डेविड।” हमने उनसे हाथ मिलाया और वे हमारे साथ बैठ गए।
डेविड ने अपनी कहानी सुनाई: मामूली ड्रग डील के आरोप में गिरफ्तार होने के बाद, हाल ही में एक भयानक हवालात के अनुभव के बाद उनका तबादला कर दिया गया। उन्होंने बताया, “मैं थाई कैदियों के साथ एकांत कारावास में था। हम छह लोग एक छोटे से कमरे में ठूंस-ठूंस कर भरे हुए थे, न गद्दा था, न कुछ और। गार्ड हमें हर घंटे जगा देते थे…”
वह रुका, स्पष्ट रूप से विचलित। “और अब तुम यहाँ हो,” मार्को ने सपाट स्वर में कहा। “नरक में तुम्हारा स्वागत है।” डेविड नहीं हँसा।
मैंने उसकी आँखों में वह भाव पहचान लिया।
यह वही भाव था जो हमारे यहाँ आने पर हमारे बीच था।

उस रात, मैंने जेल के एक नए भयावह दृश्य का पता लगाया: चूहे।
यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, हम उन्हें हर समय सुनते थे, बीमों पर सरपट दौड़ते हुए, खाने के जूठे टुकड़ों में खोदते हुए, कभी-कभी कोठरियों में घुसते हुए। लेकिन उस रात, एक बहुत करीब आ गया।
मैं अपने अस्थायी गद्दे पर लेटा हुआ था, अपने पैर के दर्द को नज़रअंदाज़ करने की कोशिश कर रहा था, तभी मुझे अपनी बांह पर कुछ ठंडा और गीला सा सरकने का एहसास हुआ। मेरा खून जम गया।
अंधेरे में, मैंने एक परछाई को तेजी से भागते हुए देखा। “धत् तेरे की…” मैं बड़बड़ाया और एकदम सीधा बैठ गया।
मेरे बगल में मार्को कराह उठा। "अब क्या?" "एक चूहा।" "नरक में तुम्हारा स्वागत है, यार।"
मैंने पूरी रात अपने सामान की रखवाली करते हुए बिताई, पहले से कहीं ज्यादा बेचैन था। और पहली बार, मैंने गंभीरता से सोचा कि मैं यहाँ कितने दिन टिक पाऊँगा।
बाहरी दुनिया से मेरा एकमात्र संपर्क मुलाकातों के माध्यम से ही था, और मैं उनसे उसी तरह चिपका रहता था जैसे कोई परित्यक्त व्यक्ति जीवनरक्षक जैकेट से चिपका रहता है।
हर दिन सुबह करीब 11 बजे, मैं मुलाकात कक्ष की ओर जाता था, अच्छी खबर की उम्मीद में, बाहर निकलने के किसी रास्ते के संकेत की उम्मीद में। लेकिन जेल में, सब कुछ समय पर निर्भर था।
किसी मुलाकात में न जाने से आपका पूरा दिन खराब हो सकता है।
अगर मैं दोपहर करीब 1 बजे लाइन में सबसे आखिरी में होता, तो यह एक आपदा होती: मुझे गार्डों की चीखों के बीच वापस सेल की ओर दौड़ना पड़ता, और इससे भी बुरा, मैं नहाने से चूक जाता।
लेकिन अगर मेरा दौरा 11:30 से दोपहर 12 बजे के बीच होता, तो मैं खाने के ऑर्डर की डिलीवरी से चूक जाता। और यह तो और भी बुरा होता।
देखिए, हमने जो खाना मंगवाया था, वह सोने जैसा था। खाना डिलीवर होने के बाद, अगर कोई उसे लेने नहीं आता था, तो उसे या तो दोबारा बेच दिया जाता था, या दूसरे कैदियों को दे दिया जाता था, या फिर गार्ड्स शिकायतों से बचने के लिए उसे फेंक देते थे।

शुक्र है, बैड हमेशा हमारे साथ खड़ा रहता था। हर दिन, वह हमारे खाने और सिगरेट लेने के लिए हमारे ऑर्डर टिकट लेकर लाइन में खड़ा रहता था।
यह जेल जीवन के कई अलिखित नियमों में से एक था: जब आप आसपास न हों तो आपको अपना काम संभालने के लिए किसी की आवश्यकता होती थी।
यहां हिंसा और अपराध निश्चित रूप से मौजूद थे। लेकिन सबसे मुश्किल बात लड़ाई-झगड़े या धमकियां नहीं थीं। बल्कि मानसिक तनाव और जबरन सहनशीलता थी। यहां हर चीज में समय लगता था।
हर सुबह दो बोतलें भरने के लिए पानी के नलों पर कतार लगती थी। वे बोतलें पीने के लिए नहीं थीं। वे शौचालय फ्लश करने के लिए थीं, क्योंकि वहाँ कोई प्लंबिंग सिस्टम नहीं था। हर कैदी को शौच करने के बाद छेद में पानी डालना पड़ता था। अगर ऐसा नहीं किया जाता, तो सुबह 9 बजे तक मल का ढेर लग जाता था। चिलचिलाती धूप में खाने के ऑर्डर का इंतज़ार करते हुए, अपने छोटे राशन टिकटों को जीवन रेखा की तरह थामे हुए। जैसे ही बाल 2 मिलीमीटर से ज़्यादा लंबे होते, हम तुरंत नाई के पास दौड़ पड़ते, क्योंकि बिखरे बाल मतलब मुलाक़ात के अधिकार खोना। एक बेतरतीब हेयरकट आपको एकांत कारावास में भी डाल सकता था।
शावर के लिए अपनी बारी का इंतजार करते हुए, यह जानते हुए कि अंदर जाने के बाद, आपके पास सब कुछ करने के लिए केवल साठ सेकंड ही होंगे। फिर बाहर निकलकर, पांच क्षणों की ताजगी का आनंद लेते हुए, अपना सामान लॉकर में ठूंसने के लिए दौड़ते हैं, और फिर से ऐसे पसीना बहाना शुरू कर देते हैं जैसे आपने कभी नहाया ही न हो।
जेल में असली चुनौती दूसरों से बच पाना नहीं थी, बल्कि गर्मी सहन करना, सुबह से रात तक अपनी ही चिपचिपी, बिना धुली त्वचा के अंदर रहना और कभी भी पूरी तरह से साफ महसूस न करना था।
हर दिन एक लड़ाई थी, थकान के खिलाफ, गर्मी के खिलाफ, दुर्गंध के खिलाफ, समय के खिलाफ। और किसी तरह, हमें इन सबके बीच अपना दिमाग शांत रखना था।
तीन महीने। मैं तीन महीने से कैद था।
मुझे अप्रैल में अपने जन्मदिन तक बाहर निकलने की उम्मीद सता रही थी, लेकिन हकीकत ने मुझे करारा झटका दिया। हर दिन, मैं देखता था कि दूसरे विदेशी जमानत पर रिहा हो रहे हैं जबकि मेरा मामला कहीं नहीं जा रहा था।

जब से मेरा साथी मास्टर कांग के साथ आया है, जो तथाकथित "जादूगर" वकील है और न्याय व्यवस्था में हर किसी को जानता होने का दावा करता है, तब से मेरी जमानत याचिका खारिज कर दी गई है। फिर से।
और वो... वो अब उतनी बार नहीं आती थी। उसकी आँखों में, उसकी आवाज़ में जो ठंडक बढ़ती जा रही थी, उससे मुझे यह साफ़ दिख रहा था। उसने मुझे दिलासा देने की कोशिश की, कहा कि वो अभी भी वकीलों से बात कर रही है, लेकिन मुझे उसके अंदर कुछ खोखलापन महसूस हो रहा था।
त्याग। अब उसे विश्वास नहीं रहा। उसने मेरी नियति स्वीकार कर ली थी। और इससे भी बुरा, वह आगे बढ़ने की कोशिश कर रही थी। बहुत तेज़। मेरे लिए बहुत ज़्यादा तेज़।
मुझे समझ नहीं आया। मैं ही क्यों? अभी क्यों? मार्को और टोनी को उनके साथी हर दिन मिलने आते थे, जबकि मेरा साथी मुझसे दूर होता चला गया?
मैं यह स्वीकार नहीं कर पा रहा था कि बाहरी दुनिया में जीवन मेरे बिना आगे बढ़ रहा है। मैं सच्चाई का सामना नहीं करना चाहता था: वह मुझे भूलने लगी थी।
लेकिन जिस चीज ने मुझे उसकी लुप्त होती उपस्थिति से भी ज्यादा परेशान किया... वह वकीलों का अंतहीन सिलसिला था।
मेरे पिता ने अपनी पूरी कोशिश करते हुए बैंकॉक से एक और वकील ढूंढा, जो कथित तौर पर प्रतिष्ठित था। मैंने उसे तुरंत खारिज कर दिया, क्योंकि मुझे पूरा यकीन था कि मास्टर कांग ही सबसे अच्छा विकल्प थे। फिर मैंने दो और वकीलों से संपर्क किया। हर बार वही कहानी: बड़े-बड़े वादे, जोशीले भाषण, पैसों की अंतहीन मांग... और फिर कुछ नहीं। कोई प्रगति नहीं हुई।
जितने भी वकील आए, सबने हमें एक ही बात कही: इसमें समय लगता है। यह जटिल है। आपको और पैसे देने पड़ेंगे। और हमने दिए भी। लेकिन उन्होंने कुछ नहीं किया।
अंततः, मेरे माता-पिता, इस पूरे तमाशे से थककर, वापस फ्रांस चले गए।
उन्होंने वापस आने का वादा किया, लेकिन मैं महसूस कर सकता था कि वे भी अपनी सीमा तक पहुँच रहे थे।
हम अभी भी लड़ रहे थे। लेकिन हम कब तक टिक सकते थे?

फ्रांसीसी दूतावास ने कहा था कि वे जल्द ही आएंगे। उनके पास मेरी फाइल थी। लेकिन उनका फैसला स्पष्ट था: "आपकी जमानत याचिका के सफल होने की संभावना बहुत कम है।"
क्यों? क्योंकि पुलिस स्टेशन में हमने उस कागज़ पर हस्ताक्षर किए थे। वही कागज़ जिस पर लिफ़्ट ने बिना सवाल पूछे हस्ताक्षर करने को कहा था। वह घटिया कागज़ असल में एक पूर्ण स्वीकारोक्ति थी। उस पर हस्ताक्षर करके हमने आरोपों को स्वीकार कर लिया था और अस्थायी रिहाई की हर उम्मीद को खत्म कर दिया था।
जमानत असंभव थी क्योंकि भागने का खतरा बहुत अधिक माना गया था। मैंने गुस्से में अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं। हम फंस गए थे। हम मुकदमे की प्रतीक्षा में अटके हुए थे। और कोई भी इस प्रक्रिया को तेज नहीं कर सकता था।
फिर भी, अनिश्चितता के इस सागर में, मैं धीरे-धीरे इस जगह पर सहज महसूस करने लगा था। मैं खुद को यह समझाकर अपने दुख को कम करने की कोशिश कर रहा था कि हम जल्द ही बाहर आ जाएंगे, या ज़्यादा से ज़्यादा नौ महीने की सज़ा होगी, जो इस तरह के मामलों में आम बात है।
लेकिन मानसिक आघात के साथ-साथ मेरा शरीर भी मेरा साथ छोड़ने लगा था। मुझे लगा था कि पैरों की चोटें ही सबसे बुरी स्थिति होंगी। मैं गलत था।
तभी मुझे अपना पहला "फाई" मिला।
यह मेरे नितंब पर एक अजीब सी सनसनी से शुरू हुआ। शुरू में तो बस एक छोटा सा उभार था, हानिरहित। लेकिन कुछ दिनों बाद, दर्द असहनीय हो गया। एक रात, मुझे खांसी आई और ऐसा लगा जैसे मेरे पैर में बिजली का झटका लगा हो। मैंने उस दर्द वाली जगह को छुआ, वह आकार में दुगनी हो गई थी।
मेरे बगल में लेटे मार्को ने मेरे चेहरे पर दर्द देखा। "यार, तुम ठीक हो?" "मुझे लगता है मुझे कुछ अजीब सा हो गया है..."
मैंने उसे गांठ दिखाई। वह भौंहें चढ़ाकर सिर हिलाया। “अरे यार! तुम्हें तो फाई हो गया है।” मैं घबराकर हँस पड़ा। “क्या?” “फाई। एक तरह का बुरा संक्रमण। हर नए लड़के को होता है। इसे फोड़ना पड़ता है।”
मेरा चेहरा पीला पड़ गया। "इसे फोड़ दें? मतलब... अभी?" मार्को ने सिर हिलाया। "अगर नहीं फोड़ा तो यह तब तक बढ़ता रहेगा जब तक कि यह अपने आप फट न जाए।"

मेरी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई।
अगले दिन, मैं जेल के स्वयंसेवी "नर्स" से मिलने गया। उसने मुझे एक लकड़ी के स्टूल पर बिठाया, एक जंग लगा पुराना रेज़र ब्लेड निकाला और बिना किसी चेतावनी के उसे संक्रमण में घुसा दिया। मवाद फूट पड़ा और पूरे शरीर में जलन फैल गई, जिससे मैं कपड़े में चीखने लगा। मैं लगभग वहीं बेहोश हो गया था।
दो हफ्तों तक मुझे हर दिन जो कुछ भी मिलता था, उससे घाव को साफ करना पड़ता था।
लेकिन कुछ ही महीनों बाद, यह फिर से हुआ। इस बार, मेरी बगल के नीचे।
मुझे एहसास होने लगा कि मेरा शरीर बदल रहा है, इस जगह के अनुकूल अपने तरीके से ढल रहा है। मैंने एक और परीक्षा पार कर ली थी। और मैं अभी भी खड़ा था।
मेरी माँ के जेल निदेशक मनून से बने संपर्कों की बदौलत, मेरे दैनिक जीवन में आशा की एक धुंधली किरण वापस आ गई थी। इस तरह का "विशेषाधिकार" आधिकारिक नहीं था - यह रिश्वत, एहसान और रणनीतिक मित्रता का एक नाजुक खेल था।
मार्सिले के लोगों ने हमें रास्ता दिखाया था: "थोड़े से पैसे से कुछ भी संभव है।"
मुझे खाने-पीने की चीजों, साफ कपड़ों, घर की याद दिलाने वाली कुछ मिठाइयों और यहां तक कि एक फोटो एल्बम से भरे बैग मिलने लगे, जिसे मेरी मां ने मेरे सामान के साथ बड़ी सावधानी से रखा था। एक एल्बम जिसमें दोस्तों, परिवार, यात्रा की यादों और जीवन के उन पलों की तस्वीरें थीं जो बाहर से तो बहुत साधारण लगते थे, लेकिन मेरे लिए अनमोल खजाने बन गए थे।
मैं रात में अकेले उस एल्बम के पन्ने पलटता रहा, उस तेज फ्लोरोसेंट रोशनी के नीचे जो कभी बंद नहीं होती थी, उदासी और दमित क्रोध के बीच कहीं फंसा हुआ था।
लेकिन यहाँ सब कुछ जल्दी ही गायब हो गया। चोरी एक दैनिक वास्तविकता थी, और मेरी नई चीजें भी उस क्रूर नियम से अछूती नहीं रहीं।
मैंने लोगों की निगाहों में तुरंत बदलाव महसूस किया। एक ओर, प्रशंसा और सम्मान। दूसरी ओर, दबी हुई ईर्ष्या।
कैदियों और गार्डों दोनों को पता था कि मुझे विशेष पहुँच प्राप्त है।
उन्हें पता था कि मैं ऐसी चीजें ला सकता हूँ जो प्रतिबंधित थीं, कि मेरा

मानौन से सीधा संपर्क था, और मेरा परिवार मेरी सुविधा के लिए भुगतान करने को तैयार था।
एक ऐसी जेल में जहाँ पदानुक्रम धन और शक्ति द्वारा परिभाषित होता है, इस प्रकार के विशेषाधिकार होने से मैं एक ऐसे लक्ष्य के रूप में उभरा जिसकी पीठ पर एक बड़ा लाल बिंदु बना हुआ था। सम्मान एक दोधारी तलवार है।
लेकिन सबसे बुरी बात क्या थी? लोग यह मानने लगे थे कि मैं अमीर हूँ। और यह... यह खतरनाक था।
अनुरोध लगभग तुरंत ही आने शुरू हो गए। कुछ कैदियों ने इसे मजाक के तौर पर टालने की कोशिश की: — “अरे यार, क्या तुम हमें सिगरेट का एक अतिरिक्त पैकेट दिला सकते हो? बस एक?” — “चलो ना, दोस्तों के बीच थोड़ी सी कॉफ़ी ही सही?”
लेकिन दूसरे लोग इतने सूक्ष्म नहीं थे। उदाहरण के लिए, निड ने शिष्टाचार निभाने की भी जहमत नहीं उठाई।
एक सुबह, जब हम चंदवा के नीचे बैठे थे, तो उसने अपनी उस शरारती मुस्कान के साथ मेरी ओर देखा: “तुम भाग्यशाली हो, भाई। बहुत कम लोग अपनी मनचाही चीज़ें ला सकते हैं।” “हाँ…” मैंने कंधे उचकाते हुए जवाब दिया, मुझे पहले से ही अंदाज़ा हो गया था कि बात किस ओर जा रही है।
उसने अपनी सिगरेट बुझाई और फिर कहा: “जानते हो… अब हम परिवार हैं। और परिवार में सब कुछ साझा किया जाता है।”
उस वाक्य ने मेरी रीढ़ की हड्डी में सिहरन पैदा कर दी। उसके मुंह से निकला वह वाक्य वफादारी की प्रतिज्ञा जैसा लग रहा था। लेकिन असल में, वह एक छिपा हुआ खतरा था।
अगर मैं इस जगह पर शांतिपूर्वक रहना चाहता था, तो मुझे योगदान देना होगा। समस्या यह थी कि... मैं उस खेल को लंबे समय तक खेलने का खर्च नहीं उठा सकता था।
धन की कमी हो जाती है। तनाव बढ़ जाता है।
जीवनयापन के खर्चों, उपहारों, रिश्वत और विशेष रूप से निड के परिवार के खर्चों के बीच, मेरा पैसा खतरनाक दर से गायब हो रहा था। हर दिन मुझे पानी के लिए भुगतान करना पड़ता था। हर दिन मुझे चावल और अतिरिक्त भोजन के लिए

भुगतान करना पड़ता था। हर दिन मुझे गार्डों को कुछ न कुछ देना पड़ता था ताकि वे मुझे पसंद करें। और सबसे बढ़कर, मुझे सबका भरण-पोषण करना पड़ता था।
मैं एक "परिवार" का हिस्सा बन गया था - और इसकी एक कीमत चुकानी पड़ी।
पहले तो मुझे लगा कि निड और बैड अपने वित्त का प्रबंधन स्वयं कर रहे हैं, कि हम सभी स्वतंत्र हैं, और प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार योगदान दे रहा है।
लेकिन धीरे-धीरे मुझे सच्चाई समझ आने लगी। उन्होंने मुझे पैसे कमाने का जरिया बना दिया था। और मैंने भोलेपन से ऐसा होने दिया।
"जेल में सम्मान कभी मुफ्त नहीं मिलता।"
जेल में चलने वाले कई "व्यवसायों" में से एक कपड़े धोने का भी था। एक थाई व्यक्ति—जिसका नाम भी मुझे कभी पता नहीं चला—ने खुद को अनौपचारिक "कपड़े धोने की दुकान" बना लिया था, वह कैदियों से गंदे कपड़े उठाकर महीने में तीन पैकेट सिगरेट लेता था।
यह मामूली लग सकता है, लेकिन अपने कपड़े धोना एक संघर्ष था: – पानी पर्याप्त नहीं होता था, इसलिए कपड़ों को ठीक से धोना लगभग असंभव था। – डिटर्जेंट बहुत महंगा था, इसलिए ज्यादातर लोग सस्ते साबुन से ही काम चलाते थे। – कपड़ों को चिलचिलाती धूप में सुखाना पड़ता था, जिससे उनमें पसीने और धूल की मिली-जुली बदबू आ जाती थी।
सबसे गरीब कैदी अपने कपड़े पहने हुए ही नहाते थे, सीधे शॉवर में उन्हें रगड़कर साफ करते थे और फिर सूखने तक नग्न ही रहते थे। यहाँ कुछ भी आसान नहीं था। साफ कमीज पहनना भी एक विलासिता थी।
समय के साथ, रिश्ते टूटते हैं, मुखौटे उतरते हैं, और दर्दनाक सच सामने आते हैं।
शुरुआत से ही टोनी धीरे-धीरे दूर होता जा रहा था। यह पहले तो सूक्ष्म था, लगभग ध्यान देने योग्य नहीं था। लेकिन संकेत मौजूद थे, और पीछे मुड़कर देखें तो हमें इसे बहुत पहले ही समझ लेना चाहिए था।
उसने हमारी पीठ पीछे जमानत के लिए आवेदन करने की कोशिश की थी। यह बात दिल को छुरा घोंपने जैसी लगी।

क्यों? क्योंकि हम तीनों ने मिलकर इस नरक को जिया था। क्योंकि हमने एक जैसे डर, एक जैसे संघर्ष साझा किए थे। क्योंकि, दिल से, हमें एक टीम होना चाहिए था।
और फिर भी…टोनी पहले से ही अकेले ही बाहर निकलने के बारे में सोच रहा था। "जेल में ही आपको पता चलता है कि लोग वास्तव में कैसे होते हैं।"
टोनी, वही आदमी जो हमारे साथ इस जेल में आया था, अब पहले जैसा नहीं रहा था। वह मजबूत और सहनशील आदमी जिसे हम जानते थे, अब टूटने लगा था। वह खुद को सबसे अलग कर रहा था, कम बोलता जा रहा था और घबराहट और चिंता में डूबता जा रहा था।
उन्होंने हमारे साथ भोजन करना बंद कर दिया और इसके बजाय खुद ही खाना ऑर्डर करना शुरू कर दिया। उन्होंने अपना पैसा अपने पास ही रखा, जबकि हम निद और बाद के घरेलू खर्चों को वहन करते रहे।
फिर भी, वह हमारे साथ ही रहा। बिना कुछ योगदान दिए, उसने आराम का आनंद लिया।
पहले तो हमने इस पर ध्यान नहीं दिया। आखिरकार, हम सभी बस जीवित रहने की कोशिश कर रहे थे, और हर कोई अपने-अपने तरीके से इससे निपटता है।
फिर एक दिन, सब कुछ फट गया।
हमें पहले से ही उसके और मार्को के बीच तनाव महसूस हो रहा था। लेकिन इस बार यह असहनीय हो गया। टोनी ने जिम्मेदारी लेने से इनकार कर दिया। वह यह मानने को तैयार नहीं था कि मार्को निर्दोष है। क्योंकि अगर मार्को निर्दोष था, तो इसका मतलब था कि सिर्फ मैं और वह ही दोषी थे। और वह इसे स्वीकार नहीं कर पा रहा था। वह मार्को की गलती की जिम्मेदारी नहीं लेना चाहता था। वह इस सच्चाई का सामना नहीं करना चाहता था कि हम सब इस मुसीबत में एक साथ फंसे हुए हैं। वह सिर्फ अपने बारे में सोच रहा था।
एक दिन, बातचीत बेकाबू हो गई।— “देखो, मैं मार्को के लिए पैसे नहीं दूंगा!” टोनी ने नज़रें बचाते हुए गुस्से से कहा।— “तो तुम चाहते हो कि वह यहीं सड़ता रहे जबकि उसने कुछ नहीं किया?” मैंने मुट्ठी भींचते हुए पलटकर जवाब दिया।
टोनी ने नज़रें नीचे कर लीं, वह जवाब देने में असमर्थ था। फिर उसने वह वाक्य बुदबुदाया जिससे हमारी दोस्ती खत्म हो गई: — “यह मेरी समस्या नहीं है।”

उसके बाद जो सन्नाटा छाया, वह असहनीय था। सब कुछ कहा जा चुका था। हमने उसे घर से निकाल दिया। वह अब हममें से एक नहीं रहा।
कुछ दिनों बाद, वह रोते हुए मुझसे मिलने आया। उसके पास अब कोई साथी नहीं बचा था। वह अकेला था। मैंने उसे खाली निगाहों से देखते हुए आते देखा, उसका चेहरा तनाव और नींद की कमी से मुरझाया हुआ था। वह मेरे सामने बैठ गया, सिगरेट का एक पैकेट निकाला और उसे ज़मीन पर रख दिया। — “लियो…” उसकी आवाज़ कांप रही थी। “मैं तुम्हें पैसे दूंगा। जब हम बाहर निकलेंगे तब दूंगा। मैं तुम्हें दस हजार यूरो दूंगा…” मैंने भौंहें ऊपर उठाईं। “क्यों?” उसने गहरी सांस ली, उसकी आंखें लाल थीं, और फिर उसने चौंकाने वाली बात कही: “सारा बोझ खुद पर ले लो। कह दो कि सिर्फ तुम ही जिम्मेदार हो। मैं यहां नहीं रह सकता। मैं मरने वाला हूं।”
मेरे अंदर क्रोध की एक लहर दौड़ गई। “क्या तुम सच कह रहे हो?” मैंने स्तब्ध होकर कहा। “मैं यह नहीं कर सकता, लियो। मैं नहीं कर पाऊंगा।” मैंने उसकी आँखों में सीधे देखा। फिर मैंने धीरे से साँस छोड़ी, क्रोध को उबलने से रोकने की कोशिश करते हुए। “टोनी…” वह थोड़ा सा चौकन्ना हुआ, उसकी आँखों में आशा की एक झलक दिखाई दी। “भाड़ में जाओ।”
उसका चेहरा उतर गया।— “क्या तुम्हें सच में लगता है कि मैं तुम्हारे लिए 10, 15, 20 साल की सजा भुगतूँगा?!” उसने अपना मुँह खोला, लेकिन कोई शब्द नहीं निकला। मैं खड़ा हुआ और सिगरेट का पैकेट उसके पैरों पर फेंक दिया।— “निकल जाओ।”
उसने बिना कुछ कहे सिगरेट उठाई और चला गया। और उसी क्षण, मुझे मानव स्वभाव के बारे में एक मूलभूत बात समझ में आई: जब सब कुछ बिखर जाता है, तो कुछ लोग डटे रहते हैं। और कुछ लोग इससे बाहर निकलने के लिए अपनी आत्मा तक बेच देते हैं।
टोनी ने अपना पक्ष चुन लिया था। उस दिन के बाद से हमने कभी बात नहीं की। टोनी धीरे-धीरे अपनी ही दुनिया में खोता चला गया। वह चिलचिलाती धूप में आंगन के चारों ओर चक्कर लगाते हुए पूरा दिन बिताता था, अपने विचारों में डूबा रहता था। हम उसे दूर से देखते रहे, कुछ नहीं कहते रहे।
मैं उससे नफरत करना चाहता था, लेकिन उसे उस हालत में देखकर मुझे केवल दया आई। मैंने उसे एक स्वाभिमानी, आत्मविश्वासी, इस देश में सहज रहने वाले

प्रवासी के रूप में देखा था... और अब, मैंने एक टूटे हुए इंसान को देखा, जो एक परछाई मात्र रह गया था।
जब तक उसका शरीर जवाब नहीं दे गया... मार्को और मैं चंदवा के नीचे बैठे आगामी मुलाकातों और आने वाले मुकदमे के बारे में बातें कर रहे थे... अचानक, आंगन में एक धीमी सी धमक गूंजी। हमने अपना सिर घुमाया। टोनी जमीन पर पड़ा था। वह गिर पड़ा था।
एक पल के लिए सब कुछ थम गया। फिर थाई कैदी हरकत में आ गए। वे दौड़े, उसे उठाया और एक पत्थर की बेंच पर लिटा दिया। वह बेहोश था। उसके होंठ सूखे थे, चेहरा पीला पड़ गया था।
तभी हमें एहसास हुआ: वह खुद को मरने दे रहा था। उसने खाना-पीना बंद कर दिया था, वह धीरे-धीरे कमजोर होता जा रहा था।
हमारे बीच मतभेद होने के बावजूद, उसने जो कुछ भी किया था, उसके बावजूद हमने ज़रा भी संकोच नहीं किया। हमने थाई लोगों को उसे अस्पताल ले जाने में मदद की, उसी जगह जहाँ कुछ ही दिन पहले मेरा इलाज हुआ था।
पौचोए परिवार, जो आमतौर पर उदासीन रहता था, अंततः उसकी देखभाल करने लगा। - "गंभीर निर्जलीकरण।" - "भोजन की कमी।" - "उसे अस्पताल ले जाने की आवश्यकता है।"
निदान स्पष्ट था। एक घंटे के भीतर, उन्हें पटाया के एक अस्पताल में ले जाया गया। हमने उन्हें जाते हुए देखा, यह नहीं जानते हुए कि हम उन्हें फिर कभी देख पाएंगे या नहीं।
कुछ दिनों बाद, वह वापस आ गया। दुबला-पतला, कमजोर, लेकिन फिर भी जीवित। हमने बिना किसी द्वेष के, केवल उसका मनोबल बढ़ाने के लिए उससे दोबारा संपर्क किया। क्योंकि उसने जो कुछ भी किया था, उसकी स्वार्थपरता और कायरता के बावजूद, वह अभी भी इंसान था। और इस नरक में, हममें से कोई भी उसे जाने नहीं दे सकता था।
मुकदमा आने वाला था। और हमें लड़ना ही होगा।
अगली सुबह जब मैं उठा, तो मुझे कुछ भी महसूस नहीं हुआ। न गुस्सा, न उदासी।
बस एक असहनीय थकान। मैं वहाँ पाँच महीने से था। आखिरकार मुझे समझ आ गया था कि तुरंत राहत की उम्मीद करना व्यर्थ है। मुझे जीने का कोई और तरीका ढूंढना होगा। खुद को ढालना होगा। सहन करना होगा।

मैंने बाहरी दुनिया से नाता तोड़ना शुरू कर दिया, अब मैं हर दिन किसी नए आगंतुक की प्रतीक्षा नहीं करती थी, अब मैं भ्रमों से चिपकी नहीं रहती थी। मैंने विश्वासघात, भय, भ्रष्टाचार, व्यवस्था की क्रूरता देखी थी। फिर भी, मुझे आगे बढ़ते रहना था। मैं अभी भी यहीं थी।
सबसे अच्छा दिन, निस्संदेह, मानसून के मौसम में जून और सितंबर के बीच की किसी गर्मी की दोपहर थी। वो भारी बारिश, जो बहुत कम होती थी, किसी वरदान से कम नहीं थी। जब आखिरकार आसमान से मूसलाधार बारिश होने लगी, तो हमने साबुन उठाया और खुले में लंबे समय तक नहाने का आनंद लिया। घने बादलों के नीचे लगभग गर्म पानी ने हमें पूरे एक घंटे तक भिगोया, और हमें पहले कभी न देखी गई तरह से शुद्ध किया। यह एहसास अविश्वसनीय था, एक ऐसी जगह पर आजादी का एक वास्तविक झोंका, जहाँ अन्यथा आपको कोई आजादी नहीं मिलती।
एक शाम, जब मैं अकेले सिगरेट पी रहा था, मुझे लगा कि मार्को मेरे पास आ रहा है। - "तुम परेशान लग रहे हो।" मैंने तुरंत जवाब नहीं दिया। मैंने सिगरेट का एक लंबा कश लिया और फिर धुआं छोड़ा। - "ऐसा लग रहा है जैसे हमारे साथ धोखा हुआ है..." - "किसके द्वारा?" - "सबके द्वारा।"
मार्को ने आह भरी और सिर हिलाया। “मैं तुम्हें बताना चाहता था। निड मेरा फायदा उठा रहा है। वह हर चीज़ का भुगतान तुमसे करवाता है, और तुम कभी कुछ नहीं कहती।” मैंने झुंझलाहट में अपना हाथ अपने चेहरे पर फेरा। “मैं बस शांति बनाए रखने की कोशिश कर रही हूँ… अगर मैंने मना करना शुरू कर दिया, तो हमें दिक्कतें होंगी।” “मैं समझता हूँ। लेकिन अगर तुम ऐसे ही चलती रही, तो एक महीने में कंगाल हो जाओगी।”
यह बात मुझे सीने पर मुक्के की तरह लगी। मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। मुझे कुछ करना ही था। लेकिन मैं निड को यह बात बिना सेल में हमारी स्थिति खराब किए कैसे बता सकता था?
अगली सुबह, निड हमेशा की तरह मेरे पास आया, जेल में बिताए सालों के कारण उसके झुर्रीदार चेहरे पर वही हंसमुख मुस्कान थी। उसने मुझे कागज के एक टुकड़े पर लिखी एक सूची थमा दी। "चलो आज एक अच्छा सा ऑर्डर देते हैं, है ना?" उसने लापरवाही से कहा।
मैंने तुरंत जवाब नहीं दिया। मैंने कागज़ लिया और उसे स्कैन किया। सिगरेट के दो पैकेट। चावल का ढेर। सूखे मांस के तीन बोरे। स्वच्छता उत्पाद। बहुत ज़्यादा।

मैंने उसकी ओर देखा।— “सुनो, निड… हम ऐसा करते नहीं रह सकते। पैसे कम होते जा रहे हैं।” उसकी मुस्कान गायब हो गई। काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। फिर उसने धीरे से सिर हिलाया।— “मैं समझता हूँ, भाई। चिंता मत करो।” उसने मेरे कंधे पर थपथपाया और बिना कुछ कहे चला गया। और तभी मुझे पता चला: एक नई समस्या शुरू हो चुकी थी।
अगस्त का महीना अभी शुरू ही हुआ था कि मैंने अपना नाम पुकारा जाते सुना। मैं यहाँ छह महीने से अधिक समय से था। मुझे पता था कि आखिरकार कुछ होने वाला है।
एक महीने पहले, मैंने अब्देल की सलाह पर जज को एक पत्र लिखा था। अब्देल ने भी ऐसा ही किया था। विचार सीधा-सादा था: अभी आधिकारिक तौर पर आरोपों को स्वीकार कर लेना, ताकि जज हम पर नरमी बरतें और शायद हमारी रिहाई में भी तेजी लाएँ। मैंने यह भी सोचा कि इस रणनीति से मार्को को भी मदद मिल सकती है। अगर मैं अभी अपनी सजा स्वीकार कर लूँ, तो शायद बाद में मैं उसकी तरफ से पैरवी कर सकूँ।
उस सुबह मुझे अकेले बुलाया गया। मार्को और टोनी दोनों को नहीं बुलाया गया था। सुबह-सुबह हाजिरी से पहले ही मुझे कोठरी से बाहर निकाला गया और अदालत ले जाया गया। हफ्तों से मैंने बाहर की हवा नहीं ली थी, जिससे मुझे अजीब सा चक्कर आने लगा। अब यह मेरी दुनिया नहीं रही थी। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं कोई अजनबी हूँ, किसी ऐसी जगह पर पहुँच गया हूँ जो मुझसे बहुत पहले ही ओझल हो चुकी थी।
जब मैं अदालत पहुंची, तो मेरी माँ वहाँ थीं। उनकी आँखें लाल थीं, लेकिन वे हिम्मत बनाए रखने की कोशिश कर रही थीं। उनके बगल में एक नन खड़ी थीं, जिनका नाम मैं भूल गई थी, एक दयालु महिला जो थाईलैंड में विदेशी कैदियों की मदद करती थीं। दोनों ने चुपचाप मेरा अभिवादन किया, लेकिन हम कुछ बोल नहीं पाए। मेरी साथी नहीं आई थी। वह काफी समय से मुझसे मिलने नहीं आई थी... वह उस दिन अदालत नहीं आ सकी। या शायद... वह अब इस स्थिति का सामना नहीं करना चाहती थी। इससे मुझे बहुत दुख हुआ। लेकिन अभी मैं इसके बारे में सोच भी नहीं सकती थी। उन्होंने मुझे जज के सामने बिठाया। उन्होंने थाई भाषा में बोलना शुरू किया। मैंने आरोपों को स्वीकार कर लिया। मैंने सभी दस्तावेजों पर हस्ताक्षर कर दिए। मुझे लगा कि ऐसा करने से मेरी सजा तुरंत तय हो जाएगी— कि मुझे आखिरकार रिहाई की तारीख मिल जाएगी।

लेकिन जज थाई भाषा में ही बोलते रहे। और मेरे पास कोई अनुवादक नहीं था। मैंने अपनी माँ की ओर देखा, जो उतनी ही असमंजस में थीं, उन्हें भी कुछ समझ नहीं आ रहा था। तभी, अदालत के एक कर्मचारी ने मुझसे अंग्रेजी में फुसफुसाते हुए कहा: “आपको इंतजार करना होगा। आप तीनों का नाम एक ही पुलिस रिपोर्ट में है। जज आपको अलग-अलग सजा नहीं सुना सकते।”
मेरी सारी योजना धराशायी हो गई। मैंने सब कुछ पर हस्ताक्षर कर दिए थे। मैंने सब कुछ स्वीकार कर लिया था... और इससे कुछ भी नहीं बदला। मुझे अभी भी मुकदमे का इंतजार करना होगा, बिल्कुल बाकी सब लोगों की तरह।
मैंने अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं। मैंने अपना गुस्सा, अपनी हताशा को पी लिया। अब और अंतहीन इंतज़ार...
मुझे वापस जेल बस में बिठाने से पहले, मुझे अपनी माँ के साथ कुछ पल मिले। उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और कसकर दबाया। “हिम्मत रखो, मेरे बेटे। हम तुम्हें यहाँ से निकालने के लिए हर संभव कोशिश करेंगे।” मेरे पास जवाब देने का समय नहीं था। एक नन मुझे आगे धकेल रही थी, और मुझे जंजीरों में जकड़े कैदियों के समूह में शामिल होने के लिए मजबूर कर रही थी। मैंने उन्हें आखिरी बार देखा। नन ने अपने हाथों से प्रार्थना का छोटा सा संकेत बनाया… फिर बस के दरवाजे ज़ोर से बंद हो गए। फिर से वही स्थिति। फिर से नरक।
जब मैं जेल लौटा, तो बाकी लोग इंतज़ार कर रहे थे। मार्को और टोनी जानना चाहते थे कि क्या हुआ था। "तो?" मार्को ने उम्मीद भरी आवाज़ में पूछा। मैंने गहरी साँस ली और कहा: "कुछ नहीं। मैंने स्वीकार कर लिया है, लेकिन हमें अभी भी मुकदमे का इंतज़ार करना होगा।" उसकी नज़र ज़मीन पर टिक गई। टोनी ने कंधे उचका दिए, मानो उसे पहले से ही इसका अंदाज़ा था। "हाँ... यहाँ तो हमेशा ऐसा ही होता है।"
सप्ताह बीत गए। इस बार हमें एक साथ बुलाया गया था।
सितंबर की शुरुआत ही हुई थी, और आखिरकार हम अदालत का सामना करने वाले थे: मार्को, टोनी और मैं। पिछली रात हममें से कोई भी ठीक से सो नहीं पाया था। चिंता ने हमारे पेट में मरोड़ पैदा कर दी थी। उम्मीद की एक छोटी सी किरण बाकी थी, कि शायद, बस शायद, आखिरकार कुछ बदलने वाला था।
एक बार फिर, मैंने वकील बदल लिया था। अब यह वकील मार्को और मेरा, दोनों का प्रतिनिधित्व कर रहा था, क्योंकि मैं हम दोनों के लिए उसे भुगतान कर रहा

था। टोनी का अपना वकील था। क्या वह अभी भी लिफ्ट पर भरोसा कर रहा था? क्या वह किसी चमत्कार की उम्मीद कर रहा था? मुझे कोई अंदाजा नहीं था। और मैं अब और पूछ भी नहीं रहा था।
इस नरक में हमारी दोस्ती टूट गई थी। अब हममें से हर कोई अकेला था।
अंततः, चीजें आगे बढ़ रही थीं। हमें जवाब मिलने वाले थे। हमें अंततः यह समझ आने वाला था कि हम कहाँ खड़े हैं। और सबसे बढ़कर, शायद—बस शायद—हम बाहर निकल जाएँगे। उत्साह असहनीय चिंता से भरा हुआ था।
भोर होते ही, पौचोए हमें लेने आ गए। प्रक्रिया हमेशा एक जैसी ही होती थी: – वे हमारे टखनों में जंजीरें बांध देते थे। – वे हमारी कलाईयों में हथकड़ी लगा देते थे। – वे हमें चिलचिलाती धूप में आंगन में कतार में खड़ा कर देते थे, हमारी बारी का इंतजार करते हुए। – पुराने कैदियों को पहले से ही पता था कि क्या होने वाला है। – लेकिन हम, "नए लोग," अभी भी थोड़ी सी उम्मीद से चिपके हुए थे। – "बस, लड़कों, शायद आज ही वो दिन है जब हम बाहर निकलेंगे," मैंने मार्को और टोनी से कहा। – मार्को ने कंधे उचका दिए। – "हाँ... या शायद वे हमें बस एक तारीख बताकर वापस हमारे घर भेज देंगे।" कोशिकाएँ।" उनका व्यावहारिकतावाद मुझे परेशान करता था, लेकिन गहराई से देखा जाए तो, वह शायद सही थे।
हम सुरक्षित परिवहन बस में सवार हुए, हर हरकत के साथ जंजीरें खनक रही थीं। और महीनों में पहली बार... हमने जेल की दीवारों को पीछे छोड़ दिया।
जैसे ही हम पहुँचे, हमारे वकील वहाँ मौजूद थे, गलियारे में घंटों से खड़े रहने की तरह इंतज़ार कर रहे थे। मेरे मन में, वे हमारी आखिरी उम्मीद थे।
लेकिन जैसे ही मैंने उनके सख्त चेहरे, उनके बेदाग सूट, उनके पीठ के पीछे बंधे हाथ देखे, मुझे कुछ समझ में आया: वे बस अपना काम कर रहे थे। इससे ज़्यादा कुछ नहीं।
अदालत कक्ष में प्रवेश करने से पहले, हमें अपने परिवारों से मिलने की अनुमति दी गई थी।
और वह वहाँ थी।
इस बार मेरी साथी भी आई थी।
लेकिन वह अलग थी।
दूर। ठंडी।

मुझे तुरंत इसका एहसास हो गया।
कुछ गड़बड़ थी।
सामान्य बातचीत के बाद, उसने आखिरकार स्वीकार किया: “मैंने अपनी ज़िंदगी में आगे बढ़ गई हूँ।” उसके शब्द हवा में लटके रहे, मानो मुझे समझ ही न आए।
आगे बढ़ गई? लेकिन मैंने उसे छोड़ा नहीं था। यहाँ, जेल में, समय थम सा गया था। बाहर, वह जीती रही थी।
मैंने गुस्से से प्रतिक्रिया नहीं दी। किसलिए? यहाँ जो कुछ मेरे साथ हो रहा था, उसकी तुलना में यह कुछ भी नहीं था। मैं लड़ना भी नहीं चाहती थी।
मुझे किसी न किसी रूप में उसकी ज़रूरत थी। अगर मेरे परिवार को उससे कुछ पूछना होता, अगर मुझे किसी मदद की ज़रूरत होती... तो बेहतर यही था कि हम अच्छे संबंध बनाए रखें।
तो मैंने बस इतना कहा: “मैं समझ गया।” ऐसा लगा जैसे वह भड़कने वाली हो। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। “मुझे उम्मीद है कि हमारा रिश्ता अभी भी अच्छा बना रहेगा।” वह थोड़ी शांत हुई। “हाँ, बिल्कुल।”
अंत में, वह कुछ और बार मिलने आई... अक्सर नहीं, नहीं। लेकिन कुछ तो था। उस समय, मैं उन कुछ चुराए हुए पलों को थामे रहा। कुछ न होने से तो बेहतर था। खालीपन से तो बेहतर था।
लेकिन भीतर ही भीतर, मैं वास्तव में उसका इंतज़ार नहीं कर रहा था। बात ये नहीं थी। मेरे लिए तो मेरे अपने लोग मायने रखते थे। मेरी माँ। मेरे प्रियजन। वे लोग जिन्होंने कभी हार नहीं मानी। वे लोग जो मुझे वापस लाने के लिए पहले दिन से ही संघर्ष कर रहे थे। मुझे उन्हीं को फिर से देखने की ज़रूरत थी, जिन्होंने मुझे हिम्मत दी। जब भी मैं उनके बारे में सोचता, मुझे फिर से साँस लेने की शक्ति मिलती। वे ही मेरी रोशनी थे।
फिर वो पल आ गया। उन्होंने हमारे नाम पुकारे, वो आवाज़ गलियारे में किसी तलवार की तरह गूंज उठी। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। अदालत कक्ष। अब समय आ गया था।
हम चुपचाप कतार में खड़े हो गए। पहरेदारों ने हमें फिर से जंजीरों से जकड़ दिया—कलाई, टखने, सब कुछ। धातु की खनक। एक कदम भी उठाने से पहले ही एक हल्का दर्द।
और फिर सीढ़ियाँ।
वे मनहूस अदालत की सीढ़ियाँ।

हर कदम एक परीक्षा थी। जंजीरें कंक्रीट की पटियाओं से टकराकर एक भयावह, बेतुकी कर्कश ध्वनि उत्पन्न कर रही थीं। जंग लगी धातु हमारे टखनों में धंस रही थी, हमारी त्वचा पर निशान छोड़ रही थी। हम नंगे पैर थे। फर्श गंदा और ठंडा था। पसीने से भीगे, मैल से सने उन फीके भूरे रंग के जेल के पजामों को पहने हुए, हमारे शरीर हमारी पीड़ा को बयां कर रहे थे। हमारे सिर मुंडे हुए थे। हमारी आँखें नीचे झुकी हुई थीं।
उस क्षण, हम अब पुरुषों जैसे नहीं दिखते थे। हम संख्याएँ बन चुके थे। एक बहरे तंत्र में मूक आकृतियाँ। सुने जाने से पहले ही दोषी।
किसी ने यह नहीं सोचा कि हम वहाँ क्यों थे। किसी ने यह नहीं पूछा कि क्या हममें से कोई निर्दोष हो सकता है, या बस एक इंसान हो सकता है। हम बस यही थे: कैदी। और उनकी नज़र में, इससे ज़्यादा कुछ भी पाने के लिए यही काफ़ी था। फिर मैंने अनुवादक फ्रेंको को देखा।
साठ वर्ष का एक व्यक्ति, हल्की सी मुस्कान और बनावटी, लगभग दोस्ताना भाव लिए हुए। वह उन कुछ लोगों में से एक था जिन्होंने मानवता की झलक के साथ हमारी ओर देखा।
फ्रेंको एक इतालवी था जो दशकों से थाईलैंड में रह रहा था। वह धाराप्रवाह फ्रेंच बोलता था और अक्सर दूतावास के साथ काम करता था। आज अदालत में कही गई हर बात का अनुवाद वही करता था।
उन्होंने सिर हिलाकर हमारा अभिवादन किया और फुसफुसाते हुए कहा: “दोस्तों, ध्यान से सुनो। कोई बात नहीं। बस सुनो, सीखो, अपनी अदालत की तारीख लो और वापस जेल चले जाओ।” मेरी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। न्यायाधीश के बोलने से पहले ही वह वाक्य किसी फैसले जैसा लग रहा था।
हमें युद्ध अपराधियों की तरह जंजीरों में जकड़कर न्यायाधीश के सामने लाया गया। अभियोजक वहाँ मौजूद था—उदासीन, उदासीन, हमारी ओर देख तक नहीं रहा था। न्यायाधीश ने बिना आँखें उठाए एक फाइल खोली और थाई भाषा में पढ़ना शुरू कर दिया। हमें एक शब्द भी समझ नहीं आया।
फिर फ्रेंको ने सपाट स्वर में अनुवाद किया: “आरोपों का पठन… तथ्यों की स्वीकृति… हिरासत की पुष्टि… मुकदमे की तारीख तय होना।” आखिरकार, यही तो उसकी भूमिका थी—अनुवादक, मध्यस्थ, हमारे और अदालत के बीच एक सेतु। एक ऐसा

फिर अंत में, फ्रेंको—तथाकथित अनुवादक—ने स्पष्ट रूप से बोलना शुरू किया। इस बार उसने पूरा वाक्य बोला। और वह हम पर हथौड़े की तरह गिरा: “आपकी सुनवाई 12 दिसंबर को होगी।”
समय थम सा गया। 12 दिसंबर। अभी भी बहुत दूर। हमने अपने मन में खुद को धोखा दिया था। हमें उम्मीद थी कि हमें जल्द रिहा कर दिया जाएगा। हमने एक त्वरित प्रक्रिया, एक त्वरित निर्णय की कल्पना की थी।
लेकिन नहीं। वास्तविकता ने उन भ्रमों को चकनाचूर कर दिया था। हम लंबे समय तक बंद ही रहे।
और हम कुछ नहीं कर सकते थे। कोई रास्ता नहीं था। बस और इंतज़ार। और इंतज़ार। और इंतज़ार।
उस दिन एकमात्र उम्मीद की किरण वह वीआईपी कमरा था जिसके लिए हमने भुगतान किया था। समय से परे एक घंटे के लिए 2,500 बाट। एक घंटा जहाँ हम अपने परिवारों के साथ भोजन कर सकते थे, उन्हें गले लगा सकते थे, उन्हें महसूस कर सकते थे, प्यार पा सकते थे।
जब मैं कमरे में दाखिल हुआ, तो मेरी माँ फूट-फूटकर रोने लगीं। उन्होंने खुद को मेरी बाहों में झोंक दिया, और मैंने उनके शरीर को अपने शरीर से कांपते हुए महसूस किया। “मेरे बेटे…” मैंने कुछ नहीं कहा। क्योंकि कहने के लिए कुछ था ही नहीं। उस आलिंगन में सब कुछ समाया हुआ था।
मेरे पिता थोड़े शांत स्वभाव के थे, लेकिन मैंने उनकी आँखों में थकावट देखी। “हम कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगे,” उन्होंने मुझसे कहा। मैंने सिर हिलाया। लेकिन मुझे अब इस बात पर यकीन नहीं रहा।
इन सबके लिए इतना सब कुछ। महीनों का इंतज़ार। वकीलों को मोटी रकम चुकानी पड़ी। और अंत में... सुनवाई की तारीख। दिसंबर। हमें दिसंबर तक इंतज़ार करना पड़ा। तीन और महीने।
जेल की बस में वापसी का सफर अवास्तविक सा लगा। हम थके-हारे, खोखले और निराश थे। हमें पता था कि हम वहां लंबे समय तक फंसे रहेंगे।
फिर भी, वापसी यात्रा का अजीब सा उत्साह हावी हो गया। पिछली बार की तरह, हमने अपनी सिगरेट, मिठाइयाँ और वीआईपी कमरे से लाए गए कुछ अनमोल सामान आपस में बाँटे। नए कैदियों ने हमारी कहानियाँ सुनीं, सवाल पूछे। हम खाली, बेज़ुबान थे, मानो हमारी आखिरी उम्मीद भी छिन गई हो।

मार्को ने मुझे चिप्स का एक पैकेट दिया। “लो। तुमने खाना नहीं खाया है।” मैंने बिना कुछ कहे उसे ले लिया।
पटाया की सड़कों पर उस गंदी, खड़खड़ाती बस में बैठे हुए, मुझे आखिरकार उस कचरे का स्रोत समझ में आया जो हमने जेल में अपने पहले दिन फर्श पर बिखरा हुआ देखा था। केवल कुछ भाग्यशाली लोगों को ही वीआईपी कमरे में प्रवेश की अनुमति थी।
अधिकांश थाई कैदियों को उनके लिए बनाए गए धातु के पिंजरे में बंद कर दिया गया था। परिवार से कोई सीधा संपर्क नहीं था। उनका खाना गार्डों के माध्यम से आता था - ठंडा, बेस्वाद, नीरस।
लेकिन जिनके पास पैसा था, उनके लिए नियम थोड़े नरम पड़ गए। कुछ समय के लिए, हम सब बराबर थे। उसी क्षण, जेल की सामाजिक सीढ़ी गायब हो गई।
हम बस कुछ आम आदमी थे, निराशा से चुराए गए भोजन को साझा कर रहे थे, जेल जीवन के दुख में वापस डूबने से पहले एक क्षणिक विराम। जल्दबाजी में, हमने सब कुछ चट कर दिया। चावल के बोरे पल भर में खाली हो गए। सिगरेट एक के बाद एक लगभग बेताबी से पी गई। पेय कुछ ही घूंटों में गटक लिए गए।
हमारे पास उस नाजुक आजादी का आनंद लेने के लिए सिर्फ 20 मिनट थे, अदालत और जेल के बीच का समय। हम जानते थे कि एक बार जब वे द्वार फिर से बंद हो जाएंगे, तो सब कुछ पीछे छूट जाएगा।
और इसी तरह जेल की बस में कूड़ा-कचरा जमा हो गया—गंदा, बदबूदार, और शायद कभी साफ न किया गया। बचा हुआ खाना, फटे हुए रैपर, धातु के फर्श पर पिसी सिगरेट की बटें, हर एक अनगिनत कैदियों की कहानी बयां कर रही थी जो हमसे पहले इस बस में सफर कर चुके थे। अदालत की हर यात्रा अपना निशान छोड़ जाती थी। हर कैदी ने इस पल को, सामान्य जीवन के इस क्षणिक अनुभव को, नरक में वापस धकेल दिए जाने से पहले जीया था।
फिर भी, बस में माहौल कुछ हद तक खुशनुमा था। उम्मीद और निराशा से भरी उस बस में, थाई और विदेशियों ने एक दुर्लभ सौहार्द का भाव साझा किया। और सच कहें तो, वे इसमें हमसे कहीं बेहतर थे। थाई कैदियों में किसी भी परिस्थिति में हंसने, भयावहता को सामान्य स्थिति में बदलने और साथ में सुकून पाने की अद्भुत क्षमता थी। और हम विदेशियों ने उनसे बहुत कुछ सीखा। उन्होंने हमारा मनोबल बढ़ाया, हमें अपने साथ शामिल किया और असहनीय परिस्थितियों को सहने में हमारी मदद की।

क्योंकि हम सब अंदर ही अंदर जानते थे कि यह सफर आखिरकार खत्म हो जाएगा। और एक बार जब वो दरवाजे खुल जाएंगे... तो हम अपनी क्रूर वास्तविकता में वापस आ जाएंगे। सलाखों के पीछे।
हमने अपनी सिगरेटें बुझा दीं, ज़ब्त की जा सकने वाली हर चीज़ छिपा दी... और फिर हम बस की खामोशी में इंतज़ार करने लगे कि नरक के द्वार हमारे पीछे फिर से बंद हो जाएँ।
जैसे ही हम वाहन से उतरे, हमें एक बार फिर नियमित नग्न तलाशी से गुज़ारा गया। यह एक ऐसी रस्म थी जिससे अब हमें आश्चर्य भी नहीं होता था। हमारे शरीर के हर इंच की जाँच की गई। गार्डों की ठंडी निगाहों के सामने हमारी त्वचा का हर सेंटीमीटर था। लाइटर, सिगरेट, खाना। जाँच स्थल पर पहुँचने से पहले सब कुछ गायब करना पड़ता था। जेल में कुछ भी ले जाने की अनुमति नहीं थी। यह एक सख्त नियम था। कोई अपवाद नहीं था। किसी ने भी कुछ भी तस्करी करने की हिम्मत नहीं की। हम सभी जानते थे कि इसके क्या परिणाम हो सकते हैं।
अदालत से वापस आने पर, हम सीधे अपनी सामान्य कोठरी में नहीं गए। इसके बजाय, हमें भवन संख्या 5 की तीसरी मंजिल पर ले जाया गया, जहाँ अदालत से लौटने वाले कैदियों के लिए एक विशेष कोठरी आरक्षित थी। यह एक अनिवार्य पड़ाव था, एक प्रकार का प्रतीक्षा क्षेत्र, जहाँ हमें वापस स्थानांतरित किए जाने से पहले रात बितानी थी।
यह कोठरी अलग थी। यहाँ हमें आम कैदियों के साथ नहीं रखा गया था। हमें एक ऐसी कोठरी में रखा गया था जिसमें ज़्यादातर कामगार थे, यानी भवन संख्या 3 में तैनात कैदी, जो पुस्तकालय, अभिलेख, कंप्यूटर या छोटे-मोटे प्रशासनिक कार्य संभालते थे। वे जेल के बुद्धिजीवी थे, एक अलग ही वर्ग। न तो सबसे प्रभावशाली, न ही सबसे खतरनाक—लेकिन उनके पास एक अनूठा लाभ था: ज्ञान तक पहुँच।
वहीं हमारी मुलाकात विम से हुई, जो एक उम्रदराज थाई कैदी था, जिसे उसकी झुकी हुई पीठ और धीमी चाल के कारण अन्य लोग "कछुआ" उपनाम से पुकारते थे। उसे इस उपनाम से कोई फर्क नहीं पड़ता था, बल्कि वह इसे गर्व के प्रतीक की तरह पहनता था।
विम ने अपना परिचय भावी वकील के रूप में दिया। उन्होंने थाई कानून का अध्ययन करने में कई वर्ष बिताए थे, और उनका दृढ़ संकल्प था कि वे उन लोगों की मदद करेंगे जो उनकी तरह न्याय व्यवस्था के जाल में फंस गए थे। कुछ ही

समय बाद, उन्होंने हमें अपनी सेवाएं देने की पेशकश की। “मैं आपको जल्दी बाहर निकलने में मदद कर सकता हूँ। मुझे प्रक्रियाएँ पता हैं। मैंने आपसे पहले भी अन्य विदेशियों की मदद की है।”
हमने ध्यान से सुना—हालांकि सावधानी से। हमें पता था कि जेल में कई लोग दावा करते थे कि वे मदद कर सकते हैं, लेकिन सच्चाई यह थी कि वे ज्यादातर हमारी बेबसी से लाभ कमाना चाहते थे। फिर भी, उनकी सलाह उपयोगी थी। उन्होंने हमें थाई कानून की किताब की एक प्रति दी और विस्तार से समझाया कि वास्तव में हमें किस स्थिति का सामना करना पड़ रहा था। उनके शोध और कानूनों की व्याख्या के अनुसार, हमारे मामले में अधिकतम सजा दो साल और छह महीने थी। लेकिन चूंकि हमने शुरू से ही अपना अपराध स्वीकार कर लिया था, इसलिए हम स्वतः ही 50% सजा में कमी के पात्र थे। इसका मतलब यह था कि सबसे खराब स्थिति में भी हमें "केवल" एक साल और तीन महीने जेल में बिताने होंगे। वह संख्या अचानक प्रबंधनीय लगने लगी। "तुम पहले ही सात महीने पूरे कर चुके हो," विम ने हमें याद दिलाया। "सबसे कठिन हिस्सा तुम्हारे पीछे छूट गया है।"
उस एक साधारण वाक्य ने हमें नई ऊर्जा दी। हालाँकि कुछ भी निश्चित नहीं था, और हम जानते थे कि थाई न्याय प्रणाली बेहद अप्रत्याशित हो सकती है, फिर भी एक ठोस अनुमान मिलने से सब कुछ बदल गया। अब हम पूरी तरह से अंधेरे में नहीं थे। हमें अंदाज़ा हो गया था कि हमारे पास जीवित रहने के लिए कितना समय बचा है। और किसी तरह... इससे सब कुछ सहने योग्य हो गया।
थाई न्याय व्यवस्था का संतुलन या निष्पक्षता से कोई लेना-देना नहीं था। यह एक अभेद्य दीवार थी, और हम इसके नीचे कुचल गए थे। हमें इस वास्तविकता को स्वीकार करना पड़ा। हमें यहाँ कुछ और समय तक रहना था। हमें जीवित रहना था। और भी अधिक घुलमिल जाना था। आने वाले महीनों को सहना था। और सबसे बढ़कर... कभी उम्मीद मत छोड़ो। भले ही कभी-कभी हम बस यही करना चाहते हों।

अध्याय 8: एक नया पिंजरा
अदालत से लौटने के बाद, हमारी प्राथमिकताएँ बदल गईं। बिल्डिंग 5 में जीवन असहनीय होता जा रहा था और हम शारीरिक और मानसिक रूप से पूरी तरह थक चुके थे। मार्शल लॉ ने हमारे अस्थायी गद्दे छीन लिए थे, और हमारे पास केवल तीन पतले कंबल बचे थे। एक फर्श के लिए, एक खुद को ढकने के लिए, और एक जिसे कुछ लोग तकिए की तरह इस्तेमाल करते थे। ठंडे कंक्रीट पर सोना सचमुच एक बुरे सपने जैसा था। महीनों तक इस तरह सोने के बाद, पीठ दर्द रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बन गया था।
बिल्डिंग 4 में जाना एक नए अध्याय की शुरुआत थी। महीनों तक नरक जैसी जिंदगी जीने के बाद, एक नई शुरुआत जिसकी हमें बेसब्री से चाह थी। तबादले का अनुरोध करने का हमारा निर्णय स्पष्ट हो गया था। बिल्डिंग 5 एक तरह का नरक बन चुकी थी, और बिगड़ती जीवन स्थितियों ने वहां से निकलने की हमारी आवश्यकता को और भी तीव्र कर दिया था।
पानी लगभग न के बराबर था। स्नान करना हमारे लिए एक विलासिता बन गया था, जो हमें शायद ही कभी मिलता था। यहाँ तक कि बैड को मिलने वाली पानी की छोटी बाल्टी भी गायब हो गई थी, क्योंकि उसने शावर की नौकरी खो दी थी। हम उस "परिवार" में अपनी जगह पर सवाल उठाने लगे थे। इसके थोड़े-बहुत फायदे भी खत्म होते जा रहे थे, लेकिन वहाँ रहने की कीमत बढ़ती ही जा रही थी।
एक हट्टे-कट्टे रूसी आदमी को, जो कथित तौर पर एक पेशेवर मुक्केबाज था, को लगभग पूरी कोठरी के कैदियों ने - गार्डों की सहमति से - सिर्फ इसलिए बुरी तरह पीटा था क्योंकि वह बहुत घमंडी था। उस कोठरी में कई कैदियों की मौत हो चुकी थी। इलाज न किए गए रोगों या सूजन के शिकार। हर सुबह, शवों की गिनती की जाती थी, और ऐसा होना असामान्य नहीं था कि कोई व्यक्ति बस... जाग ही न पाए। फिर हद पार हो गई। कई महीनों तक, हर रात, नोक नाम के एक युवा थाई कैदी को सेल बॉस के सामने वेश्यावृत्ति करने के लिए मजबूर किया जाता था। वह मेज़ानाइन पर चढ़ जाता था, जहाँ बॉस सोता था, और कुछ पैकेट नूडल्स या एक कॉफी के बदले अपनी "सेवाएँ" पेश करता था। वह हमेशा मुस्कुराता रहता था और कहता था कि यह उसके लिए "सम्मान" की बात है। लेकिन हम सब सच्चाई जानते थे।
हम इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकते थे।
धीरे-धीरे, हमने सेल बॉस के प्रति अपनी अवमानना दिखानी शुरू कर दी। हमने उसके प्रति सम्मान का दिखावा करना बंद कर दिया। मार्को ने मेरी तरफ एक

नज़र डाली और बुदबुदाया: "अब समय आ गया है कि हम यहाँ से निकल जाएँ।" मैंने सिर हिलाया। यह अब कोई विकल्प नहीं था। यह जीवन-मरण का सवाल था।
निड ने स्पष्ट कर दिया कि अब हमारा यहाँ स्वागत नहीं है। हमें यहाँ से चले जाना चाहिए। बिल्डिंग 4 ही हमारी एकमात्र आशा थी।
मुझे हर सुबह अपनी पीठ में दर्द महसूस होता था, मानो मेरी हड्डियाँ फर्श से चिपक गई हों, अंतहीन रातों के बोझ तले कुचल गई हों। एक सुबह मैंने मार्को से बुदबुदाते हुए कहा, "हम ताबूत में ज़्यादा अच्छी नींद सोएँगे।" "हाँ, बस फ़र्क इतना है कि यह असली चीज़ के लिए सिर्फ़ प्रशिक्षण है।" व्यंग्यात्मक हास्य ही हमारा एकमात्र सहारा बन गया था।
लेकिन हम जानते थे कि यह ज्यादा देर तक नहीं चल सकता। हमें भागना ही था। हमने भवन संख्या 4 में स्थानांतरण के लिए अपना अनुरोध दाखिल किया। एक सप्ताह बाद, इसे मंजूरी मिल गई।
हम जाने वाले पहले नहीं थे। मार्सिले के दो लड़के पहले ही बिल्डिंग 4 के लिए निकल चुके थे। उन्होंने इसे हमारे रोज़ाना के नरक की तुलना में स्वर्ग बताया। उन्होंने जल्दी से अपना स्थानांतरण करवा लिया था, और अब वे फल-फूल रहे थे।
आखिरकार, हमारी बारी आ गई। बैड और निड हमें जाते देखकर दुखी थे, लेकिन अंदर ही अंदर हम जानते थे कि हम शायद ही कभी एक-दूसरे को फिर से देख पाएंगे।
हम कुछ बचा-खुचा सामान छोड़ गए। कुछ खाना, कुछ कंबल। एक शांत विदाई।
हम दुश्मन बनकर नहीं जा रहे थे, लेकिन हम जानते थे कि हमारे बाहर निकलते ही हमारा रिश्ता टूट जाएगा।
— “अपना ख्याल रखना,” निड ने पुकारा। — “तुम भी। और नोक को कूड़ेदान में मत फेंकना,” मार्को ने कड़वाहट से जवाब दिया। किसी ने जवाब नहीं दिया। हम सब जानते थे कि हम उस जगह पर फिर कभी कदम नहीं रखेंगे।
अपने मामूली सामानों से भरे बैग के साथ, जिसमें कुछ कपड़े और कुछ खाने-पीने का सामान था, हम बिल्डिंग 4 की ओर चल पड़े।
हमारे पहुंचते ही हमने इसे महसूस किया। एक अलग ही वातावरण।
बिल्डिंग 4 ज़्यादा साफ़-सुथरी थी। ज़्यादा व्यवस्थित थी। फ़र्श को अच्छी तरह से साफ़ किया गया था—सचमुच—ऐसा हमने बिल्डिंग 5 में कभी नहीं देखा था। आँगन के बीच में सुनहरी मछलियों वाला एक छोटा सा तालाब था। यहाँ तक कि गार्ड भी ज़्यादा पेशेवर और ज़्यादा मानवीय लग रहे थे।

— “यहाँ मौत की गंध नहीं आ रही,” मार्को ने फुसफुसाते हुए कहा।— “यहाँ तो लगभग जीवन की गंध आ रही है।”
हमने इस नए क्षेत्र के नियम जल्दी सीख लिए। प्रमुख अधिकारी, श्री जून, सख्त थे, लेकिन निष्पक्ष थे।
वह पैसे का सम्मान करता था, हाँ— लेकिन जिनके पास नकदी नहीं थी, उन्हें भी न्यूनतम सुरक्षा मिलती थी, बशर्ते वे नियमों का पालन करें।
उपद्रवियों के प्रति बिल्कुल भी सहनशीलता नहीं थी।
हमने सुना कि नियमों का पालन न करने वाले कैदियों को मानव मल से भरे एक बड़े बर्तन में फेंक दिया जाता था, फिर उन्हें चिलचिलाती धूप में सुखाने के लिए बाहर निकाल दिया जाता था। यह क्रूर था। लेकिन इससे लोग अनुशासन में रहते थे।
पहला बड़ा अंतर? पानी।
बिल्डिंग 5 के विपरीत, यहाँ के कैदी नियमित रूप से अधिकारियों को पैसे देते थे। बदले में, पानी के ट्रक दर्जनों की संख्या में आते थे। अब हर बूँद के लिए लड़ाई नहीं करनी पड़ती थी। हम आखिरकार बिना सेकंड गिने नहा सकते थे।
लेकिन असली गेम-चेंजर कौन है?
कुख्यात वीआईपी सेल।
अमीर कैदियों के लिए आरक्षित एक अनुभाग, प्रवेश के लिए प्रति माह 20 पैकेट सिगरेट।
पानी की असीमित उपलब्धता।
निश्चित, समान दूरी पर स्थित सोने की जगहें।
एक शांत, अधिक सम्मानजनक वातावरण।
जहां से हम आए थे, उसकी तुलना में यह विलासिता थी।
हमने जरा भी संकोच नहीं किया। हमने तुरंत अपनी जगह पक्की कर ली।
— “मुझे यहाँ मरने में कोई आपत्ति नहीं है,” मार्को ने कहा। “लेकिन अगर मरना ही पड़े, तो मैं आराम से मरना पसंद करूँगा।” — “बिल्कुल,” मैंने जवाब दिया और समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए।

हमें आखिरकार शांति का एक छोटा सा अंश मिल गया था। एक छोटी सी आरामदायक जगह, ऐसी दुनिया में जहाँ हर दिन मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए संघर्ष करना पड़ता था।
महीनों के नरक के बाद, आखिरकार हमें थोड़ी सी गरिमा के साथ जीने का मौका मिला। बिल्डिंग 4 ताज़ी हवा के झोंके की तरह महसूस हुई। हमारे मुकदमे की क्रूर वास्तविकता का सामना करने से पहले एक नई शुरुआत। लंबे समय बाद पहली बार, हम कुछ हद तक तैयार महसूस कर रहे थे। अंतिम फैसला आने तक डटे रहने के लिए तैयार।
यदि बिल्डिंग 5 पूरी तरह से अव्यवस्थित थी, तो बिल्डिंग 4 एक सुव्यवस्थित व्यवसाय था।
श्री जून ने हिंसा के माध्यम से शासन नहीं किया, उन्होंने अनुशासन और धन के बल पर शासन किया। उनके नियम बहुत स्पष्ट थे: हंगामा मत करो। चोरी मत करो।
पहरेदारों का कभी अनादर मत करो।
बदले में, उसने कुछ विशेषाधिकारों की अनुमति दी। जब तक उसके निजी व्यवसाय पर कोई असर नहीं पड़ता था, तब तक उसने छोटे-मोटे व्यापारों को अनदेखा किया।
उसने पानी और भोजन की बिक्री को नियंत्रित किया। उसने उन विदेशियों की रक्षा की जिन्होंने अपना बकाया चुकाया। और उसने शांति बनाए रखी। भले ही इसका मतलब उसके नियमों को तोड़ने वाले किसी भी व्यक्ति को कुचल देना हो। थाई कैदी उससे डरते थे। विदेशी उसका सम्मान करते थे।
और हम एक बात समझ गए: जब तक हम भुगतान करते रहेंगे और चुप रहेंगे, हम सुरक्षित रहेंगे।
जैसे ही हम बिल्डिंग 4 पर पहुंचे, स्वान और अब्देल ने गाइड के रूप में अपनी भूमिका को गंभीरता से निभाना शुरू कर दिया।
— “ठीक है लड़कों, हमारे यहाँ स्वागत है,” स्वान ने कहा। “यह D5 नहीं है— तुम्हें पता चल जाएगा। यहाँ व्यवस्था है। यहाँ काम-काज है। और सबसे ज़रूरी बात, यहाँ पानी है।”— “पानी?” मार्को ने आँखें फाड़कर पूछा। “मतलब… पीने लायक पानी?”— “ज़्यादा उम्मीद मत रखो… लेकिन कम से कम यहाँ पानी का प्रेशर तो है, और यह दिन भर चलता रहता है।”
यह अपने आप में एक बहुत बड़ा सुधार था।
उन्होंने हमें पूरा दौरा कराया, और हमने जल्दी ही देखा कि डी4 जेल के अंदर एक छोटे शहर जैसा था।

पहला पड़ाव: मुख्य प्रवेश द्वार। बाईं ओर, कमांडर की इमारत। एक ठोस, कंक्रीट की इमारत जहाँ सभी प्रमुख मामलों को संभाला जाता था।
लेकिन सत्ता का असली केंद्र सबके सामने ही छिपा हुआ था: एक छोटा सा कांच का बूथ, जो एक रणनीतिक कोने में स्थित था।
— “वह जून का कमांड पोस्ट है,” स्वान ने समझाया। — “वह वहां माइक लेकर बैठता है और सब कुछ देखता है। अगर कोई नियम तोड़ता है, तो वह अचानक प्रकट होता है और सख्ती से कार्रवाई करता है।”
रंगीन शीशे के कारण यह बताना असंभव था कि वह अंदर था या नहीं।
— “वह एक राजा की तरह है। या एक तानाशाह की तरह। या एक भूत की तरह… वह सब कुछ देखता है, लेकिन उसे कोई नहीं देख पाता।”
कभी-कभी वह घंटों वहीं रहता था। कभी-कभी वह झपकी लेता था या चुने हुए कैदियों से मालिश करवाता था। यह एक सुव्यवस्थित व्यवस्था थी, और किसी ने भी उसके अधिकार पर सवाल उठाने की हिम्मत नहीं की।
हमने भ्रमण जारी रखा। प्रवेश द्वार के आगे, हम एक बड़े खुले आंगन को पार कर गए जहाँ दर्जनों कैदियों ने अपने "घर" बना रखे थे।
— “यह डी5 जैसा ही है, लेकिन अधिक व्यवस्थित है,” स्वान ने कहा।— “यहाँ एक मिनी-फार्मेसी भी है।”
जेल में एक अनमोल विलासिता।
आगे दाईं ओर, एक विशेष क्षेत्र: “वह लेडीबॉय कॉर्नर है,” अब्देल ने मुस्कुराते हुए कहा। “सप्ताहांत में, वह उनका… कार्यक्षेत्र होता है।” यह स्पष्ट हो गया। यहाँ एक पूरी भूमिगत अर्थव्यवस्था थी, जो D5 की तुलना में कहीं अधिक संरचित थी।
लेकिन जिस चीज ने वास्तव में हमारा ध्यान आकर्षित किया, वह था केंद्रीय आंगन।
आंगन चौड़ा, साफ-सुथरा था और लंबी कंक्रीट की बेंचों से घिरा हुआ था। जैसे कोई शहर का चौक हो जहाँ हर किसी को अपनी जगह मिली हो।
बाईं ओर: खेलकूद में रुचि रखने वाले कैदियों के लिए एक छोटा सा स्वर्ग। - "जिम!"
कंक्रीट के वजन, कैदियों द्वारा वेल्ड की गई स्टील की छड़ें, एक बुनियादी लेकिन पूरी तरह से कार्यात्मक सेटअप।

— “यह कोई आलीशान फिटनेस सेंटर नहीं है, लेकिन काम चल जाता है।”
डी5 में महीनों की यातना के बाद, यह लगभग एक इनाम जैसा लगा।
लेकिन सबसे बड़ा झटका? जून के "घर"।
आंगन के सबसे दूर छोर पर: 3 वर्ग मीटर की झोपड़ियों की पंक्तियाँ, बिल्कुल सीधी रेखा में लगी हुई हैं।
— “ये तो बिकने के लिए हैं,” स्वान ने कहा।
— “बिकने के लिए? जेल में?”
एक ऐसा व्यवसाय जो रियल एस्टेट डेवलपर के लिए उपयुक्त है।
जून ने उन्हें उन कैदियों को असली पैसों में बेच दिया जिनके पास पैसे थे।
— “अगर आपके पास बाहर नकदी है, तो आप यहां एक घर खरीद सकते हैं।”— “और उसके बाद, आपकी तो मौज हो जाएगी।”
एक वास्तविक कुलीन जेल का अनुभव। जहाँ पैसा शांति और सुकून का प्रतीक था। लेकिन वो हमारे लिए नहीं था। हमें वीआईपी सेल से ही संतोष करना पड़ा। और वो भी एक विलासिता थी।
डी4 में नए चेहरों में से, हम जल्दी ही फरीद से मिले, जिसे "फाफा" के नाम से भी जाना जाता है। एक सख्त चेहरा, बड़ी मुस्कान, और हमेशा होठों से लटकती सिगरेट।
— “दोस्तों, फाफा से मिलो,” अब्देल ने घोषणा की।— “फाफा?” मैंने दोहराया।
— “हाँ, वह पुराना खिलाड़ी है। बैंकॉक जाने से पहले उसने यहाँ कुछ समय बिताया था।”
फाफा अब्देल का पुराना दोस्त था।
हाल ही में बैंकॉक रिमांड जेल से स्थानांतरित किया गया।
उन्हें क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी के आरोप में जेल में बंद कर दिया गया था, हालांकि उन्होंने हमें कभी भी पूरी कहानी नहीं बताई।
— “आप कब से इसमें हैं?”— “इतने लंबे समय से कि मुझे पता है कि D4 सबसे अच्छा विकल्प है,” उसने कंधे उचकाते हुए कहा।
वह सिस्टम को चलाना जानता था। सही संपर्कों और कुछ नकदी के साथ, उसने सीधे अपने स्थानांतरण के लिए बातचीत की थी।
उसकी योजना सरल थी: रेयोंग में मुकदमे तक जीवित रहना।

उन्होंने स्वान और अब्देल के साथ अपनी तिकड़ी को तुरंत फिर से गठित कर लिया। हमें यह देखकर खुशी हुई कि वे व्यवस्थित हो गए थे, और हमें उनके अनुभव से लाभ उठाने की उम्मीद थी।
हालांकि मेरे और टोनी के बीच चीजें शांत हो गई थीं, फिर भी मैंने उसे हमारे साथ शामिल होने के लिए आमंत्रित नहीं किया। उसने एक अलग रास्ता चुना था। वह और अधिक अलग-थलग होता जा रहा था— अपनी रक्षा पर ध्यान केंद्रित कर रहा था, हमसे दूरी बनाने की कोशिश कर रहा था।
— “टोनी कैसा है?” स्वान ने पूछा। — “वह अपना काम कर रहा है। खुद को बचाना चाहता है,” मैंने जवाब दिया।
हमें पता था कि वह अब भी बरी होने की उम्मीद कर रहा था—और अब वह हमारे साथ कोई संबंध नहीं रखना चाहता था।
लेकिन जेल में कोई भी अकेला बाहर नहीं निकल पाता।
हमने अपना चुनाव कर लिया था। उसने भी अपना चुनाव कर लिया था।
और हमारे लिए—अब एकमात्र लक्ष्य जीवित रहना था।
बिल्डिंग 4 किसी दूसरी दुनिया जैसी लग रही थी। हर चीज़ ज़्यादा व्यवस्थित, सुव्यवस्थित और कम अव्यवस्थित लग रही थी। व्यवस्था कायम थी—स्पष्ट रूप से परिभाषित पदानुक्रम और निरंतर निगरानी द्वारा लागू। इस निरंतर नियंत्रण से सुरक्षा की एक निश्चित भावना तो मिली, लेकिन इसने एक तनावपूर्ण माहौल भी बना दिया, जहाँ हर हरकत पर नज़र रखी जाती थी और हर बात की रिपोर्ट की जा सकती थी।
हम जानते थे कि यहाँ जीवन आसान नहीं होगा—बस अलग होगा। अधिक कपटी।
पानी की निरंतर उपलब्धता, बेहतर रहने की जगह और हिंसा के अधिक विवेकपूर्ण प्रकार के साथ, कम से कम हम थोड़ी राहत की सांस तो ले सकते थे। लेकिन हम भोले नहीं थे।
चाहे हालात कैसे भी दिखें, चाहे वे हमें किसी भी तरह का सापेक्ष आराम दें, हम फिर भी जेल में थे। और सबसे बुरा तो अभी आना बाकी था।
अगर इमारत 4 सतह पर देखने में अच्छी लगती थी, तो वास्तव में यह एक अच्छी तरह से डिज़ाइन किया गया जाल था।
हमारे साथ अधिक शिष्टाचार से व्यवहार किया गया, लेकिन यह केवल एक भ्रम था।
हमें पूर्ण नियंत्रण स्वीकार करने के लिए मजबूर करने का एक तरीका।

रात की तलाशी अंतहीन थी। हर रात, बिना किसी चेतावनी के, गार्ड अचानक घुस आते, हमें बेरहमी से जगाते, और हमें ठंडे कंक्रीट पर नंगे पैर लाइन में खड़ा होने के लिए मजबूर करते। वे लापरवाही से हमारे सामान की तलाशी लेते, हमारी थोड़ी-बहुत चीज़ों को रौंदते, और हमारी चादरों को ऐसे फाड़ देते जैसे उनका कोई महत्व ही न हो।
नियमों का अंबार लग गया: कोठरियों में खाना मना था। धूम्रपान निषेध था। एक दिन से अधिक भोजन रखना मना था। सब कुछ हमें पूरी तरह से आश्रित रखने के लिए बनाया गया था। वे हमें अलग-थलग करना चाहते थे। हमें बाकी जेल से अलग करना चाहते थे। अन्य इमारतों से हमारा संपर्क सीमित करना चाहते थे।
धीरे-धीरे हमें एहसास हुआ कि बिल्डिंग 4 की तथाकथित "स्वतंत्रता" की एक कीमत थी। और वह कीमत निर्विवाद सत्ता के प्रति पूर्ण समर्पण थी।
बिल्डिंग 4 के अनुकूल ढलने की प्रक्रिया धीमी थी।
स्वान, अब्देल और फरीद, जिन्होंने बड़ी रकम चुकाई थी, पौचोई के साथ रहे, जो एक बहुत ही आरामदायक और शांत इलाके में रहते थे।
मार्को और मैं अकेले रह गए थे, साथ रहने के लिए एक नए "परिवार" की तलाश में।
कुछ दिनों तक निगरानी और बातचीत करने के बाद, हमें थाई कैदियों का एक समूह मिला जो ठोस प्रतीत होता था। वे पाँच थे—शांत, संगठित, और सबसे महत्वपूर्ण बात, वे बिल्डिंग 5 की तरह हमारा फायदा उठाने की कोशिश नहीं कर रहे थे।
हमने एक सरल सौदा प्रस्तावित किया: हम उनके खाने के ऑर्डर संभालेंगे, और बदले में, हम अपना सामान उनके घर में रख सकेंगे और उनके साथ भोजन साझा कर सकेंगे।
बिल्डिंग 4 की सबसे बड़ी नवीनता क्या है? बिजली से चलने वाली कड़ाही।
इन गर्म पैनों की मदद से हम असली खाना बना सकते थे। अब ठंडे चावल के पैकेटों की ज़रूरत नहीं थी। हम अब गरमागरम व्यंजन तैयार कर सकते थे, जिसने हमारी दिनचर्या को पूरी तरह से बदल दिया।
यह एक तरह का अनुष्ठान बन गया था, हर कोई उपलब्ध सामग्रियों से अपने-अपने व्यंजन बनाता था। मसाले, मिर्च, जड़ी-बूटियाँ, उनकी सुगंध से कोठरी किसी उत्सव की तरह भर जाती थी।
यह एक ऐसी विलासिता थी जिसका अनुभव हमने अब तक कभी नहीं किया था।

फिर भी, हमें जल्द ही एहसास हो गया कि तथाकथित वीआईपी सेल केवल आराम का एक भ्रम था।
हाँ, हमारे पास थोड़ी और जगह थी—लेकिन हम पचास लोग बीस वर्ग मीटर के कमरे में ठूंस-ठूंस कर भरे हुए थे।
पानी, जिसे असीमित माना जाता था, वास्तव में असीमित नहीं था। कमी थी, कटौती थी, और हर कोई अपनी बोतलें भरने के लिए संघर्ष कर रहा था।
हमें ठंडा करने के लिए पूरी रफ्तार से घूम रहा विशाल पंखा राहत से ज्यादा एक बुरे सपने जैसा साबित हुआ।
इसके कान फाड़ देने वाले शोर के कारण सोना लगभग असंभव था। और स्थायी फ्लोरोसेंट रोशनी के साथ मिलकर, रातें शुद्ध यातना थीं।
लेकिन हमेशा की तरह, हमने खुद को परिस्थितियों के अनुसार ढाल लिया। आप हमेशा परिस्थितियों के अनुसार ढल जाते हैं।
अशरफ, एक ईरानी जिसके साथ मेरी जल्दी ही अच्छी दोस्ती हो गई, उन लोगों में से एक था जो हर किसी का मनोबल बढ़ा सकता था।
लंबी, नींदहीन रातों के दौरान, हम भीड़ से दूर, शौचालयों के पास मिलते थे, सिगरेट पीते थे और हर चीज और कुछ भी नहीं के बारे में बातें करते थे।
वह छोटा सा कोना हमारा आश्रय स्थल बन गया।
एक बंद पिंजरे के अंदर आजादी का एक छोटा सा टुकड़ा।
नए नियम लागू हो गए: अब हम कहीं भी धूम्रपान नहीं कर सकते थे। हमें शौचालयों के पास जाकर अपनी बारी का इंतजार करना पड़ता था।
यह सब सिर्फ इसलिए किया गया ताकि राख इधर-उधर न फैले।
एक और नियम: राजा का राष्ट्रगान।
हर सुबह और हर रात, हमें राष्ट्रगान के लिए सावधान की मुद्रा में खड़ा होना पड़ता था।
इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि हम बीमार थे, थके हुए थे, या नींद में थे— आपको सम्मान दिखाना ही पड़ता था। वरना तुरंत सजा भुगतनी पड़ती।
इन सब के बावजूद, मार्को और मैंने किसी तरह की लय पा ली। हम हर दिन ट्रेनिंग करते थे, और हम जेसी नाम के एक ब्रिटिश लड़के के करीब आ गए, जो ड्रग तस्करी के आरोप में जेल में था।
उन्होंने हमारे साथ प्रशिक्षण लिया, हमें फिट रहने के लिए प्रेरित किया— हमारे मनोबल को ऊंचा बनाए रखने के लिए।

व्यायाम करना हमारी जीवनरेखा बन गया। कुछ ऐसा जिस पर हम भरोसा कर सकें।
और फिर… जूलिया आ गई।
यह 15 दिसंबर का दिन था—उसका जन्मदिन। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि वह आ रही है।
सच कहूँ तो, उस समय, मुझे नहीं पता था कि मैं अब किस पर भरोसा कर सकता हूँ।
मेरी माँ इस बार नहीं आ सकीं। वह अपनी तरफ से हर संभव कोशिश कर रही थीं, लेकिन दूरी, खर्च, भावनात्मक बोझ... ये सब उन्हें थका रहे थे।
मेरे पिता? उन्होंने मुझे बिना कुछ कहे छोड़ दिया था।
बिल्डिंग 4 में मेरे स्थानांतरण से पहले, उन्होंने कागजी कार्रवाई में मदद करने और मेरी माँ का समर्थन करने के लिए फिर से आने का वादा किया था।
लेकिन उसने कुछ नहीं किया। उसने उसकी सारी बचत ले ली - यह दावा करते हुए कि वह मदद करना चाहता था - फिर बिना किसी निशान के गायब हो गया।
कोई कॉल नहीं। कोई संदेश नहीं। कुछ भी नहीं।
उसने हमारा साथ देने के बजाय भागकर हमें लूटना चुना।
इसलिए जब जूलिया आई, तो यह एक झटका था।
मुझे बिलकुल भी अंदाजा नहीं था कि वह वहां क्या कर रही थी। हम पहले बहुत करीब थे, लेकिन मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वह मुझसे मिलने के लिए हवाई जहाज में बैठकर दुनिया के आधे रास्ते की यात्रा करेगी।
वह शीशे के पीछे प्रकट हुई— उसकी आँखें मेरी आँखों पर टिकी हुई थीं—उसके चेहरे पर भावनाओं और दृढ़ संकल्प का मिश्रण था।
मैंने फोन उठाया। - "जूलिया...?" - "जन्मदिन की देर से बधाई हो, बेवकूफ।"
वह मुस्कुराई। एक सच्ची मुस्कान, उदास, चंचल, ईमानदार।
मैं जम गया। एक पल के लिए, मैं भूल गया कि मैं जेल में हूँ।
— “तुम यहाँ क्यों हो…?” मैंने फुसफुसाते हुए कहा।— “क्योंकि तुम इस सब से अकेले गुजरने के लायक नहीं हो।”
उसके शब्द सीने पर मुक्के की तरह लगे।
मैंने महीनों तक लोगों को एक-एक करके दुनिया से विदा होते देखा था।
मेरे साथी ने आगे बढ़ गया था। मेरे पिता ने मुझे धोखा दिया था। मेरी माँ अपनी तरफ से हर संभव कोशिश कर रही थी, लेकिन वह अकेले इस बोझ को नहीं उठा सकती थी।
और फिर जूलिया, ठीक मेरे सामने खड़ी थी।

— “मुझे लगा था कि तुम मुझे भूल गए हो।”— “तुम बेवकूफ हो।”
हमारी नजरें मिलीं।
उस गंदे जेल के शीशे के पीछे, यादें उमड़ पड़ीं—हाई स्कूल, साथ में छुप-छुप कर घूमना, एक-दूसरे को सब कुछ बताना, बिना कभी हद पार किए छेड़छाड़ करना।
वर्षों की दोस्ती। अलग रहने का समय। फिर से मिलने का समय।
और अब… यहाँ. इस जगह पर.
— “मैं अभी यहीं हूँ। और मैं वापस आऊँगा।”
उसके शब्द एक वादे की तरह लगे। बहुत समय बाद पहली बार मुझे सहारा महसूस हुआ।
उसने हर बात और कुछ भी नहीं के बारे में बात की, मुझे हंसाने की कोशिश की, पूछा कि मैं कैसा महसूस कर रहा हूँ।
मैंने संयम बनाए रखने की कोशिश की, इसे ज़ाहिर न होने देने की कोशिश की, लेकिन अंदर ही अंदर मैं पूरी तरह टूट चुका था।
— “तुम्हें मजबूत रहना होगा, ठीक है?” उसने मेरी ओर सीधे देखते हुए कहा। — “मैं कोशिश कर रही हूँ।”
उसने सिर हिलाया। फिर हल्के लहजे में बोली: “मैं तुम्हारे लिए कुछ सामान लाई हूँ। अगली बार तुम्हें और क्या चाहिए, बता देना।” “अगली बार?” “ज़रूर वापस आऊँगी।”
वह फिर मुस्कुराई। इस बार मैंने नीचे देखा। मुझे अब लोगों द्वारा वादे निभाने की आदत नहीं रही थी।
समय बहुत जल्दी बीत गया। जब गार्ड ने मुलाकात खत्म होने की घोषणा की, तो मैं फोन रखना नहीं चाहता था।
— “ओह, वैसे…” उसने रिसीवर नीचे रखने से ठीक पहले कहा, “कल मिलते हैं।” मैंने ऊपर देखा।
— “कल?”
— “हाँ। क्या तुमने नहीं सुना? तुम्हारी सुनवाई 16 दिसंबर को स्थगित कर दी गई है।”

मैं वहीं बैठा, इसे समझने की कोशिश कर रहा था। - "आपको यह कैसे पता चला?" - "दूतावास ने मुझे बताया। और चूंकि मैं आपसे मिलना चाहता था, इसलिए मैंने यह व्यवस्था कर ली।"
मैंने लड़खड़ाती हुई हंसी हंसी। - "तो आप इतनी दूर आए, यह सब योजना बनाई... सिर्फ आज और कल यहाँ रहने के लिए?" - "बिल्कुल।"
वह फिर मुस्कुराई और मेरे सीने में एक गर्म सी सनसनी दौड़ गई।
— “धन्यवाद,” मैंने गहरी भावनाओं से अभिभूत होकर धीरे से कहा।— “मुझसे यह उम्मीद मत रखना कि मैं तुम्हें छोड़ दूंगी।”
उसने अपना हाथ गिलास पर रखा। मैं हिचकिचाया, फिर मैंने अपना हाथ उसके हाथ पर रख दिया।
— “हिम्मत रखो, ठीक है?” — “ठीक है।”
और फिर वो चली गई। और मैं अभी भी वहीं था, हाथ में फोन लिए, मेरी आँखें उस खाली गिलास पर टिकी हुई थीं।
लेकिन वह वापस आ रही थी।
जूलिया कोई अजनबी नहीं थी जो अचानक मेरे जीवन में आ गई हो। वह हमेशा से ही पृष्ठभूमि में मौजूद थी। वर्षों से बुना हुआ एक सूक्ष्म धागा, किशोरावस्था, महाद्वीपों और लंबे मौन को समेटे हुए।
हम 2005 में हाई स्कूल में मिले थे। उस समय हम एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकते थे। वह और मैं... यह स्वाभाविक था। हमारे बीच कुछ बिजली सी दौड़ती थी, एक ऐसी दोस्ती जिसमें अस्पष्टता थी, एक शांत आकर्षण जिसे कभी पूरी तरह से स्वीकार नहीं किया गया, और छेड़छाड़ और नज़दीकी का एक निरंतर खेल।
वह बिना मेरे कुछ कहे ही सब कुछ समझ जाती थी, और मुझे वह अनकहा जुड़ाव बहुत पसंद था, जिस तरह से वह उन बातों को समझ लेती थी जिन्हें मैं व्यक्त करना भी नहीं जानता था।
हम साथ-साथ बड़े हुए। साथ-साथ वयस्क हुए। लेकिन जीवन, अपने सभी उतार-चढ़ावों और विकल्पों के साथ, अक्सर हमें अलग कर देता था।
मैं घूमने-फिरने, जगह-जगह काम करने और नए अनुभव तलाशने में निकल गया, जबकि उसने अपना अलग रास्ता बनाया।

फिर भी, चाहे हम कितनी भी दूर हो गए हों, हम हमेशा संपर्क में रहे। हर मिलन सहज लगता था, मानो हम कभी अलग हुए ही न हों। वही सहजता। वही बंधन। वही गहरा, अटूट विश्वास।
जब मैंने 2014 में थाईलैंड में स्थायी रूप से बसने का फैसला किया, तो जूलिया उन कुछ लोगों में से एक थी जिन्होंने मुझे जज नहीं किया। वह समझती थी कि मुझे क्यों जाना पड़ा। वह मेरी आजादी की भूख, कहीं और जाने की मेरी तड़प को जानती थी।
उसने मुझे कभी रोकने की कोशिश नहीं की, और शायद यही वजह थी कि मैं बार-बार उसके पास लौटता रहा।
विदेश चले जाने के बाद भी हमारा रिश्ता कभी टूटा नहीं। कभी-कभी हफ़्तों या महीनों तक कोई बात नहीं होती थी, फिर एक संदेश, एक कॉल, एक साझा याद। और ऐसा लगता था जैसे कुछ बदला ही नहीं है।
उसके साथ ऐसा ही था। एक शांत लेकिन मजबूत रिश्ता। कुछ भी जबरदस्ती नहीं।
कुछ भी टूटा नहीं।
और फिर भी, जब मैं नरक में गिर गया, जब मैं उस जेल में बंद हो गया, तो मैंने कभी उम्मीद नहीं की थी कि मैं उसे फिर से देख पाऊंगा।
मैंने कभी नहीं सोचा था कि वह ऐसा कुछ करेगी जो बहुत से लोग नहीं करते। कि वह हवाई जहाज में सवार होकर, पूरी दुनिया पार करके, सिर्फ मेरे लिए ताजी हवा का झोंका लेकर आएगी, उस पल में उसकी मौजूदगी सोने से भी ज्यादा कीमती थी।
और फिर भी—उसने ऐसा किया। बिना किसी चेतावनी के। बदले में कुछ भी मांगे बिना।
और तभी मुझे समझ आया।
जूलिया ने कभी मुझे नहीं छोड़ा।
यहां तक कि जब मुझमें किसी भी चीज पर विश्वास करने की ताकत नहीं बची थी।
उस सुबह जागना सामान्य से अधिक कठिन था। बिल्डिंग 4 की हल्की फ्लोरोसेंट रोशनी घंटों से चमक रही थी, लेकिन मैं मुश्किल से ही सो पाया था।
पंखा पूरी रात ज़ोर-ज़ोर से चलता रहा, जिससे मेरी नसें तनावग्रस्त हो गईं।
छात्रावास में गर्मी और उमस दम घोंटने वाली थी। हर हरकत मुझे कठोर फर्श और उन पतले कंबलों की याद दिलाती थी जिन पर हमें सोने के लिए मजबूर किया गया था।

लेकिन आज सुबह कुछ अलग महसूस हो रहा था। मुझे पता था कि मैं अदालत जा रहा हूँ। और इस बार जूलिया भी वहाँ होगी।
इस विचार से मेरे सीने में थोड़ी गर्माहट आई, लेकिन मेरे पेट में उठ रही बेचैनी दूर नहीं हुई।
सुबह 5 बजे, पहरेदार सलाखों पर जोर-जोर से पीटने लगे और हाजिरी लगाने लगे।
— “न्यायालय में! मार्को, लियो, ऊक पाई!”
मेरा नाम भारी हवा में गूंज उठा, और मार्को भी मेरे साथ ही खड़ा हो गया।
हमारा न्याय होने वाला था।
टोनी भी तैयार था। हम जेल के स्वागत कक्ष में मिले।
मुझे पता था कि वह चिंतित था, लेकिन अब वह कोई भावना नहीं दिखाता था। हमारा रिश्ता टूट चुका था, और मैंने उसे बिल्डिंग 4 में हमारे साथ शामिल होने के लिए आमंत्रित करने के बारे में सोचा भी नहीं था।
उसने अपना फैसला कर लिया था। वह अकेले ही अपना नाम साफ़ करना चाहता था। वह हमें भूल जाना चाहता था।
प्रस्थान का समय निकट था। कुछ मिनट बाद, वे हमें कोठरी से बाहर ले गए, पहले ही कदम से जंजीरों में जकड़े हुए।
लोहे की जंजीरें भारी और घिसी हुई थीं। जंग और समय के साथ खुरदरी हो गई थीं। हर कदम पर वे मेरे टखनों को चीर रही थीं।
हम जिस ओर जा रहे थे—हम पुरुष नहीं थे। हम अपराधी थे।
थाई न्याय की नजरों में अपराधी, और हमारे जंजीरों में जकड़े शरीर इस बात की निरंतर याद दिलाते थे।
बस हमेशा की तरह ही थी। एक गंदी, चिपचिपी धातु की वैन, जिसकी हर सतह पर कैदियों की दुर्गंध चिपकी हुई थी।
हम आमने-सामने बैठे थे, मवेशियों की तरह ठसाठस भरे हुए थे, सड़क के हर झटके के साथ हमारी जंजीरें खड़खड़ा रही थीं।
कोई नहीं बोला। कुछ ने अपनी आँखें बंद कर लीं। कुछ अन्य लोग विचारों में खोए हुए फर्श को घूर रहे थे।
मैंने मार्को को अपने सामने बैठे देखा, उसका चेहरा पीला पड़ गया था, पैरों में जंजीरें पड़ी थीं। उसने आह भरी— “चाहे हम कितने भी अभ्यस्त हो जाएं, हर तबादला एक यातना है…”

मैंने सिर हिलाया, हिम्मत दिखाने की कोशिश करते हुए, जबकि मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था।
अदालत जाना अनिश्चितता का प्रतीक था, एक ऐसा मुकदमा जहां हम सिर्फ संख्या बनकर रह जाते।
मैं बस उसी के बारे में सोच रहा था।
जूलिया।
मुझे आश्चर्य हुआ कि वह मुझे कैसे देखेगी—क्या उसे आने का पछतावा होगा, क्या वह मुझे अभी भी उसी आदमी के रूप में देखेगी जो मैं कभी था।
जब हम अदालत पहुंचे, तो द्वार धातु की चरमराहट के साथ खुल गए।
गार्डों ने हमें नीचे उतरने को कहा, और हम इमारत के पीछे एक छोटे से बाड़ वाले आंगन में इंतजार करने लगे, जहाँ अन्य कैदी कतार में खड़े थे।
प्रतीक्षा अंतहीन थी। हमारे पहुंचने के क्षण से ही, मैं अपनी त्वचा के नीचे तनाव को रेंगते हुए महसूस कर सकता था।
धूल, पसीने की गंध, सामूहिक निराशा की भारी हवा... यह सब मुझ पर भारी पड़ रहा था।
लेकिन इस बार कुछ अलग था।
जब उन्होंने हमें आगंतुक क्षेत्र में बुलाया, तो एक गार्ड ने हमें एक तरफ खींच लिया।
— “कमरे में आओ। लियो, मार्को।”
मैंने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। मार्को ने भी उतनी ही हैरानी से मेरी तरफ देखा।
— “जूलिया,” मैंने फुसफुसाते हुए कहा। “यह वही है।”
जूलिया ने वीआईपी कमरे का भुगतान किया था। न केवल मेरे लिए, बल्कि मार्को के लिए भी, ताकि वह अपने साथी को देख सके, जो अब इस विशेषाधिकार का खर्च वहन नहीं कर सकता था।
टोनी भी वीआईपी कमरे में था, उसकी पत्नी की बदौलत जो उससे मिलने आई थी।
लेकिन हमने एक-दूसरे की तरफ देखा तक नहीं।
हमारे रिश्ते में दूरियां आ गई थीं। जब भी हम पुस्तकालय या अस्पताल में मिलते, तो कुछ शब्द बोल लेते थे। बस थोड़ी-बहुत बातचीत। मौसम की जानकारी।
इससे ज्यादा कुछ नहीं।

जूलिया मुझे देख रही थी।
— “तुम्हारा वजन कम हो गया है…” उसने धीरे से कहा। मैंने कंधे उचका दिए। — “या शायद मैं बदल ही गया हूँ।”
वह नीचे देखने लगी और अपनी कॉफी के चम्मच से खेलने लगी। "तुम इससे उबर जाओगे, है ना?"
मैंने उसका हाथ अपने हाथ में लिया।— “मैं हूँ। क्योंकि तुम यहाँ हो।” उसकी आँखों में पानी भर आया, लेकिन वह रोई नहीं।
इसके बजाय, उसने मेरा हाथ और कसकर पकड़ लिया।
हमने काफी देर तक बात की, जेल के समय से चुराए गए हर सेकंड का भरपूर फायदा उठाते हुए।
मार्को अपने साथी के साथ फिर से मुस्कुरा रहा था।
यहां तक कि टोनी को भी - दूरी के बावजूद - अपनी पत्नी की बाहों में कुछ शांति मिली।
यह अराजकता के बीच एक रुका हुआ क्षण था।
लेकिन बहुत छोटा है।
उस पल मैंने जो महसूस किया, उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। बहुत सारा समय बर्बाद हो गया। इन दीवारों ने कई महीने चुरा लिए।
और फिर भी, हम वहाँ थे। आमने-सामने। मानो हमारा एक-दूसरे से फिर से मिलना तय था, यहाँ तक कि यहाँ भी।
गार्ड ने दूसरी तरफ देखा, और पागलपन के एक क्षण में, मैं उसकी ओर झुक गया।
हमारे होंठ आपस में छू गए।
एक वर्जित चुंबन।
नरक से चुराया गया एक चुंबन।
वो पल बहुत छोटा था। और जल्द ही, उन्होंने हमें अलग कर दिया। हकीकत फिर से हमारे सामने आ गिरी।
मैंने जूलिया को आखिरी बार गले लगाया, उसके माथे पर धीरे से चुंबन किया और फुसफुसाते हुए कहा: “बाद में मिलते हैं, ठीक है?”
उसने सिर हिलाया, लेकिन उसकी आँखों में चिंता झलक रही थी।
हम भारी मन से कमरे से बाहर निकले, अपने हाथों में जंजीरें घसीटते हुए। अब अदालत कक्ष की सीढ़ियाँ चढ़ने का समय था।

अदालत की सीढ़ियाँ खड़ी थीं, और हर कदम पीड़ादायक लग रहा था—हर हरकत के साथ जंजीरें हमारी त्वचा में चुभ रही थीं।
जब हम जज के पास पहुंचे तो माहौल एकदम ठंडा हो गया।
इस बार मेरे पास बिल्कुल भी पैसा नहीं बचा था। एक के बाद एक वकीलों द्वारा किए गए सभी धोखे, खोखले वादों पर हमने जो पैसा लुटाया था... इसने मेरा और मेरे परिवार का सब कुछ छीन लिया था।
केवल एक ही विकल्प बचा था: अदालत द्वारा नियुक्त वकील।
मुझे सबसे बुरे की आशंका थी।
कोई कम वेतन पाने वाला और उदासीन व्यक्ति, बस एक ऊबे हुए अभिनेता की तरह अपनी पंक्तियाँ दोहरा रहा है।
लेकिन मैं गलत था।
यह आदमी—उम्रदराज, सादे कपड़े पहने हुए—बाकी सभी से कहीं ज्यादा डटकर लड़ा। उसने हमारा पक्ष रखने की कोशिश की। उसने समझाने की कोशिश की कि हम अपराधी नहीं हैं, कि जेल की दीवारों के बाहर भी हमारी जिंदगी है, नौकरियां हैं, सपने हैं।
उन्होंने जेल में हमारे अच्छे आचरण, हमारे साफ रिकॉर्ड और उस व्यवस्था के अन्याय के बारे में बात की जिसने हमें कभी वास्तविक मौका नहीं दिया। लेकिन यह बेकार था।
हमारे अनुवादक, फ्रेंको ने अदालत में हुई बातचीत को फ्रेंच में बस बुदबुदाते हुए सुना, उनकी आवाज सपाट और उदासीन थी।
और जज ने… उन्होंने हमारी तरफ देखा तक नहीं।
एक ठंडा, उदासीन आदमी जिसके पास स्पष्ट रूप से तीन दुबले-पतले, जंजीरों में जकड़े विदेशियों पर दस मिनट बर्बाद करने से बेहतर काम थे, जो जेल और निराशा से भरे हुए थे।
उसके लिए हम कीड़े-मकोड़े थे।
फाइलों के ढेर पर बस केस नंबर।
उसने हमारा खोला, उस पर सरसरी नज़र डाली, अभियोक्ता को आरोप पढ़ते हुए सुना — और बस इतना ही था।
हम इंसान नहीं थे। हम कागजी कार्रवाई थे।

हम चुपचाप इंतजार करते रहे। वकील ने कोई दबाव नहीं डाला। किसी ने हमसे कुछ नहीं पूछा।
फिर अंततः न्यायाधीश ने बोलना शुरू किया।
जब उन्होंने सजा सुनाने की तारीख, 14 फरवरी की घोषणा की, तो उन्होंने इसे एक जम्हाई की तरह लिया, मानो वे स्पष्ट बात कह रहे हों, दोपहर के भोजन के लिए जाने से पहले एक मात्र औपचारिकता।
14 फरवरी, वैलेंटाइन डे।
प्रेम का दिन। न्याय का दिन।
यह विडंबना बेहद क्रूर थी।
बिना कुछ और कहे, हथौड़ा ज़ोर से नीचे गिरा, और हमें वापस हमारे पिंजरों में भेज दिया गया।
जेल लौटने से पहले हमें अंतिम मोहलत दी गई थी।
उन्होंने हमें वीआईपी कमरे में वापस जाने की अनुमति दी, जहाँ जूलिया ने - पहले की तरह ही - हमारे प्रवेश के लिए फिर से भुगतान किया था।
जैसे ही हमने दरवाजे से अंदर कदम रखा, सुनवाई का तनाव तुरंत दूर हो गया।
जूलिया वहाँ मुस्कुरा रही थी, उसकी आँखों में चिंता के बावजूद चमक थी।
मार्को का अपनी साथी से पुनर्मिलन हुआ, जिसने रोते हुए उसे गले लगा लिया।
हम छोटी सी मेज पर बैठ गए, और थोड़ी देर के लिए, हम बाकी सब कुछ भूल गए।
हमने खाना खाया। हमने अपना खाना आपस में बाँटा, एक-दूसरे की मिठाइयों का स्वाद ऐसे चखा जैसे स्कूली बच्चे नाश्ते का आनंद लेते हैं।
जूलिया मेरे लिए चॉकलेट लाई थी। असली चॉकलेट।
मुझे नहीं लगता कि मैंने अपने जीवन में कभी चॉकलेट के एक टुकड़े का इतना आनंद लिया होगा।
मैंने एक टुकड़ा अपने मुंह में डाला, चीनी और कोको को धीरे-धीरे अपनी जीभ पर पिघलने दिया, आनंद में अपनी आँखें बंद कर लीं।
— “हे भगवान… यह तो लगभग चरम सुख से भी बेहतर है,” मैंने अतिशयोक्ति करते हुए आह भरी।
जूलिया जोर से हंस पड़ी। मार्को भी हंस पड़ा।
— "मुझे उम्मीद है कि आप मेरी तुलना चॉकलेट से नहीं कर रहे हैं," उसने मुझे चिढ़ाते हुए शरारती अंदाज़ में देखा।

— “चिंता मत करो, कोई तुलना ही नहीं है,” मैंने शरारती मुस्कान के साथ जवाब दिया।
यह हल्का था। प्राकृतिक। लगभग सामान्य।
हम हँसे। हमने बातें कीं। हमने ऐसे खाया जैसे बाहरी दुनिया अभी भी मौजूद हो।
लेकिन फिर वो समय आ गया।
जाने से पहले, हमने अपने बचे हुए भोजन को अन्य कैदियों के साथ साझा किया, जो प्रतीक्षालय में इंतजार कर रहे थे, जैसे कि वध के लिए ले जाए जा रहे जानवर एक साथ ठूंस दिए गए हों।
दर्जनों हाथों ने आगे बढ़कर हमारे द्वारा दिए गए ब्रेड, कुकीज़ और स्नैक्स को सच्ची कृतज्ञता के साथ ग्रहण किया।
उनकी मुस्कान सच्ची थी।
और हम जिन भी मुश्किलों से गुजर रहे थे, उन सबके बावजूद, हमें उन्हें शांति का एक पल देने में खुशी हुई।
जेल वापस जाते समय बस में हमारी मुलाकात एक नए कैदी से हुई।
टायलर नाम का एक 21 वर्षीय अमेरिकी युवक।
वह युवा लग रहा था, खोया हुआ सा, उसका हाथ प्लास्टर में था। वह लकवाग्रस्त सा लग रहा था—आगे क्या होगा, इससे भयभीत।
दूसरी ओर, हम अभी भी थोड़े उत्साह में थे। अपने प्रियजनों को देखने की खुशी से उत्साहित थे, आश्वस्त थे कि हम फरवरी में मुक्त हो जाएंगे।
हमने उसे सांत्वना देने की कोशिश की।
— “चिंता मत करो, तुम ठीक हो जाओगे।”
— “थाई गार्ड उतने बुरे नहीं हैं,” मार्को ने आगे कहा।
टायलर के हाथ पसीने से भीगे हुए थे। उसने भय से भरी आँखों से हमारी ओर देखा।
— “मैं… मुझे तो पता भी नहीं कि मैं यहाँ कैसे आ गया…” उसने फुसफुसाते हुए कहा।
— “तुम किसलिए अंदर थे?” मैंने नरमी से पूछा।
वह हिचकिचाया। उसने मुश्किल से अपनी बात कही। फिर: "हत्या।"
हमने एक दूसरे की ओर देखा।

— “लेकिन मैंने कुछ नहीं किया,” उन्होंने तुरंत कहा। “मैं बस… गलत समय पर गलत जगह पर था।”
हमने एक शब्द भी नहीं कहा। हमने बस सिर हिलाया।
क्योंकि हम जानते थे कि वह कैसा लगता है।
अन्याय। यादृच्छिकता। एक ऐसी व्यवस्था जो अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को कुचल देती है, बिना यह देखे कि वह किसे कुचल रही है।
टायलर को बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि उसका क्या इंतजार कर रहा है। लेकिन हमें पता था।
हमने उससे बात की, उसका ध्यान भटकाने की कोशिश की, जेल के बारे में कहानियां सुनाईं—यहां तक कि मजेदार कहानियां भी—ताकि वह वहां पहुंचने से पहले ही बिखर न जाए।
वह ध्यान से सुनता रहा, घबराकर सिर हिलाता रहा, किसी भी छोटी सी राहत को पाने के लिए बेताब था।
हमने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की।
लेकिन हम सब जानते थे कि उसके बुरे सपने अभी शुरू ही हुए थे।
जब बस जेल के द्वार के सामने रुकी, तो वास्तविकता ने हमें पेट में एक जोरदार मुक्के की तरह झटका दिया। सपना खत्म हो गया था।
तेजाबी गंध, जंजीरों की खनक, कैदियों की चीखें, सब कुछ वहीं था। हम बस से उतरे, वापस अपने पिंजरों में, अपनी कोठरियों में, अपने दैनिक नरक में।
मैंने आखिरी बार टायलर पर नजर डाली, जिसका चेहरा पीला पड़ रहा था। “नरक में तुम्हारा स्वागत है, बच्चे,” मार्को ने आह भरते हुए बुदबुदाया।
और फिर हमारे पीछे दरवाजे जोर से बंद हो गए।
फैसला आने में अभी दो महीने और बाकी हैं। हमें यह जानने में अभी दो महीने और लगेंगे कि क्या हम आखिरकार इस बुरे सपने से जाग पाएंगे।
वापस कोठरी में आकर, मेरा मन शाही क्षमादान के बारे में सीखी हुई बातों पर अटक गया। हर कैदी सजा में कमी की उम्मीद कर सकता था, लेकिन यह सब राजा की सद्भावना पर निर्भर करता था। अधिकांश कैदी इस उम्मीद से जुड़े रहते थे, जो आमतौर पर विशेष अवसरों पर दी जाती थी: जैसे किसी शाही व्यक्ति की मृत्यु, जन्म, राज्याभिषेक।
— “अधिकांश अपराधों के लिए, वे आपकी सज़ा आधी कर देते हैं,” कंबोडियाई कैदी तेंग ने बताया। “लेकिन बलात्कारियों या मादक पदार्थों की तस्करी

करने वालों के लिए, यह केवल एक-छठा हिस्सा होता है। लेकिन हम—हमारा लक्ष्य आधी सज़ा कम करवाना है।”
इसके लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए भी, आपको धीरे-धीरे ऊपर उठना पड़ता था — “खराब” से “औसत,” फिर “अच्छा,” “बहुत अच्छा,” और इसी तरह आगे बढ़ते जाना पड़ता था। इसका मतलब था कि आपको कोई गलती नहीं करनी थी, परीक्षा पास करनी थी और हर छह महीने में प्रमाण पत्र प्राप्त करने थे।
परीक्षाओं और शैक्षिक पाठ्यक्रमों की एक आंतरिक प्रणाली, जिनमें से प्रत्येक आपको अपने रिकॉर्ड को बेहतर बनाने के लिए अंक प्रदान करती है। एक बार जब आप "उत्कृष्ट" स्थिति पर पहुँच जाते थे, तो हर शाही क्षमादान का मतलब होता था कि आपकी सजा आधी हो सकती है।
यहां तक कि अगर आपको केवल "सामान्य" या "अच्छा" दर्जा दिया गया था, तब भी आपको कम कटौती मिलेगी।
लेकिन आपकी रिहाई से पहले क्षमादान मिलना आवश्यक था।
तो हमने इंतज़ार किया। फिर से। और फिर से। हमेशा।
उम्मीद है कि अगली मुलाकात ही वो होगी।
हम अपनी दिनचर्या में वापस लौट आए, लेकिन इस बार हमें सचमुच विश्वास था कि फरवरी हमारे बुरे सपने का अंत कर देगा।
लगभग पूरा एक साल जेल में।
सभी संकेत 9 महीने से लेकर शायद 15 महीने तक की सजा की ओर इशारा कर रहे थे।
अन्य कैदियों ने भी हमें यही बताया। कानून की किताबों ने हमें उम्मीद दी।
यहां तक कि टोर्टू - हमारे जेल के वकील - ने भी थाई कानूनी ग्रंथों का विस्तार से अध्ययन करने के बाद इसकी पुष्टि की थी।
हम बाहर निकलने वाले थे। उम्मीद वापस आ गई थी।
जूलिया ने थाईलैंड में अपना प्रवास दो सप्ताह और बढ़ाने का फैसला किया था।
उसने फ्रांसीसी दूतावास के माध्यम से एक विशेष दस्तावेज़ प्राप्त करने में कामयाबी हासिल की थी, जिससे उसे वकील से मिलने वाले कमरे में असीमित पहुँच मिल गई थी।
एक परम विलासिता।
इसका मतलब यह था कि हम घंटों एक साथ बिता सकते थे, बिना समय की कमी के दबाव के, जिससे हर मुलाकात समय के खिलाफ दौड़ में बदल जाती थी।
हमने हर बात पर चर्चा की। हमने बीते समय की भरपाई की। हमने योजनाएँ बनाईं।

मैंने उसे अपने दिनों के बारे में, अपने व्यायामों के बारे में, जेल की मज़ेदार कहानियों के बारे में बताया। और उसने मुझे बाहर की दुनिया के बारे में बताया, लोग मेरे बारे में पूछते थे, और वह सब कुछ जो मेरे यहाँ फँसे रहने के बावजूद आगे बढ़ रहा था।
हमने मेरी वापसी का सपना देखा, एक साथ एक सप्ताह की छुट्टी का, स्वतंत्रता के उन दिनों का जहाँ हम आखिरकार इस बुरे सपने को भूल सकें।
और जैसे-जैसे मैंने उसे उस भविष्य के बारे में बात करते सुना, मैं उस छवि से और भी मजबूती से चिपक गया, जैसे कोई जीवनरक्षक नाव हो।
जूलिया कमांडर मनून के माध्यम से मुझे कुछ उपहार भी भेजती थी। लेकिन इस बार हमें सावधान रहना होगा।
कमांडर जून—जो बिल्डिंग 4 का प्रभारी था—बहुत ही अधिकार जताने वाला और हर चीज़ पर नियंत्रण रखने वाला व्यक्ति था। अगर मैं उससे अनुमति लिए बिना बहुत कुछ अंदर ले आता, तो मामला बिगड़ सकता था।
इसलिए मुझे मामले को सुलझाने के लिए उसे थोड़ा सा भुगतान करना पड़ा, मार्सिले के हमारे दोस्तों की मदद से, वे इस तरह की व्यवस्थाओं को संभालने में माहिर थे।
थैलों के अंदर अधिकतर दवाइयाँ थीं। दर्द निवारक, एंटासिड, पेट की समस्याओं के लिए दवाइयाँ। भोजन की गुणवत्ता खराब होने के कारण, जो अक्सर सड़ा हुआ या संदिग्ध होता था, हमारे लिए खुद का इलाज करने के तरीके होना बेहद जरूरी हो गया था।
हमने अपना पिछला "घर" छोड़ने का फैसला कर लिया था। जिन थाई लोगों के साथ हम रह रहे थे, वे तो मुफ्तखोर निकले। हर दिन वे और ज़्यादा मांगते थे, और ज़्यादा सिगरेट, और ज़्यादा खाना। मानो हम पर उनका कोई एहसान हो। हम इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकते थे।
लेकिन किस्मत ने इस बार हमारा साथ दिया।
फ्रांसीसी दल ने अभी-अभी यार्ड में एक घर खरीदा था—जून द्वारा बेची गई कुछ निजी इकाइयों में से एक—और उन्होंने एक टीवी स्थापित किया था।
जेल में एक टीवी। एक सच्चा खजाना।
बेशक, इसमें लाइव चैनल नहीं दिखाए जाते थे, लेकिन एक यूएसबी स्टिक की मदद से वे फिल्में चुन सकते थे और हर शाम स्क्रीनिंग आयोजित कर सकते थे।

किसी को नहीं पता था कि उन्होंने उस जगह के लिए कितना भुगतान किया था, लेकिन एक बात स्पष्ट थी: उन्होंने कंजूसी नहीं की थी।
हमने इस अवसर का लाभ उठाया और बगल वाले घर में रहने चले गए, एक और घर में, इस बार एंटोनियो के साथ।
एंटोनियो—या टोनी—एक युवा ऑस्ट्रेलियाई था।
उसका अपराध? हत्या।
लेकिन कोई साधारण हत्या नहीं।
उसने जाल बिछाकर एक कुख्यात बाइकर गिरोह के नेता की हत्या कर दी थी। उसके आपराधिक अतीत और उस दुनिया में उसके संपर्कों ने उसे बहुत सारा पैसा मुहैया कराया था, जिसके परिणामस्वरूप उसे जेल में कुछ विशेष अधिकार प्राप्त हुए थे।
उनकी पत्नी से हाल ही में एक बेटी हुई थी। उनका परिवार भी उनसे नियमित रूप से मिलने के लिए थाईलैंड चला गया था।
हम बहुत जल्दी एक दूसरे के करीब आ गए।
हमारी तरह, वह भी अनिद्रा से पीड़ित था, और हम पूरी रातें बातें करते, सिगरेट पीते, पंखों की कान फाड़ देने वाली गड़गड़ाहट के बीच दुनिया को फिर से गढ़ने में बिताते थे।
वह टायलर के प्रति जुनूनी था, वह युवा अमेरिकी जिसे हम अदालत से वापस लाए थे।
क्यों? क्योंकि टायलर उसके मामले में शामिल था। हत्या के बाद वही एंटोनियो की कार को कंबोडियाई सीमा तक ले गया था। लेकिन वह जल्दी ही पकड़ा गया - और एंटोनियो के अनुसार, दबाव में आकर उसने पुलिस को बता दिया कि एंटोनियो कहाँ छिपा है।
तब से एंटोनियो उससे नफरत करता था। और टायलर, जो अब बिल्डिंग 6 में सुरक्षा में था, सबसे बुरे से बचने के लिए प्रार्थना कर रहा था।
मैंने एंटोनियो को शांत करने की पूरी कोशिश की, लेकिन मैं उसकी आंखों में देख सकता था कि उसका गुस्सा कहीं नहीं जा रहा था।
हमारे दिन प्रशिक्षण के इर्द-गिर्द ही व्यवस्थित थे। हम टोंग और बट, दो थाई बॉक्सिंग प्रशिक्षकों के साथ घनिष्ठ संबंध बना चुके थे।

टोंग वहां कई सालों से था। वह एक कमांडर के करीबी था जिसने उसे मुक्केबाजी का सामान अंदर लाने की अनुमति दी थी, जो अंदर एक दुर्लभ विलासिता थी।
हमने अस्थायी बैगों पर मुक्के मारे, दोस्ताना मुकाबलों में अभ्यास किया, और अपनी रिहाई की प्रतीक्षा करते हुए अपनी फिटनेस बनाए रखने की पूरी कोशिश की।
लेकिन पानी के लिए संघर्ष कभी रुका नहीं।
भवन 4 में पानी की आपूर्ति करने वाले पानी के ट्रकों के बावजूद, अत्यधिक गर्मी और सूखे का मतलब था कि कभी-कभी, भुगतान करने के बाद भी कुछ नहीं मिलता था।
नलों पर लंबी-लंबी कतारें लगी रहती थीं। हम जब भी संभव होता, खुद को धोने की कोशिश करते थे, लेकिन इसकी कोई गारंटी नहीं थी।
तो कुछ दिनों हम बिल्डिंग 3 में जाते थे, पानी के लिए नहीं, बल्कि ईसाई मिशनरियों को सुनने के लिए।
वे हमारे साथ प्रार्थना करने आए थे, कुछ खाना बांटने आए थे, और भले ही हम संशय में थे, फिर भी इसमें हमें सुकून मिला।
जूलिया के जाने के बाद एक बहुत बड़ा खालीपन छा गया। मुझे इसकी उम्मीद थी— लेकिन इससे झटका कम नहीं हुआ।
वह चली गई, यह वादा छोड़कर कि वह फरवरी में मेरी सजा की सुनवाई के लिए वापस आएगी।
दो महीने।
दो महीने तक टिके रहना पड़ा। यह एक ही समय में करीब और असहनीय रूप से दूर महसूस हुआ।
मैं अपनी कोठरी में लौटा, अपना सामान नीचे रखा, और कठोर फर्श पर लेट गया, मेरी आँखें समय और नमी से पीली पड़ चुकी छत पर टिकी हुई थीं।
मेरे बगल में बैठा एंटोनियो एक घड़ीसाज के धैर्य के साथ सिगरेट बना रहा था।
— “तुम ठीक हो भाई?” उसने बिना ऊपर देखे पूछा।— “हाँ... मतलब... मैं ठीक हो जाऊँगा।”— “तुम कुछ खोए-खोए से लग रहे हो।”— “जूलिया चली गई है...”
उसने धीरे से सिर हिलाया, एक लंबा कश लिया और फिर साँस छोड़ी। “मैं समझता हूँ, यार। शुरुआत में मेरी पत्नी के साथ भी ऐसा ही हुआ था। लेकिन जानते हो क्या? अच्छा हुआ कि वो आई। कम से कम तुम्हारे पास वो तो था।”

मैंने कंधे उचका दिए। वह सही था। जूलिया मेरे लिए ताज़ी हवा के झोंके की तरह थी। इस बात का सबूत कि कोई तो है जो अब भी मेरी परवाह करता है। एंटोनियो ने अपनी सिगरेट बिस्तर के किनारे पर रखी और मेरी ओर झुक गया।
— “सुनो, अब तुम हिम्मत नहीं हार सकते। फरवरी तेजी से आ रहा है। अगर तुम फिट नहीं होगे, तो यह और भी लंबा खिंच जाएगा।”
उसके बात करने का एक खास तरीका था। कुछ हद तक सख्त मिजाज, कुछ हद तक बड़े भाई जैसा।
हत्यारे के रूप में अपने अतीत के बावजूद, एंटोनियो में कुछ अजीब तरह की कोमलता थी। एक आकर्षक दोहरापन, क्रूरता के साथ-साथ वफादारी की गहरी भावना। — “चलो, अभ्यास करते हैं। इससे तुम्हारा दिमाग शांत हो जाएगा।”
मैंने आह भरी, लेकिन उठ गया। वह सही था। जितना अधिक समय मैं लेटा रहा, उतना ही मेरा मन उदासी में डूबता चला गया।
हम अपने दो थाई प्रशिक्षकों, टोंग और बट से मिले। वे वेट एरिया के पास हमारा इंतजार कर रहे थे, जो स्टील और कंक्रीट से बनी अस्थायी मशीनों के साथ थोड़ा अधिक खुला स्थान था।
— “आज सहनशक्ति का दिन है,” बट ने एक शरारती मुस्कान के साथ घोषणा की।— “बिल्कुल सही,” एंटोनियो ने धीमी आवाज़ में कहा। “मुझे इसकी ज़रूरत पड़ेगी।”
एंटोनियो सिर्फ समय नहीं बिता रहा था, वह तैयारी कर रहा था। उसकी आँखों में हमेशा दमित क्रोध की आग जलती रहती थी, और मैं जानता था कि क्यों।
टायलर।
— “क्या वह अभी भी बिल्डिंग 6 में है?” मैंने वार्म-अप करते हुए पूछा। — “हाँ… अभी के लिए।”
एंटोनियो ने बैग पर जरूरत से ज्यादा जोर से मुक्का मारा, मानो वह उसकी जगह टायलर की कल्पना कर रहा हो।
— “तुम क्या सोचते हो?” उसने पूछा।— “किस बारे में?”— “उसने जो किया उसके बारे में।”— “सच कहूँ तो?”— “मुझे लगता है कि वह बस एक डरा हुआ बच्चा है जो घबरा गया।”— “एक डरा हुआ बच्चा जिसने मुझे धोखा दिया।”
उसने अपने दस्ताने जमीन पर फेंक दिए और एक कंक्रीट के ब्लॉक पर बैठ गया, अपने माथे से पसीना पोंछते हुए।

— “ऐसा नहीं है कि मैं बदला लेना चाहता हूँ, तुम्हें पता है… लेकिन धिक्कार है, वह बस चुप रह सकता था।”
— “क्या आपको लगता है कि वह दबाव में टिक पाता?”
उन्होंने तुरंत जवाब नहीं दिया।
— “मुझे नहीं पता,” उसने अंत में आह भरी। “शायद नहीं।”
एंटोनियो नफरत से भरा हुआ था, लेकिन वह बेवकूफ नहीं था। वह जानता था कि टायलर सिर्फ एक बहकावे में आने वाला बच्चा है। लेकिन वह उससे नफरत करना बंद नहीं कर सका। यही उसका बोझ था।
जेल में रातें बहुत लंबी होती थीं। विशाल पंखे की गर्जना अक्सर नींद को असंभव बना देती थी, और लगातार पड़ने वाली तेज रोशनी हमें जकड़ लेती थी। कोठरियाँ कभी पूरी तरह से अंधेरी नहीं होती थीं। आपको इसकी आदत डालनी पड़ती थी।
लेकिन वो रातें बातचीत के पल भी थीं, साझा मौन के पल, जहाँ हमने बहुत गहराई में न डूबने की कोशिश की।
— “एंटोनियो, तुम्हें थाईलैंड कैसा लगा?” मैंने एक रात शौचालयों के पास सिगरेट पीते हुए पूछा। — “मैं यहाँ मूल रूप से बॉक्सिंग के लिए आया था, इससे पहले कि सब कुछ बिगड़ जाए।”
उसने एक कश लिया और छत की ओर देखा।
— “मुझे यहाँ की आज़ादी बहुत पसंद आई। अराजकता, गर्मी, खाना… लेकिन सबसे ज़्यादा, लड़ाई-झगड़े।”
मैं मुस्कुराया। यह बिल्कुल उसकी तरह लग रहा था।
— “आपका क्या?” — “मैं यहाँ काम के लिए आया हूँ। और… बाकी तो आप जानते ही हैं।” — “हाँ…”
सन्नाटा छा गया। फिर, लगभग मजाक में, उन्होंने कहा: "हमारे पास अपने बच्चों को सुनाने के लिए कहानियां होंगी, है ना?"
मैं जोर से हंस पड़ा।— “अगर कभी मेरे बच्चे हुए तो, हां।”
हम भविष्य के बारे में अक्सर बात नहीं करते थे। लेकिन वह एक पंक्ति—जो इतनी लापरवाही से कही गई थी—मेरे मन में बस गई।

धीरे-धीरे, बिल्डिंग 4 में बदलाव आ रहा था। नियम और भी सख्त होते जा रहे थे।
— “अब हम साले सैनिक हैं,” एंटोनियो ने एक दिन बड़बड़ाते हुए कहा, जब उसने एक कैदी को फर्श पर सिगरेट का टुकड़ा छोड़ने के लिए डांट खाते हुए देखा।
— “यह कोई जेल नहीं है, यह तो एक तरह का प्रशिक्षण शिविर है,” हमारी अंग्रेज दोस्त जेसी ने कहा।
— “क्लब में आपका स्वागत है,” मैंने हंसते हुए कहा।
जेस्सी हमारे काफी करीब आ गया था। वह हर दिन हमारे साथ ट्रेनिंग करता था, और हम एक असली टीम बनाने लगे थे।
फ्रांसीसी लोग अपने-अपने निजी यूनिटों में आराम से बसे हुए थे। लेकिन हमने अपना संतुलन कहीं और पा लिया था।
हम अपने दिन प्रशिक्षण में बिताते थे, अपनी शामें बातें करने में, और अपनी रातें अनिद्रा से जूझने में।
समय बीतता गया। धीरे-धीरे।
लेकिन फरवरी आ रहा था। और इसके साथ ही, अज्ञात का शांत, कुंठित भय भी।

अध्याय 9: शब्दों का भार

14 फरवरी। सजा सुनाने का दिन।
हम हमेशा की तरह भोर से पहले जाग गए, लेकिन इस बार हमारे मन में भय नहीं, बल्कि उत्साह था। हमें पूरा यकीन था कि आज इस बुरे सपने का अंत होगा। यही वह दिन था जब हमें अपना जीवन वापस मिलेगा, यही वह दिन था जब यह बुरा सपना आखिरकार खत्म हो जाएगा। हमने सब कुछ योजना बना ली थी। उसी शाम, हमने खुद को अपनी रिहाई का जश्न मनाते हुए कल्पना की।
लेकिन हमारे मार्सिले के दोस्त कहीं ज्यादा संशयवादी थे।
“ज़्यादा उम्मीदें मत रखो,” अब्देल ने सिगरेट का लंबा कश लेते हुए चेतावनी दी। “तुम थाईलैंड में हो, यार,” स्वान ने आगे कहा। “मेरा यकीन मानो, हमने बहुत कुछ देखा है… यहाँ कुछ भी पक्का नहीं होता।”
मैंने बस हल्की सी संतुष्ट मुस्कान दी। जाहिर है, वे ईर्ष्यालु थे। उनकी सजा हमारी सजा से कहीं ज्यादा कड़ी थी। हमने ऐसा कुछ भी नहीं किया था जो उनके काम से मिलता-जुलता हो। इस बात का कोई कारण नहीं था कि यह सब ठीक न हो। हमारे कई प्रियजन यात्रा पर आए थे। जूलिया, बेशक। उनके चेहरे पर वह उज्ज्वल, आत्मविश्वास भरी मुस्कान थी जो हमेशा मेरे दिल को सुकून देती थी। मेरे साथी कैदियों की पत्नियां भी वहां थीं। टोनी की मां भी अपने बेटे का समर्थन करने के लिए हवाई जहाज से आई थीं।
मेरी अपनी माँ तो आ नहीं सकीं, लेकिन मुझे पता था कि वह दूसरी तरफ मेरा इंतजार कर रही थीं—फोन के पास तैयार बैठी थीं, फैसले की घोषणा होते ही मेरे फोन का इंतजार कर रही थीं।
महीनों में पहली बार, अदालत के पास पहुँचते ही मुझे कुछ अजीब सा एहसास हुआ।
एक शांति का एहसास। एक हल्कापन, मानो यह सिर्फ एक औपचारिकता हो।
लेकिन अंदर कदम रखते ही वह भावना गायब हो गई।
इस बार तो हमें वीआईपी कमरे में जाने का मौका भी नहीं मिला। हमें सीधे अदालत कक्ष में ले जाया गया।
और तभी मुझे पता चला कि कुछ गड़बड़ है।
कमरा खचाखच भरा हुआ था। थाई पत्रकार अपने कंधों पर कैमरे लटकाए खड़े थे।
क्यों? हमारे मामले में ऐसा क्या दिलचस्प था?

हमारे पीछे वाली बेंचों पर इतालवी अनुवादक फ्रेंको अपने चचेरे भाइयों के साथ आ गया था। वे दोनों हमारे ठीक पीछे बैठ गए और काफी उत्साहित दिख रहे थे।
"उन्होंने इससे पहले कभी थाई सजा सुनाने का कोई तरीका नहीं देखा है," फ्रेंको ने ऐसे समझाया जैसे वह किसी सांस्कृतिक आकर्षण के बारे में बात कर रहा हो।
यह बेहद अपमानजनक था। वे हमारे सिर के ठीक पीछे जोर-जोर से इतालवी भाषा में बात कर रहे थे, हंस रहे थे और ऐसे टिप्पणियां कर रहे थे जैसे वे किसी शो में सबसे आगे की पंक्ति में बैठे हों।
मैंने अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं। इसमें कुछ भी मनोरंजक नहीं था।
लेकिन मैं चुप रहा। हमें इससे भी बड़ी चीजों की चिंता करनी थी।
जूलिया मेरे पीछे बैठी थी, अटूट आत्मविश्वास के साथ मेरा हाथ पकड़े हुए।
मार्को अपनी साथी पर चोरी-छिपे नज़रें गड़ाए बैठा था। टोनी थोड़ी दूर पर, मूर्ति की तरह अकड़ा हुआ बैठा था।
जज के प्रवेश करते ही कमरे में गहरी खामोशी छा गई।
उन्होंने पढ़ना शुरू किया। थाई भाषा में।
मैंने अनुवादक पर अपनी निगाहें जमाए रखीं। मैंने इंतजार किया।
और फिर—सब कुछ बिखर गया।
हवा घनी, घुटन भरी और एक अदृश्य तनाव से भरी हुई थी जिसने हमें अपनी सीटों से जकड़ रखा था।
हम प्रतिवादियों की बेंच पर कतार में खड़े थे, हमने झुर्रीदार, फीके भूरे रंग के जेल के पजामे पहने हुए थे, जो अदालत में पेशी के लिए मानक वर्दी थी। हमारे नंगे पैर उस ठंडी, चिपचिपी ज़मीन पर टिके थे जिसने हमसे पहले वहाँ से गुज़रने वाले हर व्यक्ति के दुख को सोख लिया था।
जंग लगी बेड़ियाँ हमारे टखनों से चिपकी हुई थीं, भारी तालों से कसकर बंद थीं जो हर हल्की सी हरकत पर हमारी त्वचा में धंस जाती थीं। उन जंजीरों की खनक हमारी अपनी अंत्येष्टि की घंटी जैसी थी।
सन्नाटा। वह भयानक, दमनकारी सन्नाटा, जो केवल गले साफ करने की आवाज, वस्त्रों की सरसराहट, पीले पड़ चुके कागजों के पलटने की आवाज से टूटता था, मानो हमारा भाग्य दस्तावेजों के अव्यवस्थित ढेर से ज्यादा कुछ नहीं था, जिन्हें सरसरी तौर पर देखने की प्रतीक्षा थी।

अदालत कक्ष खचाखच भरा हुआ था।
हमारे पीछे हमारे प्रियजन हैं। हमारा सहारा। हमारे जीने की वजह।
मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा, लेकिन मुझे जूलिया की उपस्थिति ऐसी महसूस हो रही थी जैसे कोई लौ मेरी पीठ पर चिपकी हो। वह वहीं थी। मुझे देख रही थी।
उसकी निगाहों ने मुझे स्थिर कर दिया।
लेकिन हमारे चारों ओर… दूसरी आँखें।
कमरे के बाईं ओर बैठे थाई पत्रकार पागलों की तरह लिख रहे थे, एक-दूसरे से फुसफुसा रहे थे, हमारे धंसे हुए चेहरों, हमारे झुके हुए कंधों की ओर इशारा कर रहे थे, जो आने वाले फैसले के बोझ से दबे हुए थे।
एक बेंच छोड़कर, दर्शक।
गिद्ध।
उनमें अनुवादक के चचेरे भाई भी शामिल थे, वे बदमाश इतालवी जो इसे एक तमाशा समझकर देखने आए थे।
मैं उनकी उत्साहित आवाजें, उनके छोटे-छोटे उद्गार सुन सकता था क्योंकि वे पर्दा उठने का इंतजार कर रहे थे।
मैंने अपनी मुट्ठियाँ और भी भींच लीं, मुझे महसूस हुआ कि मेरे नाखून मेरी हथेलियों में चुभ रहे हैं। मेरे अंदर घृणा उमड़ रही थी।
फैसला आने ही वाला था।
अनुवादक हमसे कुछ ही फीट की दूरी पर खड़ा था, अपने कागजों को पकड़े हुए, ऊबे हुए भावों के साथ, हमारे भाग्य को एक बेहद नीरस, बेहद उदासीन स्वर में बताने के लिए तैयार था।
मुझे अपनी रीढ़ की हड्डी से ठंडे पसीने की बूंदें बहती हुई महसूस हुईं।
और फिर—एक धीमी सी धमक। एक चीख। एक तीखी, रूह कंपा देने वाली चीख।
मार्को के साथी ने अभी-अभी एक ऐसी चीख मारी थी जो इतनी कोमल, इतनी आदिम थी कि वह सीधे मेरे सीने को चीर गई।
फिर वह गिर पड़ी। उसका शरीर एक भयानक धड़ाम की आवाज के साथ फर्श पर जा गिरा।
और फिर सन्नाटा छा गया।
फिर अफरा-तफरी मच गई। पत्रकार अपनी जगह से उछल पड़े। फुसफुसाहट एक कान फाड़ देने वाली भनभनाहट में बदल गई। मेरे पीछे खड़ी जूलिया ने मेरा हाथ छोड़ दिया। मार्को हिला तक नहीं - उसकी निगाहें जज पर टिकी थीं, होंठ कांप

रहे थे, लेकिन एक भी शब्द मुंह से नहीं निकल रहा था। टोनी खालीपन में घूर रहा था, मानो वह पहले ही मर चुका हो।
फिर अनुवादक बोला। उसकी आवाज सपाट, रोबोट जैसी और भावहीन थी।
— “आपको सजा सुनाई गई है।”
मेरा दिल रुक गया। मेरे आस-पास का शोर धीरे-धीरे गायब हो गया। सब कुछ दूर, धुंधला सा महसूस हुआ, मानो मैं पानी के अंदर हूँ।
— “कितना समय लगेगा?” मैंने किसी तरह पूछा, हालांकि मेरे मुंह से निकली आवाज मेरी नहीं लग रही थी।
अनुवादक ने अपने पीले पड़ चुके पन्नों को ऐसे देखा मानो वह किसी परीक्षा के परिणाम की घोषणा कर रहा हो।
— “लियो… 12 साल और 24 महीने।”
बारह साल… और चौबीस महीने। ये संख्याएँ मेरे दिमाग में एक भयानक मंत्र की तरह गूंज रही थीं।
फिर उसने ऊपर की ओर देखा।
— “चौदह साल।”
मेरे पैर लड़खड़ा गए।
चौदह वर्ष।
चौदह साल?!
नहीं।
मैंने मार्को की ओर देखा, मेरी आँखों में घबराहट थी। वह पीला पड़ गया था।
उसकी छाती ज़ोर-ज़ोर से ऊपर-नीचे हो रही थी, मानो वह कमरे की सारी हवा अंदर खींचने की कोशिश कर रहा हो।
अनुवादक ने बोलना जारी रखा।
— “मार्को… अठारह साल।”
मार्को के गले से एक घुटती हुई आह निकली। उसकी आँखें तेजी से झपकीं, मानो वह किसी बुरे सपने से जागने की कोशिश कर रहा हो।
टोनी ने आखिरकार प्रतिक्रिया दी। उसने धीरे-धीरे अपना सिर उठाया, मानो वह व्यक्ति अपने अंतिम संस्कार की प्रतीक्षा कर रहा हो।
— “टोनी… चौदह साल।”
चौदह साल। हमारे लिए चौदह साल। मार्को के लिए अठारह साल।

यह सच नहीं हो सकता।
यह सच नहीं हो सकता।
मैंने जूलिया को ढूंढा। वह पीली पड़ गई थी—भूतिया सी। उसके पीछे, मेरा दोस्त एक्सल, जो फ्रांस से आया था, जम सा बैठा था, उसे समझ नहीं आ रहा था कि अभी-अभी क्या हुआ है।
— “नहीं…” मैंने फुसफुसाते हुए कहा।
मैंने न्यायाधीश की ओर देखा, मानो कोई स्पष्टीकरण, कोई गलती, कोई उम्मीद की किरण ढूंढ रहा हो। लेकिन उन्होंने हमारी ओर देखा तक नहीं। हम उनके लिए परछाईं मात्र थे। बस एक पन्ने पर लिखे अंक।
— “यह कैसे संभव है?!” मार्को अंततः अविश्वास से कांपती आवाज में चिल्लाया।
अनुवादक ने झुंझलाहट भरी सांस ली।
— “डाकघर से मिली हर तस्वीर एक वाक्य के बराबर है।” — “क्या?!”
— “उन्होंने तस्वीरों की संख्या के आधार पर वाक्यों को जोड़ा।”
दीवारें हिलने लगीं। संख्याएँ, आवाज़ें, चेहरे—सब कुछ धुंधला हो गया। हमने आरोप स्वीकार कर लिए थे। हमने नियमों का पालन किया था। हमें आज रिहा कर दिया जाना चाहिए था।
और इसके बजाय…
चौदह वर्ष। अठारह वर्ष।
न्यायाधीश खड़े हो गए। उन्होंने अपने कागजात समेटे। उन्होंने हमारी ओर पीठ फेर ली। मानो हमारा कभी अस्तित्व ही न रहा हो।
टोनी लड़खड़ाया। फिर गिर पड़ा। उसका शरीर बेजान और निर्जीव होकर ज़मीन पर जा गिरा।
मैंने जूलिया की चीख सुनी। उसकी चीखें मेरे दिमाग में छाए धुंध को चीरती हुई सुनाई दीं।
मेरी सांसें रुक-रुक कर आ रही थीं। फिर—कुछ नहीं।
सब कुछ एकदम शांत हो गया। बहुत ज्यादा शांत।
जैसे समय थम गया हो। जैसे मेरी मृत्यु हो गई हो।
गार्डों ने हमें बेरहमी से पकड़ लिया, उनके कठोर हाथों ने हमारी बाहों को जकड़ लिया, और हमें हमारे प्रियजनों से छीन लिया जो अभी भी सन्नाटे में

बैठे थे। हमारे टखनों में बंधी जंजीरें ठंडे अदालत भवन के फर्श पर खटकने लगीं, मानो हमारी अंतिम यात्रा की धातुई गूंज हो।
अदालत कक्ष हमारे पीछे ओझल हो गया। जूलिया बेंच पर जम सी गई, उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे। उसके होंठ कांप रहे थे, वह शब्द बनाने की कोशिश कर रही थी, लेकिन कोई शब्द नहीं निकल रहा था।
मार्को ने कुछ नहीं कहा। उसकी आँखें निर्जीव थीं, एक ऐसे शून्य पर टिकी हुई थीं जिसे केवल वही देख सकता था।
टोनी लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ा, सदमे और भय से उसका चेहरा पीला और पिचका हुआ था।
हम खाली थे। टूटे हुए।
पत्रकार अब भी फुसफुसा रहे थे, हमारी हार का हर विवरण लिख रहे थे।
कुछ तो खुश भी दिख रहे थे, मानो हमारी सजा उस शो का चरमोत्कर्ष हो जिसे वे देखने आए थे।
मैंने आखिरी बार जूलिया की ओर मुड़कर देखा। हमारी आँखें मिलीं। और उस नज़र में, मैंने एक वादा देखा। हार न मानने का वादा।
लेकिन मुझे बस अपने सामने एक विशाल शून्य खुलता हुआ महसूस हो रहा था। उन्होंने हमें अदालत भवन के नीचे बनी संकरी हवालात में धकेल दिया। पसीने और निराशा की दुर्गंध हवा में फैली हुई थी—घनी, खट्टी, दम घोंटने वाली— टूटी-फूटी कंक्रीट की दीवारों की हर दरार में समाई हुई थी। हम चुपचाप इंतजार करते रहे। लंबे, असहनीय मिनट।
फिर अंत में, एक छोटी सी राहत मिली: हमारे दोस्तों ने वीआईपी कमरे का भुगतान कर दिया था। एक छोटा, बंद कमरा। तंग ज़रूर था, लेकिन मुख्य पिंजरे की नरक जैसी भीड़भाड़ से बहुत दूर था, जहाँ दर्जनों कैदी एक साथ ठसाठस भरे हुए थे, त्वचा से त्वचा सटी हुई।
और जब मैंने ऊपर देखा… वह वहाँ थी। जूलिया।
वह मेरी ओर दौड़ी और बेताब ताकत से मेरे हाथ पकड़ लिए। उसकी उंगलियां मेरी उंगलियों के विरुद्ध कांप रही थीं। उसकी आंखें धधक रही थीं—दुःख और मुश्किल से काबू में रखे गए क्रोध का मिश्रण।
— “हम इसे ठीक कर देंगे।”

आंसुओं के बोझ तले उसकी आवाज कांप उठी।
— “हम अपील करेंगे। मैं हर संभव प्रयास करूंगा।”
मैंने उसकी आवाज़ सुनी... लेकिन मैं सचमुच सुन नहीं रही थी। शब्दों का अर्थ खो गया था। सब कुछ धुंधला, दूर और अवास्तविक सा लग रहा था।
मैंने अपनी निगाहें नीचे कर लीं और अपने सामने पड़ी गंदी प्लास्टिक की मेज को घूरने लगी, मेरी उंगलियां अनजाने में उसके किनारे पर बने एक गहरे निशान को छू रही थीं।
जूलिया बोलती रही।
— “मैं दूतावास से संपर्क करूंगा, दूसरा वकील नियुक्त करूंगा, प्रेस के पास जाऊंगा! तुम यहां नहीं रुकोगे, मैं तुमसे वादा करता हूं।”
उसकी सांसें तेज और उथली थीं। फिर भी उसे विश्वास था।
मैं?
मुझमें अब और विश्वास करने की ताकत नहीं बची थी।
मैंने फोन उठाया। मेरी हथेलियाँ पसीने से भीगी हुई थीं, और गंदे रिसीवर पर फिसल रही थीं।
मैंने अपनी मां का नंबर डायल किया।
बीप. बीप. बीप. हर ध्वनि किसी अंतिम संस्कार की घंटी की तरह बजती थी।
फिर, उसकी आवाज।
- "नमस्ते?"
मेरी सांसें थम गईं। मैंने बोलने की कोशिश की, लेकिन मेरा गला सूख गया था, जकड़ गया था।
अंत में, एक कर्कश फुसफुसाहट निकली।
— “माँ… मैं यहीं मर जाऊँगा।”
सन्नाटा। भारी। कुचलने वाला। वाक्य से भी बदतर।
फिर उसकी आवाज भर्रा गई।
— “नहीं, मेरे बेटे। नहीं…”
उसकी दबी हुई सिसकियां फोन पर सुनाई दीं, मानो मेरे सीने में चुभ रही हों। — “मैं हर संभव कोशिश करूंगा। मैं समाचार चैनल को फोन करूंगा। मैं हर किसी से संपर्क करूंगा। हम आपको बाहर निकाल लेंगे।”
जूलिया ने अपनी नाक पोंछी, उसका जबड़ा कसकर भींचा हुआ था, उसकी आंखें आंसुओं से लाल हो गई थीं जिन्हें वह मुश्किल से रोक पा रही थी।

उसने एक शब्द भी नहीं कहा। उसने बस मेरा हाथ और कसकर पकड़ लिया, उसकी उंगलियां मेरी उंगलियों को इस तरह जकड़ रही थीं जैसे वह मुझे शारीरिक रूप से वास्तविक दुनिया से बांध सकती हो।
— “हम आपको यहां नहीं छोड़ेंगे।”
मैंने सिर हिलाया। लेकिन भीतर ही भीतर… मुझे अब इस पर विश्वास नहीं रहा। हमने अपना थोड़ा-बहुत खाना खत्म कर दिया, अगर आप उसे खाना कह सकते हैं तो। यह वास्तव में भोजन से ज़्यादा खाने की एक कोशिश थी, मतली को दूर रखने की कोशिश में।
हमारे अंदर जीवित रहने की कुछ सहज प्रवृत्ति जागृत हो गई, और हमने मोटी लोहे की सलाखों के पीछे मुख्य पिंजरे में ठूंस-ठूंस कर भरे हुए अन्य कैदियों के साथ सब कुछ साझा किया।
दर्जनों हाथ बेताब होकर हमारी ओर बढ़े और हमारे रास्ते में आने वाले भोजन के हर टुकड़े को छीनने की कोशिश करने लगे।
— “धन्यवाद, भाई।” — “आप लोग वाकई कमाल के हो।” — “मजबूत रहो…”
उनकी फुसफुसाहटें वास्तविक थीं। उनके लिए, हम पहले से ही अनुभवी थे।
हमने उनके चेहरे देखे—थके हुए, निराश, अन्याय और समय के निशानों से भरे हुए।
लेकिन हमने कुछ नहीं कहा।
हममें हिम्मत नहीं थी।
फिर बस आ गई। आँगन में एक तेज़, धातुई गड़गड़ाहट गूंज उठी।
गार्डों ने हमें बिना परवाह किए अंदर धकेल दिया। हमें उस चलते-फिरते ताबूत में ठूंस दिया गया, जिसमें पसीने, डर और हताशा की दुर्गंध भरी हुई थी, और हमें जंजीरों से जकड़ दिया गया था।
बस गड्ढों पर से खड़खड़ाती हुई गुज़री, हमें वापस हमारे कंक्रीट के नरक में घसीट रही थी। हम थक चुके थे। खोखले।
किसी ने कुछ नहीं कहा। दूसरे कैदी हमें चुपचाप दया भरी निगाहों से देख रहे थे, लेकिन हमें उनके चेहरे अब दिखाई नहीं दे रहे थे। हम पहले ही जा चुके थे, अपने ही दिमाग में खो गए थे।
जब अंततः जेल के दरवाजे चरमराते हुए खुले… जब सीलन, सड़ांध, गंदगी और पीड़ा की वह जानी-पहचानी दुर्गंध हमारी नाक में घुसी… जब हमने चिल्लाते

[illegible]

अध्याय 10: और भी निम्न स्तर
फिर से।
नग्न अवस्था में खड़े। मेरे पैरों के नीचे ठंडी टाइलों का एहसास, यांत्रिक खुरदरेपन से खींची गई जंजीरें, गार्डों की कठोर उंगलियां मेरी त्वचा पर फिर रही थीं क्योंकि वे बिना किसी शर्म के हमारी तलाशी ले रहे थे।
लेकिन इस बार कुछ अलग था। पिछली बार, हमें अभी भी उम्मीद थी। हम एक ऐसे फैसले का इंतजार कर रहे थे, जो हमारे मन में हमें आज़ाद करने के लिए था। इस बार… हमें सजा सुनाई गई।
प्रवेश द्वार पर तैनात एक कर्मचारी ने हमें एक रजिस्टर थमा दिया। उसने नीरस, सपाट स्वर में, भावहीन स्वर में पूछा: "आपकी सजा।"
हमने एक-दूसरे को गहरी निगाहों से देखा। गला सूख गया। मांसपेशियां तन गईं। हमने किसी तरह उन अवास्तविक संख्याओं को, उन वर्षों को, जो अब हमारे जीवन को परिभाषित करेंगे, मुश्किल से बोल पाए।
— “14 वर्ष।” — “18 वर्ष।”
पाउचुए ज़रा भी नहीं हिचका। उसने बस एक पल के लिए ऊपर देखा। उसकी आँखों में शायद दबी हुई करुणा की एक झलक थी—ऐसी आँखें जो त्रासदी की आदी हो चुकी थीं। फिर उसने उसे लिख डाला। कलम की एक ही लकीर ने हमारा भाग्य तय कर दिया। बिना कुछ कहे, उसने हमें हमारे जेल के कपड़े थमा दिए, जो फटे-पुराने, बेजान कपड़े के टुकड़े थे, और हमें आगे बढ़ने का इशारा किया।
बिल्डिंग 5 तक वापस जाने का रास्ता अंतहीन सा लग रहा था। पिछली बार तो यह आसान लगा था। इस बार हर कदम पीड़ादायक था। हम इस नई वास्तविकता के बोझ तले दब गए थे।
जहां हम कभी सोचते थे कि हम बस गुजर रहे हैं... अब हम समझ गए। यही जगह हमारा घर थी। यही हमारा जीवन था। शायद हमेशा के लिए।
और उस विचार से हमारा जी मिचलाने लगा।
ट्रिब्यूनल रिटर्न सेल बिल्कुल वैसा ही था। अब भी गंदा। अब भी पसीने और बासी मानवीय पीड़ा की बदबू से भरा हुआ। अब भी घुटन भरा। लेकिन कुछ बदल गया था।
हम।

हम पहले जैसे नहीं रहे। हम टूटकर वापस आए। एक अकल्पनीय फैसले के बोझ तले हमारे कंधे झुक गए। हमारे पैर गंदी ज़मीन पर घिसटते चले गए। हमारे चेहरे भावहीन हो गए। घुटन भरी गर्मी या तंग जगह के बारे में शिकायत करने की भी ताकत हममें नहीं बची थी।
एक कोने में दुबका हुआ, कमर झुकाए हुए, हमें विम मिला—जिसे "टर्टल" भी कहा जाता था—कैदी से कानून का विद्वान बना वह व्यक्ति, जो थाई कानून का अध्ययन ऐसे कर रहा था जैसे उसमें आजादी की चाबी छिपी हो।
वह पहले से ही हमें देख रहा था, खरोंच लगे चश्मे के पीछे से आंखें सिकोड़कर, चिंता और पेशेवर एकाग्रता के मिश्रण के साथ हमारी हर हरकत का विश्लेषण कर रहा था।
बिना किसी भूमिका के, वह उठा और चलकर वहाँ पहुँच गया।
— “अपील दायर करें।”
उनकी आवाज शांत थी, लेकिन तीखी थी।
हमने उसे खाली निगाहों से देखा। मार्को ने पलकें झपकाईं, मानो वह किसी बुरे सपने से जाग रहा हो।
- "क्या?"
— “अपील करो,” उसने दोहराया, हमारे सामने झुकते हुए, अपने घुटनों पर एक पुरानी, भारी भरमार वाली कानून की किताब को संतुलित करते हुए। उसके हाव-भाव सटीक थे। यांत्रिक। — “अगर तुमने अपील नहीं की, तो तुम यहाँ सालों तक सड़ते रहोगे।”
उसने किताब के अंदर से एक मुड़ा हुआ पन्ना निकाला और हमें दे दिया।
— “यह आपके मामले की फाइल देखने का अनुरोध है। आप देख सकते हैं कि उनके पास आपके खिलाफ क्या-क्या सबूत हैं।”
मैंने कागज उठाया। मेरे हाथ कांप रहे थे।
मेरे दिमाग में कई आवाजें गूंज रही थीं। मार्को की साथी की चीख। जूलिया का रोना। फोन पर मेरी माँ की टूटी हुई आवाज। टोनी की खाली निगाहें। जज की खामोशी।
यह सब एक साथ टकरा गया, मेरे दिमाग में एक कान फाड़ देने वाला, दम घोंटने वाला शोर मच गया।
अपील…
लेकिन किसलिए?

हमें अब किसी पर भरोसा नहीं रहा। हमने वकीलों को आजादी का वादा करते और हमारे पैसे लेकर गायब होते देखा था। हमने ऐसे जजों को भी देखा था जो हमारी तरफ देखने की जहमत तक नहीं उठाते थे।
और फिर डर भी था।
अपील करने का मतलब था एक और साल इंतजार करना। यह एक बहुत बड़ा जोखिम था। अगर हमने अपील की, तो हम कैदियों की रैंकिंग में ऊपर नहीं चढ़ पाएंगे। सजा में कोई कमी नहीं होगी। शाही क्षमादान भी नहीं मिलेगा। और अगर इस बीच राजा की मृत्यु हो गई, तो हमें जल्दी रिहा होने का एकमात्र मौका भी गंवाना पड़ सकता है।
मैं पूरी तरह थक चुकी थी, इसलिए मैंने अपना हाथ अपने चेहरे पर फेरा।
मेरे बगल में, मार्को ने सिगरेट जलाई, उसकी उंगलियां कांप रही थीं।
हम चुपचाप सिगरेट पीते रहे, हमारी निगाहें फर्श पर टिकी हुई थीं।
टोनी सिकुड़कर बैठा था, खालीपन में घूर रहा था। उसमें अब बोलने की ताकत नहीं बची थी।
कछुआ हमें देखता रहा, प्रतीक्षा करता रहा।
— “ध्यान से सोचो।”
फिर वह धीरे से उठा और कोठरी के अंधेरे में गायब हो गया, हमें एक ऐसे फैसले के साथ अकेला छोड़ गया जो सब कुछ बदल सकता था।
हम सिगरेट पीते रहे। और पीते रहे। सिगरेट के कश जोर से खींचते रहे, मानो निकोटीन अंदर के तूफान को शांत कर दे।
लेकिन कोई भी चीज हमारे अंदर पनप रहे डर को शांत नहीं कर सकी।
हम फंस गए थे। चारों तरफ से घिरे हुए थे। बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था।
रात धुंधली सी थी। मेरे विचार गोल-गोल घूम रहे थे। अपील... लेकिन क्यों? मुझे अभी भी जूलिया की चीखें सुनाई दे रही थीं, मेरी माँ की निराशा फोन पर गूँज रही थी। मैंने फिर से उन सभी की झुकी हुई निगाहें देखीं जिन्होंने हम पर भरोसा किया था। किसी को नहीं पता था कि क्या कहें। किसी को नहीं पता था कि हमें कैसे दिलासा दें। मेरे मन के एक अंधेरे कोने में आशा की एक हल्की सी किरण टिमटिमा रही थी।
राजा। हर कोई उसकी आसन्न मृत्यु के बारे में बात कर रहा था। कोठरियों में अफवाहें तेजी से फैल रही थीं।

“अगर राजा की मृत्यु हो जाती है, तो शाही क्षमादान की घोषणा की जाएगी।” “द्वार खुल जाएंगे, हजारों कैदी रिहा हो जाएंगे।” “शायद हम भी…”
या… शायद फ्रांस में स्थानांतरण। मेरे परिवार, मेरे प्रियजन, वे मुझे स्वदेश वापस भेजने के लिए संघर्ष करेंगे। मुझे यहाँ सड़ने से बचाने के लिए।
मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और उन भ्रमों में खोकर सो गया।
सुबह बहुत बुरी रही। हम गंदे, थके हुए और अभी भी कोर्टहाउस की पसीने और धूल से सने हुए थे। पानी नहीं था। बिल्डिंग 4 में वापस जाने से पहले नहाने का कोई उपाय नहीं था।
मैंने एक बाल्टी उठाई, एक कपड़ा भिगोया और वहीं फर्श पर अपनी त्वचा को रगड़ा—जैसे कोई पिंजरे में बंद जानवर अपनी बची-खुची इज्जत के लिए पंजा मार रहा हो।
फिर हम बाकी लोगों के साथ मिल गए।
जेल की यादें ताजा हो गईं। अजनबी लोगों के चेहरे सदमे और सहानुभूति के मिले-जुले भावों से हमें घूर रहे थे। यहां तक कि मार्सिले के लोग, जिन्हें पूरा यकीन था कि हम गिर जाएंगे, उनका घमंड भी टूट गया था।
— “काश हम गलत होते…” स्वान ने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए धीरे से कहा। आमतौर पर मज़ाकिया स्वभाव वाला फरीद चुप रहा। यहाँ तक कि एकांतप्रिय रूसी तिमूर भी हमारे पास ही रुका रहा। वह हमारे लिए कॉफ़ी लाया और अपने शांत, गणनात्मक दिमाग में समाधान खोजने की कोशिश करता रहा।
निको (इतालवी), फ्लोरिन (रोमानियाई), हमारे साथी कैदी, सभी हमें डर के भाव से घूर रहे थे। दया नहीं, डर।
क्योंकि उन्होंने खुद को हममें देखा। उनके अपने मामलों का महत्व और भी बढ़ गया। अगर वे हमारे साथ ऐसा कर सकते हैं... तो फिर कोई भी सुरक्षित नहीं था।
हम जिज्ञासु लोगों की नजरों से दूर, इमारत के एक शांत कोने में इकट्ठा हुए।
मार्को की मुट्ठियाँ भींची हुई थीं। "मैं अपील करूंगा," उसने गुस्से से कांपती आवाज में कहा।
लेकिन मुझे यकीन नहीं था।
अपील का मतलब था और अधिक समय।
नए फैसले से पहले कम से कम एक और साल।
और उस दौरान, पदोन्नति का कोई रास्ता नहीं।

और अगर शाही क्षमादान उससे पहले आ जाता... तो हम उसे खो देते। हमें पूरी सजा काटनी पड़ती।
मैं डरा हुआ था। हम सब डरे हुए थे।
अपील करना एक जुआ था। एक ऐसा जुआ जिसमें हमारे पास दांव लगाने के लिए कुछ भी नहीं बचा था।
निर्णय लेना ही था… लेकिन किस कीमत पर?
अपील न करने का विकल्प चुनना आसान नहीं था, लेकिन धीरे-धीरे यह एकमात्र विकल्प जैसा लगने लगा।
मार्को—जो इस नरक जैसी स्थिति में भी हमेशा शांत और स्थिर रहता था—लगभग विचित्र संयम के साथ फायदे और नुकसान का आकलन कर रहा था। उसे इतनी शांत दृढ़ता के साथ इसका सामना करते देखना अविश्वसनीय था। जिसने कुछ भी नहीं किया था, जिसे अन्यायपूर्ण तरीके से सजा सुनाई गई थी, वह फिर भी किसी तरह अपने भाग्य को स्वीकार कर रहा था।
— “इसका कोई फायदा नहीं,” उसने एक रात आखिरकार फर्श पर सिगरेट मसलते हुए कहा। — “उन्होंने पहले ही सब कुछ तय कर लिया है। अगर हम अपील करते हैं, तो स्थिति और भी खराब हो सकती है।”
वह सही था।
अमेरिका की तरह ही, थाईलैंड में भी अपील करने पर कभी-कभी सजा की अवधि बढ़ सकती है।
हमने पुलिस स्टेशन में सभी आरोप स्वीकार कर लिए थे। चाहे हमने कितनी भी कोशिश की हो, परिणाम में शायद ही कोई बदलाव आएगा।
तो हम तीनों ने मिलकर अपना फैसला कर लिया।
हम अपील नहीं करेंगे। हम शाही क्षमादान का इंतजार करेंगे।
यह एक जोखिम भरा कदम था। लेकिन यह एक ऐसा जोखिम था जिसे हम उठाने के लिए तैयार थे।
वह निर्णय लेने के बाद, हमने नियमित दिनचर्या में वापस लौटने की पूरी कोशिश की।
मैंने बिल्डिंग 4 में काम करने वाले बढ़ई रशीद से मेरे लिए एक मेज बनाने को कहा था। बस एक साधारण तख्ता, मजबूत टांगों वाला, कुछ खास नहीं। लेकिन यह मेरी चीजें रखने, बैठने, पढ़ने और ठीक से लिखने की जगह होगी।

जब से जूलिया मेरे जीवन में आई है, तब से मेरे अंदर सीखने की प्यास फिर से जागृत हो गई है।
वह वित्त, विपणन, आतिथ्य सत्कार, रेस्तरां प्रबंधन आदि विषयों पर किताबें लाई थी… ऐसी कोई भी चीज जो मुझे इन दीवारों से परे भविष्य की कल्पना करने में मदद कर सके।
मुझे किसी ऐसी चीज की जरूरत थी जिस पर मैं भरोसा कर सकूं। कुछ ऐसा जिसका जेल से कोई लेना-देना न हो।
— “अगर मैं यहाँ से निकल गया, तो मैं अपना खुद का व्यवसाय शुरू करूँगा,” मैंने मार्को से कहा, जब मैं एक प्रबंधन की किताब के पन्ने पलट रहा था।
— “अगर तुम बाहर निकल गए तो…” उसने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, उसका लहजा शरारती था, लेकिन निर्दयतापूर्ण नहीं था।
रशीद एक दिलचस्प किरदार था। एक रूसी, जो रेनाटो से जुड़े उसी मामले से संबंधित था, जो दूसरा रूसी था जिससे हम बिल्डिंग 5 में मिले थे।
रेनाटो भाग्यशाली था—उसे रिहा कर दिया गया था। लेकिन रूस लौटने का मतलब था कि वह रशीद के मुकदमे से हट गया था, और इससे रशीद पूरी तरह से फंस गया था।
— “वह कभी वापस नहीं आएगा,” रशीद ने मेरी मेज पर लकड़ी की एक पट्टी को ठीक करते हुए बुदबुदाया।
— “क्या आपको उससे कुछ पता चला?”
— “जब से वह घर गया है, तब से नहीं। मैं यहीं फंसी हुई हूँ।”
उसकी आंखें काली पड़ गईं।
मेरी ही तरह, वह भी बाहर निकलने का रास्ता तलाश रहा था। लेकिन उसका रास्ता और भी अनिश्चित लग रहा था।
इसी बीच, उसने जेल में अपनी जगह बना ली थी। बिल्डिंग 4 के बढ़ई के रूप में, रशीद टूटे हुए फर्नीचर की मरम्मत करता था, बेंच और अलमारियां बनाता था, और छोटे-मोटे कामों के बदले वार्डन के लिए भी काम करता था।
हम एक दूसरे के करीब आ गए।
— "मुझे कुछ पढ़कर सुनाओ," वह कभी-कभी मेरी मेज के सामने पालथी मारकर बैठते हुए कहते थे।
मैंने उन्हें अपनी किताबों के कुछ अंश पढ़कर सुनाए, और उन्होंने सोच-समझकर सिर हिलाया।

— “जब हम बाहर निकलेंगे, तो हमें साथ मिलकर एक व्यवसाय शुरू करना होगा।” — “हाँ…”
हम दोनों जानते थे कि यह सिर्फ एक सपना था—लेकिन ऐसी जगह पर सपने देखना एक आवश्यकता थी।
दिन बीतते गए। हम प्रशिक्षण पर लौट आए, कसरत, पढ़ने और शांत बातचीत के बीच अपने समय को व्यवस्थित करने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन जेल तो जेल ही रही। तलाशी की आवृत्ति बढ़ गई और नियम सख्त हो गए।
थाई कैदियों को बेतुकी सजाएं दी जाती थीं, उन्हें चिलचिलाती धूप में दौड़ने के लिए मजबूर किया जाता था या गार्डों द्वारा अपमानजनक बातें चिल्लाते हुए घंटों तक घुटनों के बल बैठे रहने के लिए मजबूर किया जाता था।
मैंने इससे दूर रहने की कोशिश की, लेकिन अन्याय को महसूस न करना असंभव था।
इसे दिन-प्रतिदिन दोहराते हुए न देखना असंभव था।
और फिर ईर्ष्या थी।
वह शांत, कड़वी ईर्ष्या।
जब भी कोई रिहा होता था, तो बहुत दुख होता था।
— “देखा? पार्न आज सुबह रिहा हो गया,” मार्को ने एक दिन कॉफी पीते हुए मुझसे कहा।— “हाँ…”— “वह हमसे कम समय से यहाँ था।”— “उसे शाही क्षमादान मिल गया।”— “धत् तेरे की…”
हमने उनके लिए खुश होने की कोशिश की। लेकिन दिल ही दिल में हम बस उनकी जगह पर होना चाहते थे।
हम हर रोज वही सड़ा हुआ खाना खा रहे थे, और असहनीय गर्मी सहन कर रहे थे। लेकिन चलो, कम से कम इस बार शौचालय तो साफ थे। छोटी सी जीत।
जूलिया द्वारा बाहर से भेजे गए पैसों की बदौलत, मैं जेल के आंतरिक बैंक में सिगरेट का एक छोटा सा भंडार जमा करने में कामयाब रहा था।
यह प्रणाली सरल थी: सिगरेट सीधे खरीदने के बजाय, आप एक बाहरी खाते में पैसे भेजते थे, और जेल आपको सिगरेट की राशि जमा कर देती थी।
सिगरेट ही सब कुछ थी। वे मुद्रा थीं।
उनके साथ, आप वीआईपी कमरे के लिए भुगतान कर सकते हैं, मसाज, लॉन्ड्री सेवा या यहां तक कि एक ठीक-ठाक भोजन जैसी सुविधाएं प्राप्त कर सकते हैं।
लेकिन जितना ज्यादा मैं खर्च करता गया, गार्डों को उतना ही ज्यादा लगने लगा कि मैं बहुत अमीर हूँ।

उनमें से कुछ लोग बैठकों के बहाने मुझे इमारत से बाहर खींचने लगे।
— “इधर आओ, लियो,” उनमें से एक मुझे इशारा करते हुए कहता।
मुझे पता भी नहीं चला कि मैं एक अलग ब्लॉक में था, गार्डों से बात कर रहा था, विदेशी कैदियों और प्रशासन के बीच होने वाली बातचीत का अनुवाद कर रहा था, मध्यस्थ की भूमिका निभा रहा था।
उन्होंने तो मुझे उनके साथ व्यायाम करने के लिए भी कहा।
लेकिन सच्चाई तो यह थी कि वे सिर्फ यह देखना चाहते थे कि मेरे पास पैसे हैं या नहीं।
जब उन्हें एहसास हुआ कि मुझे यह बात समझ नहीं आई, तो उन्होंने तुरंत रुचि खो दी।
फिर एक सुबह, सब कुछ फिर से बदल गया।
जेल में एक घोषणा गूंजी: उच्च पदस्थ कमांडरों का दौरा।
ये दौरे नियमित रूप से होते थे—बैंकॉक के अधिकारी जगह का निरीक्षण करते थे, अनुशासन और पुनर्वास के बारे में भाषण देते थे, जबकि हम कैदी आंगन में वर्दी पहने कतार में खड़े होते थे, आदर्श कैदियों की तरह दिखने की कोशिश करते थे।
उस सुबह चोनबुरी की एक जेल से एक महिला वहां मौजूद थी।
हमने उनकी उपस्थिति का लाभ उठाकर प्रश्न पूछे।
— “जिन लोगों को लंबी सजा मिलती है उनका क्या होता है?” मार्को ने पूछा।
— “तुम्हारा तबादला हो जाएगा,” उसने सपाट स्वर में उत्तर दिया।
फिर उसने एक सूची निकाली।
— “इसमें आपका नाम लिखा है। आप कल चोनबुरी के लिए रवाना हो रहे हैं।” मेरी रीढ़ की हड्डी में एक ठंडी सिहरन दौड़ गई।
- "क्या?"
— “जिनकी सजा पंद्रह साल से अधिक हो चुकी है, उन्हें दीर्घकालिक देखभाल सुविधाओं में स्थानांतरित कर दिया जाता है।”
— “और मैं?” मैंने पूछा।
— “तुम यहीं रुकोगे।”
मौन।

मार्को जरा भी विचलित नहीं हुआ। उसने हमेशा की तरह शांत भाव से यह खबर सुनी।
— “मुझे यही लगा था,” उसने धीरे से कहा।
उन्होंने मुस्कुराते हुए मेरे कंधे पर तसल्ली भरा हाथ रखा।
— “चिंता मत करो। हम फिर मिलेंगे। चाहे यहाँ मिलें या बैंकॉक में, मैं तुम्हें पत्र लिखूंगा। और मुझे पता है कि एक दिन हम फिर मिलेंगे, जब यह सब खत्म हो जाएगा।”
मेरी आंखों में आंसू उमड़ रहे थे और मैंने खुद को उन्हें रोकने के लिए मजबूर किया, खासकर गार्डों के सामने, जो हमें अमानवीय उदासीनता से देख रहे थे।
बिल्डिंग 4 के फ्रांसीसी लोग, जो हमेशा वफादार रहते हैं, ने वादा किया कि वे मेरी यथासंभव देखभाल करेंगे और मार्को को उसका थोड़ा-बहुत सामान इकट्ठा करने में मदद की।
उस रात हम दोनों साथ बैठे रहे और पंखे की हल्की आवाज में बातें करते रहे।
हमने जेल में बिताए अपने शुरुआती दिनों की यादें, अपनी रोमांचक कहानियाँ, घोर निराशा के क्षण और इस अटूट विश्वास को साझा किया कि एक दिन हम मुक्त होंगे।
भोर होते ही उसे लेने के लिए एक बस आई।
मैं गले में अटकी हुई गांठ को रोकते हुए उसे गेट तक ले गया, तभी एक अधीर अधिकारी ने उसका नाम पुकारा।
मार्को ने मुझे आखिरी बार हाथ हिलाकर इशारा किया और धूल और डीजल के बादल में गायब हो गया।
इसका गहरा असर हुआ। एक ऐसी दुनिया में अप्रत्याशित खालीपन, जो पहले से ही उम्मीदों से वंचित थी।
और मैं वहीं रुक गया। अकेला।
उनके जाने से एक बहुत बड़ा खालीपन आ गया। मेरी दिनचर्या में, मेरे व्यवहार में, मेरे दिल में एक गहरा खालीपन छा गया।
वह विपत्ति में मेरा भाई था। इस भयंकर तूफान में मेरा शांत सहारा।
अपनी सजा के अन्याय के बावजूद, मार्को ने हमेशा एक ज़ेन जैसी शांति बनाए रखी थी। एक स्वाभाविक करिश्मा। एक शांत शक्ति जिसने मुझे मजबूती से खड़े रहने में मदद की।

उनकी अनुपस्थिति से गहरा सदमा लगा।
इस जेल की घोर अंधेरी रात में मैंने अपना मार्गदर्शक प्रकाशस्तंभ खो दिया था।
लेकिन वह... वह मुस्कुराते हुए चला गया। उसने मुझे आखिरी बार गले लगाया और अपनी उसी स्थिर, आत्मविश्वास भरी आवाज़ में फुसफुसाया:
— “हम बैंकॉक में फिर मिलेंगे, भाई। और उसके बाद, घर। चिंता मत करो, सब ठीक हो जाएगा।”
मैं उस पर विश्वास करना चाहता था। उसके लिए। मेरे लिए।
लेकिन भीतर ही भीतर… मेरे अंदर कुछ अंधेरा सा घर कर गया था। एक भारी साया। ऐसा दुख जो सीने को कुचल देता है और जी मिचलाने लगता है।
अगली सुबह, मैं एक ऐसी कोठरी में जागा जो अचानक बहुत शांत और खाली सी लगने लगी। मुझे फिर से अकेले रहना सीखना पड़ा।
दिन एक जैसे लगने लगे, नीरस, मानो धूसर लहरें अंतहीन रूप से एक ही किनारे से टकरा रही हों। मैंने मार्सिले के लड़कों, एंटोनियो, जेसी और विदेशियों के हमारे छोटे से समूह के बाकी लोगों के साथ समय बिताया। बिल्डिंग 4 में दुखों का भाईचारा।
लेकिन मार्को की निरंतर उपस्थिति का कोई विकल्प नहीं था।
और फिर, एक और भी गहरी तरह की तन्हाई थी। खामोश तन्हाई। ऐसी तन्हाई जो उन मुलाकातों से आती है जो कभी नहीं हुईं।
मैंने स्पीकर पर अपना नाम सुनने का इंतज़ार करना छोड़ दिया। मुझे पता था कि कोई नहीं आएगा। अब न जूलिया, न परिवार। बस मैं—और दिनों का बोझ जो एक के ऊपर एक बढ़ता जा रहा था।
सिवाय कभी-कभी...
छोटे-छोटे आश्चर्य।
दुर्लभ और अनमोल।
जूलिया द्वारा संपर्क किए गए स्थानीय चर्चों के मिशनरी कभी-कभार आते रहते थे। वे अपने साथ शब्द, किताबें और थोड़ा भोजन लाते थे। निराशा के रेगिस्तान में आशा की किरणें।
दो स्वयंसेवक नियमित रूप से आते थे। एक अमेरिकी महिला थी, जो हमेशा मुस्कुराती रहती थी और जब वह थाईलैंड में होती थी तो मेरे परिवार के संदेश पहुंचाती थी। दूसरी सारा थी।

पटाया के एक कैथोलिक चर्च में प्रशिक्षु के रूप में काम कर रही एक युवा फ्रांसीसी महिला। वह अक्सर अपनी मधुर आवाज और शांत करुणा के साथ आती थी।
वह सुकून देती थी। एक तरह का मौन सहारा, जो अनमोल था।
मुझे उन मुलाकातों में से एक याद है। सारा मेरे सामने बैठ गई, उसकी निर्मल आँखें मेरी आँखों में टिकी हुई थीं।
— “क्या तुम पकड़े हुए हो?”
मैंने उसे हल्की सी मुस्कान दी।— “मैं जो कर सकती हूँ, कर रही हूँ।”
उसने हमारे बीच लगी तार की जाली पर अपना हाथ रखा, मानो मुझे छूना चाह रही हो। उस शापित अवरोध के ज़रिए मेरे दर्द को मिटाना चाहती हो।
— “आप अकेले नहीं हैं, आपको पता है। हम यहां हैं। आपका परिवार हर दिन आपके बारे में सोचता है।”
वो शब्द… कवच को भेद कर निकल गए।
क्योंकि खामोशी, चिट्ठियों का अभाव, खबरों का न होना…यही असली जहर है।
भुला दिए जाने का डर। त्याग दिए जाने का डर।
फिर वो दिन आया जब सैमुअल प्रकट हुआ—और सब कुछ बदल गया।
मैं आंगन में, उस भारी भूरे आसमान के नीचे बैठा था, तभी लाउडस्पीकर पर मुझे अपना नाम सुनाई दिया। एक ऐसी पुकार जिसकी मुझे अब उम्मीद नहीं थी। मैं जम गया। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। कौन हो सकता है? जूलिया? मेरी माँ की अचानक मुलाक़ात?
नहीं। असंभव। फ्रांस में बहुत सारी चीजों से निपटना है। बहुत सारी बाधाएं हैं। बहुत दर्द है।
मैं भारी कदमों से उठा, अदृश्य जंजीरों को घसीटते हुए मुलाकात कक्ष तक गया। वह छोटा सा, तार की जाली वाला बूथ, जिसमें पिघले हुए प्लास्टिक और निराशा की गंध आ रही थी।
और ग्रिल के दूसरी तरफ, वह था। सैमुअल।
मेरा बचपन का दोस्त।
मेरा भाई।
झटका इतना तीव्र था कि गिरने से बचने के लिए मुझे कुर्सी पकड़नी पड़ी।
— “सैमुअल…”
वह मुस्कुराया। वही मुस्कान जो सालों पहले, हमारे मोहल्ले की गलियों में, पुराने दिनों में देखने को मिलती थी।

— “क्या तुम्हें सच में लगा कि मैं तुम्हें यहाँ अकेले सड़ने दूँगा?” मेरा गला सूख गया। मेरे अंदर खुशी, दर्द और दिल टूटने का तूफान उमड़ पड़ा। — “तुम यहाँ हो…” — “मैं यहाँ हूँ, भाई।”
सन्नाटा छा गया। ऐसा सन्नाटा जो शब्दों से भी ज़्यादा चीखता है। फिर उसने अपना हाथ जाली के बीच से सरकाया और मेरे हाथ पर रख दिया।
— “तुम ठीक हो जाओगे। सुन रहे हो? तुम ठीक हो जाओगे।”
लेकिन मुझे पता था कि वह झूठ बोल रहा है। मैंने उसकी आँखों में देख लिया था। लोगों की आँखों में वह भाव होता है जब उन्हें एहसास होता है कि हालात उनकी कल्पना से भी बदतर हैं।
उसने एक प्लास्टिक की थैली निकाली। उसमें कुछ बिस्कुट, कुछ सूखे मेवे और दो चॉकलेट बार थे।
— “इसे शामिल करने में थोड़ी मेहनत लगी। लेकिन ऊर्जा की जरूरत तो पड़ती ही है।”
मैंने हल्की सी मुस्कान बिखेरी।— “धन्यवाद, दोस्त।”
हमने हर बात पर और कुछ भी नहीं पर चर्चा की। बचपन की यादें। सड़कों पर बिताई लंबी रातें, दुनिया को नए सिरे से गढ़ना। उस समय जब जीवन सरल और हल्का लगता था।
फिर उसका चेहरा गंभीर हो गया।
— “सुनो… मैं भी इसी के लिए यहां आया हूं।”
उसने कागज का एक मुड़ा हुआ टुकड़ा निकाला।
— “रेड कार्ड। अभी तक आया ही नहीं है।”
मेरा दिल थोड़ा सा उछल रहा है।
- "क्या?"
— “मैं अदालत गया था। उन्होंने कहा कि उन्हें कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ है।”
मैं जम गया। वह कार्ड... वही मेरा टिकट था। इस बात का सबूत कि मेरा मुकदमा खत्म हो गया था, कि मेरी सजा आधिकारिक हो गई थी। इसके बिना, मुझे अनिश्चित काल के लिए यहीं छोड़ दिया जा सकता था, किसी अंधेरी कोठरी में भुला दिया जा सकता था।
— “लेकिन… कई महीने बीत गए! उनके पास तो होगा ही!”

सैमुअल ने भौंहें सिकोड़ते हुए सिर हिलाया।
— “मुझे इससे ज्यादा कुछ नहीं मिल सकता था। और मैं कल वापस जा रहा हूँ।” मैं अचानक उठ खड़ा हुआ, कुर्सी फर्श पर जोर से घिसटते हुए गिर गई।
— “नहीं… बिलकुल नहीं…”
मेरे सीने में घबराहट दौड़ गई। एक गहरा डर।
— “वे मुझे हमेशा के लिए यहीं रखना चाहते हैं, है ना? वे मुझे भूल जाएंगे? मैं यहीं मर जाऊंगा?”
सैमुअल आगे बढ़ा, उसका हाथ ग्रिल पर सपाट टिका हुआ था।
— “नहीं! क्या तुम मुझे सुन रहे हो? नहीं। मैं हर संभव कोशिश करूंगा। मैं जूलिया को फोन करूंगा। मैं वकीलों से संपर्क करूंगा। मैं तुम्हें पीछे नहीं छोड़ूंगा।”
मैं सिर हाथों में लेकर कुर्सी पर वापस बैठ गया।
— “मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता, भाई। मैं अब और इंतजार नहीं कर सकता।” वह हिचकिचाया, फिर उसकी आवाज नरम पड़ गई।
— “बस थोड़ी देर और। रुकिए।”
वह काफी देर तक रुका रहा। हमने बातें कीं। हम हँसे भी—दिखावटी तौर पर, बनावटी तरीके से—खुद को उस बोझ से विचलित करने की कोशिश कर रहे थे जो हम पर हावी था।
और फिर वह चला गया।
मैंने उसे जबड़े भींचे हुए और गला सूखा हुआ देखकर दूर जाते हुए देखा।
और उस रात, मुझे नींद नहीं आई। मैं बैठा रहा। टूटी हुई छत को घूरता रहा।
इंतज़ार करता रहा। उम्मीद करता रहा।
बस एक फोन कॉल ही काफी था। अगले दिन, जूलिया आ गई। वह सब कुछ छोड़कर पहली फ्लाइट से आई थी। जब मैंने उसे देखा, तो मुझे लगा जैसे मैं फिर से सांस ले पा रही हूँ। वह आँसुओं से भरी आँखों से बाड़ की ओर भागी। — “क्या तुम्हें सच में लगा था कि मैं तुम्हें छोड़ दूँगी?” मैंने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने बस उस ठंडी धातु की दीवार के दूसरी तरफ अपना हाथ उसके हाथ से सटा दिया। हम उसी तरह रहे। कुछ मिनट जो अनंत काल जैसे लगे। — “सब ठीक हो जाएगा। उन्होंने पुष्टि कर दी है। रेड कार्ड आ गया है। सब खत्म हो गया है।” वह मुस्कुरा रही थी। लेकिन उसकी आँखें सूजी हुई और लाल थीं। “मैं यहाँ हूँ।
मैं यहीं रहूँगी। हमारे पास साथ बिताने के लिए यह सप्ताह है। और उसके

बाद…” उसने वाक्य पूरा नहीं किया। मैं जानती थी। उसके बाद, वह चली जाएगी। और मैं फिर से अकेली हो जाऊँगी। लेकिन यह सप्ताह—यह हमारा अपना एक अलग ही संसार था।
हर दिन, वह आती थी। वह शब्द लाती थी। यादें। वादे। हम हर चीज़ के बारे में बात करते थे। बाड़ के जाल के बीच से अपने सपनों को फिर से संजोते थे। हम कल्पना करते थे कि आगे क्या होगा। समुद्र के किनारे एक होटल। एक सप्ताह की आज़ादी। बस हम दोनों। — “मैं तुम्हें यहाँ से दूर ले जाना चाहता हूँ। तुम्हें फिर से समुद्र की हवा में सांस लेने देना चाहता हूँ।” — “और मैं तुम्हें गले लगाना चाहता हूँ, हमारे बीच कोई बाड़ न हो।” और वह मुस्कुराई। वही मुस्कान जो महीनों से मुझे परेशान कर रही थी। जिस दिन वह गई, उसने बाड़ पर अपने हाथ सामान्य से अधिक देर तक रखे।— “मैं वापस आ रही हूँ, सुन रहे हो? मैं वापस आ रही हूँ।”— “मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगी।” लेकिन भीतर ही भीतर, मैं जानती थी कि मैं ज़्यादातर खुद का ही इंतज़ार कर रही थी। ज़िंदा रहने का। हिम्मत बनाए रखने का। और वह चली गई। फिर से। लेकिन इस बार, वह मेरे लिए कुछ छोड़ गई—कुछ ऊर्जा। एक छोटी सी रोशनी।
जून के पहले दिन फसल कटाई के मौसम की शुरुआत का प्रतीक थे, और इसके साथ ही नरक की वापसी भी। थाईलैंड में बरसात का मौसम सिर्फ बारिश के बारे में नहीं है, यह प्रकृति के विरुद्ध एक जंग है। पहले से ही गंदी जेल दलदल में तब्दील हो गई। हर दरार से पानी रिस रहा था, जिससे फर्श बदबूदार दलदल बन गया था। दीवारों से गंदा पानी बह रहा था, जिसमें सड़ा हुआ कचरा और कभी-कभार कोई मरा हुआ चूहा सतह पर आलस से तैरता हुआ दिखाई दे रहा था। दुर्गंध असहनीय थी, एक घनी, चिपचिपी गंध जो आपकी त्वचा, आपके कपड़ों, यहाँ तक कि आपके सपनों में भी चिपक जाती थी।
तभी मेरी मुसीबत और भी बदतर हो गई। मेरे पैरों में संक्रमण फैल गया। खुले, रिसते हुए घाव हो गए, जिनसे हर कदम आग की तरह चुभता था। चलना बहुत दर्दनाक था, लेकिन अस्पताल जाने लायक "गंभीर" नहीं था। मुझे आयोडीन से काम चलाना पड़ा, जो बेतुकी कीमत पर खरीदा गया था - सिगरेट के रूप में, एक के बाद एक बोतलें। हर शाम, मैं अपने पैरों पर आयोडीन लगाता था, प्रार्थना करता था कि घाव सूख जाएं, कि यह फैले नहीं।
"यह समय भी बीत जाएगा, चिंता मत करो," एंटोनियो मुझसे कहता था, हालांकि उसकी आंखों में वास्तविक चिंता झलकती थी।

दर्द निवारक दवाओं से मुझे कुछ पल की राहत मिली। एक रास्ता, भले ही अस्थायी ही सही। मैं दोपहर में अपनी कोठरी में वापस आते ही बेहोश होने तक उन्हें खाता रहता था। दर्द मेरा निरंतर साथी बन गया था। लेकिन दर्द से भी बदतर सन्नाटा था। परित्याग का गहरा अहसास।
जूलिया के पत्र, मेरी माँ के पत्र, दोस्तों के पत्र—कभी-कभी आते थे। लेकिन अब और पत्र न मिलने का डर ही असली पीड़ा थी। क्या वे मुझे भूल गए थे? क्या दूरी ने मुझे मिटा दिया था?
जूलिया द्वारा संपर्क किए गए मिशनरी समय-समय पर मिलने आते थे और आशा के संदेश लाते थे। मेरे प्रियजनों के संदेश। वे मुलाकातें अनमोल थीं। सारा आती रहती थी।
वह अपनी कोमल मुस्कान के साथ कहती थी, “हिम्मत रखो। वे सब तुम्हारे बारे में सोचते हैं। तुम अकेली नहीं हो।”
सरल शब्द। लेकिन सच। उन्होंने मुझे उस सारी गंदगी में भी थोड़ी सी ताज़ी हवा दी।
और फिर थे एंटोनियो। एंटोनियो और उनकी कहानियां। दो सिगरेटों के बीच, वह मुझे अपनी बेतुकी कहानियों में डुबो देते थे। एक रात उन्होंने कहा, "जानते हो, मैंने अपने जीवन में समुद्र तटों से ज़्यादा जेलें देखी हैं। लेकिन यह... यह सबसे बुरा है। फिर भी, यह तुम्हें मज़बूत बनाता है।"
बैंकॉक की तंग गलियों में हुई डकैतियों, कार चेज़ और लड़ाइयों की कहानियाँ। एंटोनियो ने 26 वर्षों में हज़ार जिंदगियाँ जी ली थीं। और उसकी कहानियाँ मेरे दिमाग पर पट्टियों की तरह थीं। वे मुझे कहीं और ले गईं, इस कोठरी से बहुत दूर जहाँ मैं धीरे-धीरे हर दिन सड़ रहा था।
मैं उन अनुभवी लोगों में से एक बन गया था। वह व्यक्ति जो नए लोगों को बिल्डिंग 4 के अलिखित नियमों को समझाता था।
फिर, जुलाई में, जैसे ही संक्रमण ठीक होने लगा और घाव दर्दनाक लेकिन सहनीय निशानों में बदल गए, एक ऐसी खबर आई जिसने एकरसता को तोड़ दिया: एक फुटबॉल टूर्नामेंट।
दुखों के ताने-बाने में एक गड़बड़ी।

मार्सिले के लोगों ने - हमेशा की तरह - सब कुछ व्यवस्थित कर दिया था। वे चुपके से जूते, एकदम नई जर्सी और आधिकारिक शॉर्ट्स लेकर आए थे। उन्होंने अच्छी खासी रकम चुकाई थी, शैतान से सौदेबाजी की थी ताकि हमें यह अप्रत्याशित उपहार मिल सके। हमारे लिए, यह सिर्फ एक खेल नहीं था। यह आज़ादी की एक साँस थी।
जैसे ही गेंद ज़मीन पर गिरी, सब कुछ बदल गया। कीचड़ भरा पानी हमारे पैरों के नीचे से हटता हुआ सा लगा। टेढ़ा-मेढ़ा और उबड़-खाबड़ मैदान एक पवित्र स्थान बन गया। हम दौड़े। हम चिल्लाए। हमें पसीना आया। लेकिन महीनों में पहली बार, हमने ज़िंदा होने का एहसास किया। बस इंसान। कैदी नहीं। अपराधी नहीं। साथी योद्धा, विस्मृति के खिलाफ लड़ाई में एकजुट।
“इसे पास करो, लियो!” एंटोनियो हंसते हुए चिल्लाया और एक बच्चे की तरह मेरे पीछे भागा। मुझे याद है कि मैं दौड़ रहा था और अपने पैरों के दर्द को भूल गया था। एंटोनियो, हमेशा की तरह एक शानदार कलाकार, अपने पूरे रंग में था। "क्या तुम खुद गोल करोगे या फिर हम तुम्हारे लिए उसे गिफ्ट में पैक करके देंगे?" फरीद ने आधे मजाक और आधे गंभीरता से चिल्लाते हुए कहा।
जेस्सी पूरी तरह से एकाग्र था, शॉट चूक रहा था और खुद पर हंस रहा था।
प्रोत्साहन की आवाजें आ रही थीं, हंसी के ठहाके गूंज रहे थे। यह खूबसूरत था। यह सरल था। मैंने गोल किया। और मेरी चीख आदिम थी। मुक्ति की दहाड़।
भाग्य पर विजय की दहाड़।
उस दिन, मैं स्वान, अब्देल और फरीद के करीब आ गया। फरीद, शब्दों की बहस का बादशाह, जिसे हमेशा सही साबित होने की जरूरत होती थी, सम्मान का पात्र था।
वह जोर से बोलता था, उससे भी जोर से हंसता था, और अपनी राय को धर्मग्रंथ की तरह बताता था।
मैंने तुमसे कहा था, तुमने वो शॉट इसलिए मिस किया क्योंकि तुम्हारा पोज सही नहीं था। अगली बार मेरी बात सुनना।
इस बात से असहमत होना मुश्किल है, लेकिन वे अपने तरीके से उदार थे। वे खुलकर देते थे, लेकिन शायद ही कभी सुनते थे।
फिर फ्लोरिन था, रोमानियाई। अधिक शांत। कम बोलने वाला। हम अक्सर आधी सिगरेट साझा करते थे। असली तंबाकू एक विलासिता बन गया था, और हर कश एक छोटा विद्रोह था। फ्लोरिन के साथ ज्यादा बोलने की जरूरत नहीं थी। हमारी खामोशी ही सब कुछ कह देती थी।

“लो, आधा ले लो। तुम पर मेरा एक एहसान है,” वह अपना हिस्सा मुझे देते हुए कहता था।
हम ठंडी कंक्रीट पर अगल-बगल बैठकर सिगरेट पीते थे, और जो थोड़ा-बहुत हमारे पास होता था उसे आपस में बाँटते थे। एक शांत दोस्ती। लेकिन गहरी।
वह टूर्नामेंट तूफान में एक विराम था। घुटन में एक सांस। मानवता की एक झलक।
उस रात, अपनी कोठरी में वापस आकर, मेरे पैरों का दर्द कम हो गया था। उसकी जगह एक अच्छी याद की गर्माहट ने ले ली थी।
उसके बाद के दिन सबसे लंबे, सबसे क्रूर थे। अगले ही दिन, परछाइयाँ लौट आईं — घनी, घुटन भरी, निर्दयी।
कोठरी एक मकबरे में बदल गई। साठ कैदी। बीस वर्ग मीटर में साठ आत्माएँ ठूंस दी गईं। शरीर एक-दूसरे से इतने सटे हुए थे कि किसी दूसरे के पसीने को साँस में लिए बिना साँस लेना असंभव था। दुर्गंध। गंदगी। उखड़ी हुई साँसें। हवा भारी थी। भय और निराशा से भरी हुई।
कुछ इंच की जगह के लिए खामोश लड़ाई घूरने की जंग में बदल गई। एक गलत कदम— किसी के क्षेत्र में पैर रखना—और बात बिगड़ गई। बुदबुदाते हुए अपशब्द।
थकी हुई आहें। तनाव किसी जीवित तार की तरह चटक रहा था।
एंटोनियो दीवार के पास सिकुड़कर बैठा था, घुटने उसकी छाती से लगे हुए थे।
उसने मुझे थकी हुई नज़र से देखा, उसका माथा पसीने से तर था।
— “मैंने इससे भी बड़ी एकाकी कोशिकाएँ देखी हैं,” उसने सिर हिलाते हुए बुदबुदाया।
मैंने जबरदस्ती एक कड़वी मुस्कान दी। मैं क्या कह सकती थी? हर रात एक लड़ाई थी। घुटन के खिलाफ। हवा की ज़रूरत के खिलाफ। मेरे पेट में मचलती घबराहट के खिलाफ।
तेज, सफेद रोशनी कभी बुझती नहीं थी, हमारी आँखों को जलाती थी, हमारे सपनों में खलल डालती थी। और हमारे सिर के ऊपर, छत के पंखे की लगातार गूंजती हुई धीमी, निरंतर ध्वनि मेरे दिमाग में हथौड़े की तरह बज रही थी। यह हवा को बिल्कुल भी प्रसारित नहीं कर रही थी। यह बस गर्मी को इधर-उधर फैला रही थी, घुटन को और बढ़ा रही थी, फँसे होने के एहसास को और तीव्र कर रही थी।
मैं रात भर करवटें बदलता रहा, नींद नहीं आई। और जब आखिरकार नींद आई भी, तो वही पुराने थाई फ़िल्मों के सपने बार-बार मेरे दिमाग में चलते रहे। संवाद,

चेहरे, दृश्य, सब मुझे ज़बानी याद थे। वे मेरी रातों को सताते थे और हर सुबह मेरा पीछा करते थे।
और फिर अक्टूबर का महीना आ गया।
एक सुबह, आंगन के अंदर से अफवाहें फैलने लगीं। फुसफुसाहट, एक-दूसरे को देखती निगाहें, दबी हुई आवाजें। यहां तक कि पहरेदार भी सहमे हुए लग रहे थे।
फिर आधिकारिक घोषणा हुई।
राजा की मृत्यु हो गई थी।
इस सदमे की लहर पूरे जेल में एक खामोश लहर की तरह फैल गई। थाई कैदी स्तब्ध रह गए। कुछ रोने लगे, कुछ प्रार्थना करने लगे। कुछ बस वहीं खड़े रहे, आँखें खाली, खोए हुए से। उनके लिए, यह एक दुनिया का अंत था।
हमारे लिए… यह एक वर्जित आशा का जागरण था।
मुझे उस सुबह एंटोनियो का चेहरा याद है—गंभीर, लगभग कांपता हुआ।
— “शायद यही वो पल है जिसका हम इंतजार कर रहे थे,” उसने फुसफुसाते हुए कहा, उसकी निगाहें जमीन पर टिकी हुई थीं।
एक किंवदंती थी, एक परंपरा थी। कि जब भी कोई राजा मरता था, सामूहिक क्षमादान होता था। कैदी बड़ी संख्या में रिहा होते थे। जेल की कोठरियाँ खुल जाती थीं। पुराने लोग इसे एक मिथक की तरह बताते थे। लेकिन मिथक अक्सर सच्चाई पर आधारित होते हैं।
हमारे दिल की धड़कनें तेज हो रही थीं, और हमें यकीन होने लगा था।
लेकिन सबसे पहले, शोक मनाना। परंपरा का सम्मान करना।
हर दिन, ठीक उसी समय, हम सब आँगन में कतार में खड़े होते थे, सामने काली टीवी स्क्रीन होती थी। आठ मिनट का एकदम सन्नाटा। एक शब्द भी नहीं। एक साँस भी नहीं। आह भी नहीं। ज़रा सी भी आवाज़, एक भी गलत कदम—और फिर एकांत कारावास। एक बेरहम सज़ा। हफ़्तों तक अँधेरे में, ठंड में, अकेले, दर्द से तड़पते हुए।
पहले दिन माहौल एकदम तनावपूर्ण था। सन्नाटा हमारे कंधों पर लोहे की तरह भारी था। दूर से आती जेल की हल्की-हल्की आवाज़, धातु के दरवाजों की चरमराहट और मेरे दिल की धड़कन, ढोल की तरह धड़कती सुनाई दे रही थी।
एक रात, मेरे बगल में बैठे एंटोनियो ने एक आह भरी—जो बहुत तेज़ थी। बस एक साँस। घबराहट भरी साँस।
कुछ ही फीट की दूरी पर खड़ा एक गार्ड ऊपर की ओर देखने लगा।

वह घूरता रहा।
लंबा और कठोर।
समय थम सा गया। मेरे चेहरे का रंग उड़ गया। एंटोनियो हिला तक नहीं। उसकी निगाहें ज़मीन पर टिकी थीं। उसकी मुट्ठियाँ भींच गई थीं। वह जानता था। हम सब जानते थे।
गार्ड ने कुछ नहीं कहा। बस दूसरी तरफ देखने लगा।
क्यों? थकान? दया? करुणा?
कोई फर्क नहीं पड़ा। इस बार एंटोनियो बच गया।
लेकिन डर हमारे साथ बना रहा।
दिन-रात, हम मिनट, घंटे, दिन गिनते रहे। हम अपनी कोठरियों की गोपनीयता में, अपने-अपने तरीके से प्रार्थना करते रहे। कि राज फरमान जारी हो। कि चमत्कार हो जाए।
कोठरी के अंधेरे कोनों में, धीमी आवाज़ में हुई बातचीत की गूंज सुनाई देती थी। उम्मीद की फुसफुसाहट, सावधानीपूर्वक बनाई गई योजनाएँ।
— “क्या आपको लगता है कि यह सचमुच होने वाला है?”
— “क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि अंतिम राजा ने पूरे बैंकॉक जेल को रिहा कर दिया था?”
— “क्या होगा अगर वे इस बार इसे बदल दें? क्या होगा अगर… कुछ भी न हो?” आशा के साथ-साथ संदेह भी था। प्रतीक्षा असहनीय हो गई।
और उस इंतज़ार के बीच, मैं गहरे विचारों में खो गया। और कितना समय? क्या मेरी माँ हिम्मत रख पाएगी? क्या जूलिया अब भी मेरा इंतज़ार कर रही थी—या वह आगे बढ़ चुकी थी? मैंने हर चीज़ पर सवाल उठाया: न्याय, भाग्य, अर्थ।
लेकिन मैंने हार नहीं मानी।
मुझे करना पड़ा।
क्योंकि कभी-कभी, उम्मीद की एक छोटी सी किरण ही आपको जीवित रखने वाली एकमात्र चीज होती है।
दिन घुटन भरी लय में घिसटते जा रहे थे, जिनमें काले टीवी स्क्रीन के सामने आठ मिनट का वो जानलेवा सन्नाटा छाया रहता था। आठ मिनट, जिनमें ज़रा सी भी आवाज़, ज़रा सी भी हरकत, हममें से किसी को हफ़्तों के लिए एकांत कारावास में डाल सकती थी। यह निरंतर तनाव का माहौल था। एक खामोश दमन जो हमें अंदर से कुतरता जा रहा था।

लेकिन अफवाहें फैल गईं। आगंतुकों द्वारा फैलाई गईं। सलाखों के पार से रिस गईं। हमारी आंखों के इशारों से फुसफुसाई गईं।
उम्मीद पनपी। छोटी सी, लेकिन अजेय।
एक शाम, हम धूल भरे बल्ब की हल्की रोशनी में एक घेरे में बैठे थे, तभी स्वान हमारे पास आया। उसका चेहरा, जो आमतौर पर भावहीन रहता था, अब संयमित उत्साह से चमक रहा था।
— “मेरे पास एक खबर है,” उसने फुसफुसाते हुए कहा।
मैं सीधा बैठ गया, मेरा दिल तेजी से धड़क रहा था।
— “खबर? किस तरह की?”
उसने चारों ओर जल्दी से नजर डाली, मानो दीवारें भी उसका साथ छोड़ देंगी। — “कुछ दोस्त मिलने आए थे… उनका कहना है कि बाहर हर जगह यही खबर चल रही है। टीवी चैनल, हर कोई इसी के बारे में बात कर रहा है। पुराने लोग कहते हैं कि इस बार राजा सचमुच सबको रिहा कर सकते हैं। उनका कहना है कि पिछली बार बैंकॉक में उन्होंने जेल के द्वार खोल दिए थे। सबको बाहर निकाल दिया था।” इसके बाद गहरी खामोशी छा गई। हममें से हर कोई उन शब्दों को आत्मसात कर रहा था, मुश्किल से ही उन पर विश्वास करने की हिम्मत कर पा रहा था।
अब्देल पालथी मारकर और हाथ बांधकर बैठा था और उसने धीरे से सिर हिलाया। — “मेरी प्रेमिका ने भी यह सुना। उसने बताया कि पटाया के बारों में हर कोई यही बात कर रहा है। उनका मानना है कि यह नए राजा के लिए लोगों का दिल जीतने का एक तरीका हो सकता है।”
मैंने आशा और भय के बीच कहीं एक छोटी सी सांस छोड़ी।
— “लेकिन… क्या यह हम पर लागू होगा? विदेशियों पर? हम जैसे लोगों पर, जिन्हें लंबी सजा मिलती है?”
स्वान ने कंधे उचकाए और अपनी निगाहें इधर-उधर घुमा लीं।
— “किसी को नहीं पता। लेकिन अगर वे जेलें खोल दें… शायद। शायद इस बार…” शायद। यह शब्द परछाई की तरह हमारा पीछा करता रहा। एक शायद जिसका मतलब आज़ादी हो सकता है—या दिल टूटना।
बाद में, मैंने फ्लोरिन को कोठरी के कोने में पाया। वह दीवार के सहारे बैठा था, उसकी नज़रें ज़मीन पर टिकी थीं, और वह घबराकर अपनी उंगलियों के बीच सिगरेट की नोक को घुमा रहा था।
— “तुम्हें लगता है ऐसा होगा?” मैंने उससे धीमी आवाज में पूछा।

उसने कंधे उचकाए, और उसके होठों पर एक कड़वी मुस्कान फैल गई।
— “मुझे नहीं पता। मुझे इस पर यकीन नहीं है।” वह थोड़ी देर रुका, उसकी आँखें गहरी हो गईं। “मैं बस अपने परिवार के बारे में सोचता हूँ। मैंने उन्हें तीन साल से नहीं देखा है। तीन साल से अपने बेटे को गले नहीं लगाया। अपनी पत्नी को चूमा नहीं। वे नहीं आ सकते, बहुत खर्चा है। और मैं, मैं तो यहीं फंसा हुआ हूँ।”
उसने सिगरेट को अपनी उंगलियों में कसकर पकड़ लिया और उसे इस तरह घूरने लगा मानो वह उसे किसी तरह का सुकून दे सके।
— “तुम्हें पता है,” उसने आगे कहा, “अगर मैं बाहर निकल गया, तो कसम से… मैं चला गया। मैं इस घटिया देश से बाहर चला गया। और मैं कभी वापस नहीं आऊंगा।” मैंने चुपचाप सिर हिलाया, उसकी पीड़ा को महसूस करते हुए। मेरे सीने में भी वही जलन थी। अपनों के साथ रहने की वही तीव्र इच्छा।
फिर निको चलकर आया। उस इतालवी व्यक्ति के चेहरे पर अब भी अन्याय और अविश्वास का भाव था। वह हमारे बगल में भारी मन से बैठ गया, उसकी आँखें उदास और भारी थीं।
— “जानते हो सबसे बुरा हिस्सा क्या था?” उसने कर्कश आवाज में कहना शुरू किया। “यह मानना कि मैं आज़ाद था।”
उसने खाली निगाहों से हमारी ओर देखा।
— “दस साल पहले, मुझे यहाँ गिरफ्तार किया गया था। बस कुछ ग्राम। बच्चों वाली बात थी। उन्होंने मुझे छोड़ दिया। मैंने हर्जाना भर दिया। मेरे पास जो कुछ था सब दे दिया। पुलिसवाले ने पैसे ले लिए और कहा कि मामला खत्म हो गया। और मैंने उसकी बात मान ली। मैं आज़ाद हो गया—वाह, मैं आज़ाद हो गया। मैं घर चला गया। दस साल ऐसे जिए जैसे कुछ हुआ ही न हो।”
वह रुका और अपना सिर हिलाया।
— “फिर मैं दो साल पहले वापस आया। छुट्टियाँ मनाने। मेरी पत्नी थाईलैंड के समुद्र तटों का सपना देख रही थी। हम विमान में चढ़े। और फिर… हवाई अड्डे पर। उन्होंने मुझे रोक लिया। फाइल दोबारा खोली। सेना ने सारा पुराना कचरा खोद निकाला था। वो सब कुछ जो हमने पैसों से मिटा दिया था। और उन्होंने मुझे चार साल की सजा सुना दी। एक बचपन में की गई एक मूर्खतापूर्ण गलती के लिए पूरे चार साल।”

सन्नाटा छा गया। यह एक ऐसा बोझ था जिसे हम सब अच्छी तरह जानते थे। एक ही पाप की दो बार—दस बार—सज़ा भुगतने का एहसास।
निको ने सिर हिलाया और कड़वाहट से हँसा।
— “लेकिन शायद… शायद राजा दया कर बैठे। शायद इस बार, मैं आखिरकार घर जा सकूँ।”
शायद।
वह शब्द हमारे बीच एक शांत प्रार्थना की तरह गूंज उठा।
— “और तुम, लियो?” फ्लोरिन ने सीधे मेरी ओर देखते हुए पूछा। “तुम्हें क्या लगता है कि हम यहाँ से निकल पाएंगे?”
मैंने लंबी सांस ली और अपने गंदे हाथों को घूरकर देखा, जिन पर जीवित रहने के लिए बिताए गए दिनों के निशान थे।
— “मुझे नहीं पता,” मैंने फुसफुसाते हुए कहा। “लेकिन अगर ऐसा हुआ तो… मैं तैयार रहना चाहती हूँ। मैं यहाँ भुला दी जाना नहीं चाहती।”
फ्लोरिन ने धीरे से सिर हिलाया। निको ने आह भरी और इतालवी में प्रार्थना बुदबुदाई।
और उस उमस भरी रात में, हम इंतज़ार करते रहे। हर दिन। हर मिनट। क्षितिज को देखते हुए। फुसफुसाहट सुनने की कोशिश करते हुए। कल्पना करते हुए कि बाहर जीवन कैसा हो सकता है।
आशा है कि हम पर मंडरा रहा संकट आखिरकार दूर हो जाएगा।
उस अंधकारमय अध्याय के कुछ सप्ताह बाद, आखिरकार खबर आई। शाही क्षमादान। आधिकारिक आशीर्वाद। पूरी इमारत आशा की लहर से कांप उठी। थाई कैदी खुशी से चीखने-चिल्लाने लगे। यहाँ तक कि दीवारें भी थरथरा उठीं। बड़े पैमाने पर रिहाई की अफवाहें फैलने लगीं, एक ऐसी क्षमादान योजना की अफवाहें जो पूरी सजाओं को माफ कर देगी।
लेकिन मेरे लिए आसमान जल्दी ही अंधकारमय हो गया। इस बार, शाही क्षमादान केवल "उत्कृष्ट" या "बहुत अच्छा" श्रेणी में रखे गए लोगों को ही दिया गया था। मुझे अभी भी "सामान्य" श्रेणी में रखा गया था। जिसका मतलब था कि मैं इसके योग्य नहीं था। यह एक घोर अन्याय था। मैंने अपनी सज़ा स्वीकार कर ली थी। मैंने अपील न करने का फैसला किया था, ताकि शाही क्षमादान पाने का मौका न गँवाऊँ। और फिर भी—कुछ नहीं हुआ। एक भी सज़ा कम नहीं हुई। एक दिन की भी छुट्टी नहीं मिली।

यह सदमा बेहद गहरा था। जब दस्तावेज़ हमारी इमारत की दीवार पर लगाए गए, तो हम सब चुपचाप उन्हें पढ़ते रहे और अपने-अपने हिसाब से हिसाब लगाते रहे। तारीखें, संख्याएँ, सज़ा में कमी। कुछ लोग खुशी के आँसू रो रहे थे। मैं बस वहीं जम सा गया, मेरा पेट गुड़गुड़ा रहा था। मैंने सोचा था कि ज़्यादा से ज़्यादा मेरी सज़ा चार साल कम हो जाएगी। दस साल तक। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। मैं एक कोने में हाथ बांधकर बैठ गई। मेरे चारों ओर चीखें सुनाई दे रही थीं, वो अपार खुशी जिसे देखकर मुझे बहुत ईर्ष्या हो रही थी। जेस्सी मेरे पास आई, उसका चेहरा दमक रहा था।
— “मैं कल रिहा हो रहा हूँ, लियो। कल मैं अपनी बेटी से मिल पाऊँगा। क्या तुम यकीन कर सकते हो?” उसने मुझे गले लगा लिया। उसकी मुस्कान सच्ची थी। लेकिन ऐसा लगा जैसे किसी ने मेरे सीने में चाकू घोंप दिया हो।
लंदन का रहने वाला साइमन भी रिहा हो रहा था। पांच साल जेल में बिताने के बाद, एक ड्रग्स मामले में उसे लगा था कि वह कभी उबर नहीं पाएगा। उसने विश्वास करना छोड़ दिया था।
— “भाई… उम्मीद है कि मैं तुमसे बाहर मिलूंगा, यहाँ नहीं,” उसने भावुक आँखों से फुसफुसाते हुए कहा। मुझे समझ नहीं आया कि क्या कहूँ।
बैग पैक हो चुके थे। ज़िप बंद कर दी गई थी। अगले दिन सुबह पांच सौ से अधिक कैदी इमारत से बाहर निकले। हमारे प्रशिक्षक टोंग ने हमसे हाथ मिलाया, उनकी आँखों में चमक थी।
— “हिम्मत रखो, लियो। तुम बहुत मजबूत हो। तुम जल्द ही बाहर आ जाओगे।”
मैं उसकी बात पर विश्वास करना चाहता था। लेकिन मुझे पता था कि मुझे अभी और इंतजार करना होगा। शायद चार साल और। शायद उससे भी ज्यादा।
मानो इतना ही काफी नहीं था, तनाव और बढ़ गया। रिलीज़ के अगले दिन सुबह, जब मैं अपना बिस्तर ठीक कर रहा था, थाई लड़कों में से एक—जिससे मेरी आमतौर पर अच्छी बनती थी—ने हद पार कर दी। उसने कहा कि यह एक मज़ाक था। एक घटिया मज़ाक। उसने मेरी गुदा में उंगली डालने की कोशिश की।
मैं जम गया। मेरा खून जम गया। मेरी प्रतिक्रिया तुरंत हुई। एक मुक्का— बिल्कुल सहज प्रतिक्रिया। वह फिसल गया और उसका चेहरा ज़मीन पर जा लगा। डर बिजली की तरह मुझ पर छा गया।
मैं तुरंत माफी मांगने लगा, बुरी तरह घबराया हुआ था। “मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था। मैं... मैं ऐसा नहीं करना चाहता था। लेकिन... यह ठीक नहीं है, यार।”

उसने गुस्से से जलती हुई काली आँखों से मेरी ओर देखा। “ठीक है,” उसने बुदबुदाया। लेकिन उसके चेहरे पर नकली मुस्कान ने मुझे अंदर तक कंपकंपा दिया। उसने अभी तक उस बात को भुलाया नहीं था।
बाद में, लॉकरों के पास, उसने पलटवार किया। एक झाड़ू से। असली फावड़ा नहीं, बल्कि एल्युमीनियम का वो पतला सा झाड़ू जिससे हम कूड़ा साफ करते थे। वार बहुत ज़ोरदार था। ठंडा। धातु जैसा। मेरी आँखों के सामने अंधेरा छा गया। मेरी मुट्ठियाँ भींच गईं। मेरा पूरा शरीर तन गया। मैं उसे टुकड़े-टुकड़े करने को तैयार था।
लेकिन एक बड़ा डर मुझे रोके हुए था। बिल्डिंग 5 में स्थानांतरित होने का डर। एकांतवास। नरक।
बट और किट अंदर कूद पड़े, उनकी चीखें पूरी इमारत में गूंज उठीं।
— “रुको! यहाँ नहीं! अभी नहीं!”
मैं पीछे हट गया, दिल ज़ोर से धड़क रहा था, साँसें तेज़ चल रही थीं। वह भी एकदम जम गया था, उसकी आँखें इधर-उधर घूम रही थीं। कमांडर का डर। आगे क्या होगा, इसका डर।
अगले ही दिन, जून ने हमें बुलाया। उसका क्रोध तूफान की तरह उमड़ा। थाई कैदी को कठोर दंड दिया गया—उसकी पीठ पर तीन झाड़ू तोड़ दिए गए। कमरे में सन्नाटा छाया हुआ था।
जहां तक मेरी बात है: अपमान। दो सप्ताह तक लेडीबॉयज़ के सेल में बंद रहा।
मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। या तो इमारत छोड़ दूं या सजा भुगतूं। लेडीबॉयज़ मेरी उम्मीद से कहीं ज़्यादा मिलनसार निकले। वे टूटे हुए दिल थे, ज़िंदगी की मार से बेहाल थे। लेकिन उनमें इंसानियत कूट-कूटकर भरी थी। — उनमें से एक ने मुझसे कहा, “यहां हालात बेहतर नहीं हैं, लेकिन हम जीवित हैं। हम एक-दूसरे का साथ देते हैं।”
मैंने अपनी जगह के लिए प्रतिदिन सिगरेट के दो पैकेट दिए। फर्श का मात्र साठ सेंटीमीटर का टुकड़ा, एक नम दीवार से सटा हुआ। दो सप्ताह घुटन भरी, दमनकारी नरक जैसी जिंदगी। गर्मी और दुर्गंध से भरी एक कोठरी, पसीने और दवा की तीखी गंध त्वचा से चिपकी हुई थी। यहाँ लगभग सभी लोग एचआईवी का इलाज करवा रहे थे।
उनके दुर्बल शरीर दुख और तिरस्कार से भरे जीवन के घावों से भरे थे। कई तो यह भी नहीं जानते थे कि उन्हें यह बीमारी कैसे लगी। वे कभी स्कूल नहीं गए

थे। उनके पास यह बताने के लिए शब्द भी नहीं थे कि उनके साथ क्या हुआ था। बस कई साल पटाया की सड़कों पर भटकते रहे, बेघर, भुला दिए गए, उस दुनिया के हाशिये पर जीवन यापन करते रहे जिसने उन्हें पीछे छोड़ दिया था।
— “तुम्हें पता है, लियो,” सबसे उम्रदराज लोगों में से एक, नारिन ने एक घुटन भरी रात में मुझसे धीरे से कहा, “हमें कभी पता नहीं चला कि ये बीमारियाँ कैसे लगती हैं। हम बस इतना जानते हैं कि एक दिन, तुम्हें ये हो जाती है। और फिर बस बीमारी बढ़ती ही जाती है।”
हर रात, हम राज़, शरमाती हंसी, दर्द के टुकड़े साझा करते थे। तंग जगह, उमस, मच्छरों, चिपचिपी और गंदी दीवारों के बावजूद, वहाँ एक गर्माहट थी। एक सच्ची, बेबाक इंसानियत।
— “हमारे पास कोई विकल्प नहीं था,” सोमचाई ने एक बार मुझसे कहा, उसकी आँखें खालीपन में खोई हुई थीं। “मेरे परिवार ने मुझे पंद्रह साल की उम्र में घर से निकाल दिया था। मैंने जैसे-तैसे अपना गुजारा किया। यहाँ, हम एक-दूसरे की मदद करते हैं। या तो यही करो, या मर जाओ।”
उनकी कहानियों ने मेरा दिल तोड़ दिया, लेकिन साथ ही साथ मेरे मन में उनके प्रति गहरा सम्मान भी जगाया। उनका शांत साहस। अन्याय, पीड़ा और भुला दिए जाने के बावजूद उनका दृढ़ संकल्प। उनके बिखरे हुए जीवन के सामने मैं खुद को बहुत छोटा महसूस कर रहा था।
रात में गर्मी असहनीय हो जाती थी। मैं फर्श पर पड़े अपने साठ सेंटीमीटर के हिस्से पर लेट जाता, आँखें छत पर गड़ाए, भारी साँसों और दबी हुई सिसकियों को सुनता रहता। लेकिन उस नरक जैसे अनुभव के बावजूद, उन दो हफ़्तों ने मेरी आँखें खोल दीं।
उस सारी अराजकता में एक अप्रत्याशित मानवता छिपी हुई थी। घायल आत्माएं, फिर भी खड़ी थीं, हर दिन अदृश्य शक्तियों से लड़ रही थीं।
और किसी तरह, उस अंधकार और पीड़ा के बावजूद, वे दो सप्ताह मेरे साथ हमेशा के लिए रहेंगे। एक सबक। एक मार्मिक, अविस्मरणीय स्मृति।
अंततः, उस थाई व्यक्ति का तबादला बिल्डिंग 5 में कर दिया गया। और मैं अपनी कोठरी में लौट आया।
लेकिन कुछ बदल गया था। मैं खाली था। थका हुआ। टूटा हुआ।

मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। दो साल इस नरक में। यादों, विश्वासघातों, भयों का बोझ। मार्को जा चुका था। टोनी भी दूर चला गया था। मेरी मुलाक़ातें भी कम हो गई थीं। मेरे पास यहाँ कुछ भी नहीं बचा था।
एक सुबह मैंने फैसला किया, "मैं बैंकॉक में स्थानांतरित होना चाहता हूँ।" फ्रांसीसी लड़कों का चेहरा पीला पड़ गया। "पक्का?" फरीद ने फुसफुसाते हुए कहा। "बैंकॉक हिल्टन... वो जगह तो नरक है।"
मैंने जवाब दिया, "मैं पहले से ही नरक में हूँ। मुझे यहाँ से निकलना होगा। मुझे... मुझे हवाई अड्डे के करीब होना होगा। मुझे निकास द्वार के करीब होना होगा।"
सारा ने अपनी आखिरी यात्रा के दौरान कहा था: "क्या आप निश्चित हैं? वहां तो और भी मुश्किल होने वाला है।"
"कोई बात नहीं। मुझे ताज़ी हवा चाहिए। मुझे एक नई शुरुआत चाहिए।"
मेरी माँ ने सारा से फोन पर बात करते हुए रोते हुए कहा, "बैंकॉक नहीं... वहाँ नहीं। लोग कहते हैं कि वहाँ हालात और भी बदतर हैं।"
लेकिन मैंने मन बना लिया था। मैं यहाँ नहीं रुक सकता था। यहाँ नहीं। इन दीवारों के भीतर नहीं, जहाँ मौत की दुर्गंध फैली हुई थी।
मुझे कुछ और देखने की ज़रूरत थी। मुझे यह विश्वास करने की ज़रूरत थी कि कहीं न कहीं अभी भी आशा की किरण बाकी है।
मुझे किसी चीज़ का सहारा चाहिए था। जीवन का। आशा का। जो कुछ भी मेरे पास बचा था उसका।

अध्याय 11: अज्ञात में छलांग
एक सुबह, जब हम आँगन में एंटोनियो और बाकी साथियों के साथ मुक्केबाजी का अभ्यास कर रहे थे, अचानक लाउडस्पीकरों से मेरा नाम गूंज उठा। पुकार स्पष्ट, ठंडी और निर्णायक थी। जाने का समय हो गया था।
थाईलैंड में, सुरक्षा कारणों से, वे आपको स्थानांतरण के बारे में पहले से कभी चेतावनी नहीं देते। कहीं कोई भागने की कोशिश न कर ले। और उस अचानक हुई क्रूरता ने मेरे अंदर चिंता, एड्रेनालाईन और उत्तेजना का एक हिंसक मिश्रण पैदा कर दिया। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था।
मैं कहाँ जा रहा था? क्लॉन्ग प्रेम? बैंकॉक रिमांड? किसी को ठीक से पता नहीं था। ज़्यादातर लोगों का मानना था कि मुझे रिमांड पर भेजा जाएगा, जैसे हाल ही में सज़ा पाए कैदियों को भेजा जाता है। यही तर्क था। रिमांड अनिश्चितताओं का अड्डा था।
एक ऐसी जगह जहाँ भूली हुई आत्माएँ न्याय या मुक्ति की प्रतीक्षा करती थीं। और मार्सिले के सभी लोगों ने मुझे एक ही बात कही थी: "लियो, अगर तुम वहाँ पहुँच गए, तो वह बिलकुल नरक है। तुम्हें पटाया की भी याद आएगी।"
मुझे पता नहीं था। मुझे बस इतना पता था कि मेरा समय आ गया है।
मुझे जल्दी से अपना सामान इकट्ठा करना पड़ा—मेरी पढ़ाई की किताबें, मेरे उपन्यास, मेरे नोट्स, जूलिया और मेरी माँ के पत्र। फ्रांसीसी और मार्सिले के लोगों ने मेरी मदद की, हर कोई एक बैग लिए हुए था, और हर कोई अपनी आँखों में दिख रही जलन को छिपाने के लिए कोई अजीब सा मजाक कर रहा था।
यह महज विदाई नहीं थी। यह एक अज्ञात की ओर प्रस्थान था।
रूसी, ईरानी, ब्रिटिश—वे सभी जिन्होंने मेरे साथ इस नरक को साझा किया था— मुझसे हाथ मिलाने आए। दुर्भाग्य में भाई। जीवन से टूटे हुए, लेकिन इन दीवारों के भीतर पुनर्निर्मित हुए लोग।
खामोशी से भरे आलिंगन थे। निगाहें एक-दूसरे पर कुछ देर तक टिकी रहीं। फरीद ने मेरे कंधे पर हाथ रखा। “चिंता मत करो, लियो। बैंकॉक अंत नहीं है। यह तो बस एक और अध्याय है।” मैंने उसकी ओर देखा, मेरे होठों के कोने पर एक थकी हुई मुस्कान थी। “हाँ… एक और अध्याय जो लंबा खिंचता है। लेकिन हम फिर मिलेंगे, है ना?” उसने सिर हिलाया। कुछ भी निश्चित नहीं था, लेकिन हम अनिश्चित वादों से ऐसे चिपके हुए थे जैसे वे जीवन रेखा हों।

मैंने टोनी को अलविदा कहने के लिए समय निकाला, जिसने बिल्डिंग 3 में पुस्तकालय का प्रबंधन करते हुए और विदेशी कैदियों की मदद करते हुए कुछ शांति पाई थी। उसने मुझे कसकर गले लगाया। - "हिम्मत रखो, लियो। मैं यहीं रुक रहा हूँ, अपनी पत्नी का इंतज़ार कर रहा हूँ। शायद... शायद मैं अपना खर्च निकाल पाऊँगा।" उसकी योजना स्पष्ट थी, उसका सपना ज़िंदा था। मैं? मेरा तो बस एक ही सपना बचा था: फ्रांस वापस जाना। साँस लो। जियो। भूल जाओ।
और फिर आख़िरी पल। मैं जेल के द्वार पर पहुँचा, उन अधिकारियों को सिर हिलाकर अभिवादन किया जिन्होंने अपनी भूमिकाओं के बावजूद कभी-कभी मानवता की झलक दिखाई थी। कमांडिंग ऑफिसर मनून—वही जो मेरी माँ से मिला था, वही जिसने मुझे पैकेज अंदर लाने में मदद की थी—ने मुझे आख़िरी नज़र से देखा। शायद दया भाव से। शायद बस अलविदा।
लेकिन मेरे बैग यादों से भरे हुए थे, एक ऐसे जीवन से लदे हुए थे जिसे पीछे छोड़ने के अलावा मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। मुझे उसका कुछ हिस्सा छोड़ना पड़ा। किताबें। कपड़े। मैंने अपने कुछ अंश वहीं छोड़ दिए, क्योंकि मेरे पास कोई विकल्प नहीं था।
और फिर जंजीरें। आखिरी बार। ठंडी और जंग लगी, वह प्राचीन यातना यंत्र जिसे वे "प्रक्रिया" कहते थे। मैं घुटनों के बल सिर झुकाए बैठा रहा, जबकि उन्होंने मेरे टखनों को उन जंजीरों से जकड़ दिया जो सदियों की पीड़ा को समेटे हुए प्रतीत होती थीं। क्रूर। अपमानजनक। एक अंतिम अनुस्मारक कि स्वतंत्रता अभी भी एक मृगतृष्णा मात्र थी।
उन्होंने मुझे एक छोटी सी गाड़ी में ठूंस दिया—एक बंद धातु का डिब्बा, जिसमें मुश्किल से बैठने की जगह थी।
मुड़ा हुआ। तंग।
उन्होंने मुझे खाना दिया—चावल और चिकन—लेकिन वह दिन भर धूप में पड़ा रहा था।
मैंने उसे छुआ तक नहीं।
दो और कैदी मेरे साथ आ गए। उन्हें चोनबुरी में छोड़ा जा रहा था। किसी ने कुछ नहीं कहा। सन्नाटा घना था। दम घोंटने वाला।
जब इंजन चालू हुआ और मेरे पीछे जेल के द्वार बंद हो गए, तो मुझे कुछ अजीब सा महसूस हुआ। हवा। असली हवा। पास ही से आती समुद्री हवा। नमक, रेत और आयोडीन की वह गंध। मैंने इसे सालों से नहीं सूंघा था।

मैंने अपनी आँखें बंद कीं और साँस ली। पहियों वाले पिंजरे के अंदर भी आज़ादी की साँस।
सड़क पर चलते हुए, मुझे समुद्र तटों, राहगीरों और परिवारों की झलकियाँ दिखाई दीं। लोग बस... जी रहे थे। साधारण जीवन। सरल जीवन। और उनमें से किसी को भी यह नहीं पता था कि उस रंगीन खिड़की के पीछे, जंजीरों में जकड़ा एक आदमी भूखी आँखों से उनकी दुनिया को घूर रहा था।
— “आज़ादी बिल्कुल सामने है… और तुम उसे छू भी नहीं सकते,” मैंने मन ही मन बुदबुदाया।
यात्रा लंबी खिंचती चली। हम चोनबुरी पहुँच गए। बाकी दोनों को उतार दिया गया। फिर सिर्फ मैं ही रह गया।
चिंता और भी गहरी होती चली गई। क्लॉन्ग प्रेम? बैंकॉक रिमांड? मैं आखिर कहाँ पहुँचूँगा?
घंटों सड़क पर रहने के बाद, वाहन आखिरकार धीमा हो गया। दरवाज़े चरमराते हुए खुले। एक विशाल दीवार। एक ऊँचा परिसर।
प्रेम बंद करें. रीमांड नहीं. प्रेम बंद करें.
लंबी अवधि की सजाओं के लिए जेल। कुख्यात बैंकॉक हिल्टन।
मेरा दिल और तेज़ी से धड़कने लगा। भय और राहत का एक अजीब मिश्रण। कम से कम अब मुझे पता तो चल गया।
द्वार खुल गए। विशाल। विस्मयकारी। ऐसा लगा जैसे किसी शहर में कदम रख दिया हो। गलियारे गलियों जितने चौड़े। लोहे जैसी धूसर दीवारें। हर कदम मेरे सिर में हथौड़े की चोट की तरह गूंज रहा था।
नीली वर्दी पहने अधिकारी इंतज़ार कर रहे थे। अलग। सख्त। ठंडा।
उन्होंने मेरी पूरी तरह से तलाशी ली—हर एक सिलाई, हर एक जेब। फिर वे मुझे लंबे, खाली गलियारों से नीचे ले गए, जैसे कोई सुनसान हवाई अड्डा हो। उन्होंने मुझे एक मंद रोशनी वाले कमरे में अकेले इंतजार करवाया। समय धीरे- धीरे बीतता गया। आखिरकार, एक आदमी अंदर आया, बिना मुस्कुराए मेरी तरफ घूरा और बस इतना कहा:
आपका स्वागत है। अब यही आपका घर है।

फिर वे मुझे केंद्रीय केंद्र तक ले गए, जो कैदियों के आवागमन का एक प्रकार का रेलवे स्टेशन था। छह पंख। छह दिशाएँ। एक मानव चींटी का टीला जहाँ प्रत्येक गलियारा एक अलग भाग्य की ओर ले जाता था।
“भवन 7,” अधिकारी ने आदेश दिया।
मैंने गहरी सांस ली। प्रवेश भवन। मेरी नई दुनिया।
इमारत संख्या 7 ने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया। प्रवेश द्वार पर, बाईं ओर, एक छोटा सा लकड़ी का घर था - प्रमुख का कार्यालय। सादा, लेकिन बेदाग। एक अजीब तरह से गर्मजोशी भरा, जैसे कोई ग्रामीण चौकी हो।
मेरे सामने, केंद्रीय आंगन था। छोटा, लेकिन साफ-सुथरा और व्यवस्थित। एक हल्के रंग से रंगा हुआ फुटबॉल मैदान उस जगह की रूपरेखा बना रहा था, मानो एक फुसफुसाता हुआ निमंत्रण हो कि कुछ पल के लिए चारों ओर की कुचलने वाली दीवारों को भूल जाओ।
आगे चलकर, एक नीची दो मंजिला इमारत। नंगे कंक्रीट की इमारत, ताज़ा रंगी हुई।
यही उस जगह का केंद्र था।
वहाँ एक अजीब सी शांति थी—लगभग अवास्तविक। हम लगभग सौ ही लोग थे। पटाया की भयावह भीड़भाड़ के बाद, यह सन्नाटा बेचैन कर देने वाला था। कोई शोर नहीं। कोई लड़ाई नहीं। बस... एक गहरी, गुनगुनी खामोशी।
पीछे की तरफ: शावर। साफ पानी से भरे टब, जिन्हें हर सुबह फिर से भर दिया जाता है।
और—अद्भुत चमत्कार—एक असली शौचालय।
सीट के साथ।
एक असली शौचालय।
महीनों तक गंदे शौचालयों में रहने के बाद, उस तरह की विलासिता की उम्मीद करना भी अब असंभव था।
दाईं ओर, धातु के लॉकर। एक छोटा, साफ-सुथरा पुस्तकालय। एक साधारण कैंटीन जहाँ कैदी बैठकर खाना खा सकते थे।
कुछ ही विदेशी थे। बस सरसरी निगाहें, झुकी हुई निगाहें। मुझे एहसास हुआ कि मुझे घुलमिल जाना होगा। चुपचाप। कोई हाथ नहीं हिलाया।
उस कुत्ते ने मेरा ठंडे लहजे में स्वागत किया।

“यहाँ कोई परेशानी नहीं है,” उन्होंने कहा। “अगर आप नियमों का पालन करते हैं, तो आप यहीं रहेंगे। अगर नहीं करते, तो आपका तबादला हो जाएगा।”
मैंने सिर हिलाया। संदेश प्राप्त हुआ।
फोटो और फिंगरप्रिंट लेने के बाद, उन्होंने मुझे सेल नंबर 3 में रखा। मैं धीरे से अंदर गया। एक साफ कमरा। खाली दीवारें। कोई बिस्तर नहीं। फर्श का सिर्फ एक कोना और तीन पतले कंबल जिन्हें मुझे ठंडे कंक्रीट से खुद को बचाने के लिए एक के ऊपर एक रखना पड़ा।
वह मेरी जगह थी।
मेरी जिंदगी का एक छोटा सा हिस्सा।
तभी एडी मेरे पास आया। एक ईरानी लड़का। दमदार। समय के साथ उसकी आँखें सख्त हो गई थीं।
वह वहां छह साल से था। उसने मुझे साफ-साफ बताया कि वह पहले एक ड्रग तस्कर था।
“मैंने यहाँ रहने के लिए पैसे दिए हैं,” उसने कहा। “वार्डन को पैसा पसंद है। पैसे दो, शांति पाओ।”
उन्होंने मुझे उन गिरे हुए मंत्रियों के बारे में भी बताया—बड़े नाम, अब कैदी। अभी भी अमीर। अभी भी विशेषाधिकार प्राप्त।
“यह जगह उनके लिए साफ-सुथरी रहती है। उनके लिए शांत रहती है। लियो, अगर तुम्हें भी ऐसी शांति चाहिए, तो उसके लिए कीमत चुकानी पड़ेगी।”
उस रात, एडी की बातें सुनकर मुझे एहसास हुआ कि इस जेल में जीवित रहना केवल ताकत से ही नहीं आता। यह बुद्धिमत्ता से आता है। सही गठबंधनों से आता है। मैं एक नए युद्ध की शुरुआत में था।
“स्वागत है,” उसने कहा। “आप यहाँ जीवित रह सकते हैं। अगर आपको पता हो कि कैसे।”
मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। उस रात, मैं अपने तीन कंबलों पर लेट गया, पीठ में दर्द हो रहा था, लेकिन मेरा दिल थोड़ा हल्का था।
मुझे पता था कि मुझे अनुकूलन करना होगा। मुझे सीखना होगा।
लेकिन कम से कम अभी के लिए, उस रात… मुझे थोड़ी शांति मिली। मुझे थोड़ी उम्मीद थी।

बिल्डिंग 7 में शुरुआती कुछ दिन अजीब थे। चारों ओर गहरी खामोशी छाई हुई थी। कोई चीख-पुकार नहीं थी। कोई अफरा-तफरी नहीं थी। बस कंक्रीट पर कदमों की हल्की आवाज, कोनों में फुसफुसाती बातचीत सुनाई दे रही थी।
यह लगभग शांतिपूर्ण था…लगभग।
सब कुछ पहले से ज्यादा साफ-सुथरा था। अधिक व्यवस्थित।
शौचालय एकदम चमक रहे थे। पानी के बेसिन हमेशा भरे रहते थे।
यह सब अवास्तविक सा लग रहा था।
और फिर… एक्सल आया।
मैंने उसे पहली बार छोटी कैंटीन की मेज के किनारे पर अकेले बैठे देखा, उसकी बाहें मुड़ी हुई थीं। लंबा, चौड़ा, पत्थर जैसी आँखें। उसकी गहरी त्वचा जेल की फीकी वर्दी से बिल्कुल अलग दिख रही थी। उससे एक अलग ही आभा निकल रही थी — उन पुरुषों की आभा जिन्होंने दुनिया पर अविश्वास करना सीख लिया है। सहज रूप से, मुझे लगा कि वह अमेरिकी है। शायद यह उसके बैठने का तरीका था। उसकी कद-काठी। उसकी ऊर्जा।
उन्होंने ही चुप्पी तोड़ी। “तुम नए हो, है ना?” उनकी आवाज़ गहरी और स्थिर थी। मैंने सिर हिलाया। “हाँ। अभी-अभी आया हूँ।”
उसने हल्की सी मुस्कान दी, उन मुस्कानों में से एक जो कभी आँखों तक नहीं पहुँचती। "मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ... खैर, कुछ हफ़्ते पहले।"
उन्होंने अपने सामने वाली कुर्सी की ओर इशारा किया। मैं उस पर बैठ गया। “एक्सल,” उसने सरलता से कहा। “लियो।”
हमने एक-दूसरे को निगाहों से देखा—जिनमें अनकही समझ झलक रही थी। उस तरह के दर्द को शब्दों की ज़रूरत नहीं थी।
“फ्रेंच?” उसने थोड़ा आश्चर्यचकित होकर पूछा। “हाँ। आप?” उसने ऐसे सिर हिलाया जैसे प्रश्न का उत्तर देने की आवश्यकता ही न हो। “मैं भी फ्रेंच।” भाग्य, या शायद महज एक क्रूर संयोग, हमें यहाँ ले आया था।
“आपको कब गिरफ्तार किया गया था?” मैंने पूछा। उसने छत की ओर देखा, मानो तारीख ढूंढ रहा हो। “फरवरी 2015। क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी।”
मुझे घबराहट में हंसी आ गई। “मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। मार्च। नकली नोट।” उसकी भौहें ऊपर उठ गईं, उसकी आँखों में अविश्वास की एक झलक थी। “सच में?” “सच में।” मैं रुक गई।

वह अपनी कोहनियों पर झुक गया और अपनी आवाज़ धीमी करते हुए बोला, “इससे पहले मैं फुकेत में था। वह जेल नरक थी। उसकी तुलना में पटाया एक पांच सितारा होटल है।”
मैंने मुंह बनाया। “मैं अभी पटाया से आया हूँ। यकीन मानिए, यह क्लब मेड नहीं था।”
एक्सल ने धीरे से सिर हिलाया, उसकी गहरी आँखें यादों में खो गईं। “इससे भी बुरा हाल था। फुकेत एक बुरे सपने जैसा था। लेकिन हम लोग और भी हैं, तुम्हें पता है। क्राबी में मेरी मुलाकात कुछ फ्रांसीसी लड़कों से हुई थी, उनके तबादले से पहले। वे जल्द ही बैंकॉक पहुँचने वाले हैं। हम जितने सोचते हैं उससे कहीं ज़्यादा हैं... पूरे देश में फैले हुए हैं।”
उस विचार ने मुझे भयभीत कर दिया। हम वहाँ अलग-थलग पड़े थे, मानचित्र के उन कोनों में जीवित रहने की कोशिश कर रहे थे जिन्हें हममें से कोई नहीं देख सकता था।
मैंने फुसफुसाते हुए कहा, "क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि अगर हम सब एक ही जगह पर होते तो क्या होता?"
एक्सल ने कंधे उचकाते हुए कहा, "इतना बुरा नहीं होगा। साथ में इंतज़ार करना। लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे हमें कहाँ छोड़ते हैं।" “हम डटे रहेंगे, भाई,” मैंने धीरे से कहा। “हमें डटे रहना ही होगा।”
एक्सल ने धीरे से सांस छोड़ी, उसकी आंखें शून्य में खोई हुई थीं। "यह बहुत लंबा है। हद से ज्यादा लंबा।"
कनेक्शन तुरंत हो गया। वही दुख। वही कहानी। वही अंतहीन प्रतीक्षा।
हमने खूब बातें कीं। उसने मुझे यहां के अपने शुरुआती दिनों के बारे में बताया—कि वह कितना अकेला महसूस कर रहा था, सदमा, सन्नाटा। कैसे वह कुछ चुनिंदा बातचीत और छोटे-छोटे इशारों से चिपका रहता था।
“मुझे यहां आए हुए कुछ ही हफ्ते हुए हैं, लेकिन ऐसा लगता है जैसे कई साल बीत गए हों,” उन्होंने अपनी गर्दन के पिछले हिस्से पर हाथ फेरते हुए कहा, वे स्पष्ट रूप से थके हुए लग रहे थे। “मुझे पता नहीं था कि क्या उम्मीद करनी है… लेकिन आप जल्दी सीख जाते हैं।”

मैंने उसे मार्सिलेवासियों के बारे में, टोनी और मार्को के बारे में बताया। जिन जिंदगियों से हमारा सामना हुआ, जो उम्मीद हमने खो दी।
उन्होंने सोच-विचार करते हुए सिर हिलाया। "मुझे लगता है मैंने उम्मीद करना छोड़ दिया है। मैं बस किसी तरह हिम्मत बनाए रखने की कोशिश करता हूँ।
एक-एक दिन करके।"
और मुझे लगा कि मुझे समझा गया है।
उसके सीने पर जो सुन्न भार था, वही भार मेरे सीने पर भी था।
मैंने दृढ़ता से कहा, "तो फिर हम साथ रहेंगे। हम एक-दूसरे की मदद करेंगे।" इस बार उसने मुझे सच्ची मुस्कान दी। “हाँ। हम तो युद्ध में साथी हैं।”
उस शाम हमने बिस्कुट का एक पैकेट साझा किया। कुछ खास नहीं था। लेकिन यह… सामान्य सा लगा।
"यह जगह पटाया से भी ज्यादा साफ है," मैंने मुंह में खाना भरे हुए बुदबुदाया।
एक्सल ने सिर हिलाया। "हाँ। लेकिन ये अभी भी वही पुरानी बात है। दीवारों पर बस पेंट की एक नई परत चढ़ी हुई है।"
उन्होंने मुझे बताया कि कभी-कभी स्वयंसेवक आते थे। महिलाएं परिवारों से संदेश और छोटे-छोटे उपहार लेकर आती थीं।
“क्या अभी तक कोई मिलने आया है?” मैंने उम्मीद से पूछा। उसने सिर हिलाया। “अभी तक नहीं। लेकिन वे जल्द ही आने वाले हैं। आपको पंजीकरण कराना होगा। वे खबरें लाते हैं। चिट्ठियाँ लाते हैं।”
मेरे गले में एक गांठ सी बन गई। समाचार। बस यही तो मैं चाहता था।
“और तुम? घर से कोई खबर मिली?” उसने पूछा। “सारा मुझे संदेश भेजती है। मेरी माँ से। जूलिया से… बस यही मुझे हिम्मत देता है।”
उसने सहमति में सिर हिलाया। फिर हमारे बीच सन्नाटा छा गया। गहरा, लेकिन किसी तरह सुकून देने वाला।
एडी कभी-कभी हमारे साथ शामिल हो जाता था। वह चुपचाप बैठ जाता था, उसकी निगाहें हमारी खाली प्लेटों पर टिकी रहती थीं।
“क्या तुम लोगों को भूख लगी है?” वह सीधे-सादे अंदाज़ में पूछता था।
हम सिर हिलाते।
चुपचाप।

वह बिना कुछ कहे उठ जाता और थोड़े से चावल या मांस के कुछ टुकड़े लेकर लौट आता। सचमुच, बस टुकड़े ही होते थे... लेकिन वे सोने के समान लगते थे।
यह कुछ खास नहीं था। लेकिन कुछ तो था। एक इशारा। एक ऐसी दुनिया में दयालुता की एक झलक, जहाँ दयालुता नाम की कोई चीज नहीं थी।
“तुम्हें मजबूत रहना होगा,” वह फुसफुसाते हुए वापस बैठ गया। “यहाँ, हर कोई अपने लिए है। लेकिन कभी-कभी… एक-दूसरे का ख्याल रखना पड़ता है।”
एडी अजीब था। एक पल दूर, अगले ही पल मौजूद। एक ऐसा आदमी जो अपने ही राक्षसों से आकारित था।
वह कभी-कभी चुपचाप हमें देखता रहता था। मानो वह हमारे भीतर चल रहे युद्ध को देख सकता हो। और शायद... वह देख भी सकता था।
दिन धीरे-धीरे और भारीपन से बीतते थे। रातें तो और भी ज्यादा। हम पचास अन्य कैदियों के साथ नंगे फर्श पर बिछी पतली चादरों पर सटकर सोते थे। हममें से हर कोई एक कोना बनाने की कोशिश करता था, एक दिनचर्या बनाने की, इस अराजकता के बीच अपनी एक अलग दुनिया बनाने की। हालांकि कोठरी में बहुत भीड़ थी, फिर भी पटाया की कोठरी से कहीं ज्यादा खुली थी—यह एक थम सी रोजमर्रा की जिंदगी में एक छोटी सी राहत थी।
और फिर था इंतज़ार। लगातार इंतज़ार। वो धुंधली सी उम्मीद कि कोई चिट्ठी आएगी, कोई गार्ड तुम्हारा नाम पुकारेगा, किसी तरह का कोई संकेत इस भ्रम को तोड़ देगा कि यह सब बस एक बुरा सपना है।
लेकिन दिन एक जैसे लगने लगे—एक ही ढर्रे पर। भूख। थकान। अकेलापन।
हम छोटी-छोटी रस्मों से चिपके रहे: कैंटीन, कम भोजन, बिस्कुट बाँटना। हमने दिखावा किया कि हमारी आदतें हैं, कि समय पर हमारा कुछ नियंत्रण है। लेकिन यह सब झूठ था।
लेकिन भूख बहुत भयानक थी। हर दिन हम इससे जूझते थे। खाना पटाया से थोड़ा बेहतर था, बंद डिब्बों में परोसा जाता था। लेकिन फिर भी पेट नहीं भरता था। मेरी माँ के पत्रों का जवाब आने में बहुत समय लग रहा था। मैं लिखती रही, यह जाने बिना कि मेरे शब्द उन तक पहुँच भी रहे हैं या नहीं। मैंने पैसे माँगे, यह जानते हुए कि मेरे पास अब कुछ बचा ही नहीं था। मेरे परिवार ने पहले ही अपना सब कुछ दे दिया था। यह एक ऐसी सच्चाई थी जिसे मैं स्वीकार नहीं करना चाहती थी।

एक दिन, गुनगुने चावल के दो निवाले खाते हुए, मैंने धीरे से कहा, "मैं यहीं रुकने के बारे में सोच रहा हूँ।"
एक्सल ने ऊपर देखा। "सच में?"
“हाँ। यह शांत है। यह साफ-सुथरा है। और…” मैंने चारों ओर नज़र घुमाई। “यह पटाया नहीं है।”
उसने धीरे से सिर हिलाया। “हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। यहीं रुकना चाहिए।” यह तर्कसंगत था। सरल। यहीं रहो, इस पागलपन से दूर। हम कीमत चुकाने को तैयार थे। कुछ हज़ार यूरो—यही शांति, मौन और मानवता का एहसास दिलाने वाली किसी चीज़ की कीमत थी।
लेकिन हकीकत बहुत जल्दी सामने आ गई।
कुछ दिनों बाद मुझे जूलिया का एक पत्र मिला। और सब कुछ बिखर गया।
उसके शब्द स्पष्ट थे, लगभग तीखे शब्दों में। पैसा खत्म हो चुका था। दो साल वकीलों को फीस देने में, मुझे गुजारा चलाने लायक पैसे भेजने में, कर्ज में डूबने में, बचत खत्म करने में, धोखे का शिकार होने में... कुछ भी नहीं बचा था।
“हम अब ऐसा नहीं कर सकते, लियो। हम बिल्कुल नहीं कर सकते।”
मैंने उन पंक्तियों को बार-बार पढ़ा, और हर बार मेरा सीना थोड़ा और कसता गया।
मैंने एक्सल को तुरंत नहीं बताया। लेकिन उसने देख लिया था। उसे पता चल गया था।
“तुम ठीक हो?” उसने धीरे से पूछा।
मैंने कंधे उचकाते हुए कहा, "हमें अपनी योजना बदलनी पड़ेगी।"
बिल्डिंग 7 में जो सन्नाटा कभी मुझे सुकून देता था, अब घुटन भरा हो गया था।
दम घोंटने वाला।
ईरानी सरदार एडी, मानो अलग-थलग और अपने ही विचारों में डूबा हुआ सा लग रहा था। एक शाम, दीवार से टेक लगाकर बैठा, उसकी आँखें कहीं और देख रही थीं, और उसकी आवाज़ धीमी थी।
"दवा लेने से रातें आसान हो जाती हैं," उसने फुसफुसाते हुए कहा।
वह यहाँ के अधिकांश लोगों की तरह इलाज करवा रहे थे। पूर्व मंत्री भी— सुरक्षित, एकांतप्रिय, मानो भूतों की तरह। वे बात नहीं करते थे, अकेले चलते

थे, अधमरे से। यहाँ की शांति स्वाभाविक नहीं थी। यह कृत्रिम थी। एकांत और दवाओं के सहारे कायम थी।
एक्सल के साथ, सच्चाई स्पष्ट हो गई।
“अगर हम यहीं रहे तो भूत बन जाएंगे,” उसने एक रात धीरे से कहा।
मैंने सिर हिलाया। "हम ऐसा नहीं कर सकते।"
हमने अपना फैसला कर लिया। इमारत छोड़ दो। दूसरे हिस्सों के शोर, दुख और पागलपन का सामना करो।
“वे समितियाँ बनाते हैं,” एक्सल ने सिगरेट का कश लेते हुए समझाया। “हम उनके सामने जाते हैं। वे तय करते हैं कि हमें कहाँ रखना है।”
मैंने चिंता से उसकी ओर देखा। "क्या वे हमें अलग कर सकते हैं?"
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, "शायद। उम्मीद है ऐसा न हो।"
अन्य कैदियों ने बिल्डिंग नंबर 1 के बारे में बात की। लंबी अवधि के कैदियों वाला विंग। जहाँ सख्त मिजाज वाले लोग रहते थे। वहाँ जीवन कठिन था, लेकिन अधिक वास्तविक भी। वहीं विदेशी लोग आपस में मिलजुल कर रहते थे। मैंने फुसफुसाते हुए कहा, "देखते हैं।"
“हाँ। देखते हैं।”
लेकिन भीतर ही भीतर मुझे पहले से ही पता था। मैं जहाँ भी पहुँचूँ, वह बिल्डिंग 7 जैसा शांत कब्रिस्तान नहीं होगा।
यह एक अलग तरह का नरक होगा। शोरगुल भरा। क्रूरतापूर्ण। लेकिन शायद अधिक जीवंत।
और कभी-कभी, केवल जीवित रहना ही अपने आप में एक जीत होती थी।
समिति की सुबह एक थप्पड़ की तरह आई; अचानक, कठोर, बेरहम। उन्होंने हमें भोर में जगाया, बिना किसी चेतावनी के, और तैयार होने का आदेश दिया।
एक्सल और मैंने एक-दूसरे को देखा, एक ऐसी नज़र जो सब कुछ कह देती थी।
शब्दों की कोई ज़रूरत नहीं थी। हम दोनों जानते थे कि आज का दिन एक और परीक्षा होगी, एक और अपमान जिसे हमें सहना पड़ेगा।
उन्होंने हमें बिल्डिंग 7 के मुख्य प्रांगण में कतार में खड़ा कर दिया। कमर से ऊपर नंगे बदन, खुरदुरे कंक्रीट पर नंगे पैर, हमारे शरीर पर सिर्फ़ एक चुभने वाली, खुरदरी जेल की पैंट थी। एक ऐसी वर्दी जो व्यवस्था कायम करने का दिखावा करती थी, लेकिन दुख से भरी हुई थी। उसका हर रेशा त्वचा पर खुजली पैदा कर रहा था, हर हरकत के साथ हमें हमारी पहचान का एहसास दिला रहा था। और

कुछ नहीं। न जूते, न कमीज़। बस कपड़े का वो टुकड़ा और वो कुचलने वाला एहसास कि हमारी इज़्ज़त छीन ली गई है।
हवा उमस भरी, घुटन पैदा करने वाली और त्वचा से चिपकी हुई थी, मानो दर्द की दूसरी परत हो। पसीना पहले से ही हमारी छाती से बह रहा था, गर्मी से नहीं, बल्कि शर्म से।
वे एक लंबी प्लास्टिक की मेज के पीछे बैठे थे। शीर्ष अधिकारी। इस छोटी सी जेल जैसी संस्था के मुखिया, न्यायाधीशों की तरह चुपचाप और निर्मम बैठे, अपने ही अधिकार में डूबे हुए। वे हमें ऐसे देख रहे थे जैसे कोई मवेशियों को देखता है। बेकार सामान, छँटाई के लिए तैयार।
उनकी आँखों में कोई सहानुभूति नहीं थी। बस ठंडी उदासीनता थी।
उनमें से सबसे उच्च पदस्थ व्यक्ति ने ऊपर देखा और गरजते हुए कहा:
नाम, वाक्य, उत्पत्ति।
उसकी आवाज हवा में गूंज उठी; तीखी, मशीनी, जिसमें मानवता का कोई अंश नहीं था।
मैं आगे बढ़ा। कमर सीधी। दिल चकनाचूर।
“लियो। फ्रांसीसी। चौदह वर्ष।”
सन्नाटा। बस कागज़ पर कलमों की सरसराहट। एक संख्या। एक राष्ट्रीयता। मैं बस इतना ही बन गया था।
न कोई नजर। न कोई जवाब। कुछ भी नहीं।
फिर एक्सल की बारी आई। उसने मुट्ठियाँ भींच लीं, मानो किसी वार के लिए तैयार हो रहा हो।
“एक्सल। फ्रांसीसी। बीस साल।”
वही बर्ताव। वही चुप्पी। वही उदासीनता।
हम गलतियाँ थे। मानव अपशिष्ट। समाज के वे ठुकराए हुए लोग जिन्हें वह अपने सबसे अंधेरे गड्ढे में दफनाना चाहता था।
फैसला तुरंत और स्पष्ट रूप से आ गया।
“भवन 1।”
कोई स्पष्टीकरण नहीं। कोई विकल्प नहीं।
हमने अपने सिर झुका लिए। शर्म का बोझ हमारे कंधों पर आ गिरा। हम अब मर्द नहीं रहे थे। बस संख्याएँ बनकर रह गए थे।

हम चुपचाप बिल्डिंग 7 से बाहर निकले, हमारे कंधों पर भारी बैग थे। मैंने अपनी किताबें और सामान कसकर पकड़ रखा था। मुझे सब कुछ ठीक से पैक करने का समय नहीं मिला था। मैंने जल्दबाजी में सब कुछ एक साथ रख दिया था, अपने कुछ कीमती सामान खोने के डर से। एडी पर आखिरी नजर डाली। खामोश। वह पीछे रुक रहा था, अपनी दवाओं और अपने संपर्कों के सहारे। हम अनजान राह पर निकल रहे थे। "शुभकामनाएं, भाई," उसने फुसफुसाया। मैंने उसे एक उदास मुस्कान दी। लेकिन अंदर ही अंदर, एक खालीपन सा महसूस हो रहा था।
इमारत 1 हमारे सामने एक किले की तरह खड़ी थी। एक विशाल, क्रूर दुनिया जो हमें कुचलने के लिए तैयार थी। भारी दरवाज़े खुलते ही ज़ोरदार झटका लगा। शोर। हलचल। जीवन अपने सबसे कच्चे रूप में। बाईं ओर, स्वागत क्षेत्र। एक बेजान सी छोटी कंक्रीट की झोपड़ी। वहाँ, पुचुए लोग बिना हिले-डुले पहरा दे रहे थे। वे स्पीकर पर नाम पुकार रहे थे—आगमन, सामान की डिलीवरी की घोषणा कर रहे थे। वे उस जगह पर अपने राज्य के स्वामी की तरह राज कर रहे थे। "तुम नए हो, है ना?" उनमें से एक ने बिना ऊपर देखे बुदबुदाया। मैंने सिर हिलाया, मेरे पेट में एक अजीब सी बेचैनी थी।
थोड़ा आगे जाकर, एक विशाल सड़क फैली हुई थी—इतनी लंबी कि अवास्तविक सी लग रही थी। दो किलोमीटर लंबी डामर की सड़क, बिल्कुल सीधी। मैं पहले से ही जानता था। यही मेरा दौड़ने का रास्ता होगा। तनाव से निपटने का, तनाव कम करने का, राहत की सांस लेने का मेरा तरीका। हर सुबह, मैं उस सड़क पर पूरी रफ्तार से दौड़ता, जब तक कि मेरे पैरों में जान न रह जाए। "वह सड़क बहुत लंबी है," एक्सल ने बुदबुदाया। "हाँ... एकदम सही।" हमने एक हल्की सी मुस्कान का आदान-प्रदान किया। एक खामोश वादा।
उस सड़क के अंत में, एक विशाल खाली मैदान था, जो लगभग वीरान सा दिखता था, जहाँ गंदे, रुके हुए पानी से भरे छह बड़े-बड़े कुंड लगभग 1,200 कैदियों के लिए स्नानघर का काम करते थे। हैरानी की बात यह थी कि पटाया के विपरीत, यहाँ पानी स्वतंत्र रूप से बहता हुआ प्रतीत होता था।
प्रवेश द्वार के पास, पुचुए चौकी के बगल में, एक छोटी सी वातानुकूलित इमारत में पहरेदारों के ठंडे, आलीशान दफ्तर थे। ठीक उसके बगल में, एक छोटा सा, सादा और गर्मजोशी भरा गिरजाघर उस जगह की कठोरता के बिल्कुल विपरीत खड़ा था। नाइजीरियाई लोगों के एक समूह द्वारा संचालित, यह अस्थायी चैपल हर रविवार को उन लोगों को आध्यात्मिक विश्राम प्रदान करता था जो अब भी आस्था

रखते थे। छोटा, एकांत, लगभग छिपा हुआ। एक लटकता हुआ क्रॉस, कुछ पुरानी बेंचें। आस्था से जुड़े किसी भी व्यक्ति के लिए एक शरणस्थल।
“क्या तुम्हें लगता है कि हम वहाँ जाएँगे?” एक्सल ने चैपल की ओर इशारा करते हुए पूछा। “मुझे लगता है हाँ… इस समय, हमें जो भी मदद मिल सकती है, हम ले लेंगे।”
दाईं ओर, विशाल कैंटीन—400 सीटें। लगातार शोरगुल। चम्मचों की खनक, बातचीत की गूंज, दबी हुई हंसी। ठंडे खाने की खट्टी गंध हवा में फैली हुई थी। यह पटाया से बेहतर तो नहीं था, लेकिन कम से कम यहाँ जीवन तो था। शोर। “हम कर लेंगे,” एक्सल ने फुसफुसाया। “हमारे पास कोई विकल्प नहीं है,” मैंने जवाब दिया।
थोड़ा और आगे बढ़ने पर, एक विशाल 200 वर्ग मीटर का आंगन खुलता था, जो तीन मंजिला ऊंची इमारतों की ओर जाता था जिनमें विभिन्न कोठरियाँ थीं। कुछ कोठरियाँ छोटी थीं, जिनमें दस कैदी रखे जा सकते थे। अन्य विशाल थीं, जिनमें चालीस आदमी एक-दूसरे से सटे हुए ठूंस-ठूंस कर भरे हुए थे, प्रत्येक स्थान मौन पीड़ा और आशा की हल्की-सी किरण से भरा हुआ था।
इन इमारतों के सबसे ऊपरी हिस्से में, हमेशा अंधेरे में डूबे रहने वाले एकांतवास कक्ष थे—क्रूर दंड के स्थान जहाँ कैदियों को दिनों तक घोर अंधकार में जंजीरों में जकड़ कर रखा जाता था, दुनिया से पूरी तरह अलग-थलग। आंगन के उस पार, धातु के लॉकरों की कतारों में कैदी अपना थोड़ा-बहुत सामान छिपाते थे। एक अस्थायी कैंटीन, जिसे पुचुए और लेडीबॉय चलाते थे, उन लोगों के लिए विशेष भोजन उपलब्ध कराती थी जो इसे वहन कर सकते थे। थोड़ा और नीचे, जो कभी मुक्केबाजी का अखाड़ा हुआ करता था, वह गायब हो चुका था, अब उसकी जगह एक बुनियादी प्रशिक्षण क्षेत्र था जिसमें घिसे-पिटे पंचिंग बैग थे जहाँ कैदी हताशा में मुक्कों की बौछार करके अपना गुस्सा निकालते थे।
उस मशहूर रिंग में कभी "जेल की लड़ाई" होती थी, जो अधिकारियों और वीआईपी मेहमानों के मनोरंजन के लिए आयोजित की जाती थी। बाहर से आए लड़ाके स्वेच्छा से लड़ने वाले कैदियों से मुकाबला करते थे। अगर कैदी जीत जाता, तो उसकी सज़ा में बड़ी छूट मिल जाती थी। सैन्य तख्तापलट के बाद, इन आयोजनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। रिंग को तोड़ दिया गया। अब, यह सिर्फ मुक्केबाजी करने की जगह थी—बिना किसी यश या इनाम के।

एक अस्थायी छत के नीचे, नाइजीरियाई लोग शोर मचाते हुए इकट्ठा हुए, मानो इस खुली जेल में अपने इलाके की रक्षा कर रहे हों, मानो वही उनका घर हो। हर समूह, हर जातीयता को अपना-अपना सुकून का कोना मिल गया था। अराजकता के बीच पहचान का आखिरी अंश। एक्सल ने मुझे धीरे से धक्का दिया, और मुझे मेरे विचारों से बाहर निकाला। “इन सभी विदेशियों को देखो… कनाडाई, फिलिपिनो, ईरानी। हम अकेले नहीं होंगे।”
“हाँ। कम से कम हम उन लोगों से बात कर पाएंगे जो हमारी स्थिति को समझते हैं,” मैंने मुस्कुराते हुए कहा।
दो विशाल कार्यशालाएँ—वास्तव में कारखाने—सोमवार से शुक्रवार तक सप्ताह की दिनचर्या निर्धारित करती थीं, जहाँ बाहरी बाज़ार के लिए कागज़, धातु के सामान और अन्य उत्पाद तैयार किए जाते थे। एक परित्यक्त कारखाना अब बारिश या भीषण गर्मी से बचने के लिए आश्रय स्थल के रूप में इस्तेमाल होता था—एक ऐसी जगह जहाँ पुरुष ठंडे कंक्रीट के फर्श पर लेटे रहते थे, आँखें बेजान सी, एक खस्ताहाल टीवी पर अंतहीन थाई धारावाहिक देखते रहते थे। मैंने जल्दी से अपनी कीमती अध्ययन पुस्तकों को सुरक्षित रखने के लिए एक जगह पूछी। उन्होंने मुझे चर्च से सटी छोटी लाइब्रेरी में जाने का निर्देश दिया, जो एक साधारण लेकिन सुकून देने वाली जगह थी, जहाँ मैंने अपनी किताबें बड़े ध्यान से रख दीं। वहाँ खाना पकाने, आतिथ्य सत्कार, विपणन, यहाँ तक कि वित्तीय विश्लेषण पर भी किताबें थीं। ज्ञान का एक ऐसा संग्रह जिसे मैंने हर विषय के बारे में थोड़ा-थोड़ा सीखने के लिए चुना था। लेकिन मैं यह स्वीकार करता हूँ: आतिथ्य सत्कार की किताबें मेरी सबसे पसंदीदा थीं। वह दुनिया मुझे बहुत आकर्षित करती थी। मैं उन पन्नों में इस तरह डूब गया जैसे कोई रसोई में प्रवेश करता है—जिज्ञासु, एकाग्र और सम्मानपूर्वक।
इससे पहले मैं कभी धार्मिक नहीं था। लेकिन इस छोटे से गिरजाघर में, जिसकी दीवारें जर्जर थीं और जिस पर एक साधारण लेकिन गौरवशाली क्रॉस था, मुझे एक अप्रत्याशित आध्यात्मिक अनुभव हुआ। अकेलापन, निराशा, इन सबने मुझे किसी उच्चतर चीज़ की ओर धकेल दिया। मैंने एक नए जोश के साथ बाइबल पढ़ना शुरू किया और उन प्राचीन ग्रंथों में अनपेक्षित अर्थ खोजे। भावुक विश्वासियों के साथ साझा किया गया वह साधारण स्थान मेरे लिए एक मनोवैज्ञानिक सहारा बन गया।

इमारत आश्चर्यजनक रूप से साफ-सुथरी थी—बड़ी, खुली और पटाया में हमने जितनी भी इमारतें देखी थीं, उनसे कहीं ज़्यादा खुली-खुली। यहाँ तक कि हरियाली भी थी। शॉवर के पास एक छोटा सा खेत था जहाँ एलोवेरा और जड़ी- बूटियाँ उग रही थीं, जो मुझे अजीब तरह से बाहर की ज़िंदगी की याद दिला रही थीं। मुझे एक अजीब सी शांति का अहसास हुआ।
बहुत जल्दी ही मेरी मुलाकात मैथ्यू से हुई—एक कनाडाई नागरिक, जिसकी मुस्कान इतनी गर्मजोशी भरी थी, भले ही उसने कई साल जेल में बिताए थे। “स्वर्ग में आपका स्वागत है,” उसने मजाक में कहा और मेरा हाथ मिलाया। “धन्यवाद... मुझे लगता है कि इसकी आदत पड़ जाती है?” “हाँ। जितना आप सोचते हैं उससे कहीं जल्दी।”
जल्द ही हमारी मुलाकात अन्य विदेशियों से हुई—दोस्ताना ईरानी, शांत लेकिन दयालु फिलिपिनो, और एक मौन अमेरिकी जिसकी खामोशी एक गहरी कहानी की ओर इशारा कर रही थी। हमारे बीच एक खामोश भाईचारा पनप गया, जो हमारे साझा लक्ष्य से जुड़ा हुआ था: इस अमानवीय जगह में जीवित रहना।
आखिरकार, हमें सेल नंबर 46 में रखा गया। अंदर कदम रखते ही हमने देखा कि कमरा अपेक्षाकृत खाली था—उन भीड़भाड़ वाली कोठरियों से बिलकुल अलग जिन्हें हम पहले जानते थे। वहाँ केवल आठ कैदी थे। एक दुर्लभ सुविधा। जगह तो तंग थी, लेकिन कम से कम हम हर दो सेकंड में किसी से टकराए बिना चल-फिर सकते थे।
पटाया की तरह यहाँ का फर्श ठंडा और फिसलन भरा नहीं था। यहाँ पुराना लिनोलियम था, जगह-जगह से मुड़ा हुआ, सालों के कदमों से घिसा हुआ। पैरों के नीचे अजीब सा लगता था, पर हम धीरे-धीरे अभ्यस्त हो गए। दीवारें धूसर रंग की थीं, समय के साथ उन पर दाग लग गए थे, और कई पीढ़ियों के कैदियों द्वारा उकेरी गई नक्काशी से ढकी हुई थीं—नाम, तारीखें, कई भाषाओं में लिखे वाक्य।
सलाखों के पास बड़े-बड़े मच्छरदानी लगाए गए थे। यह बेहद ज़रूरी था। हम चारों ओर से जंगलों से घिरे हुए थे, और हर दोपहर बाद खून के प्यासे मच्छरों का झुंड जेल पर टूट पड़ता था। वे झुंड की तरह आते थे, छोटी से छोटी दरारों से भी घुस जाते थे, और खुली त्वचा की तलाश में रहते थे।
"धत् तेरे की, मैं भूल ही गया था कि ये कमीने कितने घटिया हैं," एक्सल ने कागज के एक टुकड़े से खुद को हवा करते हुए बड़बड़ाया।

हम सबने अपनी-अपनी जगह ले ली और सरकार द्वारा दिए गए तीन कंबलों को फर्श पर बिछाकर जैसे बिस्तर बना लिया। कोठरी किसी भी तरह से आरामदायक नहीं थी, लेकिन कम से कम हमें मवेशियों की तरह ठूंस-ठूंस कर नहीं भरा गया था।
एक कोने में दीवार पर एक छोटा सा टेलीविजन टंगा हुआ था, जिस पर थाई कार्यक्रम लगातार चलते रहते थे। आवाज़ हमेशा बहुत तेज़ होती थी, दिन-रात हमारे साथ रहने वाला एक निरंतर शोर। लेकिन हमें मानना पड़ा कि यहाँ की स्थिति बिल्डिंग 7 से कहीं बेहतर थी।
“इससे बुरा भी हो सकता था…” मैंने अपने घिसे-पिटे लिनोलियम के टुकड़े पर बैठते हुए बुदबुदाया। एक्सल ने पीली पड़ चुकी छत पर नज़रें गड़ाए सिर हिलाया।
हालांकि मैं जेल की परिस्थितियों का आदी था, फिर भी इस जगह की कोई बात मुझे बेचैन कर रही थी। गंदगी नहीं थी, आराम की कमी भी नहीं थी। कुछ और ही था। हवा में एक अजीब सी खामोशी छाई हुई थी, एक ऐसा तनाव जिसे मैं ठीक से परिभाषित नहीं कर पा रहा था।
केवल आठ कैदी—पटाया की भरी हुई कोठरियों की तुलना में यह संख्या बेहद कम है। यह किसी विलासिता जैसा महसूस होना चाहिए था। लेकिन जेल में, कभी-कभी खामोशी शोर से भी ज्यादा खतरनाक होती है।
टैटू वाले थाई कैदी चुपचाप हमें देख रहे थे। उनमें से एक कोने में बैठा दूसरे कैदी के शरीर पर टैटू बना रहा था—दूसरा कैदी दर्द से कराहते हुए झुका हुआ था। एक कामचलाऊ सुई, चोरी-छिपे लाई गई स्याही। यह एक गैरकानूनी दृश्य था, लेकिन इसे बर्दाश्त किया जा रहा था... जब तक कि गार्ड दखल न दें। मैं अपने लिनोलियम के टुकड़े पर बैठ गया और अपने तीन पतले कंबलों को बिछाया, जो मेरे बिस्तर का काम करेंगे। एक्सल ने भी मेरे बगल में ऐसा ही किया। हम दोनों ने चोरी-छिपे एक-दूसरे को देखा, और बिना ज़रा भी कमज़ोरी दिखाए कमरे के माहौल को समझने की कोशिश की।
थाई लोगों में से एक ने आखिरकार चुप्पी तोड़ी। उसने टूटी-फूटी अंग्रेजी में पूछा, "तुम फ्रांसीसी हो?" मैंने पालथी मारकर बैठते हुए कहा, "हाँ। हम पटाया से हैं।" सेल में एक हल्की फुसफुसाहट फैल गई। उनमें से एक, जिसकी बाहों पर धार्मिक टैटू बने थे, ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। "पटाया, हाँ... तुमने क्या किया?" मुझे पता था कि इस तरह के माहौल में शर्माना ठीक नहीं है। यहाँ कहानियाँ आपकी कल्पना से भी तेज़ी से फैलती हैं। "नकली नोट।

तुमने?" मैंने सवाल को पलटते हुए जवाब दिया, ताकि ध्यान दूसरी तरफ चला जाए। थाई व्यक्ति हँस पड़ा और पसीने से तर अपनी बांह थपथपाई। “मैं? ड्रग्स। ढेर सारे ड्रग्स।” बाकी लोग थकी हुई, कर्कश हंसी हंस पड़े। हर कोई यहाँ किसी न किसी काम से आया था। आखिरकार, हमने बात की, कुछ बुनियादी बातें कीं। हमें स्वीकार कर लिया गया। बर्दाश्त किया गया—फिलहाल के लिए। बस यही मायने रखता था।
जेल किसी मधुमक्खी के छत्ते की तरह थी। एक अलग ही दुनिया, एक बंद समाज जहाँ हर राष्ट्रीयता, हर अपराध, हर समूह का एक निर्दयी तंत्र में अपना स्थान था। बैंकॉक, पटाया से बिलकुल अलग था। यहाँ विदेशियों की संख्या कहीं अधिक थी। यूरोपीय, अफ्रीकी, एशियाई, लैटिन अमेरिकी—यह एक चहल-पहल भरी चींटियों की बस्ती थी जहाँ हर समूह अपने ही लोगों के साथ रहता था, भले ही आपस में मेल-जोल अपरिहार्य था।
पहले ही दिन से, एक्सल और मैंने इस नई व्यवस्था, इस नए पारिस्थितिकी तंत्र को समझने की कोशिश में खोजबीन शुरू कर दी। हमें सबसे ज़्यादा आश्चर्य इस बात से हुआ कि यह एक छोटे से गाँव जैसा लगता था। कोठरियाँ लंबी कतारों में बनी थीं, धूल भरे आँगन गलियों की तरह अलग-अलग थे, और अलग-अलग गतिविधियों के लिए स्पष्ट रूप से परिभाषित क्षेत्र थे। नाइजीरियाई लोगों ने जेल के एक कोने पर कब्ज़ा कर लिया था जिसे वे अपना मोहल्ला मानते थे—एक ऐसी जगह जहाँ वे इकट्ठा होते, ताश खेलते, प्रार्थना करते।
वहीं पर हमें मैथ्यू फिर से मिला, वह कनाडाई था। कद में छोटा, गठीला, भारी लहजे वाला और रूखे हास्य वाला, वह जल्दी ही हममें से एक बन गया। उसने हमें अपनी कहानी सुनाई, कि कैसे उसने और उसके चचेरे भाई ने पीवीसी पाइपों का इस्तेमाल करके थाईलैंड में कोकीन की तस्करी करने की कोशिश की थी, कैसे उसे धोखा दिया गया और एक नाइट क्लब से नशे में धुत होकर लौटते समय गिरफ्तार कर लिया गया। "उसके लिए मुझे 25 साल की सजा मिली," उसने सिर हिलाते हुए कहा। "मेरा चचेरा भाई दूसरी जेल में है। हमें एक साथ स्थानांतरित किया जाना था, लेकिन गार्डों ने हमें अलग करने का फैसला किया।"
एक्सल और मैंने एक-दूसरे की ओर देखा। हम अकेले नहीं थे जो अपने प्रियजनों से बिछड़े हुए थे।
थाईलैंड में लगभग उसी समय कई फ्रांसीसी लोगों को गिरफ्तार किया गया था, और हमने एक-दूसरे को ढूंढने, एकजुट होने और इस नरक का अकेले सामना न करने को

अपना मिशन बना लिया था। मार्को ने चोनबुरी से मुझे लिखा था कि वह यूसुफ से मिला था, जिसे क्रेडिट कार्ड घोटाले में 25 साल की सजा सुनाई गई थी।
सच तो यह है कि यहाँ "क्रेडिट कार्ड" से जुड़े मामले हर जगह फैले हुए थे। इनमें से ज़्यादातर लोग क्लोन किए गए कार्डों का इस्तेमाल करते हुए पकड़े गए थे। असल में, वैश्विक बैंकिंग का बहुत सारा डेटा चिप पर नहीं, बल्कि कार्ड के पीछे मौजूद चुंबकीय पट्टी पर संग्रहित होता है। ये लोग डार्क वेब से चोरी किए गए कार्ड का डेटा खरीदते, उसे खाली कार्डों में भरते और उनका इस्तेमाल खरीदारी या नकदी निकालने के लिए करते थे। तकनीकें और भी उन्नत होती जा रही थीं; कुछ तो पीड़ित को पता चले बिना ही कार्डों से डेटा चुरा लेते थे या ऑनलाइन भुगतानों को बड़ी सटीकता से पुनर्निर्देशित कर देते थे। वे चालाक और संगठित थे, और थाईलैंड—जहाँ बैंकिंग सुरक्षा कमज़ोर थी— उनके लिए एक बेहतरीन अड्डा बन गया था। लेकिन इस आसानी की एक कीमत चुकानी पड़ी: पकड़े जाने पर उन्हें कड़ी सज़ा मिलती थी।
यूसुफ के साथ गिरफ्तार हुए एक और व्यक्ति, रशीद, को भी उसी जगह भेजा गया था। लेकिन हालात अचानक बदल गए। उसे पटाया भेज दिया गया, और फिर वह गायब हो गया। हमारा उससे कोई संपर्क नहीं रहा। भले ही हम करीबी दोस्त नहीं थे, फिर भी यह जानकर अजीब सी तसल्ली मिली कि इस विदेशी धरती पर, जहाँ हम सभी को अपराधी करार दिया गया था, हमारे कुछ साथी भी जीवित थे।
बिल्डिंग 1 के संक्षिप्त दौरे के बाद, सेल में लौटने का समय हो गया था। मैं दूसरों के साथ कतार में खड़ा हो गया, रोज़ाना होने वाले अपमान से डरता हुआ। हर दोपहर, वही अपमानजनक रस्म दोहराई जाती थी: एक मेज के पीछे बैठे छह पुलिसवालों के सामने खड़ा होना, चारों ओर निर्जीव आँखों वाले मूक गार्ड, और एक कठोर, दखलंदाज़ी भरी तलाशी। वे टटोलते और खींचते, पता नहीं क्या ढूंढ रहे होते। मैंने इन तलाशी के दौरान कभी कुछ पकड़ा जाते नहीं देखा था, लेकिन रोज़ाना का अपमान जारी रहा।
सेल नंबर 46 दूसरी मंजिल पर था, जहाँ तक पहुँचने के लिए कंक्रीट की खुरदरी सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती थीं। मैं नंगे पैर ही चढ़ा—हमारी चप्पलें छात्रावास के प्रवेश द्वार पर ही छोड़नी थीं। जैसे ही एक्सल और मैं अंदर गए, हमने सेल में पहले से मौजूद थाई लोगों से बातचीत शुरू कर दी—उनके शरीर पर ढेर सारे टैटू थे, और वे इस जगह और इसकी दिनचर्या से अच्छी तरह वाकिफ

थे। पटाया की आदत के चलते, मैंने उनसे पूछा कि क्या हम उनके "घर" में शामिल हो सकते हैं।
मैंने दोस्ताना लहजे में सावधानी से पूछा, "क्या आप लोगों के पास यहाँ माइक्रोवेव की सुविधा है? या गर्म पानी के लिए प्राथमिकता है?"
एक लंबे-चौड़े थाई युवक ने, जिसकी छाती लगभग पूरी तरह से टैटू से ढकी हुई थी, मुझे हल्की सी मुस्कान दी। "भाई, यहाँ माइक्रोवेव नहीं है, लेकिन यहाँ गर्म पानी लगभग हर समय आता रहता है। चिंता मत करो, हम नए लोगों का ख्याल रखते हैं।"
मुझे राहत की लहर महसूस हुई। पटाया में गर्म पानी इतना दुर्लभ था कि सुबह-सुबह कुछ बूँदें पाने के लिए भी दौड़ लगानी पड़ती थी। क्लॉन्ग प्रेम में, मांग पर गर्म पानी मिलना एक अकल्पनीय विलासिता थी।
शौचालय तो वही थे जो मैं पहले से जानता था—बस घिसे-पिटे कंक्रीट के एक स्लैब में बना एक छेद। लेकिन यहाँ पानी लगातार बहता रहता था, जिसका मतलब था कि मैं हर शाम अपनी कोठरी में ही नहा सकता था। बस यही बात मेरे लिए बहुत बड़ा हौसला बढ़ाने वाली थी। खासकर बैंकॉक की लगातार दम घोंटने वाली गर्मी में, इससे बहुत फर्क पड़ता था।
बिल्डिंग 1 में शुरुआती दिन आश्चर्यजनक रूप से अच्छे बीते। एक्सल और मैंने अन्य विदेशियों से मिलने और खुद को अलग-थलग न करने का लक्ष्य बना लिया था। हमें जल्द ही एहसास हुआ कि यहाँ भोजन ऑर्डर करने की प्रणाली पटाया की तुलना में कहीं अधिक आधुनिक थी। एक साधारण फिंगरप्रिंट स्कैन से स्क्रीन पर हमारा खाता बैलेंस दिख जाता था और खाना अगले दिन आ जाता था— तीन दिन के इंतज़ार के बजाय, जिसकी हमें आदत थी। बगल की एक छोटी सी दुकान में चिप्स, ब्रेड और लंबे समय तक चलने वाले पेय पदार्थ भी बिकते थे, जिससे यह एहसास और पुख्ता हो जाता था कि यह जगह किसी जेल शिविर की बजाय किसी जेल गांव जैसी है।
अगले दिन और भी कठिन थे, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि हमें "अनुकूलित" करने के लिए लगातार दो सप्ताह तक हर सुबह सैन्य शैली का प्रशिक्षण दिया गया था। पटाया की तुलना में कहीं अधिक कठिन, इन अभ्यासों ने मुझे शारीरिक और मानसिक रूप से थका दिया। मेरा मनोबल बहुत कम था, खासकर इसलिए क्योंकि मुझे बाहर से एक भी पत्र या संकेत नहीं मिला था। मैं लगातार इस डर में जी रहा था कि कहीं मुझे भुला न दिया जाए, कहीं मेरे प्रियजन मुझे छोड़ न दें।

लेकिन मुलाकातें जारी रहीं। एक थे स्टुअर्ट, एक शांत अंग्रेज जो मादक पदार्थों की तस्करी के आरोप में जेल में थे—दयालु, संयमी और हमेशा सम्मानजनक। और ली, वह भी अंग्रेज, एक पूर्व सैनिक जिसे एक बार में हुई लड़ाई में एक ग्रीन बेरेट की हत्या के बाद गिरफ्तार किया गया था। मुखर, गर्वित और उत्तेजक, ली अक्सर अपनी उद्दंड और घमंडी कहानियों से हमें हंसाते थे।
उन्हीं पलों में—उन बेतुकी बातचीत के दौरान—मुझे अपने आस-पास की मानवीय जटिलता समझ में आने लगी। हम सब यहाँ अलग-अलग कारणों से थे। कुछ गंभीर अपराधों के लिए, तो कुछ गलतियों के लिए। लेकिन हम सब एक ही दर्द, एक ही धुंधली सी आज़ादी की उम्मीद साझा कर रहे थे।
बिल्डिंग 1 की विशालता के भीतर, एक जगह अंततः विदेशियों के लिए अनौपचारिक अड्डा बन गई: पुराना बॉक्सिंग रिंग क्षेत्र।
वह घेरा तो कब का गायब हो चुका था। बस एक कंक्रीट का तख्ता और एक विशाल नालीदार धातु की छत बची थी—जो हमें उष्णकटिबंधीय बारिश से बचाती थी। उस छत ने ही सब कुछ बदल दिया था।
कुछ ही मीटर की दूरी पर, उसी छत के नीचे, एक छोटा सा ऊँचा, पिंजरे जैसा कार्यालय था—जो उप कमांडर का निवास स्थान था। अंदर एक चरमराता पंखा धीरे- धीरे घूम रहा था। यहीं पर यूजीन, जो किसी नाइटक्लब के बाउंसर की तरह गठीला एक मलेशियाई था, अपने अधिकांश दिन बिताता था।
“वो डिप्टी को पैसे देता है,” मैथ्यू ने एक सुबह फुसफुसाते हुए झोपड़ी की ओर हल्के से इशारा किया। “वो आदमी उसकी तनख्वाह पर है। इसी वजह से यूजीन इस जगह को चलाता है। उसके पास बैग हैं, सारा सामान है, कभी-कभी तो वो मिलने भी आता है। सारे फैसले वही लेता है।”
यूजीन हमारे इलाके के एक तरह से गॉडफादर थे। वे ज्यादा बोलते नहीं थे— लेकिन उनकी मौजूदगी का एहसास होता था। आपको उनका सम्मान करना पड़ता था, सोच-समझकर काम लेना पड़ता था और किसी को नाराज़ नहीं करना पड़ता था। लेकिन अगर आप उनकी नज़रों में अच्छे थे, तो यहाँ ज़िंदगी थोड़ी आसान हो जाती थी। इसके बगल में, एक छोटा सा कच्चा फुटबॉल मैदान था जहाँ अक्सर विदेशियों के बीच अनौपचारिक मैच खेले जाते थे। आंगन के बीच में, कंकड़ और बोतल के ढक्कनों से बना एक अस्थायी पेटैंक कोर्ट थाई कैदियों के लिए मनोरंजन का साधन था, जहाँ वे आश्चर्यजनक सटीकता के साथ खेलते थे। मुझे बिल्कुल भी

अंदाजा नहीं था कि पेटैंक यहाँ इतना लोकप्रिय खेल है—यह वाकई दिलचस्प था। 20 वीं सदी की शुरुआत में फ्रांसीसी उपनिवेशवादियों द्वारा शुरू किया गया पेटैंक धीरे-धीरे थाई लोगों का दिल जीत लेता था, खासकर ग्रामीण प्रांतों और सैन्य हलकों में। देश में राष्ट्रीय प्रतियोगिताएँ भी आयोजित होती थीं, और कुछ खिलाड़ी तो वाकई चैंपियन थे। यह खेल, जो शांत और रणनीतिक दोनों था, उनके स्वभाव और सटीकता के प्रति प्रेम के लिए एकदम उपयुक्त प्रतीत होता था। यह बेहद आकर्षक था।
आंगन के किनारे से थोड़ा आगे, नाइजीरियाई लोगों ने अपना डेरा डाल रखा था। वे लगभग सौ थे—व्यवस्थित और सुव्यवस्थित। जमीन पर चटाइयाँ, कामचलाऊ बेंचें, रस्सियों से लटके थैले जिन्हें कामचलाऊ अलमारियों का काम सौंपा गया था। वे अपने नियमों और कायदों के साथ सामूहिक रूप से रहते थे। हम आपस में इसे "गाँव" कहते थे। वे झगड़ा नहीं करते थे, लेकिन यह ऐसी जगह नहीं थी जहाँ आप यूँ ही बेपरवाह होकर चले जाएँ।
इसी माहौल में मेरी मुलाकात एलेक्स से हुई, जो एक बेहद साफ-सुथरा दिखने वाला ताइवानी लड़का था—हमेशा सलीके से तैयार, हमेशा विनम्र, और एक शांत अलगाव के साथ जो हमारे आसपास की क्रूरता के बिल्कुल विपरीत था।
मैंने उसे पहली बार सुबह के अनिवार्य अभ्यास के दौरान देखा। वह विदेशी कैदियों के लिए थाई गार्डों के सभी निर्देशों का अंग्रेजी में अनुवाद कर रहा था, जिससे स्पष्ट और प्रभावी संचार सुनिश्चित हो रहा था।
एक सुबह, चिलचिलाती धूप में एक बेहद कठिन कसरत के बाद, मैंने उससे बात करने का फैसला किया। "हे एलेक्स, क्या तुम्हारे पास एक मिनट है?" जैसे ही मैं पास पहुंचा, मैंने पूछा। उसने एक सलीके से अपना माथा पोंछा और मुस्कुराया, यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मैं उसके पास आया था। "ज़रूर, क्या बात है?" "कुछ खास नहीं... बस उत्सुकता थी - आप थाई और अंग्रेजी दोनों इतनी अच्छी तरह कैसे बोलते हैं?" वह धीरे से हँसा, स्पष्ट रूप से इस प्रश्न का आदी था। "मैं मूल रूप से ताइवान का हूँ, इसलिए बेशक मैं चीनी बोलता हूँ। लेकिन मैं बैंकॉक में पला-बढ़ा हूँ, इसलिए मैंने थाई भाषा जल्दी सीख ली। और मैं यहाँ एक अमेरिकी स्कूल में गया था। इससे बहुत मदद मिली।" मैंने सिर हिलाया, एक ऐसी जेल में जहाँ अधिकांश कैदी बिल्कुल अलग-अलग दुनिया से आए थे, उसकी असामान्य पृष्ठभूमि से प्रभावित होकर। "आपके बारे में क्या? आप यहाँ क्यों हैं?" मैंने संशय से पूछा। उसकी मुस्कान फीकी पड़ गई, कड़वी लेकिन

सच्ची मुस्कान में बदल गई। “क्रेडिट कार्ड,” उसने सपाट स्वर में कहा। “मुझे सात साल की सजा मिली थी, लेकिन पिछली शाही माफी के कारण मैं छह महीने में रिहा हो जाऊंगा। कुल मिलाकर तीन साल हो जाएंगे।” मैं ईर्ष्या और प्रशंसा के मिले-जुले भावों से खुद को रोक नहीं पाया। वह जेल जीवन में ढल गया था, गार्ड उसका सम्मान करते थे और अन्य कैदी उसे पसंद करते थे। इसलिए हम दिन-ब-दिन बातें करते रहे और धीरे-धीरे दोस्त बन गए। हमारी बातचीत सहज और सुखद थी। एलेक्स बुद्धिमान, सुसंस्कृत और अब तक मिले अन्य कैदियों से बहुत अलग था।
एक शाम, जब हम फुटबॉल मैदान के पास बैठे थे, मैंने उसे हमारी कोठरी में चल रहे गुप्त टैटू सेशन के बारे में बताया। “जानते हो, मेरी कोठरी में लगभग हर रात टैटू बनते हैं। वे सुइयाँ सलाखों में छिपा देते हैं—यह तो पागलपन है…” एलेक्स ने थोड़ा सा माथा सिकोड़ा, एक गंभीर भाव जो मैंने उससे पहले कभी नहीं देखा था। “सावधान रहना,” उसने सावधानी से कहा। “अगर गार्ड्स को पता चल गया, तो पूरी कोठरी मुसीबत में पड़ सकती है।” मैंने कंधे उचका दिए, इस बारे में ज्यादा नहीं सोचा। “हाँ, ठीक है… यह मेरी समस्या नहीं है। बस मुझे आश्चर्य हुआ, बस इतना ही। जब तक वे मुझे इससे दूर रखते हैं, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।”
लेकिन अगली सुबह, हालात ने अप्रत्याशित मोड़ ले लिया। सैन्य अभ्यास समाप्त होते ही, कई प्यादों से लैस पहरेदारों का एक समूह हमारी कोठरी संख्या 46 में घुस आया। उन्होंने हर कोने की तलाशी ली और हर चीज़ तहस-नहस कर दी, और आखिरकार सलाखों में छिपे औजार मिल ही गए।
थाई कैदियों को तुरंत एकांतवास में भेज दिया गया। एक्सल और मैं वहीं जम गए, हमें पूरा यकीन था कि हमें भी सज़ा मिलेगी। लेकिन हैरानी की बात यह थी कि किसी ने भी हमें दोषी नहीं ठहराया। एक अधिकारी तो मेरे पास आया, मेरी आँखों में सीधे देखते हुए बोला: “तुम दोनों—तुम दोनों इसमें शामिल नहीं हो। अपना सामान उठाओ और कोठरी बदल लो। अभी।”
सदमे में आकर मैंने तुरंत एलेक्स की ओर देखा। मुझे पूरा यकीन था कि वही था जिसने आवाज़ उठाई थी। जब हमारी नज़रें मिलीं, तो वह एक पल के लिए नज़रें हटाकर दूसरी ओर देखने लगा, स्पष्ट रूप से असहज महसूस कर रहा था, फिर वापस मुड़कर धीरे से बोला: “मुझे ऐसा करना पड़ा। मैंने तुम्हारी और तुम्हारे

दोस्त की रक्षा की। लेकिन यहाँ... यकीन मानो, गार्डों का साथ देना ही बेहतर है।”
मुझे गुस्सा तो आया, लेकिन मन ही मन मुझे पता था कि शायद वो सही कह रहा था। फिर भी, मुझे ये बेचैनी सता रही थी कि मैं किसी ऐसी चीज़ का हिस्सा बन गया हूँ जिसे मैंने नहीं चुना था। मुझे चुगलखोर कहलाने का ख्याल ही पसंद नहीं था, चाहे वो अप्रत्यक्ष रूप से ही क्यों न हो।
सौभाग्य से, थाई लोगों ने हमें दोषी नहीं ठहराया। शायद इसलिए कि उन्होंने हमें स्वीकार कर लिया था। शायद इसलिए कि वे जानते थे कि इस तरह का विश्वासघात दो विदेशियों से नहीं हो सकता था, जिनका इतनी जल्दी स्वागत किया गया था।
लेकिन वह कोठरी भंग कर दी गई। इसके बाद जो हुआ वह और भी कठिन था। एक्सल और मुझे अस्थायी रूप से कोठरी संख्या 45 में स्थानांतरित कर दिया गया - जो पूरी तरह से खचाखच भरी हुई थी, जिसमें 25 से अधिक कैदी थे।
पच्चीस आदमी एक साथ ठसाठस भरे हुए थे, एक ही उमस भरी हवा में सांस ले रहे थे, एक ही पसीने में भीग रहे थे। चिपचिपा लिनोलियम मेरी त्वचा से चिपक गया था। छत का पंखा हर चक्कर के साथ चरमरा रहा था, जिससे कोई खास राहत नहीं मिल रही थी।
सौभाग्य से, एक्सल को सलाखों के पास एक शांत कोने में, दीवार के किनारे जगह मिल गई। निजता की थोड़ी-बहुत गुंजाइश वाली वह आखिरी जगह थी। वह बिना कुछ कहे, कहीं खोई हुई निगाहों से, शांत भाव से वहाँ बैठ गया।
मेरे पास कुछ नहीं था। जगह नहीं थी। मैं कमरे के बीचोंबीच पहुँच गया—हर कदम के ठीक रास्ते में, ठीक उस जगह जहाँ रात टखनों, घुटनों और शरीरों के नाच में बदल जाती थी, जो अँधेरे में एक-दूसरे को छूते या रौंदते फिरते थे। मैं इन इंसानी हलचलों के बीच लेटा रहा, एक ऐसे पंखे के नीचे जो किसी को भी ठंडक देने के लिए बहुत तेज़ था। हर रात एक संघर्ष थी, खर्राटों, शरीर की दुर्गंध और लगातार हलचल के बीच थोड़ी सी नींद पाने के लिए एक लड़ाई।
वहीं हमारी मुलाकात डेविड से हुई, एक चिड़चिड़ा, एकाकी फ्रांसीसी व्यक्ति जो सारा दिन अपने उपन्यासों में डूबा रहता था। उसकी तीखी और कड़वी आवाज अक्सर निराशा में गूंजती थी: "क्या तुम लोग थोड़ा धीरे बात नहीं कर सकते? सच में, थोड़ा सम्मान दिखाओ!" वह नियमित रूप से चिल्लाता था, जिससे अंतहीन बहसें शुरू हो जाती थीं।

मैं इस घुटन भरे माहौल को और बर्दाश्त नहीं कर पा रही थी। एक शाम, आखिरकार जब मैंने ठान लिया कि अब बहुत हो गया, तो मैंने एक्सल को बताया कि मैं एलेक्स के साथ सेल नंबर 7 में जा रही हूँ। “एक्सल, मैं सेल नंबर 7 जा रही हूँ। एलेक्स के पास जगह है, वहाँ बेहतर है। क्या तुम मेरे साथ आना चाहते हो?” उसने धीरे से अपना सिर उठाया, उसकी निगाहें मुझसे आगे निकल गईं, मानो वह दीवारों के पार देख रहा हो। “नहीं, मैं यहाँ ठीक हूँ। मेरी अपनी जगह है। मैं यहीं रहना पसंद करूँगा।” मैं हैरानी से उसे देखती रही। “पक्का? यह जगह तो नरक है…” “हाँ, मुझे पता है। लेकिन मुझे अपनी सजा अपने तरीके से काटनी है। हम वहाँ हर दिन एक-दूसरे से मिलेंगे।”
तभी मुझे एहसास हुआ कि उसने अपना रास्ता खुद चुन लिया है। मुझे दुख और सम्मान दोनों का मिला-जुला एहसास हुआ। हमारी दोस्ती अभी भी मजबूत थी, लेकिन हालात से निपटने का हमारा तरीका अलग होता जा रहा था। "ठीक है। अगर तुम यही चाहते हो," मैंने सीधे-सादे शब्दों में कहा। "अपना ख्याल रखना।" उसने चुपचाप सिर हिलाया, और मैंने बिना कुछ और पूछे कोठरी छोड़ दी।
और इस तरह, हमारे रास्ते धीरे-धीरे अलग होने लगे, हममें से प्रत्येक ने उस प्रतिकूल वातावरण में जीवित रहने का अपना-अपना तरीका खोज लिया। एक्सल ने मौन और एकांत को चुना। मैंने जुड़ाव को चुना, जेल के हमारे दैनिक जीवन की अराजकता के बीच मानवता के क्षणों की तलाश की।
वह मुझसे उम्र में छोटा था, फिर भी कभी-कभी वह मुझे अपने से बड़ा महसूस कराता था—एक ऐसे बोझ तले दबा हुआ जिसके बारे में वह कभी बात नहीं करता था। यह सच है कि हमारी आपस में अच्छी बनती थी। हमने साथ में बहुत कुछ झेला था। बिल्डिंग 7 से बच निकले थे। साथ में खाना खाया था, खामोशी बांटी थी, छोटी- छोटी उम्मीदें रखी थीं।
लेकिन बिल्डिंग नंबर 1 में स्थानांतरण ने स्थिति को बदल दिया था। हम दोनों ने अपने-अपने रास्ते फिर से अपना लिए। वह खामोशी में, और मैं अजनबी आवाजों के शोर में, कारावास की धीमी मौत में जीवन की किसी भी चिंगारी से चिपके रहने की कोशिश कर रही थी।
हमारी दोस्ती टूटी नहीं। बस फीकी पड़ गई, कमज़ोर हो गई। मानो जेल ने एक बार फिर तय कर लिया हो कि हर किसी को अपने-अपने रास्ते अकेले ही तय करने होंगे।
इसी वजह से अगली सुबह मैं एलेक्स के दरवाजे पर दस्तक देने गया।

“एलेक्स, सुनो… मैं अब सेल नंबर 45 में नहीं रह सकती। यह बहुत ज्यादा भीड़भाड़ वाला है, डेविड असहनीय है, और मैं सो भी नहीं पा रही हूँ।”
उसने एक पल के लिए मेरी तरफ देखा, हिचकिचाया, फिर अंत में सिर हिलाया। “ठीक है। मैं अपने सेल के प्रमुख से बात करता हूँ। तुम मेरे साथ आ सकते हो।”
अगले दिन, मैं सेल नंबर 7 में शिफ्ट हो गई, जहाँ एलेक्स ने राहत भरी मुस्कान के साथ मेरा स्वागत किया। सेल बड़ा और सुव्यवस्थित था, और लंबे समय बाद पहली बार मुझे छोटे से टीवी के सामने थोड़ी निजी जगह मिली। मुझे तुरंत अच्छा महसूस हुआ—हाल ही में हमारे बीच जो कुछ भी हुआ था, उसके बावजूद मैं एलेक्स की आभारी थी।
“धन्यवाद,” मैंने धीरे से कहा और उसके बगल में बैठ गई। “आप मेरी जान बचा रहे हैं।”
उन्होंने हल्की, गंभीर मुस्कान दी।
"कम से कम इतना तो मैं तुम्हारा कर्जदार था।"
उस दिन से क्लोन्ग प्रेम में मेरे जीवन का एक नया अध्याय शुरू हुआ। तनाव, कठिनाइयों और दर्दनाक समझौतों के बावजूद, मुझे अंततः इस जेल की दुनिया में एक अनमोल साथी के साथ थोड़ा सा संतुलन मिल गया था—जहां हर रिश्ता मायने रखता था, और हर दिन अपनी मानवता को बनाए रखने के लिए एक संघर्ष था।
दिन धीरे-धीरे एक जानी-पहचानी लय में ढलने लगे। मैं बिल्डिंग 1 की रफ़्तार में ढल चुका था और ओबिना से दूसरा लॉकर लेने में कामयाब हो गया, जो शांत आँखों और सौम्य मुस्कान वाला एक नाइजीरियाई था। उसके पास ज़्यादा सामान नहीं था, इसलिए 100 बात प्रति माह—लगभग तीन यूरो—या उसके बराबर खाने- पीने का सामान देने के बदले में, मैं अपनी पढ़ाई की किताबें उसके लॉकर में रख सकता था।
“कोई बात नहीं भाई, तुम अपनी किताबें यहीं रख सकते हो। बस जब तुम्हारे पास 100 बात आ जाएं तो उन्हें देना मत भूलना, ठीक है?” उसने मुझे शांत स्वर में कहा।
मुझे हफ्तों से कोई पैसा या मुलाकात नहीं मिली थी, लेकिन मैंने उससे पूरी ईमानदारी से वादा किया:
“ओबिना, मेरा वादा है। जैसे ही मुझे कुछ मिलेगा, मैं तुम्हें भुगतान कर दूंगा।”

यह एकदम सही था। ओबिना के साथ उस छोटे से समझौते की वजह से मैं अपनी सारी पढ़ाई की किताबें उसके लॉकर में रख सका और अपना लॉकर खाने-पीने की चीजों, धातु की प्लेटों और कुछ निजी सामानों के लिए रख सका, जिन्हें मैंने समय के साथ इकट्ठा किया था।
दिन के समय मैं अब भी एक्सल के साथ समय बिताता था, लेकिन धीरे-धीरे उसने थाई लोगों के साथ ज़्यादा समय बिताना पसंद किया, कभी फुटबॉल खेलना तो कभी बस बातें करना। जहाँ तक मेरी बात है, मैं दूसरे विदेशियों के साथ रहना, साथ बैठना, कहानियाँ साझा करना और शब्दों के ज़रिए उस घुटन भरी वास्तविकता से बचने की कोशिश करना पसंद करता था जिसमें हम फँसे हुए थे।
हर दिन हम सुबह 6 बजे उठते और दोपहर 2 बजे तक अपनी कोठरियों में लौट आते, जहाँ अगली सुबह तक खाना मना था। आधिकारिक तौर पर, इस फैसले को धार्मिक आधार दिया गया था: बौद्ध भिक्षुओं के अनुसार, दोपहर 3 बजे के बाद उपवास करने से मानसिक स्पष्टता बढ़ती है और शरीर शुद्ध होता है। यह एक आध्यात्मिक संदेश था, जिसे लगभग गंभीर भाव से, पहरेदार पवित्र कानून की तरह दोहराते थे। लेकिन वास्तविकता कहीं अधिक व्यावहारिक और कहीं कम नेक थी। बचा हुआ खाना चींटियों, तिलचट्टों और कभी-कभी इससे भी बदतर जीवों को आकर्षित करता था। कोठरियाँ जल्दी ही कीटों से भर जाती थीं, और पहले से ही जर्जर शौचालय फेंके गए कचरे से जाम हो जाते थे। यह मुख्य रूप से स्वच्छता, नियंत्रण और प्रशासन की सुविधा का मामला था।
हमें जो थोड़ी-बहुत राहत मिलती थी—जैसे एक छोटा सा केक, दूध का डिब्बा, सार्डिन मछली का डिब्बा— वो भी अब खत्म हो गई थी। दोपहर 2 बजे के बाद कुछ नहीं मिलता था। यह बदलाव बहुत कठोर था। बिना कुछ खाए शुरुआती कुछ शामें लंबी, चिड़चिड़ी और बेचैनी भरी थीं। लेकिन, यहाँ की हर चीज़ की तरह, शरीर ने भी आखिरकार खुद को ढाल लिया, यहाँ तक कि बेतुकेपन को भी।
अब एलेक्स और मैंने फर्श पर अपना छोटा सा "घर" बना लिया था। एक चादर का टुकड़ा, सार्डिन मछली का एक डिब्बा, कुछ नोट्स और ढेर सारी खामोशी। वह इस अफरा-तफरी में मेरे लिए एक सहारा बन गया था। उसने मुझे अनुशासन सिखाया, मानसिक उत्थान का अहसास कराया।
हम अक्सर पुराने बॉक्सिंग रिंग को ढकने वाली धातु की छत की छाया में एक साथ बैठते थे।

"आप कैसे आगे बढ़ते रहते हैं?" मैंने एक सुबह, एक बिना नींद वाली रात के बाद, उनसे पूछा।
मैं अपनी आँखें बंद कर लेती हूँ। मैं खुद को कहीं और होने की कल्पना करती हूँ। बाली का एक समुद्र तट। ताइपे का एक वातानुकूलित कमरा। मैं रंगों, शैम्पू की खुशबू, लहरों की आवाज़ की कल्पना करती हूँ। इससे मुझे बिखरने से बचने में मदद मिलती है।
मैंने जवाब दिया, "मैं एक गर्म पानी के शॉवर और लज़ान्या की एक प्लेट की कल्पना कर रहा हूँ।"
वह हँसा—सचमुच हँसा। इस जगह पर ऐसी हँसी बहुत कम ही सुनने को मिलती है। उन्होंने मुझे सांस लेने की तकनीकें और कल्पनाशीलता के अभ्यास सिखाए। यह कोई जादू तो नहीं था, लेकिन कुछ न होने से बेहतर था।
मैंने उसकी सलाह मानने की कोशिश की, लेकिन कैदियों की चीखें, पसीने की लगातार दुर्गंध और गंदी दीवारों के कारण मानसिक रूप से वहां से निकलना मुश्किल हो गया।
समय धीरे-धीरे बीतता गया, बीच-बीच में दूतावास से कभी-कभार होने वाली लेकिन सुकून देने वाली मुलाकातों से समय में थोड़ी राहत मिली। एक दिन, हम एक विशेष कमरे में इकट्ठा हुए, जहाँ काउंसल ने हमें सपाट स्वर में सूचित किया:
“आपकी स्थानांतरण फाइलें आगे बढ़ रही हैं। कृपया धैर्य रखें—इसमें समय लगता है, लेकिन वे आगे बढ़ रही हैं।”
उस खबर ने मेरी अंधकारमय दिनचर्या में आशा की एक किरण जगा दी। मैंने जूलिया, अपनी माँ और अपने भाई जीन-पियरे के बारे में सोचा। घर लौटने की संभावना आखिरकार वास्तविक लगने लगी।
मेरे छोटे भाई जीन-पियरे का विशेष उल्लेख करना आवश्यक है, क्योंकि मैंने पिछले अध्यायों में उसके बारे में बात नहीं की थी। जीन-पियरे जन्म से ही गंभीर मानसिक विकलांगता से ग्रस्त था और उसे हमेशा विशेष देखभाल की आवश्यकता रही है। दुर्भाग्य से, फ्रांस में 14 वर्ष की आयु पार करने के बाद उपयुक्त सुविधाएं मिलना बेहद मुश्किल हो जाता है। सौभाग्य से, एक समर्पित डॉक्टर की मदद से, जीन-पियरे को ब्रुसेल्स के पास बेल्जियम के एक बड़े, विशेष देखभाल केंद्र में भर्ती कराया जा सका।

मुझे आज भी पहली मुलाकात याद है। मेरी जांघों के नीचे ठंडी कंक्रीट की बेंच। गार्ड की टकटकी भरी निगाहें। और फिर उसकी कोमल आवाज:
"हेलो, लियो? तुम ही हो ना?"
मैंने ऊपर देखा। उसने हल्के रंग का ब्लाउज पहना हुआ था, हाथ में नोटबुक थी, शांत मुद्रा में थी और चेहरा दयालु था।
“मैं कोराली हूँ। मैं जूलिया की ओर से यहाँ आई हूँ। उसने मुझसे आपको एक पत्र पढ़कर सुनाने के लिए कहा है।”
मेरा दिल बैठ गया।
“धन्यवाद… आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।”
“हमारे पास थोड़ा समय है। चलिए बैठते हैं।”
वह धीरे-धीरे पत्र पढ़ने लगी, कुछ पंक्तियों पर रुकती हुई। जूलिया के शब्द। मेरी माँ की आवाज़। यादें वर्तमान से गुंथी हुई थीं। फिर उसने ऊपर देखा।
और तुम, लियो? कैसे हो?
मुझे जवाब देने में थोड़ा समय लगा। ऐसे क्षणों में, चुप्पी एक ऐसी दीवार होती है जिसे पार करना पड़ता है।
मैं ठीक हूँ… मैं पढ़ती हूँ, लिखती हूँ… मैं हिम्मत बनाए हुए हूँ। यह मुश्किल है, लेकिन मैं हिम्मत बनाए हुए हूँ।
उसने एक पल के लिए मुझे देखा, फिर मुस्कुराई।
“आप जानते हैं… इन मुलाकातों से हमें भी फायदा होता है। हम सिर्फ चिट्ठियां पढ़ना नहीं चाहते। हम बात करना चाहते हैं। विचारों का आदान-प्रदान करना चाहते हैं। आपको जानना चाहते हैं।”
उसने ये बात नरमी से, लेकिन पूरी ईमानदारी से कही। वे महज़ संदेशवाहक बनकर चिट्ठियाँ पहुँचाना या सिगरेट देना नहीं चाहते थे। वे जुड़ाव चाहते थे। सच्चा जुड़ाव। इंसानियत।
और हमने वही बनाया।
हर हफ्ते कोराली आती थी। वह खबरें लाती थी, मुस्कुराहटें लाती थी, और दिल को छू लेने वाली बातें कहती थी। वह कैंटीन से मेरी ज़रूरत की चीज़ें लिख लेती थी—ऐसी चीज़ें जो मैं खुद नहीं खरीद सकती थी। नूडल्स का एक पैकेट, पाउडर वाला दूध, थोड़ा सा साबुन। छोटी-छोटी चीज़ें जिनसे बहुत फर्क पड़ता था।

कभी-कभी, वह अपने जीवन के बारे में थोड़ी-बहुत बातें बताती थीं। अपने बच्चों के बारे में। बैंकॉक के बारे में। राजनयिक भोजों के बारे में। बहुत ज़्यादा निजी बातें नहीं, बस इतना कि संतुलन बना रहे। आपसी सम्मान। सच्ची दिलचस्पी।
"जानती हो, कोराली... तुम यहाँ जो कुछ भी करती हो, उसका बहुत महत्व है।" “मैं यह धन्यवाद पाने के लिए नहीं कर रही हूँ,” उसने जवाब दिया। “मैं यह इसलिए कर रही हूँ क्योंकि मेरा मानना है कि हर किसी को थोड़ी सी रोशनी पाने का हक है। यहाँ तक कि यहाँ भी।”
कैथी भी कभी-कभी आती थी। वह शांत स्वभाव की थी, लेकिन उतनी ही दयालु थी। वे बारी-बारी से, अपने-अपने शेड्यूल के अनुसार, आती थीं, और जब वे फ्रांस या कहीं और छुट्टियों पर जाती थीं, तो उसके बाद की खामोशी बहुत गहरी होती थी। बाहरी दुनिया से संपर्क का अभाव... यह बहुत दुखद था। मैं उनके लौटने का इंतज़ार उसी तरह कर रही थी जैसे कोई वाक्य के अंत का इंतज़ार करता है। कोराली मेरी राहत बन गई। मेरी हर गुरुवार की छोटी सी आशा की किरण। एक बेंच। एक पत्र। शोरगुल में एक मधुर आवाज। जीवन की एक साँस।
“जानती हो,” उसने एक बार मुझसे नरमी से कहा, “सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि तुम समझ लो कि बाहर, तुम्हें भुलाया नहीं गया है।”
मैंने कृतज्ञतापूर्वक उत्तर दिया, "मुझे पता है। लेकिन कभी-कभी, यह विश्वास करना मुश्किल होता है कि लोग अब भी मेरे बारे में सोचते हैं, जब यहाँ सब कुछ रुका हुआ सा लगता है।"
"इसीलिए तो," उसने मुस्कुराते हुए जोर देकर कहा, "जब भी मैं आपके लिए कोई संदेश लाती हूँ, तो मैं चाहती हूँ कि आपको याद रहे कि कोई न कोई, कहीं न कहीं, आपका इंतजार कर रहा है। कोई तो अब भी आप पर विश्वास करता है।"
उन सरल लेकिन गहरे संवादों ने मेरे दिल को सुकून दिया। समय के साथ, कोराली और मेरे बीच एक सच्ची दोस्ती पनप गई—लगभग परिवार जैसी। हर हफ्ते, वह मेरे प्रियजनों के संदेश लाती, मेरे खाते में पैसे जमा करती, मुझे खाने-पीने का सामान मंगवाने में मदद करती—लेकिन सबसे बढ़कर, उसने मुझे सहानुभूति और बिना किसी भेदभाव के दयालुता दिखाई, जिससे मुझे भविष्य के लिए उम्मीद मिली।
शाही क्षमादान के ज़रिए रिहाई की संभावनाओं को बेहतर बनाने के लिए, मुझे अपनी श्रेणी को उन्नत करना ही था। और बिल्डिंग 1 की उस समानांतर दुनिया

में, एक शख्स सबसे अलग था—एक ऐसा व्यक्ति जिसका सभी सम्मान करते थे: तास्सी।
एक नाइजीरियाई। लंबा, चौड़े कंधों वाला, हमेशा सिर ऊंचा रखने वाला, गहरी और स्थिर आंखों वाला। बाहर अफवाह थी कि वह कभी ड्रग लॉर्ड था—उन अछूतों में से एक जिनके साथ विश्वासघात नहीं किया जा सकता था। लेकिन क्लॉन्ग प्रेम की चारदीवारी के पीछे, वह एक अलग ही इंसान बन गया था।
सात साल के कारावास ने उन्हें बदल दिया था। उनका झुकाव ईश्वर की ओर हो गया था। दूसरों की ओर। वे हर सुबह प्रार्थना करते थे, कभी भी प्रार्थना सभा में जाना नहीं भूलते थे, हमेशा दूसरों के लिए दयालु शब्द और मददगार हाथ रखते थे। लेकिन वे कोई भोले-भाले उपदेशक नहीं थे। तास्सी एक नेता भी थे। एक मजबूत स्तंभ।
वह सभी विदेशियों के प्रतिनिधि बन गए थे—निराशा की इस धरती पर हमारे संघ के नेता। वह भवन निर्माण प्रमुखों से बातचीत करते थे, तनाव कम करते थे, और जब हममें से किसी को अन्यायपूर्ण तरीके से दंडित किया जाता था तो स्पष्टीकरण मांगते थे। उन्होंने न केवल अपने साथी नाइजीरियाई लोगों के लिए, बल्कि हम सभी के लिए आवाज़ उठाई।
उसके बहुत मजबूत संपर्क थे। गहरे संपर्क। उसने कमांडरों, अधिकारियों और जेल ट्रस्टियों के साथ संबंध बनाने में वर्षों बिताए थे। जब कोई समस्या आती, लोग उसके पास जाते। जब कोई निर्णय लेना होता, तो उससे सलाह ली जाती थी।
इसलिए स्वाभाविक रूप से, मैंने अपने वर्गीकरण में मदद के लिए उनसे संपर्क किया।
क्योंकि अगर मैं "सामान्य" स्तर पर ही रहता, तो मुझे कभी भी शाही क्षमादान नहीं मिलता। और मैं ऐसा नहीं कर सकता था। मुझे "उत्कृष्ट" श्रेणी में पहुंचना था—जो सजा में महत्वपूर्ण कमी का सुनहरा मौका था। आजादी की कुंजी।
लेकिन वहां तक पहुंचने का रास्ता किसी काफ्का की कहानी से कम नहीं था। बाइबल डिप्लोमा का एक कोर्स था। सैद्धांतिक रूप से, आपको बस एक प्रोटेस्टेंट पादरी के साथ चार बार पत्रों का आदान-प्रदान करना होता था— बाइबल, नैतिकता, आस्था और ईसाई आचार से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देने होते थे। लेकिन व्यवहार में, एक बार के आदान-प्रदान में ही दो से तीन महीने

लग जाते थे। पत्र भेजने, प्राप्त करने, प्रक्रिया पूरी करने और उत्तर देने में समय लगता था—फिर उत्तर वापस आने में। वर्षों का धैर्य।
और धैर्य... वो चीज थी जो मुझमें नहीं थी।
इसलिए तासी ने खुद ही मामले को अपने हाथ में ले लिया। एक दिन, दो बातचीत के बीच, वह पुराने बॉक्सिंग रिंग हैंगर के नीचे मुझसे मिलने आया।
“लियो, तुम्हारे पास उस चिट्ठी-पत्री के झंझट के लिए समय नहीं है। तुम्हें कागज़ चाहिए? मैं तुम्हारे लिए ले आता हूँ।”
वह हमेशा जल्दी-जल्दी, लेकिन शांत भाव से बोलते थे। मानो उन्होंने सब कुछ देखा हो, सब कुछ जिया हो।
मैंने पूछा, "कितने?"
“सिगरेट के दो पैकेट। पादरी? उसकी चिंता मत करो। तुम्हें तुम्हारी डिग्री मिल जाएगी। और अगर शाही क्षमादान मिल जाता है तो तुम तैयार रहोगे।”
मैंने सिर हिलाया। हमारा सौदा हो गया।
तीन दिन बाद, मेरे हाथों में हल्के सफेद रंग का एक कागज था जिस पर एक छोटा सा क्रॉस का निशान और कुछ अंग्रेजी अक्षर लिखे थे। मेरा नाम। मेरी कक्षा। 'प्रमाणित' शब्द।
फिर अन्य डिग्रियां प्राप्त हुईं।
सबसे पहले, सैन्य प्रशिक्षण प्रमाण पत्र। आपको यह साबित करना था कि आपने दो सप्ताह का एकीकरण पाठ्यक्रम पूरा कर लिया है। आसान था। एक्सल और मैंने हर सत्र का अक्षरशः पालन किया था। लेकिन फिर से, तासी के थोड़े से प्रोत्साहन ने काम को तेज़ी से पूरा करने में मदद की।
और फिर, जिस पर मुझे सबसे ज्यादा गर्व था: थाई भाषा में पढ़ने और लिखने का डिप्लोमा।
मैंने वो नहीं खरीदा।
मैं यह कमाया।
मैंने टूटी-फूटी कंक्रीट की बेंचों पर, सूरज की तेज़ रोशनी में बैठकर थाई भाषा सीखी। मैं हर दिन अक्षर, शब्द और वाक्य नकल करता था। मैं खाने के लेबल, चेतावनी के संकेत, पुराने अखबारों में छपे छोटे-छोटे विज्ञापन पढ़ता था। मैं धैर्यवान थाई कैदियों से मदद मांगता था। मैं उनकी आकृतियों और ध्वनियों की नकल करता था, उनका उच्चारण सीखता था। और एक दिन: मैं पढ़ सकता था। और मैं लिख भी सकता था।

जब मैं पढ़ने का टेस्ट देने गई तो मैं घबराई हुई थी। लेकिन अधिकारी मुस्कुराए और मुझे आँख मारते हुए सर्टिफिकेट दे दिया।
"बुरा नहीं है, फरांग।"
और उन तीन डिप्लोमा को हासिल करने के बाद, मैं आखिरकार "उत्कृष्ट" कक्षा के लिए आवेदन कर सकता था।
जिस दिन सब कुछ स्वीकृत हो गया, उस दिन तासी ने मेरे कंधे पर थपथपाया। “देखो भाई, तुम्हें बस सही दरवाजा ढूंढना था।”
“धन्यवाद, तासी। तुम्हारे बिना…”
उसने हाथ के इशारे से मेरी बात काट दी।
"यहां हम या तो साथ मिलकर जीवित रहते हैं या अकेले मर जाते हैं।"
मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा।
उस पल से मुझे थोड़ी राहत मिली। मैं तैयार थी। अगर शाही क्षमादान की घोषणा होती, तो मैं पीछे नहीं छूटती।
और वह... वह मेरी मौन जीत थी।
हर सुबह, मैं एक तय दिनचर्या का पालन करता था: भोर में बौद्ध प्रार्थना की कर्कश आवाज से जागकर, मैं उस अनिवार्य क्षण का उपयोग बाइबल पढ़ने या अपने भविष्य के बारे में सोचने के लिए करता था। जैसे ही हमें कोठरियों से बाहर निकलने की अनुमति मिलती, मैं जल्दी से लॉकर से अपना सामान लेता और विशाल नालीदार छत के नीचे, पुराने बॉक्सिंग रिंग के पास स्थित अपनी पसंदीदा जगह पर चला जाता।
वहीं मुझे डेनिस मिलते थे: एक उम्रदराज अमेरिकी, जो विचारों और अनगिनत किताबों में डूबे रहते थे। वे लगातार लिखते रहते थे, इस विश्वास के साथ कि एक दिन उनकी रचनाएँ प्रकाशित होंगी। उनकी उपेक्षित सूरत और नाज़ुक सेहत देखकर मेरा दिल टूट जाता था।
“डेनिस, आज आप कैसे हैं?”
“अभी भी सांस ले रहा हूँ,” वह अपनी व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ कहता था। “जब तक मैं लिख सकता हूँ, तब तक लिखता रहूँगा।”
“क्या आपको लगता है कि वे मेरी किताबें प्रकाशित करेंगे?” उन्होंने एक बार मुझसे पूछा था।
मुझे पूरा यकीन है कि उन्हें पढ़ा जाना चाहिए।

“क्या आपने वॉल्यूम 4 का अंत देखा? मैंने एक ऐसे समाज की कल्पना की है जिसमें जेलें नहीं हैं। क्या आपको लगता है कि ऐसा समाज अस्तित्व में रह सकता है?”
"शायद किसी दूसरी दुनिया में।"
डेनिस ने नहाना छोड़ दिया था। उसके नाखून काले पड़ गए थे, पैरों में संक्रमण हो गया था। लेकिन वह लिखता ही रहा। मानो शब्दों से वह क्षय को हरा सकता हो। मैं भावुक हो गया। काश मैं उसकी और मदद कर पाता।
उसी दिन, एलेक्स और ली (ब्रिटिश सैनिक) ने मुझे प्रशिक्षण में वापस लौटने के लिए प्रेरित किया। उनकी ऊर्जा संक्रामक थी।
"चलो, हमारे साथ दौड़ो," ली ने अपने भारी लहजे में कहा। "इससे तुम्हें फायदा होगा।"
इसलिए, मैंने हर सुबह पाँच किलोमीटर दौड़ना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे, मुझे कुछ शारीरिक और मानसिक शक्ति वापस मिल गई—ऐसी शक्ति जो मैंने लंबे समय से महसूस नहीं की थी। खेल मेरे लिए एक सहारा बन गया, जिसने मुझे अवसाद और अकेलेपन से लड़ने में मदद की।
दिन लंबे थे, लेकिन पढ़ाई, बातचीत और कसरत के बीच मैंने धीरे-धीरे संतुलन बनाना सीख लिया। फिर भी, जूलिया की अनुपस्थिति, मेरी माँ की आर्थिक तंगी और मेरे भाई जीन-पियरे से जबरन अलग होने का बोझ मेरे दिल पर गहरा था। मेरे पिता की दर्दनाक याद—और उनका विश्वासघात—एक गहरे, ताज़े घाव की तरह था जिसे जेल की दिनचर्या भी पूरी तरह से भर नहीं सकती थी।
और मैंने बाइबल खोली। फिर से। उसके पन्ने मुड़े हुए थे, नमी की गंध मेरी नाक में समा रही थी। लेकिन मैंने पढ़ा। क्योंकि पढ़ने का मतलब था टूटकर बिखर न जाना।
दिन बीतते गए... और सब एक-दूसरे में घुलमिल गए। यही तो जेल थी। लोगों की सोच के विपरीत, यह नाटकीय घटनाओं की एक श्रृंखला नहीं थी, बल्कि समय का धीरे- धीरे मिट जाना था। एक उलटी रेत घड़ी, जहाँ हर कण मानो जम गया हो, बासी हवा में लटका हुआ हो।
मेरी दिनचर्या लगभग स्वतः ही निर्धारित हो गई थी। हर सुबह, मैं बुद्ध के संगीत की ध्वनि से जागता, घुटनों में दर्द होता, फटे हुए लिनोलियम पर तीन घिसे-पिटे कंबलों पर सोने से कमर अकड़ी हुई होती। मैं अपनी नीली चप्पलें

पहनता—जो हमेशा पिछले दिन से गीली रहती थीं—और जेल के लंबे गलियारे में दौड़ता हुआ निकल जाता।
वापस आकर मैंने सन्नाटे में एक कैन सार्डिन मछली जल्दी-जल्दी खा ली, फिर खामोश मेस हॉल में एक गुनगुनी प्लास्टिक की प्याली में कॉफी पी। कसरत के बाद हमेशा एक ऐसा पल आता था—जब हमारे पसीने से तर शरीर छांव और शांति की तलाश करते थे। विदेशी लोग इकट्ठा हो गए। हम मुश्किल से ही कुछ बोलते थे। बस एक हल्की सी मुस्कान, "शुभ प्रभात" या गर्मी की शिकायत।
मैं बहुत कम खाती थी। दिन में दो बार ही खाना खाती थी, बस। दोपहर के खाने में, मैं अपनी सार्डिन मछली के साथ दो उबले अंडे और एक सेब मिला लेती थी। ये महंगे अतिरिक्त सामान थे, जो मैंने कैंटीन से मंगवाए थे, वो भी मेरे प्रियजनों द्वारा भेजे गए पैसों से। लेकिन पहले जैसा नहीं था। वे अब यहाँ नहीं थे।
जूलिया अब मिलने नहीं आती थी। मेरी माँ भी नहीं आती थी। कोराली और कैथी— हमारी मुलाक़ातों—के द्वारा भेजे गए पत्र, पैसे और संदेश मुझे हिम्मत देते रहे… लेकिन अब मैं किसी से मिलती-जुलती नहीं थी। शारीरिक संपर्क का अभाव, सच्ची नज़र का अभाव, एक दिली मुस्कान का अभाव, यह सब एक धीमे ज़हर की तरह असर कर रहा था।
भीड़भाड़ वाली जेल में अकेलापन सबसे क्रूर यातना है।
हर इंच जगह भरी हुई है, चहल-पहल से भरी हुई है, जीवन से सराबोर है... लेकिन आपने इतना अकेलापन पहले कभी महसूस नहीं किया। कोई निजता नहीं। कोई शांति नहीं। रात में भी—खर्राटे, चरमराहट, कराहें और घायल बच्चों की तरह चीखते पंखे आपको याद दिलाते हैं कि आप कभी भी पूरी तरह से अकेले नहीं हैं। सिवाय अपने मन के। और वहाँ... एक रेगिस्तान है।
नियमित और निर्मम तलाशी अभियान हमें यह याद दिलाने के लिए थे कि यहां आपने जो कुछ भी बनाया है, वह पल भर में आपसे छीना जा सकता है।
एक दिन, मैं आंगन से वापस आया तो देखा कि मेरी कॉफी का डिब्बा खाली पड़ा था, मेरे पत्र मुड़े-तुड़े पड़े थे, और मेरी तस्वीरें ज़मीन पर बिखरी पड़ी थीं। पुलिसवालों ने सब कुछ खंगाला था। बस जाँच करने के लिए। बस यह दिखाने के लिए कि वे ऐसा कर सकते हैं।
मैंने कांपते हाथों से तस्वीरें उठाईं। एक मेरी माँ की, एक मेरे भाई की। दूसरी जूलिया की, ब्लैक एंड व्हाइट में। मेरा मन चीखने का कर रहा था। पर

किसलिए? इसके बजाय, मैंने धीरे से फटे किनारों को मोड़ा और उन्हें वापस एक प्लास्टिक बैग में रख दिया।
मेरी लाल आँखें देखकर यूजीन ने कहा, "यह तुम्हारे बारे में नहीं है, तुम्हें पता है ना? यह तो बस व्यवस्था है। इसे अपनी आत्मा पर हावी मत होने दो।"
मैंने सिर हिलाया। मैं उसकी बात पर विश्वास करना चाहता था।
और फिर… हत्या हो गई।
एक सुबह, ज़ाहिर—एक पाकिस्तानी युवक जिसे मैं बहुत पसंद करता था—का शव एक खाली मैदान में मिला, उसकी छाती पर देसी चाकुओं से वार किए गए थे। एक थाई व्यक्ति, जिससे उसकी एक हफ्ते पहले बहस हुई थी, ने इंतज़ार किया था... सही मौके का इंतज़ार किया और फिर उसकी बेरहमी से हत्या कर दी।
मैंने उसे देखा। वहीं लेटा हुआ। आँखें खुली हुई। एकदम स्तब्ध।
यह वास्तविक नहीं लग रहा था।
“कुछ नहीं… उसका पुनर्जन्म होगा,” एक थाई व्यक्ति ने शव के पास से गुजरते हुए लापरवाही से कहा।
उसका पुनर्जन्म होगा। यह सोचकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए। क्योंकि मेरे लिए ज़ाहिर सिर्फ़ एक कैदी नहीं था। वह एक इंसान था। उसके बच्चे थे। उसने मुझे अपनी पत्नी और कराची में अपनी दुकान के बारे में बताया था। और अब... वह कुछ भी नहीं था। बस एक लाश जिसे साफ़ करना था।
और फिर भी—जीवन चलता रहा। मानो कुछ हुआ ही न हो।
कुछ दिनों बाद, एक नाइजीरियाई व्यक्ति को चोरी हुए दूध के राशन को लेकर कंक्रीट के डम्बल से सिर पर बुरी तरह मारा गया। उसकी एक आँख चली गई। वह बच तो गया, लेकिन दुनिया को देखने का उसका नजरिया फिर कभी पहले जैसा नहीं रहा। हर दिन, मैं सोचता था कि कहीं अगला नंबर मेरा ही न हो। लेकिन अजीब बात है कि मुझे कभी कोई फर्क नहीं पड़ा। शायद मुक्केबाजी की वजह से। शायद इसलिए कि मैं मुस्कुराता था। या शायद इसलिए कि मैं सुनता था। या शायद—बस शायद— इसलिए कि मेरे अंदर अभी भी कुछ ऐसा था जिसे जेल तोड़ नहीं पाई थी।
और फिर एलेक्स चला गया।
मेरा मोबाइल साथी। मेरा मौन सहारा। मैंने उसे अपना सामान समेटते, जूते साफ करते और अपनी खरीदारी की सूची को दसवीं बार पढ़ते हुए देखा।
“तुम मुझे बहुत याद करोगे, यार,” उसने कहा।

“तुम भी… जूलिया को फोन करो। उसे बताओ कि मैं अभी भी उम्मीद बनाए हुए हूँ।”
"वादा करना।"
“तुम भाग्यशाली हो, एलेक्स। बाहर का आनंद लो।”
“मैं कसम खाता हूँ कि मैं जूलिया को फोन करके तुम्हारा संदेश उसे दे दूंगा। हिम्मत मत हारो। तुम्हारा समय भी आएगा,” उसने स्नेहपूर्वक कहा। लेकिन मन ही मन मुझे पहले से ही पता था। एक बार कोई बाहर आ जाए तो... वो गायब हो जाता है। चाहे कितने भी वादे किए गए हों—दोस्त हमेशा गायब हो जाते हैं, अपनी खोई हुई आज़ादी में समा जाते हैं। और मैं यह बात समझ गया था। मुझे पता था कि एक बार जब मैं बाहर आ जाऊँगा, तो मैं भी उस काले अध्याय को हमेशा के लिए बंद करना चाहूँगा।
फिर भी, हर विदाई दिल को झकझोर देने वाली थी। दोस्ती का एक और टुकड़ा हाथ से फिसल रहा था, और वह चुभने वाला अकेलापन और गहरा होता जा रहा था।
मुझे पता था। उससे पहले के सभी लोगों की तरह, वह भी गायब हो जाएगा। एक संदेश। शायद दो। फिर कुछ नहीं।
स्वतंत्रता इतनी क्रूर होती है—यह सब कुछ मिटा देती है।
अगले दिन, मैं अंग्रेजी जेल के प्रमुख यूजीन से मिलने गया।
क्या यहाँ कोई खाली जगह है?
“जी हाँ, बिल्कुल। जॉर्ज कल रिहा हो रहा है। क्या तुम इसे लेना चाहते हो?” खुशी से।
“ठीक है। रोसबिफ की धरती पर आपका स्वागत है, लियो।”
और बस यूं ही, मैं विदेशियों के कमरे में रहने चला गया। दस बिस्तर, एक टीवी, अंग्रेजी फिल्में—आखिरकार, महीनों तक थाई कराओके और बिना सबटाइटल वाले धारावाहिक देखने के बाद मेरे कानों को राहत मिली।
मैं अपने भीतर की मानवता का एक छोटा सा अंश पुनः प्राप्त कर रहा था।
हम सिर्फ आठ लोग थे, इस भीड़भाड़ वाली जेल में ऐसा होना बहुत कम देखने को मिलता था। यूजीन ने गार्डों को भारी रिश्वत देकर कमरे को काबू में रखा था। पहली बार, मैं अंग्रेज़ी में फिल्में देख पा रहा था—यह मेरे लिए एक अनमोल तोहफा था। एक पल के लिए जेल का माहौल थोड़ा कम डरावना लगा। मैथ्यू के चुटकुले, ली की सैन्य कहानियां, स्टुअर्ट के इशारे—ये सभी छोटे-छोटे पल थोड़ी राहत देते थे। और रात को, मैं आखिरकार थोड़े कम डर के साथ सो सका।

फिर भी, इस लगभग सौहार्दपूर्ण वातावरण में भी, अकेलापन मेरा पीछा नहीं छोड़ रहा था। अपनों के पत्रों और पैसों के बावजूद, उनकी अनुपस्थिति—उनकी शारीरिक अनुपस्थिति—लगातार दर्द बनी हुई थी। कोराली का हर पत्र, स्वयंसेवी दौरों के दौरान पहुँचाया गया हर संदेश, मुझे उनकी दूरी का दर्दनाक एहसास दिलाता था। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता था जैसे जीवन हर हफ्ते मेरे हाथों से फिसल रहा हो।
रोज़ाना की सैन्य कसरत, बेस्वाद खाना, लगातार तलाशी—ये सब मुझे याद दिलाते थे कि मैं अब भी कैदी हूँ। दूसरे विदेशियों के सामने भले ही मैं खुशमिजाज़ दिखने की कोशिश करता, लेकिन अंदर से मैं खोखला महसूस करता था। एक्सल भी मुझसे दूर चला गया था, उसने एक शांत, एकांत जीवन चुन लिया था। मैं उसका सम्मान करता था, लेकिन इससे मेरा अकेलापन और भी बढ़ गया।
फिर नाइजीरियाई लोगों से लगातार मुलाक़ातें होती रहती थीं—जो अकेले, संघर्षरत थे—और भोजन या कॉफ़ी के लिए भीख माँगते रहते थे। उनकी रोज़ाना की गुज़ारिशें मुझे भावनात्मक रूप से थका देती थीं। मैं हमेशा उन्हें दे नहीं पाता था, और इससे तनाव पैदा होता था।
एक दिन, उनमें से एक चुपचाप मेरे पास आया और बोला, "कृपया, आज बस थोड़ी सी कॉफी मेट दे दीजिए।"
"माफ़ कीजिए... मेरे पास अपने लिए भी मुश्किल से ही पर्याप्त है," मैंने जवाब दिया, यह जानते हुए कि मैं असंतोष का बीज बो रहा था।
हर इनकार मुझे भारी पड़ता था। मैं जानती थी कि उन्हें दुख हो रहा है। लेकिन मुझे अपने थोड़े से सहारे की रक्षा करनी थी। इसने मेरे अंदर एक निरंतर बेचैनी, एक खामोश अपराधबोध पैदा कर दिया जो मुझे अंदर ही अंदर खा रहा था।
मेरी दिनचर्या फिर से शुरू हो गई: दौड़ना, मुक्केबाजी करना, पढ़ाई करना।
लेकिन पहले से कहीं ज़्यादा, मैं महीनों को गिनने लगा। फिर हफ़्तों को।
फिर दिनों को।
मैं थक चुकी थी। मैंने फ्रांस का सपना देखा। अपने परिवार का। एक असली कॉफी का। आजादी का।
फिर भी; मैंने हिम्मत नहीं हारी। क्योंकि मुझे ऐसा करना ही था। क्योंकि मेरे पास करने के लिए और कुछ बचा ही नहीं था... सिवाय जीवित रहने के।

अध्याय 12: बैंकॉक हिल्टन
एलेक्स के जाने के बाद, मैंने और अधिक सक्रिय होने का फैसला किया। उसके जाने से जो खालीपन आया, वह सिर्फ एक दोस्त का नहीं था—बल्कि यह हम विदेशियों और प्रशासन के बीच की खाई भी थी। इसलिए मैंने विदेशियों के नए प्रतिनिधि बनने के लिए "आवेदन" किया, जो एक अनौपचारिक लेकिन रणनीतिक भूमिका थी। किसी को तो बात करनी ही थी, सवाल पूछने ही थे, बातचीत करने ही थे... ताकि इस खाई में कोई टिक सके।
बेशक, तास्सी "बड़े बॉस" बने रहे। एक तरह से परोक्ष यूनियन नेता। आधिकारिक तौर पर, वे नाइजीरियाई लोगों का प्रतिनिधित्व करते थे, लेकिन असल में, वे सभी विदेशी कैदियों पर नज़र रखते थे। उनका रुतबा सम्मान का पात्र था, लेकिन मुख्य रूप से उनकी शांत उपस्थिति और नवप्रवर्तित समर्पण ने हमें प्रेरित किया। वे हर सुबह प्रार्थना करते थे, बाइबल की आयतें सुनाते थे और अक्सर कहते थे:
— “अगर भगवान ने मुझे इतने लंबे समय तक जीवित रखा है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि मैं अंत में उनके साथ विश्वासघात करूंगा।”
वह आंगन के बीचोंबीच शाही कड़ाही की तरह रखे दो विशाल खाने के बर्तनों को संभालता था। वह सबसे बढ़िया टुकड़े—हल्का कच्चा मांस, कुरकुरी सब्जियां — चुनकर अपने और अपने साथियों के लिए रख लेता था। हैरानी की बात है कि किसी को इस पर कोई आपत्ति नहीं थी। हम समझते थे। उसने हमारी बहुत मदद की। लेकिन मैं एक अलग रास्ता चाहता था। मैं कुछ करना चाहता था। शायद खुद को यह साबित करने के लिए कि मैं अब भी मायने रखता हूँ। इमारत के कमांडर ने मुझे आधिकारिक अनुवादक का पद दिया। हर सुबह, सैन्य अभ्यास के बाद, गार्ड थाई भाषा में भाषण देते थे। मेरा काम अन्य विदेशियों के लिए उन्हें अंग्रेजी में ज़ोर से अनुवाद करना था।
— “आप अंग्रेजी बोलते हैं? थाई?” — “थोड़ा-बहुत…” मैंने जवाब दिया। मैंने स्वीकार कर लिया। थोड़ी जल्दी में ही।
बहुत ज़्यादा आत्मविश्वास। मैंने कठिनाई को कम आँका था। अगली सुबह, अपनी तंग नीली वर्दी पहने, मंच पर खड़े होकर, मैंने उनके भाषण का अनुवाद करने की कोशिश की—दिन के नियमों, मुलाक़ात संबंधी घोषणाओं और प्रतिबंधों के बारे में एक लंबा-चौड़ा भाषण। मैं हकलाया, मनगढ़ंत शब्द बोले, और जो कहा जा रहा था उसे समझने में असमर्थ रहा। प्रांगण में एक अजीब सी खामोशी छा गई... फिर

पहली हंसी सुनाई दी। पहले धीमी, फिर तेज़। यहाँ तक कि कुछ विदेशी, जो थाई भाषा मुश्किल से ही बोल पाते थे, समझ गए कि मैं बकवास कर रहा हूँ। निर्देशक ने मुझे खाली, लगभग मनोरंजक नज़रों से देखा।
— “कोई बात नहीं, भूल जाओ,” मैथ्यू ने मुस्कुराते हुए कहा। “कम से कम तुमने कोशिश तो की।”
मैंने तुरंत बाद अपना "इस्तीफा" सौंप दिया। यह बेहद अपमानजनक था। और ऐसी जगह पर शर्मिंदगी दूर नहीं होती, बल्कि हवा में छाई रहती है। लेकिन अंदर ही अंदर, मैं बस निराश था।
यह वास्तव में कोई आधिकारिक पद नहीं था—लेकिन मेरे लिए, यह एक कड़वी विफलता थी।
इसलिए मैं अपनी पसंदीदा चीज़ों की ओर लौट गया: पढ़ना, लिखना, अध्ययन करना। लेकिन वहाँ भी मुझे निराशा ही हाथ लगी। बिल्डिंग नंबर 9 की लाइब्रेरी में जाना मना था। बंद थी। ताला लगा हुआ था। पहुँच से बाहर थी। किसी को पता नहीं था कि ऐसा क्यों था। कोई वहाँ नहीं जाता था। कोई इसके बारे में बात भी नहीं करता था। यह एक रहस्य था जो मुझे अंदर ही अंदर परेशान कर रहा था।
2017 समाप्त हो रहा था। विदेशियों का ब्लॉक—आठ लोगों का वह छोटा सा कमरा — मेरा आश्रय बन गया था। हमारे पास एक दुर्लभ सुविधा थी: अंग्रेज़ी फ़िल्में, धीमी गति का जीवन, एक नियमित दिनचर्या। एकमात्र गैर-यूरोपीय अहोक थे, एक उम्रदराज़ मलेशियाई व्यक्ति—शांत, सुसंस्कृत और विवेकशील। बाकी सब थे मैथ्यू (कनाडाई), ली और स्टुअर्ट (दो ब्रिटिश), ओलिवर (जर्मन) और उनके साथी टिमो, और ज़ाहिर है यूजीन, जो अधिकारियों से हमारा अहम संपर्क सूत्र थे।
और मैंने—इस कभी न खत्म होने वाली अस्थिरता में एक अस्थिर सी स्थिरता पा ली थी।
हर सुबह, अनिवार्य सैन्य अभ्यास। सुबह 5:30 बजे तेज़ संगीत, फिर प्रार्थना, चिल्लाना, आदेश। कोई बात नहीं। बस आज्ञापालन। गतिविधियों की एकरूपता ने एक अजीब तरह की भूलने की प्रक्रिया को जन्म दिया।
क्रिसमस नज़दीक आ रहा था। और इस जेल में, क्रिसमस एक दूर की याद बनकर रह गया था—चावल के दो चम्मचों के बीच फुसफुसाया जाने वाला एक शब्द। लेकिन उस साल, फ्रांसीसी दूतावास आया। और वे अपने साथ घर की एक हल्की सी खुशबू लेकर आए।

सैल्मन। क्रोइसैन्ट। चॉकलेट।
मैंने आँखें बंद करके उनका स्वाद चखा और ठंडी कंक्रीट की बेंच पर चुपचाप रोई। यह किसी स्मृति को कुरेदने जैसा था। मानो किसी दूसरी दुनिया की खिड़की खोल दी हो।
फिर यह अफवाह फैल गई कि बाकी फ्रांसीसी कैदियों को बैंकॉक स्थानांतरित किया जा रहा है।
शायद हम एक साथ हो जाएं। मैंने और एक्सेल ने इस बारे में बात की थी।
— “क्या तुम्हें लगता है कि वे सचमुच आ रहे हैं?” उसने एक रात प्रशिक्षण के बाद पूछा।
— “मुझे उम्मीद है। बस इतना ही कि मुझे अकेलापन कम महसूस हो।”
लेकिन इस अपेक्षाकृत शांति के माहौल में भी हिंसा का खतरा हमेशा बना रहता था।
एक सुबह छह बजे, अहाते में एक चीख गूंज उठी। दस थाई कैदी एक नाइजीरियाई को ज़मीन पर पटक कर पीट रहे थे। उसने एक दिन पहले एक मैच पर बड़ी रकम का दांव लगाया था। हार गया था। और पैसे देने से इनकार कर दिया था।
परिणाम: बेरहमी से पिटाई।
मैं देखने के लिए दौड़ा। बहुत देर हो चुकी थी। उसका शरीर पहले ही बेजान हो चुका था। गार्ड काफी देर बाद आए… कोई प्रतिक्रिया नहीं। कोई जांच नहीं।
— “शर्त नहीं लगानी चाहिए थी,” एक पाउचुए ने कंधे उचकाते हुए बुदबुदाया।
और मैं—बस देखता रहा। और मैंने नोट्स बनाए। मैंने गौर से देखा। जीने के लिए। लिखने के लिए।
याद करने के लिए।
क्योंकि जेल की परिस्थितियाँ कभी नरम नहीं होतीं।
विभिन्न समुदायों के बीच तनाव फिर भड़क उठा। एक रात, दूध के बकाया को लेकर एक फिलीपीनी व्यक्ति की जांघ में चाकू से वार किया गया। फुटबॉल को लेकर हुए विवाद के बाद एक थाई व्यक्ति ने एक नाइजीरियाई पर थूक दिया। हमेशा की तरह, सुरक्षाकर्मियों ने आंखें मूंद लीं।
और फिर, जनवरी की एक ठंडी सुबह, हमें राजा के आधिकारिक दौरे की खबर मिली। स्वयं तो नहीं, लेकिन महल का एक दूत आया था। साल में उन कुछ दुर्लभ पलों में से एक जब जेल को किसी प्रदर्शनी-मंच की तरह सजाना पड़ता था। हमें सब कुछ साफ करने के लिए मजबूर किया गया—दीवारें, बाल्टियाँ, फर्श। उन्होंने

जल्दबाजी में दरवाजों को फिर से रंग दिया। पहरेदार अचानक नरम हो गए। हमें "साफ" वर्दी दी गई—जो दो साइज छोटी थी।
— “शॉर्ट्स पहनो और चुप रहो,” एक छोटे से शॉर्ट्स को हाथ में देते हुए एक कुत्ते ने स्टुअर्ट पर चिल्लाया।
सुबह 10 बजे सन्नाटा छा गया। जैसे उबलते पानी पर ढक्कन रख दिया गया हो।
गाड़ियों का काफिला पहुंचा। भाषण शुरू हुए। सब कुछ थाई भाषा में था। किसी को ठीक से समझ नहीं आया, लेकिन हमने सिर हिलाया। हम मुस्कुराए। हमने अपनी भूमिका निभाई।
और मैं, दो नाइजीरियाई लोगों के बीच बैठा हुआ, मैंने आसमान की ओर देखा।
मुझे अपनी माँ की याद आ गई।
मुझे बेल्जियम में रहने वाले जीन-पियरे की याद आ गई, उनकी मासूम मुस्कान के साथ।
मुझे जूलिया की याद आई।
और मैंने खुद से कहा कि मैं दो और साल नहीं टिक सकता।
उस रात, अपनी कोठरी में वापस आकर मैं रोई।
ज़ोर से नहीं। नाटकीय ढंग से नहीं। बस... चुपचाप। धीरे-धीरे बहते आँसू।
थकावट से। और ज़्यादातर अकेलेपन से।
मैथ्यू ने बिना कुछ कहे मुझे एक मुड़ा हुआ कागज दिया, जिसमें थोड़ा तंबाकू और एक देसी जड़ी बूटी थी, जिसका नाम हम कभी नहीं लेते। हम खिड़की के पास, फटी हुई मच्छरदानी के नीचे, साथ में धूम्रपान करने लगे।
— “तुम जल्द ही बाहर आ जाओगे, दोस्त,” उसने कहा।
— “मैं एलेक्स को उसके जाने से पहले यही कहता था।”
- "अब आपकी बारी है।"
शायद हाँ शायद नहीं।
लेकिन मन ही मन, मुझे लगता है कि मैं इस पर थोड़ा-बहुत विश्वास करता था।
और कभी-कभी, वह थोड़ी सी मदद ही आपको एक और दिन गुजारने के लिए काफी होती है।
उस नए साल की पूर्व संध्या का स्वाद धूल और सन्नाटे जैसा था।
हर साल की तरह, हमने हिम्मत दिखाने की कोशिश की। एक छोटा सा अनौपचारिक संगीत कार्यक्रम, हम आठ लोगों के बीच बाँटे गए दो सूखे केक, और बनावटी मुस्कान।

लेकिन हंसी के पीछे एक गहरा खालीपन था। मैं फ्रांस के बारे में सोच रहा था। अपने परिवार के बारे में। अपनी माँ के बारे में। सोच रहा था कि वे उस पल क्या कर रहे होंगे, जबकि हम यहाँ, उस अंतहीन रात की उमस भरी गर्मी में घंटे गिन रहे थे। सलाखों के पीछे यह मेरी तीसरी क्रिसमस थी, तीसरी नए साल की पूर्व संध्या थी। और कुछ भी, बिल्कुल कुछ भी, इसे आसान नहीं बना सकता था। फिर भी, 2018 की शुरुआत अपेक्षाकृत अच्छी रही। मानसिक रूप से, मैं इस विचार से चिपका रहा कि मेरे पास केवल एक साल बचा है। एक साल अब कुछ भी नहीं था। इतने समय के बाद, एक साल लगभग एक दौड़ जैसा लग रहा था। खैर... उतनी ही दौड़ जितनी आप उस जगह पर लगा सकते हैं जहाँ समय ठहर जाता है, जहाँ हर दिन बिल्कुल पिछले दिन जैसा दिखता है, और जहाँ आशा केवल इसलिए जीवित रहती है क्योंकि मन उसे मरने नहीं देता।
लेकिन मेरे विचारों में कुछ और भी आकार लेने लगा था, जिसने उस अंतिम पड़ाव को एक नया रंग दे दिया। वर्षों में पहली बार, एक संभावना जगी थी—नाजुक, अनिश्चित, लेकिन वास्तविक—कि शायद मुझे थाईलैंड में अपनी सजा पूरी न करनी पड़े।
यह फ्रांस और थाईलैंड के बीच हुए हस्तांतरण समझौते से संबंधित था। शुरू में मैंने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। फिर भी, यह विचार मेरे मन में धीरे-धीरे पनपता रहा।
दोनों देशों के बीच हुए समझौते के अनुसार, थाईलैंड में सजा पाए फ्रांसीसी कैदी कुछ शर्तों के तहत अपनी शेष सजा पूरी करने के लिए फ्रांस वापस भेजे जाने का अनुरोध कर सकते थे। नियम स्पष्ट था: यदि कैदी अपनी सजा का एक तिहाई हिस्सा यानी कम से कम चार साल काट चुका हो, तो वह स्थानांतरण के लिए आवेदन कर सकता था। मेरे जैसे व्यक्ति के लिए, जिसने जेल की दीवारों के पीछे इससे कहीं अधिक समय बिताया था, सैद्धांतिक रूप से मैं इसके लिए पात्र था। लेकिन जेल आपको यह सिखा देती है कि कोई भी चीज उतनी सरल नहीं होती जितनी वह दिखती है।
आवेदन जमा करना तो बस शुरुआत थी। फाइल को थाई और फ्रांसीसी, दोनों ही प्रशासनिक स्तरों से गुजरना पड़ता था। प्रत्येक दस्तावेज़ की समीक्षा, सत्यापन और अनुमोदन समितियों द्वारा किया जाता था, जिनके निर्णय में महीनों, कभी-कभी वर्षों भी लग जाते थे। कैदी की स्थिति के हर पहलू की जांच की जाती थी: मूल दोषसिद्धि, जेल में व्यवहार, क्या कोई बकाया जुर्माना,

अतिरिक्त आरोप या थाईलैंड में लंबित अन्य कानूनी जटिलताएं थीं। यदि जरा सी भी अनियमितता होती—कोई अनसुलझा मामला, प्रशासनिक समस्या, या यहां तक कि कोई गुमशुदा दस्तावेज़—तो पूरी प्रक्रिया शुरू होने से पहले ही रुक सकती थी।
दूसरे शब्दों में कहें तो, कागजों पर योग्यता पूरी होने का मतलब यह नहीं था कि स्थानांतरण वास्तव में हो ही जाएगा। बल्कि इसके विपरीत था।
लेकिन जेल में, छोटी से छोटी संभावना भी ताकत का एक बड़ा स्रोत बन सकती है। उस संधि का अस्तित्व ही यह दर्शाता था कि कहीं न कहीं एक रास्ता ज़रूर है, भले ही वह नौकरशाही और अनिश्चितता की परतों के पीछे छिपा हो। और जब आप सालों तक कंक्रीट की दीवारों और लोहे की सलाखों को घूरते रहे हों, तो यह विचार कि शायद कोई रास्ता हो, चाहे वह कितना भी दूर क्यों न हो, आपके मन को जीवित रखने के लिए काफी होता है।
आशा को निश्चितता की आवश्यकता नहीं होती। उसे केवल एक संभावना की आवश्यकता होती है।
उस साल मेरी बड़ी-बड़ी योजनाएँ थीं। सबसे अहम थी: "उत्कृष्ट" दर्जा हासिल करना। शाही क्षमादान मिलने की स्थिति में यह बेहद ज़रूरी था। मैंने बाइबल के प्रमाणपत्र और थाई भाषा के डिप्लोमा हासिल कर लिए थे, और अब मैं कुछ अन्य "शैक्षणिक" प्रमाणपत्रों पर काम कर रहा था। विषय चाहे कोई भी हो— लेखन, गणित, कानून—जब तक मैं यह साबित कर सकता था कि मैं सीख रहा हूँ, तब तक मैं पदोन्नति के लिए आवेदन कर सकता था।
मैं लगातार आगे बढ़ता रहा, खासकर "टू बी नंबर वन" समूह में शामिल होने के अपने प्रयासों में—यह थाई नशा-विरोधी जागरूकता कार्यक्रम था। संगीत, रंगमंच और जेल के अंदर थोड़ी-बहुत आज़ादी का मिश्रण। इससे मुझे इमारत से बाहर निकलने, पुचुआयों की सफेद टी-शर्ट हासिल करने और कुछ विशेषाधिकार प्राप्त करने का मौका मिलता: पुस्तकालय का उपयोग, बाद में कोठरी में वापस आना, अंतर-इमारती कार्यक्रमों में भाग लेने की क्षमता... बस थोड़ी सी राहत की सांस लेने का मौका। एक सरल योजना, लेकिन बेहद ज़रूरी। क्योंकि उस समय, कोठरी से बाहर तीस मिनट का अतिरिक्त समय भी जीवन का एक सप्ताह पाने जैसा लगता था।
लेकिन यहां कुछ भी कभी सरल नहीं होता।

फिर भी, मुझे एक भूमिका की ज़रूरत थी। एक उद्देश्य की। खासकर पुस्तकालय तक पहुँचने की—जो रहस्यमय तरीके से सभी कैदियों के लिए वर्जित था। भवन संख्या 9। उसकी दीवारों के पीछे, सैकड़ों किताबें, अध्ययन पुस्तिकाएँ, उपन्यास, समाचार पत्र—ढेरों में लगे हुए, भुला दिए गए। कोई नहीं जानता था कि यह वर्जित क्यों था। शायद बौद्धिक पलायन के डर से। शायद इसलिए कि किताबें विचारों को जन्म देती हैं। और यहाँ विचार ज़हर के समान हैं। मैंने अन्य जेलों में बंद सभी फ्रांसीसी कैदियों को नियमित रूप से पत्र लिखे, ताकि उन्हें बैंकॉक स्थानांतरित होने के लिए मना सकूँ। मैंने उन्हें यहाँ के जीवन, रोज़मर्रा की भागदौड़, चुनौतियों के साथ-साथ आशा की दुर्लभ किरणों के बारे में भी बताया।
क्लॉन्ग प्रेम जेल में हिंसा पारंपरिक अर्थों में नहीं होती थी। न ही अंधाधुंध मारपीट होती थी। न ही बड़े पैमाने पर हमले होते थे। नहीं। वहां की हिंसा शांत, अधिक कपटपूर्ण और धीमी गति से होती थी।
यह अंतरंगता का विघटन था।
आप हजारों आवाजों, हजारों शरीरों, हजारों गंधों से घिरे रहते थे। हर मिनट।
हर सेकंड। कोई न कोई आपको देख रहा था, छू रहा था, आपसे बात कर रहा था। कभी कोई विराम नहीं होता था। कभी कोई "मुझे पांच मिनट दीजिए" नहीं कहता था। कभी सन्नाटा नहीं रहता था।
और मानसिक एकांत बढ़ता ही गया। कैंसर की तरह।
अपनों से मिलने, तोहफे भेजने और पैसे मिलने के बावजूद भी मैं अकेलापन महसूस करता था। अकेलापन इसलिए क्योंकि मैं उन्हें देख नहीं पाता था। क्योंकि कोई स्क्रीन, चिप्स का पैकेट या सार्डिन मछली का डिब्बा कभी भी एक नज़र, एक हाथ, एक परिचित चेहरे की जगह नहीं ले सकता था। और जब स्वयंसेवी आगंतुक छुट्टी पर चले जाते थे, जब चिट्ठियाँ खो जाती थीं, तो मैं धीरे-धीरे अकेला पड़ जाता था।
यह किसी भी तरह से सुखद नहीं था। बेशक, इमारत पटाया से ज़्यादा साफ़ थी। लेकिन गर्मी, बदबू, जगह की कमी... इन सबने मिलकर ज़िंदगी को उतना ही असहनीय बना दिया था। बारिश होने पर पूरी जेल दलदल में बदल जाती थी। पानी हमारे टखनों तक, कभी-कभी उससे भी ऊपर तक चढ़ जाता था। चूहे, तिलचट्टे, मरी हुई बिल्लियाँ पानी के गड्ढों में तैरती रहती थीं। मानो प्रलय का मंजर हो।

फिर भी, कभी-कभी पानी की एक बूँद भी नहीं होती थी। हफ्ते में कम से कम दो बार पानी की सप्लाई बंद हो जाती थी। न नहाने की सुविधा, न कपड़े धोने की सुविधा। हमें शाम 5 बजे आँगन के गेट खुलने का इंतज़ार करना पड़ता था। फिर, एक झुंड की तरह, एक हज़ार से ज़्यादा कैदी बोतल या कटोरा भरने के लिए दौड़ पड़ते थे। पूरी तरह से अफरा-तफरी मच जाती थी। हम दो लीटर पानी के लिए लगभग आपस में लड़ते थे।
अगर आप समय पर नहीं पहुँच पाते, तो आपको अपने पास रखे हुए बोतलबंद पानी से ही नहाना पड़ता—या फिर बिल्कुल भी न नहाना पड़ता।
कंबल भी विलासिता की वस्तु बन गए थे। गहरे नीले रंग के कंबल सबसे ज़्यादा पसंद किए जाते थे—नरम और कम चुभने वाले। पुराने भूरे कंबल घिसे-पिटे, खुजलीदार और नींद में खलल डालने वाले होते थे। आप गद्देदार कवर बनवा सकते थे, जो आपकी त्वचा और चुभने वाले पॉलिएस्टर के बीच एक सुरक्षा कवच का काम करता था। लेकिन इसके लिए आपके पास पैसे होने चाहिए थे—और उसे संभाल कर रखना भी ज़रूरी था।
क्योंकि चोरी लगातार होती रहती थी।
कपड़े, कंबल, तौलिए, सूखने के लिए छोड़ी गई कोई भी चीज़ सबके लिए खुली थी। सुखाने के रैक सार्वजनिक थे। कोई भी वहाँ से गुज़र सकता था, देख सकता था और अपनी ज़रूरत की चीज़ें ले जा सकता था। एक बार निबुकी नाम के एक नाइजीरियाई व्यक्ति से मेरी ज़बरदस्त बहस हुई थी, जिसने मेरी स्वेटशर्ट चुरा ली थी। हम एक-दूसरे पर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाए। मेरा मन कर रहा था कि उसका गला फाड़ दूं। लेकिन मैंने खुद को रोक लिया। क्योंकि मुझे पता था कि मैं क्या जोखिम उठा रहा हूं। मैंने उन लोगों को देखा था जिन्हें एकांत कारावास में भेज दिया गया था। महीनों तक अंधेरे में जंजीरों में जकड़े हुए। जब वे बाहर आए, तो उनकी त्वचा चॉक की तरह पीली पड़ गई थी। उन्होंने सूरज नहीं देखा था, बात नहीं की थी। भूतों जैसे।
और हर जगह हथियार बिखरे पड़े थे। नुकीले चम्मच, लोहे के टुकड़े, धातु की पेटैंक गेंदें जो पहरेदारों के लिए थीं—लेकिन किसी की भी पहुँच में आसानी से उपलब्ध थीं।
एक दिन, आजीवन कारावास की सजा काट रहे एक थाई कैदी ने—जिसके पास खोने के लिए कुछ नहीं बचा था—अपने पड़ोसी की खोपड़ी पर उन्हीं गेंदों में से एक से हमला कर दिया। एक मूर्खतापूर्ण बहस। तुरंत मौत।

मैंने दूरी बनाए रखी। विदेशियों के साथ रही। हमारा अपना एक छोटा सा कोना था, हमारी अपनी दिनचर्या थी। और किसी तरह... हमने सब कुछ संभाल लिया।
फिर फरवरी में, लाउडस्पीकर पर मेरे नाम की आवाज गूंजी:
— “लियो, मुख्य द्वार।”
मैं भागा। मुझे पता नहीं क्यों, लेकिन मुझे एक एहसास था। और जब मैं वहाँ पहुँचा… तो मैंने उन्हें देखा। मार्को और यूसुफ। उनके कंधों पर बैग लटके हुए थे, और उनके चेहरों पर थकावट और राहत का मिलाजुला भाव था।
— “मार्को, यार! आखिरकार तुमने कर ही दिखाया!”
— “हाँ? तुम मेरा ही इंतज़ार कर रहे थे या क्या?”
— “बेशक मैं था! तुम्हें बहुत देर लग गई! चलो, तुम देखोगे—यहाँ साँस लेना थोड़ा आसान है।”
मैं मार्को का लंबे समय से इंतजार कर रही थी। यूसुफ को मैं अभी तक नहीं जानती थी। लेकिन मुझे वह जल्दी ही पसंद आ गया था।
यूसुफ चोनबुरी से आया था। उसने मार्को के साथ वहाँ दो साल बिताए थे। क्रेडिट कार्ड घोटाले में उसे 25 साल की सजा मिली थी। उसके पाँच बच्चे, एक पत्नी और एक बर्बाद जिंदगी थी। वह न तो कोई बदमाश था और न ही आदतन अपराधी।
जैसा कि उसने कहा, वह बस "एक बार कोशिश करना" चाहता था। और पकड़ा गया।
अपराधबोध उसे अंदर ही अंदर खा रहा था। वह लगातार अपने बच्चों के बारे में बात करता रहता था। उनमें से दो अभी छोटे बच्चे थे। वह कभी-कभी रात को चुपचाप रोता था। मैं अनदेखा करने का नाटक करती थी।
मैंने उनका यथासंभव स्वागत किया। उन्हें खाना खिलाया। विदेशी ब्लॉक के हमारे "बॉस" तासी से उनका परिचय कराया। उन्हें जेल का पूरा परिसर दिखाया— हमारा छोटा सा शिविर, पुराने बॉक्सिंग रिंग के पास मेरी गत्ते की चटाई जहाँ हम अपना सामान रखते थे।
वे हमें “फ्रांसीसी गिरोह” कहने लगे। एक्सल ने भी उनका स्वागत किया, हालाँकि उसने दूरी बनाए रखी। वह हमारी कोठरी में नहीं था—उसने थाई लोगों के साथ रहना चुना था। लेकिन हम फिर भी हर दिन मिलते थे, एक छोटा सा समूह, अजनबियों के बीच एक नन्हा परिवार।
मैंने अपने साथी कैदियों से विनती की कि मार्को को हमारे कमरे में रहने दें। लेकिन हमेशा की तरह, स्थिति नाजुक थी। किसी नए व्यक्ति को अंदर आने

देना शांति भंग कर सकता था। फिर भी, मैंने ज़िद की। क्योंकि जब मैं किसी के लिए सिफारिश करता हूँ, तो मैं पूरी तरह से करता हूँ।
अगले दिन, मार्को ने मुझे चोनबुरी में बिताए अपने वर्षों के बारे में बताया। यह कठिन था, लेकिन सहने योग्य था। पटाया से बहुत अलग नहीं। पानी की कमी। हिंसा। अपमान।
लेकिन जिस बात ने उन्हें सबसे ज्यादा चौंकाया था, वह कैदियों के बीच छिपी यौन प्रवृत्ति थी। यह यहाँ भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी।
हमारे बीच ही लेडीबॉय रहते थे—जिनमें से अधिकांश पूरी तरह से ट्रांसिशन कर चुके थे। उनकी संख्या लगभग तीस थी। वे धूप से बचने के लिए छाते लिए रहते थे। थाई लोग गोरी त्वचा के प्रति जुनूनी होते हैं—लेकिन साथ ही शौचालयों के अंदर छिपकर खुद को बेचने के लिए भी।
सप्ताहांत में वे छोटे-छोटे शौचालय मिलने-जुलने के अड्डे बन जाते थे। एक गत्ता, एक छाता दरवाजे की तरह—बस हो गया। बदले में पैसे, खाना, मेकअप, या कभी-कभी सिर्फ बैंक ट्रांसफर।
कुछ पुरुष बुरी तरह प्यार में पड़ गए। जैसे खाओ, एक साधारण थाई युवक जो दो साल की सजा काट रहा था। उसने बिम को अपना सब कुछ दे दिया, जो एक आकर्षक महिला थी, जिसके स्तनों में इम्प्लांट लगे थे और वह दुबली-पतली थी। उसने उसे अपना सब कुछ दे दिया। मेकअप, खाना, कपड़े। लेकिन बिम ने आखिरकार उसे छोड़ दिया। कम पैसे, कम उपहार।
खाओ ने अपनी कलाई काट ली। उसकी मृत्यु उसकी कोठरी में हुई।
यहां लोग एक नज़र, एक स्पर्श, एक उपस्थिति की कमी से अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं। क्योंकि अकेलापन हर जगह है, चाहे चारों ओर हज़ारों लोग ही क्यों न हों। क्योंकि प्रेम, आत्मीयता, कोमलता की कमी... किसी भी मार-पीट से कहीं अधिक धीमी यातना है।
और मैं—इन सब के बीच फंसा हुआ—आगे बढ़ता रहा।
एक घंटा। एक-एक मिनट करके।
मार्को के आने के बाद, जीवन थोड़ा हल्का लगने लगा।
हमने खुद को समझाने की कोशिश की कि सबसे बुरा समय बीत चुका है, कि हम आखिरकार अपने घर की ओर जा रहे हैं। लेकिन जल्द ही एक और डर मन में घर कर गया। एक गहरा, अधिक कपटी डर। कोई साफ-सुथरी कोठरी, कोई संगीत कार्यक्रम, कोई मुलाकात इसे कम नहीं कर सकी: क्या होगा अगर हमारी स्थानांतरण फाइलें

स्वीकृत न हों? क्या होगा अगर पुलिस ने हमारे स्थानांतरण को रोकने के लिए कोई नया मामला, कोई छिपा हुआ जुर्माना या कोई समानांतर आरोप लगा दिया हो? हमने ऐसा कई बार होते देखा था। कैदी उम्मीद से भरे हुए स्थानांतरण समिति के सामने पेश होते थे, लेकिन अचानक एक पुरानी फाइल के फिर से सामने आने से — या इससे भी बदतर, मनगढ़ंत तरीके से बनाए गए एक बिल्कुल नए मामले से—उनकी उम्मीदें टूट जाती थीं।
लेकिन उस चिंता के बावजूद, हम फिर से साथ थे। मार्को मेरी कोठरी में था, यूसुफ दूसरी कोठरी में। मैंने उसे अपने साथ रखने के लिए ज़ोर नहीं दिया था — उसने एक्सल के साथ मुस्लिम कोठरी में जाने का फैसला किया था। वह एक अलग जगह थी, थोड़ी सुरक्षित, लगभग पवित्र। उस बौद्ध जेल में मुसलमान अल्पसंख्यक थे, लेकिन उन्हें एक निश्चित स्तर का सम्मान दिया जाता था। उनका कमरा, जिसमें पचास कैदी रह सकते थे, केवल धर्म का पालन करने वाले मुसलमानों के लिए आरक्षित था। वे एक साथ प्रार्थना कर सकते थे, पढ़ सकते थे, अपने धर्म पर मनन कर सकते थे और सबसे महत्वपूर्ण बात, रमज़ान का पालन कर सकते थे।
इस धार्मिक परंपरा का पहरेदारों द्वारा सम्मान किया जाता था: कोठरी के अंदर भोजन करने की अनुमति थी, और उपवास देर रात तोड़ा जाता था। उस जगह पर यह एक दुर्लभ विशेषाधिकार था—अमानवीयता के सागर में सम्मान का एक छोटा सा अंश।
— “अच्छा है कि तुम उनके साथ हो,” मैंने एक सुबह यूसुफ से कहा।
— “इससे मुझे ज़मीन से जुड़े रहने में मदद मिलती है,” उन्होंने कहा। “खुद को वैसे ही बनाए रखने में। मुझे नहीं लगता कि इसके बिना मैं यह मुकाम हासिल कर पाता।”
इसलिए हम रात में अलग रहते थे, लेकिन हर सुबह, जैसे ही कोठरियां खुलती थीं, हम फिर से मिल जाते थे।
हम अक्सर आंगन में या पुराने अखाड़े के पास मिलते थे और साथ में अभ्यास करते थे। यूसुफ कम बोलता था, लेकिन जब भी बोलता था, तो शांत और विचारशील बुद्धिमत्ता से बोलता था। हम हमेशा बातें नहीं करते थे। कभी-कभी हम बस चुपचाप एक-दूसरे के बगल में बैठ जाते थे। इतना ही काफी था।
लेकिन जेल में कभी चैन नहीं मिलता। दिन बीतते गए, और मौतें भी। आत्महत्याएं, हत्याएं, भयानक दुखद घटनाएं। कुछ कैदियों ने रात में अपनी

कोठरियों में चादरों से फांसी लगा ली। चीखें गलियारों में गूंजती रहीं— लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। कारण हमेशा एक ही होते थे: किसी महिला प्रेमी के कारण दिल टूटना, विश्वासघात, निराशा... या फिर बस पागलपन, जब आपको क्षितिज दिखाई देना बंद हो जाता है।
लेडीबॉयज़ की एक विशेष सामाजिक स्थिति थी। कभी वे वासना की वस्तुएँ होते थे, कभी सत्ता के प्रतीक; वे हमेशा अनिश्चितता की स्थिति में जीते थे। हाँ, उन्हें कुछ विशेषाधिकार प्राप्त थे—स्वास्थ्य सेवाएँ, सौंदर्य उत्पाद, और कभी-कभी हार्मोन की गोलियाँ। लेकिन इन सुविधाओं के लिए उन्हें भारी कीमत चुकानी पड़ती थी, और कुछ इनका दुरुपयोग भी करते थे।
उनमें से एक, जो अत्यधिक अभिमानी और आत्मविश्वासी था, अपने रवैये से तंग आकर थाई कैदियों द्वारा पीट-पीटकर मार डाला गया। हार्मोन की कमी के कारण उसके शरीर पर बाल वापस आ गए, उसका स्त्रीत्व लुप्त हो गया और वह आंगन में हंसी का पात्र बन गया।
सप्ताहांत और भी बदतर थे। आप शौचालय भी नहीं जा सकते थे बिना किसी स्टॉल के सामने छाता लगे हुए देखे, जो पैसे लेकर यौन संबंध बनाने का संकेत था। लेकिन जीवन चलता रहा।
और उस सारी अफरा-तफरी के बीच, हम कुछ रीति-रिवाजों से जुड़े रहे।
सप्ताहांत का मतलब था मालिश। ली ये-फू-चान, एक 70 वर्ष से अधिक उम्र के एक बुजुर्ग चीनी व्यक्ति, हमारी थकी हुई पीठों पर अपनी उंगलियां रखकर हमारी अकड़न दूर करते थे। कैंटीन से एक छोटा सा ऑर्डर लेने के बदले में, वे हमें एक घंटे की शांति देते थे। एक पल की राहत।
मार्को और यूसुफ के साथ, हमने एक स्वस्थ दिनचर्या बनाई। खेलकूद, पढ़ाई, शांति। यूसुफ थोड़ा शांत स्वभाव का था। वह कम ही बोलता था, अक्सर गम से बोझिल रहता था। जब उसे अपने बच्चों के पत्र मिलते थे, तो वह उन्हें टुकड़ों में ही पढ़ पाता था—भावनाओं का सैलाब उमड़ आता था। इसलिए हमने सब कुछ साझा किया। अपना दर्द, अपनी उम्मीदें, अपनी कहानियां। इसी तरह हम जी पाए। — “एक दिन तुम उन्हें फिर देखोगे, भाई।”
— “मुझे उम्मीद तो यही है,” वह कहता था। “लेकिन मुझे डर है कि वे मुझे भूल जाएंगे।”
हमने डूबने से बचने के लिए हर संभव प्रयास किया।

और फिर वो कॉल आया: “इंटरव्यू के लिए नाम लिस्ट में है—बिल्डिंग 9।” मेरी बारी। मेरा ऑडिशन। नंबर वन टीम में आधिकारिक तौर पर शामिल होने का मेरा मौका। अपनी सफेद टी-शर्ट पाने का। एक पाउटचौए बनने का।
मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था, तभी मैं बिल्डिंग नंबर 9 में दाखिल हुआ। बॉस ने मेरा स्वागत किया—काले चश्मे पहने, दूर कहीं खोई हुई निगाहों से।
— “क्या आप वही फ्रांसीसी गायक हैं?”
— “हाँ। मैंने एक थाई गाना सीखा है, अगर आप सुनना चाहें तो सुन सकते हैं।” उन्होंने मुझे शुरू करने का इशारा किया। मैंने गाना शुरू किया, मेरी आवाज़ पहले थोड़ी लड़खड़ा रही थी, फिर स्थिर हो गई। अंत में, उन्होंने सिर हिलाया। कोई मुस्कान नहीं।
— “ठीक है। आप अंदर हैं।”
यह एक निर्णायक मोड़ था। मुझे एक नई जगह मिल गई थी। एक नई भूमिका। आखिरकार मुझे उस इमारत में प्रवेश मिल गया जो सबके लिए बंद थी—उस वर्जित पुस्तकालय में। अब मैं इधर-उधर घूम सकता था, किताबें उठा सकता था, संदेश पहुंचा सकता था, देर तक बाहर रह सकता था। मैं उपयोगी था। अपने तरीके से... मैं आज़ाद था।
सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि मैं जीवित था।
हर सुबह मैं उस समूह में शामिल हो जाता था। चार लोग: एक गिटारवादक, एक बेसिस्ट, एक गायक और एक पियानोवादक। हम अभ्यास करते थे। हम हंसते थे। हम चैन की सांस लेते थे। मेरे पास संगीत सुनने के लिए कंप्यूटर था। और आखिरकार मुझे फ्रांसीसी दूतावास द्वारा भेजी गई किताबें मिल गईं। मैंने उन्हें बाकी लोगों के साथ साझा किया। मैं एक तरह से सांस्कृतिक संदेशवाहक बन गया था। इस घुटन भरी जेल में ताज़ी हवा का झोंका।
और कॉन्सर्ट आने वाला था। मार्च या अप्रैल में, मेरे जन्मदिन के ठीक आसपास। मुझे याद भी नहीं था कि मैं कितने साल का होने वाला हूँ। मैंने इसके बारे में सोचना ही छोड़ दिया था।
मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं अपना समय यहाँ बिताऊँगा। लेकिन मैं खुश था। सचमुच।
और फिर… सारे फ्रांसीसी लोग आ गए। अब्देल, स्वान, मोमो, नाथन… और क्राबी से आए दो लोग, मार्क और एन्ज़ो। फ्रांसीसी भाषी लोगों की एक लहर सी आ गई।

हम एक कबीला बन गए। लोग हमें फ्रांसीसी गिरोह कहने लगे। दूतावास के अधिकारी ज़्यादा आने लगे। हमें ज़्यादा खबरें मिलने लगीं, ज़्यादा मुलाक़ातें होने लगीं, ज़्यादा समर्थन मिलने लगा।
और मैं आगे बढ़ता रहा। पढ़ाई करता रहा। प्रशिक्षण लेता रहा। लिखता रहा। और सबसे बढ़कर… उम्मीद बनाए रखी।
क्योंकि मेरे पास उम्मीद के अलावा और कुछ नहीं बचा था।
बैंकॉक जेल में अचानक इतने सारे फ्रांसीसी कैदियों के आने से एक बड़ा बदलाव आया। हाल के इतिहास में कभी भी विदेशी कैदियों का इतना बड़ा और इतना स्पष्ट समूह नहीं देखा गया था। ऐसा लग रहा था मानो चार दीवारों के बीच फ्रांस का एक छोटा सा हिस्सा फिर से बसाया गया हो।
देखते ही देखते एक नई ऊर्जा का संचार होने लगा। हमारी सुबहें ठहाकों, गरमागरम चर्चाओं और सपनों की गूंज से भर गईं। अब हम लगभग दस लोग थे। हर किसी की अपनी कहानी, अपनी लय, अपना दर्द। लेकिन कोई अदृश्य चीज़ हमें आपस में बांधे रखती थी। उस जगह पर फ्रांसीसी होने ने हमें सचमुच एक परिवार बना दिया था।
सुबह 5:30 बजे की तेज़ आवाज़ से जागने के बाद, हर किसी की अपनी दिनचर्या थी। मैं अपने व्यायामों पर कायम रहा—मुक्केबाज़ी, दौड़ना, पढ़ना। मार्को अक्सर मेरे साथ शामिल होता था, उसे भी पढ़ने और नाइजीरियाई लोगों से बातचीत करने का उतना ही शौक था। हम घंटों अपने गत्ते की चटाइयों पर बैठे रहते, दुनिया को नए सिरे से गढ़ते, और खुद से वादा करते कि यह कठिन अनुभव हमें हमेशा के लिए बदल देगा।
बाकी फ्रांसीसी लड़कों ने फुटबॉल के मैदान पर कब्ज़ा कर लिया था। अब्देल, मोमो, एक्सल... हमेशा सबसे पहले मैच आयोजित करते, पेटैंक टूर्नामेंट लाते, इस वीरान जगह में जान फूंकते। उनमें खुलकर हंसने, खुलकर जीने का हुनर था, जिससे हम दमन, सांस की कमी और भविष्य की अनिश्चितता को भुला पाते थे।
और फिर, एक शांत राज्याभिषेक की तरह, अब्देल और मोमो ने वो कर दिखाया जो उनसे पहले कुछ ही लोगों ने करने की हिम्मत की थी: उन्होंने अपना खुद का कमरा खरीद लिया। बेहिसाब रकम, किसी को ठीक-ठीक पता नहीं था कि कितनी, लेकिन इतनी कि इमारत के मालिक को एक पूरे थाई कमरे को खाली कराने के लिए मना लिया ताकि "फ्रांसीसी कमरा" बनाया जा सके।

हम सभी को लगा था कि इमारत का कमांडर भ्रष्टाचार से अछूता है। लेकिन थाईलैंड में पैसा हर दीवार को भेदकर अंदर घुस जाता है।
यह एक अस्थायी वीआईपी सुइट था, और वे उसमें एक्सल, मार्सिले के दो युवा लड़के - एड्रियन और जूलियन - और यूसुफ को लेकर आए थे।
“हम बस थक चुके थे, भाई। बीस लोगों के साथ ज़मीन पर सोने से तंग आ चुके थे, बगल में सो रहे किसी अनजान आदमी की पाद से नींद टूट जाती थी। हम बस चैन की सांस लेना चाहते थे,” अब्देल ने एक रात थकी हुई मुस्कान के साथ मुझसे कहा। एक्सल, हमेशा की तरह शांत और वफादार, बिना किसी झंझट के मान गया। यूसुफ भी, थोड़ी शांति से अपने धर्म का पालन करने की खुशी में था। हालांकि उनकी नई कोठरी सबके लिए खुली थी, फिर भी उन्होंने मुस्लिम रीति-रिवाजों का पूरा सम्मान किया। रमज़ान, रोज़ाना की नमाज़ें—सब कुछ कायम रखा गया, उनका पालन किया गया। यहां तक कि आमतौर पर सख्त रहने वाले गार्डों ने भी अनदेखी की या विशेष अनुमति दी।
मैंने और मार्को ने फिलहाल मना कर दिया। हमारे एंग्लो दोस्त मैथ्यू, स्टुअर्ट और डैनियल हमारे साथ ठीक थे। वे हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा थे। हमारी छोटी सी दुनिया का हिस्सा थे।
सबसे छोटा फ्रांसीसी लड़का, एड्रियन, बेहद दयालु था। वह मुझे अपने छोटे भाई की याद दिलाता था, हमेशा विनम्र, हमेशा विचारशील, हमेशा दूसरों का ख्याल रखने वाला। वह जूलियन का वैसे ही ख्याल रखता था जैसे कोई बड़ा भाई रखता है, यह सुनिश्चित करता था कि वह खाना खाए, उसका हालचाल पूछता रहता था। जूलियन थोड़ा सांवला और अंतर्मुखी था। वह कम ही बोलता था, हमेशा दूर कहीं देखता रहता था जैसे थाई आकाश में कहीं कोई छिपा हुआ रास्ता खोज रहा हो। लेकिन वह दृढ़ था। सचमुच दृढ़। एक ऐसी दुनिया में नैतिक मार्गदर्शक, जहाँ कोई दिशा नहीं है।
"तुम्हें पता है कि इसके बाद हम फिर कभी एक-दूसरे को नहीं देख पाएंगे," जूलियन ने एक दिन जेल के ऊपर आसमान की ओर देखते हुए कहा।
"तुम सच में ऐसा लगता है?"
“हाँ। हम जीना भूल जाते हैं। तुम भी मुझे भूल जाओगे।”
मैं मना करना चाहती थी। कसम खाना चाहती थी कि मुझे सब कुछ याद रहेगा। लेकिन... वह सही था। इस जेल ने गहरे रिश्ते बनाए और बाहर निकलते ही उन्हें मिटा दिया।

फिर भी, उनके साथ जीवन में कुछ रंग लौट आया। भोर होते ही हम सब इकट्ठा हो जाते, कभी चुपचाप, कभी मज़ाक करते, दिन के हिसाब से। मार्को मेरा सहारा बना रहा। हम दोनों का रिश्ता दोस्ती से कहीं बढ़कर था। एक खामोश गठबंधन। जीने का एक समझौता। हम एक-दूसरे के बारे में सब कुछ जानते थे—हमारे डर, शंकाएँ, यादें। और फिर भी, हमें हँसने की हिम्मत मिल जाती थी।
लेकिन नए आने वालों के साथ ही एक नई पहचान भी बन गई: "अमीर फ्रांसीसी।" लोग हमें अलग नजरों से देखने लगे। शक की नजरों से। दूसरे समूह—नाइजीरियाई, फिलिपिनो, ईरानी—हमारी सुविधाओं को अनुचित समझने लगे। माइक्रोवेव, रसोई तक पहुंच, नियमित पैकेज... इन सबने ईर्ष्या को जन्म दिया। और ऐसी जगह पर ईर्ष्या जल्दी ही नफरत में बदल जाती है।
इसी बीच, मैं संगीत में और गहराई से उतर रहा था। "टू बी नंबर वन" समूह ने मुझे एक तरह की आज़ादी का एहसास दिलाया, एक तरह से मुक्ति का द्वार। मुझे इमारत से बाहर निकलने, बिल्डिंग नंबर 9 में अभ्यास करने, पुस्तकालय और कंप्यूटर का उपयोग करने की अनुमति मिली, जिससे मुझे सांस्कृतिक रूप से विरल वातावरण में कुछ हद तक संस्कृति का अनुभव करने का अवसर मिला।
मैंने थाई भाषा में एक गीत गाया। एक गाँव का गीत। सरल, काव्यात्मक, मधुर। यह उस देश के प्रति मेरा आभार व्यक्त करने का तरीका था जिसने मुझे कुचल दिया था—लेकिन विरोधाभासी रूप से, उसी देश ने मुझे बहुत कुछ सिखाया भी था।
बिल्डिंग 6 में कॉन्सर्ट होने वाला था। ज़ाहिर है, मैं घबराया हुआ था।
लेकिन साथ ही गर्व भी महसूस कर रहा था। मैं सभी कैदियों, अधिकारियों, गार्डों और यहाँ तक कि बाहर से आने वाले दर्शकों के सामने गाने वाला था।
मैं, एक विदेशी, कैदियों के बीच का एक कैदी, माइक लेकर संगीत के माध्यम से यह कहने वाला था कि मैं अब भी खड़ा हूँ।
“भाई, तुम्हारी आवाज तो कमाल की है!” समूह में मौजूद थाई लड़कों में से एक ने मुझसे कहा।
“क्या आप कल्पना कर सकते हैं? मैं बाहर निकलता हूँ और थाईलैंड में एक पॉप स्टार बन जाता हूँ!”
"अरे, क्या पता!"
यह हास्यास्पद था। और फिर भी, हमारे पास बस यही था—एक बुरे सपने के बीच सपनों के छोटे-छोटे टुकड़े।

जीवन आगे बढ़ता रहा।
हर सुबह हम उस छोटे से बॉक्सिंग रिंग वाले झोपड़े में मिलते थे। हम चटाइयाँ, पुरानी चादरें, अपने धातु के मग और इंस्टेंट कॉफी के पैकेट बिछाते थे। हम हँसते, एक-दूसरे से दिल की बातें करते, ज़िंदगी के बारे में चर्चा करते। जूलियन, जो हमेशा शांत रहता था, चुपचाप देखता रहता। एड्रियन, जो ज़्यादा मिलनसार था, अपने भविष्य की योजनाओं के बारे में बताता। मोमो ने एक फुटबॉल टूर्नामेंट का आयोजन किया, अमीन ने माइक्रोवेव लेने की कोशिश की, और फैसल अगले चैंपियंस लीग मैचों के लिए सट्टे लगाने की तैयारी में जुट गया था।
अरे भाई, क्या तुमने ड्रॉ देखा? पीएसजी बनाम बायर्न!
“सच में? उनकी फिर से बुरी तरह पिटाई होने वाली है…”
“बिल्कुल नहीं, यही साल सबसे अच्छा है!”
और हम हँसे। ज़ोर से। मानो हम अपने अंदर बसे डर को भगाना चाह रहे हों। उस डर को जो हमारे भीतर रहता था। उस डर को जिससे हम कभी बाहर नहीं निकल पाते थे। उस डर को जो अंधेरे में ही मर जाता था।
क्योंकि चाहे कुछ भी हो जाए, यह जेल एक धीमी गति का जाल थी। एक चक्की की तरह। किसी भी क्षण कुछ भी हो सकता था, चोरी, लड़ाई, विश्वासघात। एक गलत शब्द। एक गलत नज़र। और हालात बिगड़ सकते थे।
इसलिए हम सतर्क रहे। लेकिन हम फ्रांसीसियों के बीच एक दुर्लभ प्रकार की एकजुटता विकसित हो गई थी। और यह अनमोल थी।
उस समय तक मुझे एक बात का पूरा यकीन था: मैं अकेला नहीं था।
जैसे-जैसे सप्ताह बीतते गए, हमारी कोठरी सचमुच एक छोटा सा घर बन गई। हम आठ लोग थे। आठ विदेशी, निर्वासन, रोज़ाना के अपमान और किसी भी तरह से टिके रहने की इस अटूट इच्छा से बंधे हुए। उस नाज़ुक संतुलन में, नौवें व्यक्ति को लाने का विचार एक ज़रूरत लगने लगा—कोई विकल्प नहीं।
नियम सीधा-सादा था: दस लोगों की कोठरी पूरी भरी होनी चाहिए। अगर हमारे पास कम से कम नौ लोग नहीं होते, तो गार्ड किसी को भी हमारे साथ बेतरतीब ढंग से रख देते—आमतौर पर कोई थाई कैदी, जो हमारी भाषा या हमारी दुनिया से बिल्कुल अलग होता। और हम ऐसा नहीं चाहते थे। हमें अपनी शांति की रक्षा करनी थी।
तो, हैरानी की बात यह है कि हमने जेसन को चुना।

जेसन, छोटा सा फिलिपिनो लड़का। मुश्किल से बीस साल का। दुबला-पतला, अनाड़ी, हमेशा उस शर्मीली सी मुस्कान के साथ। जेल में उसे कोई पसंद नहीं करता था। ज़्यादातर इसलिए क्योंकि वह अपना दिन याकूज़ा का हत्यारा होने का दावा करते हुए, कटाना तलवार लहराते हुए, भावहीन निगाहों से देखते हुए, टैटू से ढके शरीर के साथ बिताता था। वह अपनी कहानी इतने गर्व से सुनाता था कि पहली नज़र में तो लगभग यकीन ही हो जाता था।
"क्या तुमने सचमुच किसी को कटाना से मार डाला?" मैथ्यू ने एक दिन उससे अंग्रेजी में मुस्कुराते हुए पूछा।
“हां, हां। एक ही वार में। एकदम साफ-सुथरा। वो चीखी भी नहीं।”
लेकिन उस "वह"—उस एक शब्द—ने हम सबको सोचने पर मजबूर कर दिया। एक रात, मैंने हमारी मेहमान कोराली से बात की। मैंने उससे चुपके से इस मामले की जांच करने को कहा।
कुछ हफ़्तों बाद, सच्चाई सामने आ गई। जेसन याकूज़ा का सदस्य नहीं था। वह न तो हत्यारा था और न ही कोई रहस्यमय व्यक्ति। वह बस एक भटका हुआ लड़का था। उसका अपराध—भले ही कितना घिनौना था—कुछ बिलों और कुछ वीडियो गेमों के लिए था। उसने एक बूढ़ी औरत को चाकू मार दिया था जिसे वह जानता था, एक ग्राहक जिसके यहाँ वह सफाई का काम करता था। पीछे से। जब वह देख नहीं रही थी।
उस दिन, कोठरी में, गहरा सदमा लगा। हमें लगा जैसे हमारे साथ धोखा हुआ हो। हमने अपनी गलतियों की सज़ा भुगती थी, यह सच था—लेकिन हमने अपने अतीत के बारे में एक-दूसरे से ईमानदारी बरती थी। और इस लड़के ने हमारे सामने झूठ बोला था। गुस्सा उमड़ पड़ा। और भले ही बात मारपीट तक नहीं पहुँची, लेकिन हममें से हर कोई चाहता था कि वह समझे: यहाँ, हम इस तरह के झूठ को बर्दाश्त नहीं करते।
लेकिन इन सब के बावजूद—गुस्से के बावजूद—जेसन... सबसे कम बुरा विकल्प था। शामिल होने के इच्छुक अन्य उम्मीदवारों की तुलना में वह कहीं अधिक सहनीय था। शातिर तस्कर। अस्थिर लोग। ऐसे लोग जिन्हें हम अपने से बारह इंच की दूरी पर सोते हुए नहीं देखना चाहते थे।
तो जेसन वहां रहने आ गया।
टूटे हुए पंखे के पास खाली जगह पर वह बैठ गया। चुपचाप, नज़रें झुकाए, अपना सामान खोलने लगा। अब वह किसी को प्रभावित करने की कोशिश नहीं करता था—बस

बर्दाश्त किए जाने की चाह रखता था। वह शांत हो गया, लगभग अदृश्य, यहाँ तक कि मददगार भी। और हम अंदर ही अंदर जानते थे: वह अकेला था। सचमुच अकेला। उसका परिवार कभी-कभी मिलने आता था, हाँ, लेकिन उसके कोई दोस्त नहीं थे। कोई सहारा नहीं। कोई सच्चा रिश्ता नहीं। और उस कोठरी में, सब कुछ के बावजूद, उसे एक तरह की शांति मिली।
और हम? हम चलते रहे। नौ आदमी, अपनी छोटी सी स्थिरता की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे थे। जेल के भीतर हमारी कोठरी एक अलग ही दुनिया बन गई थी—अपने नियमों, अपनी खामोशियों, अपनी हंसी और तनावों के साथ। लेकिन सबसे बढ़कर, इसकी अपनी दिनचर्या थी। अपनी सांसें थीं।
हर सुबह, बुद्ध की घंटी बजने के बाद, हम चादरें समेटते, सारा सामान पैक करते। एक कॉफ़ी, एक केला, दो सार्डिन मछली। फिर अभ्यास। इमारत के पास वाली लंबी गली में दो चक्कर। फिर स्नान, मुक्केबाजी और पढ़ाई।
मेरे सबसे करीबी दोस्तों में मैथ्यू भी था—अल्बर्टा का रहने वाला कनाडाई। सटीक कहें तो एडमोंटन का। वह बर्फीला शहर जहाँ सर्दी कभी खत्म नहीं होती लगती। वह अक्सर इसके बारे में बात करता था।
“आपको पता है, घर पर सुबह के समय तापमान -30 डिग्री होता है। आप कल्पना भी नहीं कर सकते…”
“हाँ, लेकिन यहाँ तो तापमान 100 डिग्री सेल्सियस से भी अधिक है और हम फिर भी मर रहे हैं,” मैं पसीने से तरबतर मुस्कान के साथ जवाब देता।
मैथ्यू थोड़ा रूखा ज़रूर था, पर मज़बूत भी। वह अपना दिन हॉकी पत्रिकाएँ पढ़ने में बिताता था, जो उसकी प्रेमिका, एक थाई महिला, चुपके से उसके लिए लाती थी। वह उससे बेइंतहा प्यार करता था। शायद उसे पसंद करता था। लेकिन वह ऐसे रिश्ते को छोड़ने को तैयार नहीं था जिसमें उसे खूब फायदे मिलते थे— खासकर यहाँ। वह उसे कैंटीन के लिए पैसे भेजती थी, दूध, कॉफ़ी, पत्रिकाएँ लाती थी। कंक्रीट के डिब्बे में ये छोटी-छोटी खुशियाँ।
वहाँ हीदर भी थी—उसकी नियुक्त की गई मुलाक़ात। एशिया में रहने वाली एक कनाडाई प्रवासी, जो थाईलैंड में कैद हर कनाडाई से मिलने जाती थी। हीदर एक अनमोल इंसान थी। मिलनसार, हमेशा मुस्कुराती हुई, वह अपने साथ ढेर सारा सामान लेकर आती थी—कुछ पैसे, कुछ ज़रूरी चीज़ें, घर से चिट्ठियाँ। “मैथ्यू! तुम्हारी बहन ने लिखा है। उसने लिफाफे में तुम्हारी भतीजी की तस्वीरें डाली हैं।”

मैंने उसे चिट्ठी देते हुए देखा, उसकी आँखें चमक रही थीं। उसने बेपरवाही का नाटक किया, लेकिन चिट्ठी खोलते समय उसके हाथ काँप रहे थे।
फिर डेनियल था—मैथ्यू का चचेरा भाई—जिसका कुछ महीने पहले तबादला हो गया था। कोकीन आयात करने के आरोप में दोनों को एक साथ गिरफ्तार किया गया। मैथ्यू ने मुझे पूरी कहानी सुनाई: ड्रग्स पीवीसी पाइपों में छिपाकर दक्षिण अमेरिका से मंगाई गई थी। योजना लगभग पूरी तरह से तैयार थी। बस मैथ्यू पार्टी करने चला गया। दो दिन के लिए गायब हो गया और सामान अपने होटल के कमरे में ही छोड़ दिया। जब वह लौटा, तो पुलिस पहले से ही वहाँ मौजूद थी। डैनियल को कड़ी सजा मिली। लेकिन फिर भी उसे एक उम्मीद बाकी थी: कि कनाडा में रहने वाला उसका चचेरा भाई—जो अब गांजे की कानूनी खेती से अमीर हो चुका था—उसे जुर्माना भरने और जेल से छूटने के लिए पैसे भेज देगा।
“अब उसके पास बहुत पैसा है। अगर वो 40 हजार डॉलर दे दे तो मैं बाहर हो जाऊंगा…”
"क्या आपको लगता है कि वह ऐसा करेगा?"
डेनियल ने कंधे उचका दिए।
मुझे उम्मीद तो है। लेकिन कुछ भी निश्चित नहीं है। यहाँ आकर आप उम्मीद करना सीखते हैं... बिना ज्यादा अपेक्षा रखे।
यही हमारा दैनिक जीवन था। सपनों और निराशा का मिश्रण।
इसी बीच, मेरी कॉन्सर्ट परियोजना आगे बढ़ती रही।
अभ्यास तेज़ हो गए। हर सुबह, मुझे ठीक 9 बजे बिल्डिंग 9 में बुलाया जाता था। देर से आने का कोई बहाना नहीं। अनुपस्थित रहने का कोई बहाना नहीं। तो मैं अपने बाकी साथियों के साथ, अपनी सफेद टी-शर्ट पहने हुए, जो हमारी आज़ादी का छोटा पासपोर्ट थीं, निकल पड़ा।
लेकिन इस आजादी की एक कीमत चुकानी पड़ी: मेरी दिनचर्या बुरी तरह प्रभावित हुई। मुझे अपनी कॉफी जल्दी-जल्दी पीनी पड़ती थी। अब आंगन में आराम से टहलना नहीं, लंबी बातचीत नहीं, सुबह की धूप में पढ़ना भी नहीं। मैं जल्दी- जल्दी खाना खाता, अपना सामान लेने भागता और बाकी की सुबह 'टू बी नंबर वन' बैंड के साथ रिहर्सल में बिताता।
— “हम तुमसे बॉन जोवी का गाना गवाएंगे, लियो। तुम्हें कमाल करना होगा!” — “अपना थाई गाना मत भूलना—उन्हें वो बहुत पसंद है!”

और यह सच था। थाई लोगों को किसी विदेशी को अपनी भाषा में गाते देखना बहुत अच्छा लगता था। इससे उन्हें हंसी आती थी, वे भावुक हो जाते थे और कभी-कभी तो उन्हें गर्व भी महसूस होता था।
मेरा गीत? उत्तरी गाँव का एक लोकप्रिय गीत, जो पुरानी यादों से भरा था। मैंने उसके हर शब्द को याद कर लिया था। लय, साँसें, धुन, मैंने अपना पूरा दिल उसमें उड़ेल दिया था। खुद को अभिव्यक्त करने का, यह दिखाने का कि मैं अब भी जीवित हूँ, यही मेरा एकमात्र तरीका था।
उस सुबह, मैं अपने पेट में एक अजीब सी बेचैनी के साथ जागा। उत्साह और गले में भारीपन का मिला-जुला एहसास। यह कोई आम दिन नहीं था: यह कॉन्सर्ट का दिन था। एक कैदी के रूप में, और साथ ही एक कलाकार के रूप में भी, मेरा पहला प्रदर्शन। एक दुर्लभ क्षण। कंक्रीट की दीवारों के बाहर एक राहत भरी साँस। अराजकता से एक क्षणिक, भले ही वह क्षणिक ही क्यों न हो।
मैं रोज़ से जल्दी उठ गई, थकान से आँखें अभी भी बंद थीं, रात भर की बेचैनी के कारण पीठ में दर्द हो रहा था। गर्मी पहले से ही उमस भरी थी। हमेशा की तरह, मेरे शरीर ने मेरा साथ नहीं दिया। मुझे त्वचा संबंधी समस्याएं बढ़ती जा रही थीं: लालिमा, चकत्ते, खुजली। ज़रा सा घर्षण, या ठीक से नहाया न होना, और मेरी त्वचा में जलन होने लगती थी। उमस, गंदगी, मच्छर, चिपचिपी चादरें— ये सब मिलकर मेरे शरीर पर लगातार हमला कर रहे थे।
फिर भी, उस दिन मुझे कोई नहीं रोक सकता था। दर्द भी नहीं। क्योंकि मैं बचपन से गाती आ रही थी। क्योंकि संगीत ही वह सहारा था जिसने मुझे सबसे बुरे पलों में भी खड़ा रखा था। और भले ही मैंने करियर बनाने का मौका गंवा दिया हो, भले ही मंच पर आने के मेरे सपने समय के साथ धुंधले पड़ गए हों, आज मेरे पास श्रोता थे। मेरे श्रोता। एक हज़ार कैदी। वो कॉन्सर्ट हॉल नहीं जिनका मैंने कभी सपना देखा था, लेकिन चलो—यह तो नियति थी।
सुबह 9 बजे, मैंने अपनी सफेद पाउचुए टी-शर्ट पहनी। मैं इमारत के बाहर बैंड के अन्य सदस्यों के साथ शामिल हो गया। हम सब एक गार्ड की सुरक्षा में जेल के अंदर से गुजरे। और अपने आने के बाद पहली बार मैंने बिल्डिंग नंबर 6 में कदम रखा।
यह एक चौंकाने वाली बात थी।
हालाँकि संरचना बिल्डिंग 1 के समान थी, फिर भी वातावरण अलग था। अधिक शोरगुल वाला, अधिक भीड़भाड़ वाला, अधिक अव्यवस्थित। हवा में तनाव महसूस

किया जा सकता था। आंगन का फर्श अधिक धूल भरा था, दीवारें अधिक जर्जर थीं, चेहरे अधिक कठोर थे। निगाहें हमारी ओर मुड़ी हुई थीं, जिज्ञासु, ठंडी, उत्सुक। यह स्पष्ट था: यह जगह अलग थी। कम व्यवस्थित। कम "नियंत्रित"। अराजकता के पनपने का आभास था। मन ही मन मैंने खुद से कहा कि सब कुछ देखते हुए, बिल्डिंग 1 में होना मेरे लिए सौभाग्य की बात थी।
लेकिन इस अराजकता के बीच, उस मानव बस्ती के बीचोंबीच, एक मंच तैयार किया गया था।
और क्या मंच था! लकड़ी के तख्तों से बना एक मजबूत चबूतरा, जिस पर स्पीकर, कुछ लाइटें और एक चालू माइक लगा था। इसके चारों ओर कैदी गोल घेरे में बैठने लगे, पालथी मारकर या उकड़ू बैठकर, आश्चर्यजनक रूप से शांत।
पहले दर्जनों, फिर सैकड़ों कैदी आंगन में जमा हो गए। कुछ उकड़ू बैठे थे, कुछ दीवारों से टिके हुए थे, कई बिना कमीज़ के थे, उनकी त्वचा वर्षों और गर्मी से झुलसी हुई थी। वातावरण अजीब था—स्थिर, विद्युतीय। दर्शक ध्यान से सुन रहे थे। यहाँ संगीत कार्यक्रम कोई छोटी बात नहीं थे। वे एक तरह से राहत थे। साँस लेने के दुर्लभ क्षण।
— “ठीक है, लियो, अब हमारी बारी आने ही वाली है! तैयार हो जाओ, भाई, पाई दो मिनट में आ रहा है!”
वो थे कोंग, जो 'टू बी नंबर वन' बैंड में थाई बेसिस्ट थे। एक बेहद नेक इंसान, थोड़े मोटे, हमेशा मुस्कुराते रहने वाले, और ज़रूरत पड़ने पर किसी भी गाने के बोल की हज़ार बार रिहर्सल करने के लिए तैयार। वो मुझे फिल्मों की तरह "ब्रो" कहकर बुलाते थे। मुझे लगता है उन्हें भारी लहजे में ऐसा कहने में मज़ा आता था।
मैंने जल्दी से अपना माइक ठीक किया, मन ही मन 'इट्स माय लाइफ' के बोल दोहराए और देखा कि पाई नोंग मेरी तरफ आ रहा है। उसने अपनी जानी-पहचानी बेदाग नीली कमीज पहनी हुई थी, उसकी नाक पर रंगीन चश्मा लगा हुआ था और उसके होठों पर हल्की सी व्यंग्यात्मक मुस्कान थी। वह बिल्डिंग 9 का मालिक था—आधा अंधा, लेकिन बेहद तेज दिमाग वाला।
— "लियो, क्या तुम ठीक हो?" उसने पूछा।
— "हाँ, पाई नोंग। मैं तैयार हूँ।" (बहुत बढ़िया। एक विदेशी का इतनी अच्छी तरह से प्रदर्शन करना दुर्लभ है।)

उन्होंने मेरे कंधे पर थपथपाया, फिर बैंड की ओर इशारा किया। शो का समय नजदीक आ रहा था।
मैं मंच की ओर बढ़ा। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। मुझे लगता है कि बहुत समय बाद ऐसा पहली बार हुआ था जब मैं सचमुच भावुक महसूस कर रहा था।
संगीत कार्यक्रम की शुरुआत थाई संगीत के लोकप्रिय गीतों से हुई। आशा के गीत, जीवन के भजन। यह महसूस किया जा सकता था कि कैद में होने के बावजूद भी भीड़ में अभी भी जोश था। कुछ ने ताली बजाई, कुछ ने सहमति में सिर हिलाया। यह घुटन भरे वातावरण में ताज़ी हवा के झोंके जैसा था।
फिर यह मेरी बारी थी।
मैं लड़खड़ाते पैरों से मंच पर चढ़ गया। मैंने माइक पकड़ा। मेरे सामने सैकड़ों चेहरे थे। कुछ को मैं जानता था, कुछ को नहीं। कई थाई थे। और तीसरी पंक्ति में एक जाना-पहचाना चेहरा: रेजा। दुबला-पतला, लेकिन मुस्कुराता हुआ। पटाया में मेरा जेल का साथी। हमारी नज़रें मिलीं। उसने मुझे अंगूठा ऊपर करके इशारा किया।
— “मैं तुम्हारे घर से कुछ गाने जा रहा हूँ…,” मैंने मुस्कुराते हुए थाई भाषा में कहा।
मेरी आवाज़ पहले तो कांप रही थी, लेकिन मैंने जल्दी ही खुद को सहज महसूस किया। सुर, बोल जिनका मैंने बार-बार अभ्यास किया था, और दर्शकों की गर्मजोशी—सब कुछ एकदम सही बैठ गया।
जब मैंने गाना खत्म किया, तो कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया... और फिर तालियों की गड़गड़ाहट गूंज उठी। थाई लोगों ने ताली बजाई, पैर पटके। कुछ लोगों ने "सुए मक!" (बहुत सुंदर!) चिल्लाया। मैंने जीवन की कठिनाइयों से जूझ रहे चेहरों पर पहली बार मुस्कान देखी।
और उनमें से एक, सफेद मूंछों वाला एक बूढ़ा आदमी, ब्रेक के दौरान खड़ा हुआ और मेरी ओर चलने लगा।
— "फरांग, मुझे माफ़ करना! पूट थाई, मुझे माफ़ करना!"
एक अन्य व्यक्ति ने चौड़ी मुस्कान के साथ कहा: “अरे, क्या आपको यकीन है कि आप आधे थाई नहीं हैं? उस लहजे के साथ, आप किसी को भी बेवकूफ बना सकते हैं!” मैं थोड़ा भावुक होकर हँस पड़ा।
फिर मैंने 'इट्स माय लाइफ' गाया। रॉक संगीत की वो धुनें एक घोषणा की तरह गूंज उठीं। ये मेरी जिंदगी थी—और मैं इसे उन लोगों के लिए गा रही थी जिनके

पास लगभग कुछ बचा ही नहीं था। यहाँ शब्दों का असर अलग ही था। कुछ ने मुट्ठी उठाई। कुछ ने आँखें बंद कर लीं। मैंने ऐसे गाया जैसे मैं कहीं और हूँ। जैसे वो मंच, पजामा पहने कैदियों की भीड़, मेरे पीछे कांटेदार तारों की दीवार, सब कुछ ज़ेनिथ एरिना था। मेरा वो पल। ये सब अवास्तविक सा लगा। ऐसा लगा जैसे मेरा अस्तित्व फिर से जागृत हो गया हो।
कॉन्सर्ट के बाद, हम सभी मंच के नीचे इकट्ठा हुए। पी नोंग ने हमें बधाई दी। — “लियो, तुमने उन्हें वो दिया जिसकी उन्हें ज़रूरत थी। तुमने उनके दिलों को सुकून दिया।”
मुझे भी इसकी जरूरत थी।
अंत में, एक ज़बरदस्त तालियाँ बजीं। सच में। मैंने कैदियों को नाचने, मुस्कुराने और कुछ महसूस करने पर मजबूर कर दिया था। कुछ पल के लिए, मैं भूल गया कि मैं कहाँ हूँ। और वे भी।
कॉन्सर्ट के बाद मुझे रेज़ा से बात करने का मौका मिला। उसने बताया कि शायद वह साल के अंत तक रिहा हो जाएगा। पाँच साल जेल में बिताने के बाद। उसने अपने माता-पिता के बारे में बात की, जिनसे उसकी सालों से कोई खबर नहीं थी। अपने अकेलेपन के बारे में भी। लेकिन साथ ही, अपनी उम्मीद के बारे में भी। मेरी मुलाकात एक्सल के साथी केविन से भी हुई। वह बहुत शांत स्वभाव का व्यक्ति था, मानो किसी का ध्यान ही न खींचता हो। उसने विनम्रता से मेरा अभिवादन किया और कहा कि वह बिल्डिंग 6 में अपने कोने में, अपनी किताबों के साथ रहना पसंद करता है। वह बिल्डिंग 1 के शोरगुल के लिए तैयार नहीं था। मैं उसकी बात समझ गया।
दोपहर बाद, हमने सारा सामान समेटा, संगीतकारों को धन्यवाद दिया, गार्डों को सलाम किया और बिल्डिंग 9 की ओर वापस चल दिए। बिल्डिंग तक वापस जाते समय सन्नाटा पसरा रहा। बाकी सभी लोग पहले से ही अंदर अपनी-अपनी कोठरियों में बंद थे। जैसे ही मैंने अंदर कदम रखा, मुझे तुरंत एक बात खटक गई - वहाँ कोई शोर नहीं था। एक भी आवाज़ नहीं, कोई चिल्लाहट नहीं, कोई धातु के दरवाज़ों के पटकने की आवाज़ नहीं, गलियारों में दूर से आती कोई बहस की आवाज़ नहीं। बस सन्नाटा।
एकदम सन्नाटा।
ऐसा लग रहा था मानो सदियों बाद मैं उस इमारत में बिल्कुल अकेला था। यह अनुभूति अवास्तविक, लगभग असत्य सी थी। ऐसा लग रहा था जैसे प्रलय आ गई हो,

मानो दुनिया अचानक रुक गई हो, मानो समय ठहर गया हो। न कोई अफरा-तफरी, न कोई तनाव—बस एक परिपूर्ण, लगभग पवित्र शांति। ऐसी जगह पर जहाँ शोर, तनाव और निरंतर हलचल आम बात थी, वह शांति किसी उपहार जैसी लगी। सबसे उत्तम उपहार। मार्को ने मेरा खाना हमारे छोटे से कमरे में, छत के नीचे पुराने बॉक्सिंग रिंग के पास रख दिया था। मेरा कटोरा मेरा इंतज़ार कर रहा था—हमेशा की तरह सादा: एक उबला अंडा, थोड़े से चावल और एक केला। कुछ खास नहीं, फिर भी उस पल में, सब कुछ अलग सा लगा। मैंने जल्दी-जल्दी, चुपचाप खाया, मानो आसपास की शांति को भंग न करने की कोशिश कर रहा हो।
उस समय हमें नहाने-धोने की इजाज़त तो थी, लेकिन यह ज़्यादा देर तक नहीं टिकता था। आपको हमेशा जल्दी ही अपनी कोठरी में वापस जाना पड़ता था। फिर भी, एकांत के वे कुछ पल, शांति के पल, जेल के शोर और पागलपन से पूरी तरह अलग होने का वो पल... अनमोल थे।
यह महज एक शांत क्षण नहीं था।
यह आजादी का क्षण था।
जब मैं वापस कोठरी में पहुँचा, तो मार्को ने मेरी ओर मुड़कर पूछा:
— “तो? कैसा रहा? तुमने वहाँ कमाल कर दिया?” — “भाई… मैंने हज़ार लोगों के सामने गाया। कसम से, यह जादुई था।”
वह हँसा। एक सच्ची, दिल खोलकर हँसी। और उस हँसी ने ही मुझे बेहतर महसूस कराया।
उस दिन मुझे एहसास हुआ कि सलाखों के पीछे भी हम प्रकाश के क्षण जी सकते हैं। हम लोगों को प्रभावित कर सकते हैं। और नरक में भी हम अपना कुछ न कुछ योगदान दे सकते हैं। सूरज डूबने लगा था। अब काम समेटने का समय था।
मैं वापस आ गया था। कुछ भी नहीं बदला था।
लेकिन रात अभी खत्म नहीं हुई थी।
रात करीब 2 बजे अफरा-तफरी मच गई।
धमकियाँ, दबी हुई चीखें, टॉर्च की रोशनी अंधेरे को चीरती हुई। एक तलाशी।
लेकिन कोई साधारण तलाशी नहीं—यह तो मुख्य छापा था। जेल मुख्यालय द्वारा आदेशित छापा। वह छापा जिसकी कभी पूर्व सूचना नहीं दी जाती।
कोठरी के अंदर, सब लोग उठ खड़े हुए। यूजीन बिस्तर से कूद गया।
— “अरे यार, चाबी! जल्दी करो, चाबी छुपाओ!”

सेल की सफाई हो जाने के बाद भी, सब कुछ अपनी जगह पर वापस आ जाने के बाद भी, कुछ न कुछ बना ही रह गया। एक भारीपन। एक तनाव जिसे आप दूर नहीं कर सकते थे।
उससे उबरने में हमेशा समय लगता था। भावनात्मक रूप से, मानसिक रूप से।
उसके बाद आपकी नींद कभी पहले जैसी नहीं रही।
कुछ दिनों बाद रशीद आ गया।
हमें अब उसकी उम्मीद नहीं थी। वह यूसुफ से अलग होकर लंबे समय तक पटाया में रहा, लेकिन अंततः उसने तबादले का अनुरोध किया। स्वाभाविक रूप से, उसने फ्रांसीसी कक्ष में शामिल होने के लिए कहा। उन्होंने उसका सहर्ष स्वागत किया।
शुरू में सब कुछ बढ़िया था। रशीद हमें दोबारा देखकर, यूसुफ से फिर से जुड़कर और थोड़ी भाईचारे की भावना महसूस करके खुश था।
लेकिन जल्द ही… बेचैनी घर कर गई।
रशीद हमेशा से थोड़ा चिड़चिड़ा था—संवेदनशील, यहाँ तक कि अस्थिर भी।
लेकिन दिल से, एक अच्छा इंसान था। इसलिए जब उसने फ्रेंच कमरे में रहने की अनुमति मांगी, तो किसी ने भी संकोच नहीं किया।
शुरुआती कुछ दिन आसानी से बीत गए। रशीद ने अपनी लय फिर से पा ली। वह हँसता, दूसरों के साथ फुटबॉल खेलता, मार्को से बातें करता, यूसुफ से खुलकर बातें करता। वह अक्सर कृतज्ञता भरी निगाहों से मेरी ओर देखता। हम कभी-कभी पटाया के बारे में, बैंकॉक की तुलना में पटाया के बारे में बातें करते। वह राहत महसूस कर रहा था।
लेकिन कुछ चीजें बदलने लगीं।
मेरे कॉन्सर्ट के कुछ दिनों बाद, जब मैं बिल्डिंग 9 में रिहर्सल कर रहा था, तभी कुछ हुआ। जब मैं वापस लौटा, तो मैंने आंगन में तनाव महसूस किया। लोग मेरी ओर देखने से बच रहे थे। शब्द कम ही सुनाई दे रहे थे। यूसुफ मेरा इंतजार कर रहा था, वह स्पष्ट रूप से चिंतित था।
— “लियो… रशीद से सावधान रहना। उसे लगता है कि तुम उसके खिलाफ हो।”— “उसके खिलाफ? क्यों?!”
— “किताबें… उसे लगता है कि आप उसे वो किताबें नहीं देना चाहते जो उसकी बहन ने भेजी थीं।”
मैं वहाँ अवाक खड़ा रहा। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह उस बात पर मुझसे नाराज़ था।

— “मैं ऐसा क्यों करूँगा? उसकी किताबें वहाँ नहीं थीं! मैंने हर डिब्बा, हर थैला जाँचा! और तुम जानते हो कि यह सब कैसे होता है, यूस… किताबें नग्नता, राजनीति के कारण रोक दी जाती हैं, या फिर थाई गार्डों या अन्य कैदियों के हाथों में गायब हो जाती हैं…”
यूसुफ ने सिर हिलाया।
— “मुझे पता है, मुझे पता है। लेकिन उसे पूरा यकीन है कि ये सब तुम्हारी वजह से है। और ये बात उसे अंदर ही अंदर खा रही है। उसे नींद नहीं आ रही। वो नींद में बड़बड़ाता है। उसे लगता है कि हर कोई उसके पीछे पड़ा है।”
— “उसकी तबीयत ठीक नहीं है। उसे किसी से बात करने की जरूरत है, अपने मन की बात कहने की जरूरत है, यह समझने की जरूरत है कि यह कोई साजिश नहीं है।”
— “तुम उसे नहीं बता सकते, लियो। वो एकदम चुप हो गया है। जैसे कोई मकबरा। वो किसी की नहीं सुनता। मेरी भी नहीं—उसे शक होने लगा है कि मैं भी इसमें शामिल हूँ।”
मैं बस वहीं खड़ा रहा। खो गया। मुझे समझ नहीं आया।
मैंने उसका नाम प्रवेश सूचियों में से एक में देखा था, हाँ। लेकिन बिल्डिंग 9 में किताबें नहीं थीं। और सबसे बुरी बात क्या थी? कोई आपको यह नहीं बताता कि क्यों। कोई स्पष्टीकरण नहीं। कोई पारदर्शिता नहीं।
मैं उससे मिलने आंगन के एक कोने में गया। उसने सीधे मेरी ओर देखा।
— “तुम्हें मेरी किताबें मिल गईं, है ना?” — “नहीं, रशीद। वे अभी तक वहाँ नहीं थीं। कसम से।” — “तुम्हें यकीन है कि तुम जानबूझकर ऐसा नहीं कर रहे हो? क्या तुम मुझे उन्हें पढ़ने से रोकने के लिए ऐसा कह रहे हो?”
— “मैं ऐसा क्यों करूँगा यार? तुम्हें क्या लगता है कि मेरे पास तुम्हारे साथ इस तरह का समय है? क्या तुम कल मेरे साथ बिल्डिंग 9 चलना चाहते हो? खुद देख लो?”
उसने कोई जवाब नहीं दिया। बस वो नज़र। संदिग्ध। आहत।
कोठरी के अंदर तनाव बढ़ता गया। वह दूसरों से मेरे बारे में बातें कर रहा था। दावा कर रहा था कि मैं गार्डों के साथ मिलीभगत कर रहा हूँ। कह रहा था कि मैं उनका पसंदीदा हूँ। सुझाव दे रहा था कि मैं अपने लिए किताबें जमा कर रहा हूँ, या चुनिंदा किताबें ही अंदर जाने दे रहा हूँ।
एक शाम, जब हम अकेले चादरें मोड़ रहे थे, तो उसने मुझे धक्का दिया।

— “लियो, तुम मुझे बेवकूफ समझते हो, मैं तुमसे तंग आ गया हूँ!” — “रशीद, बस करो। मैं तुम्हारा सम्मान करता हूँ। मैंने कभी तुम्हारी बुराई नहीं की। अगर तुम बात करना चाहते हो, तो हम बात करेंगे। लेकिन बेवजह सब कुछ बर्बाद मत करो।”
हम एक दूसरे को घूरते रहे। मुझे लगा कि गुस्सा उबल रहा है। लेकिन मैंने उसे दबा लिया।
मैं लड़ाई का खर्च नहीं उठा सकता था। मेरे तबादले से एक साल दूर भी नहीं। अभी नहीं।
मैं मुट्ठी भींचकर, गहरी सांसें लेते हुए टहलने निकला। उसी शाम मैंने यूसुफ से कुछ फुसफुसाकर बातें कीं।
— “तुम्हें अपने दोस्त से बात करनी चाहिए। वो पूरी तरह टूट चुका है।” — “मुझे पता है। उसकी हालत ठीक नहीं है। वो अकेला महसूस करता है। उसे लगता है कि सब उससे झूठ बोल रहे हैं।”
और यही समस्या थी।
रशीद पीड़ा से जूझ रहा था। कैद, खबरों का अभाव, आंतरिक अकेलापन, पछतावा... ये सब उसके अंदर उमड़ रहा था। वह खुद को हमारे बीच भी अलग-थलग महसूस कर रहा था। उसे अपने दर्द को समझने के लिए एक खलनायक की ज़रूरत थी, और मैं उसका निशाना बन गया था।
दिन-ब-दिन, मैंने उसे शांत करने की कोशिश की। समझाने की। यह दिखाने की कि मेरे पास छिपाने के लिए कुछ नहीं है। आखिरकार सब कुछ शांत हो गया। लेकिन कुछ टूट गया था। उसके बाद हमने दूरी बनाए रखी। एक ठंडा सम्मान। एक गहरी चुप्पी।
उन्हें भी 25 साल की सजा मिली थी। उन्होंने यूसुफ की तरह 2016 में प्रवेश लिया था। लेकिन उन्हें हमसे एक साल ज्यादा सजा काटनी थी। और मुझे लगता है कि यही बात उन्हें और भी ज्यादा तोड़ रही थी, दूसरों को मंजिल के करीब पहुंचते देखना जबकि वह अभी भी फंसे हुए थे।
कुछ दिनों बाद, जो होना था वही हुआ।
दम घोंटने वाली, चिपचिपी रात—बारिश के मौसम की तरह ही। हवा का एक झोंका भी नहीं। कोठरियों में लगे पंखे धीमी गति से घूम रहे थे, हवा से ज़्यादा शोर कर रहे थे।

फ्रांसीसी गुट, जिसमें तब तक यूसुफ, रशीद, एक्सल, स्वान, मोमो, जूलियन और एड्रियन शामिल हो चुके थे, आमतौर पर शांत रहने के लिए जाना जाता था। लेकिन उस रात, चीख-पुकार मच गई। लड़ाई शुरू हो गई। गालियां दी गईं। मारपीट हुई। सुबह तक, अफवाह जंगल की आग की तरह फैल चुकी थी: रशीद और यूसुफ के बीच लड़ाई हो गई थी।
यह अकल्पनीय था। दो साथी योद्धा। दो पुराने दोस्त। वही लोग जिन्होंने कुछ महीने पहले इमारत के द्वार पर एक-दूसरे को कसकर गले लगाया था।
लेकिन रशीद के संदेह ने सब कुछ बर्बाद कर दिया था।
उसे यकीन हो गया था कि यूसुफ उसका मजाक उड़ा रहा है, उसकी प्रार्थना की किताब छुपा रहा है, और वह उन लोगों में से एक है जिन्होंने उसे अपमानित किया था। एक और उकसावा, एक गलत शब्द, और उसने आधी रात को यूसुफ का गला पकड़ लिया।
लेकिन यूसुफ कोई नौसिखिया नहीं था।
वह वर्षों से मुक्केबाजी कर रहा था—शौकिया स्तर पर। उसे मुक्के झेलना आता था। उसने वार से बचते हुए पलटवार किया। और एक सटीक हुक से रशीद गिर पड़ा, कुछ सेकंड के लिए बेहोश हो गया। जब तक वह उठा, उसकी दाहिनी आंख बैंगनी पड़ चुकी थी, सूजी हुई थी और लगभग बंद हो चुकी थी।
अगली सुबह, रशीद कोठरी से बाहर निकला, उसका चेहरा विकृत था, उसकी आँखें खाली थीं। किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा।
आंगन में मौजूद कुछ थाई और पौटचुए लोगों ने उसे देखा और तुरंत भवन प्रमुख को सूचित किया। दोनों को तुरंत बुलाया गया।
कार्यालय में किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा। न कोई आरोप, न कोई स्पष्टीकरण। यूसुफ ने बस इतना कहा:
— “बात खत्म हो गई, चीफ। उसे इलाज की जरूरत है।”
भवन प्रमुख, एक निर्मम लेकिन स्पष्ट बुद्धि वाला व्यक्ति, ने एक सरल निर्णय लिया। रशीद को जेल अस्पताल भेजा गया—विशेष रूप से, मनोरोग विभाग में—जहाँ उसे "उसके तंत्रिका तंत्र को शांत करने" के लिए गोलियाँ दी गईं। भारी शामक दवाएँ, बिना किसी वास्तविक चिकित्सा देखरेख के दी गईं।
फिर, एक सप्ताह बाद, उनका स्थायी रूप से भवन संख्या 6 में स्थानांतरण कर दिया गया।

हमने उसे फिर कभी बिल्डिंग 1 के प्रांगण में नहीं देखा। अब कोई तनाव नहीं।
अब कोई शब्द नहीं। बस सन्नाटा।
जब फ्रांसीसी दूतावास के लोग आते थे, तो हम उसे कभी-कभार मुलाकात कक्ष में देख लेते थे। वह अलग रहता था। चुप रहता था। आँखें झुकी रहती थीं।
दूतावास की रिपोर्टों के माध्यम से, हमें पता चला कि उसे लगातार समस्याएँ थीं, वह हमेशा झगड़ों में उलझता रहता था, अपनी दवाइयाँ ठीक से लेने से इनकार करता था, या इसके विपरीत, सोने के लिए बहुत अधिक गोलियाँ खा लेता था। उसके भवन का प्रमुख अक्सर उसे एकांतवास में भेज देता था।
एक ब्लैक होल। एक धीमी, अपरिहार्य गिरावट।
अंततः सजा पूरी होने पर उसे वापस फ्रांस भेज दिया गया। लेकिन फिर कभी किसी ने उससे संपर्क नहीं किया। वह हमारे जीवन में जिस तरह आया था, उसी तरह गायब हो गया - एक ऐसे अराजकता में घिर गया जिस पर उसका कोई नियंत्रण नहीं था। यूसुफ के मन में भी एक गहरा घाव था। वह इसके बारे में बात करना पसंद नहीं करता था, लेकिन आप बता सकते थे कि इसने उसे प्रभावित किया था।
— “वह मेरा भाई था, आप जानते हैं? मैं नहीं चाहता था कि बात यहाँ तक पहुँचे। लेकिन उसने मुझे कोई और विकल्प नहीं छोड़ा।”
मैंने बस इतना ही उत्तर दिया:
— “तुमने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की, यूस। कभी-कभी, जो डूबने पर तुले होते हैं, उन्हें बचाना मुश्किल होता है।”
जून 2018 एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ।
मैंने और भी अधिक जिम्मेदारियां संभाल ली थीं। अब, संगीत समूह के लिए बिल्डिंग 9 की अपनी नियमित यात्राओं के अलावा, मैं विदेशी कैदियों की गिनती करने और सुबह के सैन्य शैली के अभ्यासों की निगरानी करने का भी प्रभारी था।
जिन दिनों मैं गाना नहीं गाती थी, उन दिनों भी मैं अपनी सफेद पौटचुए टी- शर्ट पहनती थी। यह धारीदार कैदी पजामे से कहीं ज्यादा आरामदायक थी—और उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण, यह रुतबे का प्रतीक थी। उस सफेद टी-शर्ट ने मुझे थोड़ा अधिकार दिया, लेकिन सबसे बढ़कर, एक शांत गर्व का एहसास दिलाया। जब मैंने किसी थाई कैदी से कोई मदद मांगी, जैसे कि जब सामुदायिक केतली खराब हो गई तो थोड़ा गर्म पानी दे देना, या किसी बीमार विदेशी को अस्पताल ले जाने में मदद करना—तो मुझे उपयोगी महसूस हुआ। मैंने अपने तरीके से, हममें

से सबसे कमजोर लोगों की मदद करने की पूरी कोशिश की। कई लोग अकेले थे। कोई परिवार नहीं। कोई आगंतुक नहीं। कुछ लोग धीरे-धीरे अपना मानसिक संतुलन खो रहे थे।
लेकिन सच्चाई यह थी कि कुछ थाई कैदी, एक बार कैंटीन, प्रशासन या कैंटीन में कोई भूमिका सौंपे जाने पर, खुद को श्रेष्ठ समझने में एक विकृत आनंद का अनुभव करते थे। वे खुद को जेल का कुलीन वर्ग मानते थे। वे सोचते थे कि वे आम जनता से ऊपर उठ गए हैं। सिर्फ एक पदवी मिलने से ही उनमें एक तरह का अहंकार आ जाता था। वे आंखें घुमाते, अपना समय बर्बाद करते, आपको इंतजार करवाते और आहें भरकर और तिरस्कारपूर्ण निगाहों से अपनी दयनीय शक्ति का प्रदर्शन करते थे।
वहीं पर मेरी सफेद पौटचुए टी-शर्ट ने बहुत मदद की। इससे एक खास तरह का सम्मान मिलता था। वे जानते थे कि मेरी एक भूमिका है, प्रशासन द्वारा मान्यता प्राप्त एक कार्य है - और अक्सर यही उनके दिखावे को तोड़ने के लिए काफी होता था। वह टी-शर्ट मेरे लिए सोने की खान थी। कई परिस्थितियों में इसने मुझे बिना भीख मांगे अपनी जरूरत की चीजें हासिल करने में मदद की। बेशक, मुझे अब्देल और मोमो के लिए एक उंगली भी हिलाने की ज़रूरत नहीं थी। रसोई पर पूरी पहुँच और उनके छोटे से शाही दरबार के साथ, वे जेल से लेडीबॉयज़ से जो चाहें पकवाते थे। हम सभी की तरह ही गंदी परिस्थितियों में रहने के बावजूद—दम घोर गर्मी, त्वचा के संक्रमण, कठोर फर्श पर सोना—वे एक अलग ही जेल में रहते थे।
हर सुबह, मैं यह सुनिश्चित करता था कि विदेशियों की गिनती जितनी जल्दी और आराम से हो सके पूरी हो जाए। तकनीकी रूप से, इसमें एक घंटे से अधिक समय लगना चाहिए था। लेकिन सच्चाई क्या थी? किसी ने भी भागने की कोशिश नहीं की। इसलिए अगर कोई शॉवर में था या टॉयलेट में था—तो भी मैंने उन्हें गिन लिया। लक्ष्य इस औपचारिकता को खत्म करना और सभी का बोझ कम करना था।
फिर मैं सैन्य शैली के व्यायामों का नेतृत्व करता था, जो मुझे मुंह ज़बानी याद थे। यह दस शारीरिक भार वाले व्यायामों की एक श्रृंखला थी, जिन्हें प्रत्येक को लगभग दस बार दोहराया जाता था। ये बिल्कुल असली सैन्य अभ्यास नहीं थे, बल्कि कार्डियो और बुनियादी शक्ति व्यायाम का मिश्रण थे, जिनका उद्देश्य उन कैदियों के लिए कम से कम न्यूनतम स्तर की फिटनेस बनाए रखना था,

जो सच कहें तो अपना अधिकांश समय धूप सेंकने या यूं ही पड़े रहने में बिताते थे।
मैंने सत्रों को तेज़ी से और कुशलतापूर्वक संचालित किया। विचार यह था कि इन्हें जल्दी से पूरा कर लिया जाए ताकि हर कोई थोड़ी आज़ादी का आनंद ले सके। एक बार सत्र समाप्त हो जाने के बाद, लोग अपनी इच्छानुसार कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र थे - जब तक कि वापस कोठरियों में जाने से पहले अंतिम उपस्थिति दर्ज न हो जाए।
उसी समय, विदेशियों के उस गुप्त कक्ष में एक नया चेहरा शामिल हुआ: ओफ़ा, एक इज़राइली। कद में छोटा लेकिन बेहद तगड़ा, सिर से पैर तक किसी बॉडीबिल्डर जैसा, वह एक अनोखी ऊर्जा बिखेरता था, जिसमें आकर्षण और संदेह का मिश्रण था। वह अक्सर चुटकुले सुनाता था, कभी-कभी तो मज़ाकिया भी होता था, लेकिन उसका मामला गंभीर था, और हम पर उस पर पूरी तरह भरोसा करना मुश्किल था। गिरफ्तारी से पहले वह ऑस्ट्रेलिया में रह रहा था और वहाँ स्थानांतरित होने की उम्मीद कर रहा था। हालाँकि, बैंकॉक में यहूदी समुदाय से उसे भरपूर समर्थन प्राप्त था, जो स्पष्ट रूप से उसके पक्ष में था। हर हफ्ते, स्थानीय यहूदी संगठन उससे मिलने आते थे और उसे पैसे, भोजन और स्वच्छता सामग्री देते थे। उसे किसी चीज की कमी नहीं थी—भले ही उसके अपने परिवार ने उससे नाता तोड़ लिया था।
आरोपों को देखते हुए उसकी सज़ा आश्चर्यजनक रूप से कम थी: केवल छह साल। इतने गंभीर अपराध के लिए यह चौंकाने वाली बात थी। लेकिन उस जगह को भरने के लिए कोई और नहीं था, और जैसे-जैसे अधिक विदेशियों को स्थानांतरित किया जा रहा था, अंततः उसे हमारी कोठरी में स्वीकार कर लिया गया।
वहाँ टॉमी भी था, एक अजीब लेकिन मिलनसार फिनिश व्यक्ति जिससे मेरी पहली मुलाकात पटाया जेल में हुई थी। उस समय, उसने हमारे आगमन पर हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया था, हमेशा मददगार और दयालु। हम साथ में प्रशिक्षण लेते थे, और वह अपने साथ एक सकारात्मक ऊर्जा और आँखों में एक तीक्ष्ण दृष्टि लेकर आता था। उसकी पूर्व प्रेमिका ने उसे फंसा दिया था - जिसके साथ वह पार्टी करता था और थोड़ी मात्रा में ड्रग्स लेता था - जिसने अंततः उसे पुलिस के हवाले कर दिया। तब से, उसके अंदर एक गहरा क्रोध पनप रहा था, बदला लेने की एक प्यास जिसे उसने कभी नहीं छोड़ा।

कुछ समय बाद ही, पटाया में त्वचा के गंभीर संक्रमण से पीड़ित होकर उन्होंने बैंकॉक तबादला करने का अनुरोध किया। कई वर्षों तक मैंने उन्हें नहीं देखा था—जब तक कि उस दिन बिल्डिंग 1 में मेरी उनसे दोबारा मुलाकात नहीं हुई। उनका चेहरा देखकर कितनी खुशी हुई। लेकिन कुछ बदल गया था।
मैं सचमुच चाहता था कि वह हमारे साथ जेल में आ जाए। हमारे एक साथी कैदी, टिमो, की जल्द ही रिहाई होने वाली थी, इसलिए टॉमी एक आदर्श विकल्प लग रहा था।
लेकिन जितना अधिक समय मैंने उसके साथ बिताया, उतना ही मुझे एहसास हुआ कि कुछ गड़बड़ है। मेरे करीबी दोस्त मैथ्यू ने मुझे चेतावनी दी थी। मैंने उसकी बात नहीं सुनी थी।
टॉमी इतना अंतर्मुखी हो गया था कि उसने जेल की बिल्लियों के अलावा किसी से बात करना बंद कर दिया था—वह उनसे लगातार बुदबुदाता रहता था, कभी-कभी तो उन्हें गर्दन से पकड़कर धीरे से गला घोंट देता था, और कहता था कि इससे उन्हें शांत होने में मदद मिलती है। हम उसे बार-बार ऐसा करने से मना करते थे। लेकिन अब वह किसी की बात नहीं सुनता था।
पटाया का जीवंत और उत्साही टॉमी गायब हो गया था, उसकी जगह एक खोखली परछाई ने ले ली थी, जिसकी निगाहें भावहीन और खाली थीं।
अंततः, हमने उसे अपनी कोठरी में लाने का विचार छोड़ दिया। सोते समय हत्या किए जाने का डर उसकी मदद करने की इच्छा पर भारी पड़ गया। यह एक कठिन निर्णय था, लेकिन आवश्यक था।
हम धीरे-धीरे एक-दूसरे से दूर होते चले गए। एक इतने बुद्धिमान, इतने विनोदी और इतनी प्रतिभा से परिपूर्ण व्यक्ति को कारावास और लंबे एकांत के बोझ तले मानसिक रूप से टूटते देखना मेरे लिए बहुत कष्टदायक था। अंततः, उनका तबादला उनके गृह देश वापस कर दिया गया। उसके बाद मैंने उनसे कभी संपर्क नहीं किया।
ओफा की बात करें तो, वह इतना भाग्यशाली नहीं था।
वह 2018 में आया था, आधिकारिक तौर पर नशीली दवाओं के सेवन के आरोप में। कागज़ात में यही लिखा था, और गार्ड बिना सोचे-समझे यही दोहराते थे। लेकिन जेल में सच सामने आने का अपना ही तरीका होता है, आधिकारिक कहानियों की परतें धीरे-धीरे खुलती जाती हैं। और ओफा की वास्तविकता कहीं ज़्यादा भयावह थी।

विदेशियों के बीच यह बात तेज़ी से फैल गई। कुछ लोगों ने फुसफुसाते हुए कहा कि उसने एक युवती का फायदा उठाने की कोशिश की थी, जो बहुत कम उम्र की थी। कोई स्पष्ट सबूत नहीं मिला, कोई ठोस सबूत नहीं था जो इसे पूरी तरह से साबित कर सके, लेकिन संदेह एक ऐसे दाग की तरह बना रहा जो मिटता नहीं था। महीनों बाद, देर रात की उन बातचीत में से एक में, जब बचाव का भाव खत्म हो जाता है और चुप्पी असहनीय हो जाती है, उसने इसे स्वीकार किया... पूरी तरह से नहीं, स्पष्ट रूप से नहीं, लेकिन इतना ज़रूर कि हम समझ सकें।
उन्हें सात साल की सजा सुनाई गई थी।
उस माहौल में ओफा एक असाधारण शख्सियत थे। वे ऑस्ट्रेलिया में रहते थे, लेकिन मूल रूप से इजरायली थे। वहाँ पहुँचते ही उन्होंने ऑस्ट्रेलिया और इज़राइल दोनों जगह स्थानांतरण का अनुरोध करना शुरू कर दिया, दोनों पक्षों से संपर्क साधते हुए, इस उम्मीद में कि कोई एक देश जल्दी जवाब देगा और उन्हें उस जगह से निकलने का रास्ता दिखाएगा।
मैंने जो देखा, उसके अनुसार इजरायली व्यवस्था असाधारण रूप से संगठित थी। वे अपने लोगों का ख्याल रखते थे। जेल में बहुत कम इजरायली होने के बावजूद, वे कभी उपेक्षित नहीं लगे। एक शांत, कुशल नेटवर्क था जो यह सुनिश्चित करता था कि उन्हें पैसा, भोजन और सहायता मिलती रहे। पैकेज आते, नाम पुकारे जाते, और किसी न किसी तरह, उनके पास हमेशा हम बाकी लोगों से कुछ अधिक होता था। एक ऐसी जगह पर जहाँ अभाव ही सब कुछ था, इस तरह का समर्थन असाधारण था।
जेल जाने से पहले, ओफा एक बॉडीबिल्डर था। उसके हाव-भाव में अब भी यह झलकता था—चौड़े कंधे, मजबूत भुजाएँ, एक अनुशासित शरीर के निशान। ताकत स्पष्ट रूप से उसकी पहचान का हिस्सा थी। शायद उसका गौरव भी।
लेकिन जेल में इंसान को उन जगहों पर भी तोड़ देने की क्षमता होती है जिन्हें आप देख नहीं सकते।
और फिर हादसा हो गया।
वहाँ पहुँचने के कुछ ही दिनों बाद, शायद अपने जीवन पर कुछ हद तक नियंत्रण पाने की, अपने पुराने जीवन के कुछ अंश को पुनः प्राप्त करने की उत्सुकता में, वह एक अस्थायी बारबेल पर बैठ गया - जो कंक्रीट और जंग लगी धातु की छड़ से बनी उन भद्दी संरचनाओं में से एक थी।
वह उसके नीचे ढह गया।
छड़ सीधे उसके शरीर में जा लगी।

उसकी चीख—तीखी, लगभग अमानवीय—आंगन में तलवार की तरह गूंज उठी। बातचीत रुक गई। यहां तक कि पहरेदार भी मुड़ गए। यह सिर्फ दर्द नहीं था, यह सदमा, आतंक, कुछ आदिम सा था।
वे उसे बाहर ले गए, वह बुरी तरह से खून बह रहा था, हिलने-डुलने में असमर्थ था, उसका शरीर अब उसका अपना नहीं रहा था।
जेल में कुछ भी तटस्थ नहीं रहता। हर बात एक कहानी बन जाती है।
कुछ ने इसे कर्मफल बताया। कुछ ने इसे विडंबना कहा। कुछ दबी हुई आवाज़ों ने भाग्य... या दंड के बारे में फुसफुसाया।
शायद एक दुर्घटना।
या फिर कुछ और।
जो भी हुआ हो, उससे वह टूट गया।
वह कई महीनों तक गायब रहा। जब वह आखिरकार लौटा, तो वह पहले जैसा नहीं रहा था। शारीरिक रूप से तो ताकत अभी भी बरकरार थी—लेकिन उसकी आँखों में कुछ बदल गया था। आत्मविश्वास, अहंकार... गायब हो गया था। उसकी जगह एक नाजुक, लगभग खोखली सी भावना ने ले ली थी।
तब तक मैं उस कोठरी से निकल चुका था।
बाद में मुझे पता चला कि आखिरकार वह विदेशियों के सेक्शन में शामिल हो गया। यह बात समझ में आती है। जेल में, आप परिचित चीज़ों की ओर आकर्षित होते हैं, जो ज़्यादा सुरक्षित महसूस होती हैं। या कम से कम कम शत्रुतापूर्ण।
लेकिन विदेशियों के बीच भी कहानियां आपका पीछा करती हैं।
और ओफा… वह उसे अपने साथ ले गया था।
अध्याय 13: अंतिम दिन, पहला कदम
2018 की गर्मियाँ घुटन भरी थीं। गर्मी असहनीय थी। त्वचा के संक्रमण जंगल की आग की तरह फैल रहे थे। मेरी संवेदनशील त्वचा लगातार सूजी रहती थी— चकत्ते, खुजली, लाल धब्बे। उमस और गंदगी ने हमारे दैनिक जीवन को नरक बना दिया था।
इसी दौरान हमारे जर्मन मित्र ओलिवर ने अपने जीवन के अंतिम क्षण बिताए। ओलिवर अपने दोस्त टिमो के साथ विदेशियों की कोठरी में हमारे साथ था। दोनों को मादक पदार्थों के सेवन के आरोप में बीस साल की जेल की सजा सुनाई गई थी। टिमो, जो दोनों में अधिक भाग्यशाली था, पहले ही छह साल जेल में बिता चुका था और उसे कई शाही क्षमादान मिल चुके थे, जिसका मतलब था कि वह रिहाई के

करीब था। हालांकि, ओलिवर को केवल चार साल ही जेल में बिताए थे। उसके सामने अभी भी कई साल बाकी थे - जब तक कि वह जर्मनी में स्थानांतरण स्वीकार नहीं कर लेता। लेकिन उस स्थानांतरण की एक कीमत थी: 20,000 यूरो का जुर्माना, जो मादक पदार्थों से संबंधित मामले में दोषी पाए गए प्रत्येक विदेशी कैदी पर लगाया जाता है।
वह राशि, सचमुच, उसकी स्वतंत्रता की कीमत थी। लेकिन ओलिवर ने इसे चुकाने से इनकार कर दिया। वह कहा करता था:
— “मैं यहाँ बिल्कुल ठीक हूँ। मैं अंत तक यहीं टिका रहूँगा।”
ओलिवर पिछले बीस वर्षों से एचआईवी पॉजिटिव थे। 48 वर्ष की आयु में भी वे 70 वर्ष के प्रतीत होते थे। थके-हारे, कमजोर और दुबले-पतले होने के बावजूद, वे सराहनीय शक्ति के साथ आगे बढ़ते रहे। उनकी पूर्व पत्नी और बेटी ने उनसे लंबे समय से संबंध तोड़ लिए थे, फिर भी उनके चेहरे पर हमेशा मुस्कान रहती थी।
हमने साथ में बहुत समय बिताया। हम खूब मज़ाक करते थे और वो भी हमेशा मज़ाकिया अंदाज़ में जवाब देता था। वो बहुत ही मज़ेदार था, हमेशा हँसी- मज़ाक के लिए तैयार रहता था और फुटबॉल मैचों पर सट्टा लगाने में माहिर था — खासकर जब कोई जर्मन टीम खेल रही होती थी। वो अक्सर मुझे सट्टा लगाने के टिप्स देता था और हम बिना किसी बड़ी रकम के, बस हौसला बनाए रखने के लिए मज़े के लिए जुआ खेलते थे।
मुझे हमारी आखिरी बातचीत अच्छी तरह याद है। सुबह का समय था और उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। मैंने एक गार्ड से आपातकालीन अस्पताल में भर्ती कराने के लिए कहा। जाने से पहले मैंने उन्हें पुकारा:
— “ओलिवर, अपना बटुआ तैयार रखो! फ्रांस विश्व कप जीतने वाला है। तुम पर मेरे छह महीने के राशन का कर्ज़ है!”
वह हँस पड़ा—आधे मजाक में, आधे हाँफते हुए:
— “तुम सपना देख रहे हो। जर्मनी सब कुछ ले लेगा। तुम कंगाल हो जाओगे, मेरे दोस्त।”
वह कभी वापस नहीं आया। अस्पताल में, उन्हें तीव्र ल्यूकेमिया होने का पता चला। जब उन्हें इसकी गंभीरता का एहसास हुआ, तो उन्होंने अंततः जर्मनी में स्थानांतरण के लिए जुर्माना अदा करने पर सहमति जताई।
लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। 48 घंटे से भी कम समय में, वह चला गया।

अकेले।
एक जेल अस्पताल में।
थाईलैंड में।
मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि उसने क्या महसूस किया होगा—डर, अकेलापन, बेबसी। घर से हजारों मील दूर, अकेले मरना... मैं यह किसी के साथ भी नहीं चाहूँगा।
इसने मुझे अंदर तक झकझोर दिया। एक क्रूर याद दिलाना: यहाँ, मृत्यु निरंतर मंडराती रहती है। शांत—पर कभी दूर नहीं।
और फिर भी, दम घोंटने वाली गर्मी के बावजूद, ओलिवर की मृत्यु के बावजूद और हमारे रोजमर्रा के निराशाजनक जीवन के बोझ के बावजूद, 2018 की गर्मियों में जीवन की एक अजीब, अप्रत्याशित सांस थी।
विश्व कप पूरे जोश में चल रहा था।
ऐसा लग रहा था मानो अनंत काल बीत गया हो, लेकिन पहली बार मुझे फिर से सच्ची उत्तेजना महसूस हुई। एक जानी-पहचानी अनुभूति, जो लगभग भुला दी गई थी—किसी चीज़ की प्रतीक्षा करने का रोमांच, किसी क्षण की प्रतीक्षा करने का रोमांच, दांव लगाने का रोमांच, आशा करने का रोमांच, महसूस करने का रोमांच। और सबसे बढ़कर, यह विश्व कप फ्रांस में खेला जा रहा था।
मुझे पता था कि मैं इसे अपनी इच्छानुसार अनुभव नहीं कर पाऊँगी। मैं अपने प्रियजनों के साथ नहीं थी। न तो शोरगुल से भरी किसी बार में, न ही किसी धूप वाले चौक पर विशाल स्क्रीन के सामने। मैं यहाँ थी—एक गंदी ज़मीन पर बैठी, एक भीड़भाड़ वाली कोठरी में, अपने वतन से हज़ारों मील दूर।
लेकिन मैंने एक फैसला लिया: मैं दुख को खुद पर हावी नहीं होने दूंगी। मैंने अपने पास जो कुछ था, उसी से चिपके रहने की कोशिश की। जूलिया के साथ मेरे पत्र-व्यवहार अच्छे चल रहे थे। वे अधिक बार-बार, अधिक अंतरंग और अधिक वास्तविक हो गए थे। हर शब्द मुझे शक्ति देता था। वह प्रेम, कोमलता और दृढ़ता के मिश्रण से लिखती थी, जिससे मुझे खड़े रहने की हिम्मत मिलती थी। उसने पुष्टि कर दी थी कि वह अक्टूबर में आंतरिक मुलाकात के लिए बैंकॉक आएगी। यह आधिकारिक था। और मेरे लिए, इसका बहुत महत्व था।
मैं उससे दोबारा मिलने जा रहा था। उसकी आँखों में देखना चाहता था। भले ही कुछ घंटों के लिए ही सही। भले ही चार दीवारों के बीच ही सही।

मैंने प्रशिक्षण लिया, मैंने तैयारी की। मैं तैयार रहना चाहता था। साफ-सुथरा। शांत। मजबूत। मैं चाहता था कि जूलिया मुझे एक ऐसे पुरुष के रूप में देखे जो सलाखों के पीछे भी खड़ा है, गरिमापूर्ण है। मैं अच्छा दिखना चाहता था—ताकि उस मुलाकात का कोई अर्थ हो।
इसलिए मैंने अपनी दिनचर्या जारी रखी: व्यायाम, पढ़ाई, सुबह के काम। और फिर, एक शाम, जेल ने हमें एक अप्रत्याशित उपहार दिया।
उन्होंने मैचों के अंत तक टेलीविजन चालू रखने की अनुमति दी।
एक दुर्लभ सौभाग्य। उन रातों में, दिन भर की सारी हिंसा और तनाव दूर हो जाता था। स्क्रीन के सामने हम फिर से बच्चे बन जाते थे, चुपचाप एक साथ बैठे, आँखों में उत्साह की चमक। हम उमस, तिलचट्टे, रोज़ाना के अपमान और बेतुके दंडों को भूल जाते थे।
क्योंकि हां—अभी भी बहुत सारे बेतुके नियम मौजूद थे।
हर सुबह, हमें अपना पानी का टैंक खुद बाहर ले जाना पड़ता था, उसे हाथ से भरना पड़ता था और वापस कोठरी में लाना पड़ता था। नल का पानी, जिसे फ़िल्टर किया हुआ बताया जाता था, हमें बीमार कर देता था—पर हमारे पास कोई विकल्प नहीं था। हमें फर्श भी हाथ से साफ करने पड़ते थे, अपने कंबलों को सैन्य सटीकता से मोड़ना पड़ता था। एक भी गलत मोड़, सब कुछ फेंक दिया जाता था। ये मौन अपमान हमें तोड़ देते थे।
लेकिन वो मैच की रातें… उन्होंने कुछ बचाया। मानवता का एक अंश।
कभी-कभी तो गार्ड भी हमारे साथ बैठकर देखने लगते थे। हम सभी ने उस क्षणिक मुक्ति का आनंद लिया।
और फिर फाइनल आया।
फ्रांस बनाम क्रोएशिया। रात 1 बजे। कोठरी में बाकी सब सो रहे थे। मैं फर्श पर पालथी मारकर बैठा था, मेरी आँखें स्क्रीन पर टिकी थीं, मांसपेशियां तन गई थीं, दिल तेजी से धड़क रहा था। मैंने कभी इतना अकेलापन या इतनी तीव्रता महसूस नहीं की थी।
जब अंतिम सीटी बजी और फ्रांस विश्व चैंपियन बना, तब मैं चुपचाप चीखी। एक अंदरूनी चीख—दबी हुई—मानो इस बात से डर रही हो कि कहीं दुनिया जाग न जाए, जो यह नहीं समझ पाएगी कि इसका मेरे लिए क्या मतलब है।
मैं रोया। बिना आवाज किए।
खुशी के आंसू। गर्व के आंसू। दर्द के आंसू।

इसलिए नहीं कि फ्रांस जीत गया था।
लेकिन क्योंकि मैं अभी भी जीवित था।
क्योंकि तमाम परिस्थितियों के बावजूद, मैं अभी भी यहाँ था। क्योंकि कहीं और, किसी दूसरी दुनिया में, मेरे दोस्त चिल्ला रहे थे, पी रहे थे, नाच रहे थे। क्योंकि वह जीत—उनका एक छोटा सा हिस्सा—जेल की दीवारों को तोड़कर मुझ तक पहुँच गया था।
और उस रात, मैं अब कैदी नहीं रहा।
मैं फ्रांसीसी था। मैं एक पुरुष था। बैंकॉक की गर्म रात में धड़कता हुआ दिल।
गर्मी बेरहमी से खिंचती चली गई। जागते ही चादरें हमारी त्वचा से चिपक जाती थीं। कंक्रीट हमारे नंगे पैरों के तलवों को झुलसा देता था। गर्म हवा दूसरी त्वचा की तरह हमें जकड़ लेती थी—चिपचिपी, भारी, जिसे उतारना नामुमकिन था। गर्मी सिर्फ़ असहज नहीं थी। यह हमारे अंदर तक घुस जाती थी। इसने बलवानों को भी थका दिया और दुर्बलों को तोड़ दिया। कुछ लोग कोठरियों से बाहर निकलते ही चक्कर आने से गिर पड़ते थे। कुछ अन्य लोगों को त्वचा में दर्दनाक संक्रमण हो जाते थे—लगातार उमस, खराब स्वच्छता की स्थिति या स्वच्छ पेयजल की कमी के कारण।
मैं इसके प्रति विशेष रूप से संवेदनशील थी। छोटे से छोटा घाव भी संक्रमित हो जाता था। मुझे बार-बार लाल, खुजलीदार और कभी-कभी मवाद निकलने वाले चकत्ते हो जाते थे। मेरे पास जो कुछ भी थोड़ा-बहुत था, उससे मैंने अपना इलाज करने की पूरी कोशिश की: थोड़ा सा साबुन, जब भी मिल पाता था मिनरल वाटर और कुछ जड़ी-बूटियाँ जो मित्रवत थाई लोगों द्वारा चुपके से लाई जाती थीं। लेकिन यह कभी भी पर्याप्त नहीं था। आपको बस सहना पड़ता था। हमेशा।
और इसी घुटन भरे माहौल में हमें फ्रांसीसी दूतावास से एक मुलाकात का अवसर मिला।
उस दिन, सभी फ्रांसीसी कैदियों को बुलाया गया। हमें बिल्डिंग 1 के बगल में एक छोटे से साक्षात्कार कक्ष में इकट्ठा किया गया। हवा उतनी ही घुटन भरी थी, लेकिन वातावरण... अलग था।
तभी हमारी मुलाकात पेट्रीसिया से हुई, जो नई सामाजिक मामलों की अधिकारी थीं। वह डेनिस की जगह ले रही थीं, जो हमारे कांसुलर अटैची थे और इस कठिन दौर की शुरुआत से ही हमारे साथ थे।

वह एक छोटे से कंधे के बैग, एक साधारण लेकिन साफ-सुथरी पोशाक और एक कोमल, लगभग मातृत्वपूर्ण निगाहों के साथ आगे बढ़ी। उसने हम पर एक ऐसी गर्मजोशी से मुस्कुराया जो इस जगह पर हमारे द्वारा अनुभव की जाने वाली हर चीज के बिल्कुल विपरीत थी।
— "हैलो, सभी को। मैं पेट्रीसिया हूं, दूतावास में सामाजिक मामलों की नई अटैची। मैं डेनिस की जगह ले रही हूं, जिन्हें आप में से कई लोग अच्छी तरह जानते हैं।"
डेनिस… हमें उसके बारे में बात करनी थी।
उन्होंने हमेशा एक निश्चित पेशेवर दूरी बनाए रखी थी, और लंबे समय तक हम इस बात से उनसे नाराज़ रहे। हमने उन्हें हर बात के लिए दोषी ठहराया: हमें यहाँ सड़ने देने के लिए, हमें बाहर निकालने के लिए और अधिक प्रयास न करने के लिए, और हमें बर्बाद होते हुए चुपचाप देखते रहने के लिए। लेकिन अब पीछे मुड़कर देखने पर मुझे समझ आता है। वह कोई जादूगर नहीं थे। उन्होंने अपनी भूमिका की सीमाओं के भीतर रहकर वही किया जो वह कर सकते थे।
और सच में, वह हमेशा हमारे साथ थे। उन्होंने हमारे परिवारों का सहारा दिया, हमारे पत्र आगे पहुंचाए, लंबी मुलाकातों के लिए प्रोत्साहित किया, किताबें और पत्रिकाएं मंगवाईं—ये छोटी-छोटी चीजें थीं जिनसे हमें जीने की प्रेरणा मिली। उन्होंने हमारे साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया। और इसके लिए मैं हमेशा उनका आभारी रहूंगा।
लेकिन पेट्रीसिया… वह एक अलग तरह की ऊर्जा लेकर आई।
एक माँ जैसी ममता। इस जगह पर एक दुर्लभ कोमलता। वह एक माँ की तरह लग रही थी जो अपने बच्चों को स्कूल के पहले दिन ले जा रही हो—सिवाय इसके कि हम टूटे हुए इंसान थे, जीवन से घायल थे, और फिर भी वह हमें मानवता से देख रही थी। वह धीरे से बोली, हममें से हर एक की आँखों में एक-एक करके देख रही थी।
और फिर उसने हमें ठीक वही बताया जो हमें सुनने की जरूरत थी:
— "आपकी स्थानांतरण फाइलें पूरी हो चुकी हैं। आपके परिवारों ने सभी आवश्यक दस्तावेज उपलब्ध करा दिए हैं। सब कुछ व्यवस्थित है। अब बस आपकी कारावास की चौथी वर्षगांठ पूरी होनी बाकी है, और फिर आप समिति के सामने पेश होंगे।"
यह ताजी हवा के झोंके जैसा महसूस हुआ।

मुझे उम्मीद थी कि मुझे दिसंबर या जनवरी के आसपास समिति के सामने बुलाया जाएगा, लेकिन मुझे मार्च तक इंतजार करना पड़ेगा। यह अभी भी बहुत दूर लग रहा था - लेकिन बीते वर्षों की तुलना में, यह लगभग कल ही होने वाला था।
उस दिन, आशा की एक लहर हम पर छा गई। हमें विश्वास होने लगा कि दुःस्वप्न का अंत वास्तविक था—संभव था, यहाँ तक कि हमारी पहुँच में भी था। हमने एक-दूसरे को अलग नज़र से देखा, उस अनकहे बंधन के साथ जो केवल जीवित बचे लोगों में होता है: "हम इससे बाहर निकल आएंगे।"
और उसी नई भावना के साथ, फ्रांसीसी लोग मार्को और मेरे पास एक प्रस्ताव लेकर आए।
— "सुनो भाई, हमने बाकी लोगों से बात कर ली है। तुम और मार्को, तुम शुरू से हमारे साथ हो। आओ हमारे साथ हमारे सेल में शामिल हो जाओ। चलो इसे एक असली टीम की तरह मिलकर खत्म करते हैं।"
उस विचार में कुछ खूबसूरती थी—कुछ स्पष्ट सी बात। देशवासियों के बीच मिलकर इसे पूरा करना—ऐसा लगा जैसे इस चक्र को समाप्त करने का यही सही तरीका है।
हमने हां कहने से पहले ज्यादा देर तक संकोच नहीं किया।
लेकिन मुझे अभी भी एक मुश्किल काम करना बाकी था।
जुलाई की एक सुबह, भावनाओं से गला भर आने के कारण मुझे यूजीन से मिलने जाना पड़ा और उसे बताना पड़ा कि हम जा रहे हैं। यूजीन सिर्फ एक सेल लीडर से कहीं बढ़कर था। वह एक सहारा था। एक चट्टान की तरह। एक स्थिर व्यक्तित्व जिसके साथ हमने अनगिनत फिल्में देखीं, गहरी बातें कीं और चुपचाप हँसे।
— "यूजीन... मुझे तुमसे कुछ कहना है, यार।"
उसने अपना सिर घुमाया, मेरी आंखों में सीधे देखा, मानो वह पहले से ही जानता हो।
— "तुम जा रहे हो, है ना?"
मैंने धीरे से सिर हिलाया।
— "हम फ्रांसीसी लोगों के साथ रहने जा रहे हैं। वे चाहते हैं कि हम इसे साथ मिलकर पूरा करें।"
उसने हल्की सी मुस्कान दी। वह हैरान नहीं था। उसे इसका अंदाजा जरूर रहा होगा। लेकिन उसके चेहरे पर कोई नाराजगी नहीं थी।

— "तुम सही काम कर रहे हो। यही सही समय है। और हाँ... हमने साथ मिलकर अच्छा काम किया। मुझे गर्व है कि तुम यहाँ थे।"
हमने हाथ मिलाया। काफी देर तक। उन्होंने मेरे कंधे पर जोर से थपथपाया—एक दृढ़, हार्दिक आलिंगन, जिसमें दबी हुई भावनाएँ भरी थीं। फिर मैं अपना सामान पैक करने वापस चला गया।
हम तीनों के बीच अच्छे संबंध बने रहे, बेशक—वह, मैथ्यू और डैनी। लेकिन मुझे पता था कि हमारा साथ का अध्याय समाप्त हो चुका है। फिल्मों की रातें, अंग्रेजों के बारे में चुटकुले, फुटबॉल पर हमारी बहसें, क्लासिक फिल्मों पर हमारी हंसी-मजाक... वह सब अब हमारे पीछे छूट गया था।
अब फ्रांसीसी माहौल का समय था।
तो हम सब एक साथ फ्रांसीसी सेल में चले गए। केवल एवगेनी और पावेल अपवाद थे, दो शांत रूसी जिन्हें हमने खाली बिस्तरों को भरने के लिए अंदर आने दिया। बहुत शांत, बहुत सम्मानजनक। वे समूह का हिस्सा थे... लेकिन वास्तव में उसका हिस्सा नहीं थे। हमेशा विनम्र, हमेशा उपस्थित—लेकिन ज्यादातर अपनी ही दुनिया में।
मार्को, एक्सल, स्वान, मोमो, यूसुफ, जूलियन, एड्रियन और अब दो रूसियों के साथ, हमारी टीम आखिरकार पूरी हो गई।
और कुछ बदल गया।
माहौल खुशनुमा था। हम हर दिन फ्रांस के बारे में, घर लौटने के बाद क्या करेंगे, इस बारे में बातें करते थे। हमने यादें, सपने और योजनाएँ साझा कीं। हममें से हर कोई अपने पड़ोस, अपने परिवार और अपनी बेफिक्र जवानी के बारे में बात करता था। हम हँसते थे, एक-दूसरे को चिढ़ाते थे, और चैन की साँस लेते थे।
और सबसे महत्वपूर्ण बात, हमने एक-दूसरे का समर्थन किया। एक असली टीम— बिल्कुल एक फुटबॉल टीम की तरह। और यह स्वाभाविक था... फ्रांस ने अभी-अभी विश्व कप जीता था।
दुःस्वप्न का अंत अब... वास्तविक सा लग रहा था। इसमें एक स्वाद था। एक गंध थी। एक वादा था। हम डटे रहेंगे।
जैसे-जैसे महीने बीतते गए, स्वतंत्रता के वादे दूर मंडराते रहे, फिर भी हर दिन एक परीक्षा बना रहा।

कागज़ पर तो हमारे पास ज़्यादा समय नहीं बचा था। ज़्यादा से ज़्यादा कुछ महीने। आप सोचेंगे कि सबसे बुरा समय बीत चुका है, उम्मीद हमें सहारा देगी, हमारा बोझ हल्का करेगी... लेकिन हकीकत कहीं ज़्यादा क्रूर थी।
ग्रीष्म ऋतु बीत जाने के बावजूद, गर्मी कम नहीं हुई थी। हर कोने में उमस छाई हुई थी। हवा भारी और घुटन भरी लग रही थी। अचानक बिना किसी चेतावनी के तेज़ बारिश होने लगती थी—हिंसक और अचानक, अक्सर शाम ढलते ही या आधी रात को। मानो आसमान बदला ले रहा हो, पानी की दीवार सी लग रही हो।
और उन बारिशों ने हमें राहत देने के बजाय, हमारे नरक को और भी गहरा कर दिया। जगह की कमी के कारण हमारे कपड़े, जो आमतौर पर बाहर टांगे जाते थे, पूरी तरह भीग गए थे। और हमें केवल दो-दो जेल की वर्दी रखने की अनुमति थी। इसलिए हमें गीले कपड़ों में ही कपड़े पहनने पड़ते थे—गीले, ठंडे, चिपचिपे कपड़े जो खुजली करते थे, शरीर से चिपकते थे और हमें बोझिल महसूस कराते थे। कुछ लोगों को फंगल संक्रमण, चकत्ते और त्वचा पर दर्दनाक दाने हो गए। मेरी संवेदनशील त्वचा के कारण, मैं भी इससे अछूती नहीं रही। अच्छे दिनों में भी, आशा की एक किरण के बावजूद, हमारे शरीर इन वर्षों की थकान ढोते रहते थे। यह सब अंतहीन सा लगता था।
मैं अनुशासन के साथ अपने कार्यों को पूरा करता रहा। विदेशियों की गिनती करना। सैन्य अभ्यास। बिल्डिंग नंबर 9 की यात्राएँ... मैंने अपनी सफेद टी- शर्ट को एक झंडे की तरह थामे रखा। इसने मुझे अधिकार, आराम और विशिष्टता का एहसास दिलाया—हमारे दिनों की एकरूपता के विपरीत एक हल्का सा बदलाव। मैंने इसका बुद्धिमानी से उपयोग किया, कभी-कभी अपने साथी कैदियों के लिए छोटी-मोटी मदद माँगी: थोड़ा गर्म पानी, किसी को अस्पताल ले जाने की अनुमति, एक कॉफी। छोटी-छोटी चीजें, लेकिन उन्होंने हमें मुश्किलों से उबरने में मदद की। उन्होंने हमें याद दिलाया कि हम अभी भी इंसान हैं।
मैंने उन लोगों की मदद करने की पूरी कोशिश की, जो बिना किसी मुलाकात या सहारे के धीरे-धीरे अपना मानसिक संतुलन खो रहे थे। मैंने उनमें से कुछ को गिरते हुए देखा था। मैं उन्हें गुम नहीं होने देना चाहता था।
और मौतें आती रहीं। हमारे बीच भी।
विशेषकर नाइजीरियाई लोगों ने अकल्पनीय पीड़ा झेली। 2016 में थाईलैंड और नाइजीरिया के बीच राजनयिक संबंध टूटने के बाद से कोई दूतावास, कोई समर्थन और स्थानांतरण की कोई संभावना न होने के कारण, वे अपनी पूरी सजा काटने के

लिए अभिशप्त थे - एक-एक पल - यहां तक कि वे लोग भी जिन्हें थोड़ी मात्रा में ड्रग्स के साथ गिरफ्तार किया गया था। कुछ ने तो अभी-अभी परिवार बसाया था, और अब वे 10, 15, कभी-कभी 20 साल तक पूरी तरह गुमनामी में रहने के लिए मजबूर थे।
उनकी मृत्यु कुपोषण से हुई। अनुपचारित बीमारी से। एकांत से। आप उनके शरीर को सिकुड़ते हुए, उनकी आँखों की चमक फीकी पड़ते हुए देख सकते थे। यह एक धीमी, अदृश्य, दर्दनाक मृत्यु थी। कभी-कभी, हमें पता चलता था कि उनमें से किसी एक की रात में मृत्यु हो गई - चुपचाप, बिना नाम लिए, बिना किसी आवाज के।
और फिर वो अक्टूबर की सुबह आ गई।
हवा सामान्य से थोड़ी ठंडी थी। उमस भरी गर्मी से थोड़ी राहत मिली। हमने सोचा था कि आज का दिन शांत रहेगा। और फिर अचानक सब कुछ बिगड़ गया। लॉकर रूम में ज़बरदस्त लड़ाई छिड़ गई।
चीखना-चिल्लाना। चिल्लाना। रोना।
पहरेदार?
वे हमेशा की तरह अपनी छोटी सी धातु की झोपड़ी में बंद हो गए थे।
2,000 से अधिक कैदियों के लिए केवल दो ही पहरेदार थे।
वे छिपने के अलावा और क्या कर सकते थे?
पहले तो हमें लगा कि हम विदेशियों पर हमला हुआ है। हम सब तुरंत आंगन के एक कोने में इकट्ठा हो गए। ज़मीन पर लेटकर हम मुश्किल से सांस ले रहे थे।
लेकिन बहुत जल्दी हमें एहसास हुआ कि यह एक स्थानीय लड़ाई थी। दो थाई गिरोह
- बैंकॉक के अलग-अलग इलाकों के प्रतिद्वंद्वी गिरोह।
लड़ाई की आवाज, उलटी हुई कुर्सियों की आवाज, टूटी हुई मेजों की आवाज, मुक्कों के मांस पर पड़ने की आवाज—यह सब जेल में गूंज रही थी।
जब सेना आई, तो हिंसा एक नए स्तर पर पहुँच गई। ढालें। लाठियाँ। सैन्य जूते।
सैनिक अंधाधुंध हमला करते हुए अंदर घुस आए। चिल्लाते हुए। मारते हुए।
जानवरों की तरह अपना इलाका चिह्नित करते हुए। यहाँ तक कि जब हम ज़मीन पर लेटे हुए थे, तब भी हममें से कुछ को पसलियों और पीठ पर लात मारी गई—सिर्फ़ हमें हमारी औकात याद दिलाने के लिए। अपमान। सदमा। और फिर—खामोशी।
उसके बाद, शुद्धिकरण का दौर शुरू होगा।

दर्जनों थाई कैदियों को ले जाया गया और एकांतवास में डाल दिया गया। कुछ कभी वापस नहीं लौटे। उनके नाम सूचियों से गायब हो गए। उनके बारे में फिर कभी किसी ने बात नहीं की।
जब हम अपना सामान लेने वापस लौटे तो फर्श पर अभी भी खून के धब्बे थे। यह किसी युद्ध क्षेत्र जैसा लग रहा था।
सितंबर 2018 का अंत कुछ इस तरह हुआ। थके-हारे। चकनाचूर। लेकिन फिर भी डटे हुए।
बिल्डिंग 1 में लगे पंखे महज़ चरमराहट करने वाले थे, जिनकी पत्तियाँ इतनी ऊँचाई पर लगी थीं कि उनसे कोई फ़र्क नहीं पड़ता था। वे बस गर्म हवा को इधर-उधर करते थे, और कुछ नहीं। पटाया में लगे उन शक्तिशाली पंखों की तरह बिल्कुल नहीं, जिनसे कम से कम कुछ राहत तो मिलती थी।
बाहर, हम छाया की तलाश में इधर-उधर भटकते रहे—ठंडी दीवारें, धूप से बची टाइलें। मेरा अपना एक तरीका था: गर्म पेय पीना। जलती हुई कॉफी, गर्म चाय— इससे मेरा शरीर खुद को नियंत्रित करने में कामयाब हो जाता था। एक भ्रम।
लेकिन कुछ न होने से तो बेहतर था।
इस बीच, मैं और अधिक कॉन्सर्ट कर रहा था।
हमने पूरी जेल का दौरा किया—सभी इमारतों का। मैं विदेशी गायक बन गया था, सेल के मुखियाओं के बीच जाना-पहचाना, कैदियों द्वारा सराहा जाने वाला।
यहाँ तक कि थाई लोग भी मेरे गाने कंठस्थ करने लगे थे। मुझे गर्व था—थोड़ी सी खुशी, थोड़ा सा सुकून देने में सक्षम होने पर मुझे खुशी थी।
लेकिन कोई विशेष व्यवहार नहीं।
कोई विशेष सुविधा नहीं। कुछ भी अतिरिक्त नहीं। बस बिल्डिंग 9 में जाने, पत्रिकाएँ लेने, बैंड के साथ प्रशिक्षण लेने और पूर्वाभ्यास करने का अधिकार। इसके अलावा? अधिकतम बीस मिनट की मुलाकात। परिवार के साथ भी।
और फिर भी… एक रोशनी नजदीक आ रही थी।
उस असंभव शाही क्षमादान की प्रतीक्षा करते हुए, दिन नीरस और बोझिल दिनचर्या में ढलते चले गए। शरद ऋतु ने भी गर्मी से कोई राहत नहीं दी। भीषण गर्मी अभी भी बनी हुई थी। उमस चिपचिपी और असहनीय थी। उष्णकटिबंधीय बारिश बिना किसी चेतावनी के आई - हिंसक, क्रूर - सब कुछ भिगो दिया, लेकिन हवा को जरा भी ठंडा नहीं किया। हम एक ऐसे मौसम में फंस गए थे जहाँ समय ठहर सा गया था।

और फिर भी, एक वास्तविक, ठोस उम्मीद जड़ पकड़ने लगी: अंदरूनी दौरे।
एक सुबह इंटरकॉम पर दबे स्वर में यह घोषणा की गई: “थाईलैंड में रिश्तेदारों वाले सभी विदेशी कैदी अब अक्टूबर में होने वाली मुलाकातों के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदन महीने के अंत से पहले पूरा किया जाना चाहिए।”
उस छोटे से संदेश ने हमारी कोठरी में आग लगा दी। आखिरकार! जिस पल का हम महीनों-सालों से इंतज़ार कर रहे थे, वह आ गया। अंदर जाकर मुलाक़ात का मतलब था सच्चा जुड़ाव। न कांच, न सलाखें—बस अपने प्रियजनों के साथ घंटों आमने- सामने। एक मेज पर बिताया गया समय। वास्तविक समय। जीवन की कोई छाया नहीं, बल्कि स्वयं जीवन।
मेरे लिए, जूलिया आ रही थी।
उसने अपने पत्रों में इसका ज़िक्र किया था, लेकिन मैंने कभी भी बहुत ज़्यादा उम्मीदें नहीं पालनी सीख ली थीं। जेल में निराशा एक घातक ज़हर है।
उसने आने का वादा किया था। लेकिन कई बाधाएँ थीं: परमिट, उड़ानें, पैसा, दूतावास की मंज़ूरी... और फिर भी, इस बार, सब कुछ ठीक लग रहा था।
इसलिए मैंने पूरी तरह से तैयारी शुरू कर दी।
हमने कोठरी को पहले कभी न देखी गई सफाई से साफ किया। हममें से हर कोई चाहता था कि हमारी मेज, हमारी सोने की चटाई, हमारी तह की हुई चादरें गरिमा को दर्शाएं—जंजीरों में जकड़े होने के बावजूद खड़े रहने वाले पुरुष। हमने दाढ़ी बनाई, हमने जितना हो सके अच्छे कपड़े पहने। कुछ ने तो "सभ्य" दिखने के लिए उधार की कमीजें भी लीं।
सच क्या था? ये सभी हाव-भाव—सफाई, व्यवस्थित करना, तह करना—पूरी तरह से प्रतीकात्मक थे। मनोवैज्ञानिक सहारा। अपना सिर ऊंचा रखने का एक तरीका। क्योंकि आगंतुक हमारी कोठरियाँ कभी नहीं देख पाते थे। अंदर की मुलाकातें मुख्य प्रवेश द्वार के पास, एक बड़े कमरे में होती थीं जो किसी हैंगर जैसा दिखता था। हमारी तंग, उमस भरी वास्तविकता से बिलकुल अलग।
और सबसे चौंकाने वाली बात? हमें अपनी आधिकारिक जेल वर्दी में ही उपस्थित होना था। कोई अपवाद नहीं। इसलिए, कम से कम थोड़ा साफ दिखने के लिए, हमने एकदम नए शॉर्ट्स और शर्ट मंगवाए। बेशक, कीमत बहुत अधिक थी—लेकिन थोड़ी सी इज्जत के लिए यह जायज था।

हर शाम, मार्को और मैं इस बारे में बात करते थे कि हम अपने प्रियजनों से क्या कहेंगे और क्या नहीं कहेंगे। हम उन्हें दुख नहीं पहुंचाना चाहते थे।
अभी नहीं। जब वे विमान में वापस आ जाएं तब तो बिल्कुल नहीं।
— “मैं बस उसे बता दूँगा कि मैं ठीक हूँ। मैं पहले से ज़्यादा मज़बूत हूँ।
उसे तिलचट्टों या ठंडे पानी से नहाने के बारे में जानने की ज़रूरत नहीं है।” — “तुम्हें लगता है कि उसे अब भी तुम्हारे भविष्य पर भरोसा है?” मार्को ने थोड़ा उदास होकर पूछा। — “मुझे नहीं पता… लेकिन वह आ रही है। और यह अपने आप में बहुत बड़ी बात है।”
दिन प्रतीक्षा और रखरखाव में ही बीतते थे। मैं बैंड रिहर्सल के लिए बिल्डिंग 9 तक लगातार जाती रहती थी, और जब भी गार्ड अच्छे मूड में होते थे, तो किताबें, पत्रिकाएँ और छोटी-मोटी चीज़ें लाने का हर मौका इस्तेमाल करती थी। मैं हमेशा सेल में थोड़ी खुशी लाने की कोशिश करती थी, भले ही कभी-कभी इससे तनाव पैदा हो जाता था—जैसे कुछ हफ़्ते पहले रशीद के साथ हुआ था। लेकिन इस बार, सबका ध्यान उम्मीद पर केंद्रित था। थाई लोग भी शांत लग रहे थे। झगड़े कम हुए थे। मानो राहत की उम्मीद, अंधेरे में प्रकाश का एक क्षण, ने सभी के तनाव को कम कर दिया था।
बहुत समय बाद पहली बार मुझे वह अजीब सी अनुभूति हुई… कि कुछ अच्छा होने वाला है।
और साथ ही—मुझे डर भी लग रहा था। मुझे डर था कि मैं उम्मीदों पर खरा नहीं उतर पाऊंगा। मुझे डर था कि वह देख लेगी कि मैं क्या बन गया हूं। कम तेज। कम मजबूत। कम… सब कुछ।
लेकिन मुलाकातों की भी यही सच्चाई है। आप दिखाते हैं कि आप कौन बन गए हैं— कोई मुखौटा नहीं, कोई कवच नहीं, कोई छल नहीं।
और मैं तैयार था। कम से कम, मुझे उम्मीद थी कि मैं तैयार था।
दिन बीतते गए। अक्टूबर धीरे-धीरे बीतता गया। जैसे-जैसे तारीख नजदीक आती गई, मेरे दिल की धड़कन तेज होती गई।
वो तारीख।
जिसका मैं सालों से इंतजार कर रहा था।
जूलिया आ रही थी।
मैंने एक प्रेमी की तरह तैयारी की, जैसे कोई अपनी मंगेतर से मिलने जा रहा हो। मैंने अपने कपड़ों को बार-बार धोया। मैंने अपनी सफेद कमीज बचा ली, जो

मेरी इकलौती ठीक-ठाक कमीज थी। मैंने कुछ गाढ़े दूध के पैकेट देकर लेडीबॉय टेलर्स से विशेष धुलाई का सौदा किया। उन्होंने मुझे वह कमीज इस्त्री की हुई, तह की हुई, लगभग नई जैसी लौटा दी।
मैंने बदले में उन्हें एक नोट दिया: "खोब खुन क्राप।"
बड़े दिन से तीन दिन पहले ही मैं बहुत बेचैन था। "तुम ठीक हो भाई? तुम तनाव में लग रहे हो," मार्को ने मज़ाक किया। "तनाव में? क्या तुमने मेरा चेहरा देखा है? मैं दो रातों से सोया नहीं हूँ।" "वह तुमसे मिलने आ रही है, बस यही मायने रखता है। बाकी सब गौण है।" "मुझे पता है, मुझे पता है... लेकिन मुझे डर है कि कुछ हो जाएगा। कि वे कार्यक्रम रद्द कर देंगे। कि वह नहीं आ पाएगी। तुम जानते हो कि यहाँ चीजें कैसे होती हैं..." उसने मेरे कंधे पर हाथ रखा और ईमानदारी से मेरी आँखों में देखा: "वह आ रही है। तुम उससे मिलने जा रहे हो। और सब ठीक हो जाएगा।"
आखिरकार वह दिन आ ही गया जिसका लंबे समय से इंतजार था।
अंदर की मुलाक़ातें। वह लगभग अवास्तविक क्षण, समय में जम गया, जिसके लिए हर कैदी खिड़कीविहीन कोठरी में सूरज की किरण की तरह तरसता था। हफ़्तों की प्रतीक्षा, तैयारी, इस बारे में कल्पना करने के बाद कि हम क्या कहेंगे, कैसे कपड़े पहनेंगे, क्या दिखाएंगे, क्या छिपाएंगे—आखिरकार हमें मुख्य भवन से कर्कश लाउडस्पीकर पर एक-एक करके बुलाया गया।
— “कैदी संख्या 1521, मुलाकात कक्ष में जाइए।”
एक्सल पहले गया। फिर यूसुफ। मैं सूची में तीसरे नंबर पर था। मार्को ने कोठरी के हमारे कोने से मुझे एक समझदारी भरी नज़र से देखा, हाथ बांधे, चेहरे पर हल्की सी मुस्कान लिए। — “जाओ भाई। अब तुम्हारी बारी है। आखिरकार तुम उसे देखने वाले हो।” — “मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा है… जैसे मैं कोई मौखिक परीक्षा देने जा रहा हूँ।”
हमने नए जेल के कपड़ों के लिए मोटी रकम खर्च की थी: एक साफ-सुथरी बेज रंग की कमीज और बेदाग शॉर्ट्स। ये उस तरह के कपड़े हैं जिन्हें आप सिर्फ एक बार पहनते हैं, जैसे शादी का सूट…
लेकिन यहाँ, एक पुनर्मिलन के लिए। एक ऐसी जगह पर जहाँ फूल नहीं थे।
अंदर के मुलाकात कक्ष तक का सफर किसी पवित्र अनुष्ठान जैसा लग रहा था।
मेरे नंगे पैर गर्म कंक्रीट पर हल्के से फिसले, लेकिन मुझे इसका एहसास

नहीं हुआ। मेरी निगाहें सामने टिकी हुई थीं—जेल के प्रवेश द्वार पर बनी विशाल इमारत पर, उस विशाल, धूसर रंग के हैंगर पर, जिसकी टिमटिमाती फ्लोरोसेंट बत्तियाँ हमें अंततः उन लोगों को गले लगाने का मौका देंगी जिन्हें हम प्यार करते थे।
जैसे ही मैंने अंदर कदम रखा, वातावरण अजीब सा लगा। तनाव, संयमित खुशी और घबराहट भरी उत्तेजना का मिश्रण। स्कूल की कैंटीन की तरह प्लास्टिक की मेजें कतार में लगी थीं। दीवारों के किनारे खाने के स्टॉल लगे थे: थाई सूप, फ्राइड राइस, पोर्क सींक, प्लास्टिक की थैलियों में बंधे मीठे रंगीन जूस और आइसक्रीम। एक छोटा सा उत्सव बाजार।
बस मैं नंगे पैर था।
कैदी की वर्दी पहने हुए था।
बस एक छोटी सी बात। बस।
और फिर मैंने उसे देखा।
जूलिया।
वह मेरी ओर बढ़ी, उसकी आँखें चमक रही थीं, कदम डगमगा रहे थे, फिर दृढ़ हुए— और अंत में, उसने मुझे गले लगा लिया। मैंने उसकी साँसें महसूस कीं, उसके बाल मेरे गालों से छू गए, शैम्पू की हल्की खुशबू महसूस की। मैंने उसे छोड़ दिया। मैं रोई। चुपचाप। बहुत देर तक।
— “तुम उस यूनिफॉर्म में अच्छे लग रहे हो, जानते हो? जैसे समर कैंप में हो…” वह मज़ाक कर रही थी, मुझे हंसाने की कोशिश कर रही थी। मैंने हल्की सी हंसी हंसते हुए अपने आंसू हाथ के पिछले हिस्से से पोंछे। — “सच कहूं तो मैं चप्पल पहनकर पैड थाई बेचने वाले लड़के जैसा लग रहा हूं।”
हम उन प्लास्टिक की मेजों में से एक पर बैठ गए, उस निर्जीव जगह में जिसे इस अवसर के लिए कागज़ की पट्टियों, बच्चों के चित्रों और छोटे झंडों से सजाया गया था। हर परिवार को अपनी-अपनी मेज मिली। गार्ड बीच-बीच में आते-जाते रहते थे, लेकिन इससे हमें कुछ हद तक निजता का एहसास होता था।
हमने समुद्र तट पर किशोरों की तरह खाना खाया। वह मेरे लिए झींगा फ्राइड राइस और एक कोल्ड ड्रिंक लाई थी। मुझे वास्तव में भूख नहीं थी। उसकी उपस्थिति ने मुझे तृप्त कर दिया। उसकी आँखों की चमक ने। उसकी आवाज़ ने।
उसने मुझे वो सब कुछ बताया जो मैंने खो दिया था। शहर। हमारे दोस्त।
फिल्में। जन्मदिन। मौसम। रोजमर्रा की जिंदगी। वास्तविक जीवन।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। मेरे पास जो कुछ भी था, वह इसके मुकाबले फीका लगने लगा। मैंने उसे बुनियादी बातें बताईं: मेरी किताबें, मेरे थाई भाषा के पाठ, संगीत, कॉन्सर्ट, दोस्त, तनाव—और सबसे बढ़कर, इंतज़ार।
— “पता है… कभी-कभी ऐसा लगता है जैसे मैंने यहाँ अनंत काल बिता दिया हो। जैसे मैं कभी बाहर नहीं निकल पाऊँगी। लेकिन आज… आज का दिन एक याद दिलाता है। कि बाहर अभी भी एक जीवन मेरा इंतजार कर रहा है।”
उसने मेरा हाथ और कसकर पकड़ लिया। पहरेदारों ने सीटी बजाई। सपने का अंत। अंदर का दौरा चार घंटे तक चला।
पूरे चार घंटे। फिर भी, ऐसा लगा जैसे बीस मिनट ही बीते हों। समय मानो गायब हो गया था। हॉल की भारी हवा में, चावल के दो निवालों, हंसी के दो ठहाकों और दो ऐसी खामोशियों के बीच, जो भावनाओं से इतनी भरी थीं कि शब्दों में बयां नहीं की जा सकती थीं, सन्नाटा पसरा हुआ था।
जब आखिरी घंटी बजी, तो हम सब दुनिया को रोक देना चाहते थे। उस पल को थम सा देना चाहते थे। बस वहीं, उस हिलती-डुलती मेज पर बैठे रहना चाहते थे, हर बात और कुछ भी नहीं के बारे में बातें करना चाहते थे, मानो एक दोपहर के लिए सामान्य जीवन लौट आया हो।
लेकिन यह तो सिर्फ एक ऋण था।
एक कोष्ठक।
और अब, वापस जाने का समय था।
इमारत की ओर वापस चलना… अजीब सा लगा… मानो किसी दूसरी दुनिया से वापस आ रहे हों। एक ऐसी दुनिया जहाँ हमें सचमुच अस्तित्व में रहने की अनुमति थी।
हममें से कुछ लोग सिर झुकाए, विचारों में खोए हुए चल रहे थे। कुछ अन्य लोग हल्की मुस्कान लिए, उनकी आँखों में अभी भी चमक थी। मैं? मैं चुपचाप, नंगे पैर धूल में चल रहा था, मेरी हथेली में जूलिया का छोटा सा नोट थामे हुए। मेरा दिल अभी भी तेजी से धड़क रहा था। मेरा मन उन शब्दों में खोया हुआ था जो हमने आपस में कहे थे, उन निगाहों में, गार्डों की पीठ पीछे की गई उन चोरी-छिपे मुस्कुराहटों में।
कोठरी में वापस आते ही माहौल खामोश हो गया। न संगीत, न चुटकुले। बस आहें।
एक-दूसरे को देखती निगाहें। और धीरे-धीरे सन्नाटा टूट गया।

— “भाई… मैं तो बच्चे की तरह रोया,” यूसुफ ने अपने तौलिये के कोने से अपनी आँखें पोंछते हुए कहा। — “मैंने कुछ नहीं खाया… मैं बस उसे देखता रहा, सुनता रहा। आज तो चावल भी स्वर्ग जैसे लग रहे थे,” एक्सल ने दीवार से टेक लगाते हुए, खाली आँखों से कहा।
— “मार्को? तुम ठीक हो?” उसने सिर हिलाया। — “मैंने अपनी बहन को देखा। हमने माँ के बारे में बात की। उसने मुझे बताया कि वह मेरा इंतज़ार कर रही है। वह दिन गिन रही है।”
हम सबने एक-दूसरे को देखा। एक खामोशी थी जो हमें बांधे रखती थी— जुदाई का दर्द। पुनर्मिलन की उम्मीद। और यह खामोश डर कि कहीं सब कुछ फिर से बिखर न जाए।
— “यह… अविश्वसनीय था। मैं भूल ही गई थी कि मैं कहाँ हूँ। हम हँसे, हम रोए… मैंने उसका हाथ छुआ, उसका चेहरा छुआ… मैंने उसके इत्र की खुशबू ली। मैं भूल ही गई थी कि ऐसा महसूस करना कैसा होता है। चार घंटे। यह कुछ भी नहीं है—लेकिन यह सब कुछ है।”
बाकी लोग मुस्कुराए—कुछ ने दयालुता से, कुछ ने थोड़ी उदासी से, शायद थोड़ी ईर्ष्या से भी। लेकिन वे सब जानते थे। वे सब समझते थे कि इसका क्या मतलब है।
एक कोने में, मार्सिले के दो युवा लड़के फुसफुसाते हुए बता रहे थे कि उन्होंने क्या खाया: चिकन सैंडविच, फ्राइज़, ठंडा कोक… वे धीरे से हँस रहे थे, उस दिन की अवास्तविक खुशी में अभी भी डूबे हुए थे।
मैं वहीं अपनी चटाई पर पालथी मारकर बैठ गई। मैंने जूलिया का छोटा सा नोट निकाला। नोटबुक के फटे हुए पन्ने पर कुछ शब्द लिखे हुए थे:
“हिम्मत मत हारो। हम तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं। मुझे तुम पर गर्व है।” सरल। लेकिन किसी भी दवा से ज्यादा शक्तिशाली।
उस रात हमने कोई फिल्म नहीं देखी। हमने टीवी भी नहीं चलाया। हर कोई अपनी- अपनी यादों में डूबा रहा, मानवता की अपनी नई जागृत खुराक में। कोठरी शांत थी। सुकून देने वाली।
और सन्नाटे में, सोने से ठीक पहले, मैंने खुद से कहा—हाँ। मैं थोड़ी देर और टिक सकता हूँ।
अंदर की मुलाकातों के बाद के दिन… अजीब से लगे। जैसे किसी सपने से जागना, तस्वीरें अभी भी धुंधली और तैरती हुई थीं। हँसी, आवाज़ें, खाने की खुशबू,

हमारी मुलाक़ात की नज़रें… सब कुछ हवा में एक फीकी खुशबू की तरह मंडरा रहा था। और फिर, धीरे-धीरे, जेल का जीवन वापस लौट आया। भोर में पहरेदारों की चीखें, कैंटीन के लिए अंतहीन कतारें, हाज़िरी, धूप में सूख रही टी-शर्ट के लिए छोटी-मोटी लड़ाइयाँ… वह कठोर, ठंडी दिनचर्या।
भीतर, हमारे मन में एक नई तरह की आशा थी। लेकिन हमारे मन में चिंताओं का बवंडर चल रहा था। हमने दिन गिनना शुरू कर दिया, फिर भी वे पहले से कहीं अधिक लंबे लग रहे थे। यह एक विरोधाभास था: जैसे-जैसे हम स्वतंत्रता के करीब पहुँचते गए, हर दिन उतना ही असहनीय लगने लगा।
लेकिन कुछ बदल गया था। उम्मीद हमारे दिलों में घर कर गई थी। पतली, नाजुक, लेकिन वास्तविक।
हम सब अपने विचारों में खोए हुए थे। हंसी कम हो गई थी। खेल कम हो गए थे। अब हम पहले की तरह आंगन में बड़ी-बड़ी योजनाएँ नहीं बनाते थे। सबकी निगाहें बाहर की ओर, भविष्य की ओर थीं। और फिर भी, जाने की इस गहरी, सहज इच्छा के बावजूद... हमारे अंदर कुछ ऐसा था जो विरोध कर रहा था।
मेरे लिए, यह एक निरंतर विरोधाभास जैसा महसूस हुआ। एक ओर, मैं बेसब्री से इंतजार कर रही थी। मैं दिन गिन रही थी। मैं अपनी वापसी की योजना बना रही थी, फ्रांसीसी धरती पर अपने पहले कदम की कल्पना कर रही थी, आज़ादी की खुशबू को महसूस कर रही थी। लेकिन दूसरी ओर... यह दिनचर्या, ये दैनिक हाव-भाव, यह जेल जैसी संरचना जिससे हम लगभग अपनी इच्छा के विरुद्ध चिपके रहे थे—मुझे अब किसी और तरह से जीना नहीं आता था।
हर सुबह, मुझे अपनी दिनचर्या फिर से मिल जाती थी: मेरा व्यायाम, मेरी इंस्टेंट कॉफी, कैंटीन से चिप्स, सैन्य अभ्यास, हाजिरी, दूर से आती बौद्ध प्रार्थनाएँ... और रात में, जेल के दरवाजों के धीरे-धीरे बंद होने की आवाज़ — जैसे किसी यांत्रिक हृदय की स्थिर धड़कन। यह कोई जीवन नहीं था। लेकिन यह हमारा जीवन था।
स्टॉकहोम सिंड्रोम, शायद। लेकिन उससे भी बढ़कर: अनुकूलन। पागलपन के खिलाफ एक मानसिक ढाल।
फिर, जैसे-जैसे क्रिसमस नजदीक आया, खुशी की एक चीख ने सुबह की खामोशी को तोड़ दिया: "शाही क्षमादान! रानी ने इस पर हस्ताक्षर कर दिए!"
यह सच था। इस बार, यह सचमुच था। आखिरकार, यह पहली शाही क्षमा थी जिसके लिए मैं पात्र था।

मैंने दूसरों को ऐसा करते देखा था। मैंने नाम उभरते देखे थे, दोस्तों को जाते देखा था, लोगों को मेरी आँखों के सामने रिहा होते देखा था... लेकिन कभी मेरा नाम नहीं आया। कभी मेरा नहीं। फिर भी, मैंने धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की थी। मैंने कई प्रमाणपत्र जमा किए, सभी कार्यक्रमों में भाग लिया, "उत्कृष्ट" दर्जा प्राप्त किया। मैंने हर काम नियमों के अनुसार किया था। और इस बार मेरी बारी थी।
कमांडरों ने सुबह होते-होते इसकी पुष्टि कर दी। जल्द ही, कुख्यात बोर्ड सामने आए—दीवारों पर चिपकाई गई बड़ी-बड़ी छपी हुई शीटें, जिन पर नाम, वर्गीकरण और सजा में कमी की सूची थी। जेल में अफरा-तफरी मच गई।
ऐसा लग रहा था जैसे परीक्षा परिणाम का दिन हो। सूचियों के चारों ओर भीड़ जमा हो गई, उंगलियां कांप रही थीं क्योंकि लोग अपने नाम ढूंढ रहे थे। और फिर—मैंने उसे देखा। मेरा पहला नाम। मेरा अंतिम नाम। और ठीक उसके बगल में: वाक्य आधा कटा हुआ।
मेरी 14 साल की सजा अब घटकर 7 साल रह गई थी।
मुझे बैठना पड़ा। बस एक पल के लिए। सांस लेने के लिए। मैं अब एक अंतहीन दुःस्वप्न में फंसा नहीं था। सबसे बुरी स्थिति में भी—भले ही मेरा स्थानांतरण अनुरोध अस्वीकार कर दिया जाए—मैं बाहर निकल जाऊंगा। मुझे फिर से रोशनी दिखाई देगी।
मेरे चारों ओर: चीखें, हँसी, आँसू। कुछ लोगों को तुरंत रिहा किया जा रहा था — जिनकी सज़ा में केवल एक या दो साल बचे थे, या जो पहले ही लंबी सज़ा काट चुके थे। हमने दोस्तों को जाते देखा। जेल के साथी। वे लोग जिन्हें हमने हड्डियों तक कमज़ोर होते देखा था।
हमने चोरी के आरोप में गिरफ्तार युवा रूसी पावेल को अलविदा कहा। उसने हमारे साथ कुछ ही महीने बिताए थे। वह जितनी जल्दी आया था, उतनी ही जल्दी चला भी गया। उसे कैदी बनने का भी समय नहीं मिला था।
लेकिन सबसे परेशान करने वाली बात क्या थी? यहां तक कि मृतकों को भी "मुक्त" घोषित कर दिया गया। लाउडस्पीकर ने उनके नामों को एक ही सूत्र में दोहराया:
- "जारी किया।"
और सभी जानते थे कि वे मर चुके हैं। बीमारी से। हत्या से। मौन से।

फिर भी, उम्मीद के बावजूद, हर दिन एक मानसिक संघर्ष बना रहा। जेल से बाहर निकलना—भले ही यह करीब महसूस हो—कोई राहत नहीं देता। यह एक निरंतर तनाव है। एक आंख नोटिस बोर्ड पर, दूसरी गार्डों पर। एक खामोश आशंका: “क्या होगा अगर कल वे कहें कि मेरा तबादला नामंजूर कर दिया गया है? क्या होगा अगर कोई नया मामला खुल जाए? क्या होगा अगर कोई अधिकारी मुझसे चुपके से नफरत करता हो?”
मार्को ने मेरे कंधे पर थपथपाया, उसकी आँखें चमक रही थीं: "भाई, तुमने कर दिखाया! देखा? सारी मेहनत रंग लाई!"
मैंने सिर हिलाया, मुश्किल से बोल पा रही थी, मेरा दिल भरा हुआ था। "हाँ... सच कहूँ तो मुझे अब इस पर विश्वास नहीं रहा।"
हम सभी खुले मैदान के पास छायादार कोने में इकट्ठा हुए, जो फुटबॉल मैच देखने या बातचीत करने के लिए हमारी पसंदीदा जगह थी। डेनिस, जो अमेरिकी था, उसकी सजा में भी कमी आई थी। "मुझे छठी सजा मिली है यार। मादक पदार्थों से जुड़े अपराधों के लिए इससे बेहतर सजा नहीं मिल सकती। लेकिन चलो, कुछ तो है ना?" उसने थकी हुई मुस्कान के साथ हाथ ऊपर उठाते हुए कहा।
मैथ्यू चुपचाप सुनते हुए धीरे से बोला: "तीन साल की छुट्टी। मैं इसे स्वीकार करता हूँ।"
डैनी, जो हमेशा यथार्थवादी थे, ने आगे कहा: "पच्चीस में से, यह मेरे जीवन को नहीं बदलेगा... लेकिन इससे मनोबल में ज़रूर मदद मिलेगी।"
हम चुपचाप हँसे, उस भारीपन के साथ जो केवल वही पुरुष सह सकते हैं जिन्होंने बहुत कुछ देखा हो। थाई कैदियों के लिए, शाही क्षमादान कभी-कभी सच्ची मुक्ति होती थी। हमारे लिए, विदेशियों के लिए, वे मेज पर फेंके गए टुकड़ों के समान थे।
डेनिस या मैथ्यू जैसे कैदियों के लिए, असली उम्मीद कहीं और थी—नशीली दवाओं के अपराधों से जुड़े जुर्माने की माफी में। थाई कैदी के लिए, शाही क्षमादान अक्सर उस कर्ज को मिटा देता था। लेकिन अपने देश में स्थानांतरण की उम्मीद कर रहे किसी विदेशी के लिए... जुर्माना बना रहता था। और कभी-कभी, वह जुर्माना सजा से भी भारी पड़ता था।
मुझे याद है मैंने डेनिस से पूछा था: "सच कहूँ तो, अगर जुर्माना माफ कर दिया जाए और तुम्हें घर जाने दिया जाए... तो क्या तुम जाओगे?" उसने कंधे उचकाए, उसकी नज़रें कहीं और थीं: "ज़रूर। लेकिन मुझे यह भी नहीं पता कि मैं अब भी

वहाँ रहने लायक हूँ या नहीं। तुम्हें पता है? मैं यहाँ बहुत लंबे समय से हूँ।"
यह एक ऐसी बात थी जो हमने बहुत सुनी। वह अजीबोगरीब, उलटा जुड़ाव का एहसास। हममें से कुछ को तो यह भी नहीं पता था कि बाहर हमारा क्या इंतजार कर रहा है, या दुनिया में हमारी कोई जगह बची भी है या नहीं।
रात में कोठरी का माहौल तनावपूर्ण था। हर कोई अपने अनुभव साझा कर रहा था— या जो उन्हें नहीं मिला था। हम आपस में बातें कर रहे थे, अनुमान लगा रहे थे: — "अगर मुझे अभी आधी सजा कम हो जाए, और अगले साल फिर से माफी मिल जाए... तो क्या आपको लगता है कि मैं 2019 में रिहा हो सकता हूँ?"— "सोचिए अगर अप्रैल में इस छूट के साथ आपका स्थानांतरण स्वीकृत हो जाए? आप सीधे घर चले जाएँगे।"
मार्को की सजा भी आधी कम कर दी गई थी। उसकी मूल 18 साल की सजा अब 9 साल की रह गई थी। यह जीवनरक्षक क्षमादान बिल्कुल सही समय पर आया, जिससे उसे उम्मीद की एक नई किरण मिली।
हम कुछ पल तक एक-दूसरे को देखते रहे, थोड़े अचंभित से। "यह हो रहा है, भाई। तुम और मैं—हम लॉन्च पैड पर हैं," उसने गर्व भरी मुस्कान के साथ मेरा हाथ दबाते हुए कहा। "हाँ... और बिल्कुल सही समय पर," मैंने गले में अटकन के साथ जवाब दिया।
लेकिन उस खुशी के पीछे एक और सवाल मन में घर करने लगा: फ्रांस में वास्तव में क्या होगा?
किसी के पास स्पष्ट जवाब नहीं था। कुछ लोगों को यकीन था कि हमें तुरंत रिहा कर दिया जाएगा। कि हमने जो कुछ सहा है, उसके बाद फ्रांस हमें और कष्ट देने की हिम्मत नहीं करेगा। कि यह सब सजा के रूप में गिना जाएगा।
लेकिन अन्य लोग—जो अधिक यथार्थवादी थे, या बस बेहतर जानकारी रखते थे—ने इसके विपरीत कहा। फ्रांस विदेशी निर्णयों को मान्यता देता है, विशेष रूप से स्थानांतरण समझौतों में। बेशक, वे सजा को समायोजित कर सकते थे, इसके एक हिस्से को पैरोल या नजरबंदी में बदल सकते थे, लेकिन तत्काल रिहाई की कोई गारंटी नहीं थी। अभी भी कई साल जेल में बिताने थे—यहां तक कि वहां भी। तो, हमें अभी-अभी जो शाही क्षमादान मिला था... वही हमारा असली मौका बन गया। मैंने सात में से चार साल पूरे कर लिए थे। तीन साल बाकी थे। इतने कम समय के लिए फ्रांस पहुंचने से मुझे जल्दी रिहाई, शायद तुरंत पैरोल मिलने का अच्छा

मौका मिल गया था। सात साल की सजा काटकर वापस जाना, 14 साल की सजा सिर पर लटके रहने से बेहतर था। यह बात तो साफ थी।
अब्देल और मोमो फ्रांस में पहले ही सजा काट चुके थे। वे व्यवस्था से अच्छी तरह वाकिफ थे—कानून, खामियां, समयसीमा। अपनी चटाइयों पर पालथी मारकर बैठे, चावल कुतरते हुए, उन्होंने सहज आत्मविश्वास के साथ हमें सब कुछ समझाया।
— "सुनो, तुम पहली बार आए हो। इसका मतलब है कि तुम्हारा कोई पिछला आपराधिक रिकॉर्ड नहीं है। तुम जल्दी रिहा हो जाओगे," अब्देल ने कहा। — "फ्रांस मानवाधिकारों का सम्मान करता है, मेरे भाई। अगर तुम्हारा रिकॉर्ड साफ है — हिंसा का कोई रिकॉर्ड नहीं है, कोई बार-बार अपराध नहीं किया है—तो तुम्हें टखने में ब्रेसलेट पहनाया जा सकता है, निलंबित सजा दी जा सकती है, शायद कुछ महीनों में पैरोल भी मिल जाए," मोमो ने आगे कहा।
मैं उनके हर शब्द पर गौर कर रही थी, मेरा मन हर वाक्य से उम्मीद निचोड़ने की कोशिश कर रहा था। मैं उन पर विश्वास करना चाहती थी। और उनकी आवाज़ में अनुभव, गर्व और सच्ची उम्मीद का मिश्रण था। वे जानते थे कि इंतज़ार कैसा होता है। निराशा कैसी होती है। और अंत में उस रोशनी का क्या मतलब हो सकता है।
हम सभी का गला सूख गया था। क्योंकि खुशी के नीचे एक अजीब सा चक्कर था, सुरंग के अंत को देखने का डर और यह न जानने का डर कि बाहर निकलने के बाद कैसे जीना है।
हम खुश थे। लेकिन हमें शांति नहीं मिली थी। हमने कल्पना करना शुरू कर दिया था, हजारों सवाल पूछने लगे थे, धीरे-धीरे यह महसूस करने लगे थे कि आजादी में भी, हमें फिर से जीना सीखना होगा।
और फिर… टोनी था।
मैं उसे कभी भूली नहीं थी, भले ही जेल के जीवन ने हमें अलग कर दिया था।
पिछले कुछ महीनों में, हमने पत्रों के माध्यम से फिर से संपर्क स्थापित किया था। सरल, सच्ची बातचीत। वह मुझे फ्रेंच में लिखता था, मैं अंग्रेजी में लिखती थी—कभी-कभी दोनों का मिश्रण भी होता था।
उन्होंने मुझे अपने दिनों के बारे में बताया।
अभी भी अपनी इमारत के पुस्तकालय का प्रबंधन कर रहे हैं।

फिर भी, हममें से प्रत्येक को केवल आधा बर्गर ही मिला। ऐसा इसलिए नहीं था कि व्यवस्था खराब थी, बल्कि इसलिए कि हमने सब कुछ आपस में बाँट लिया था। सभी ने चुपचाप अपना-अपना टुकड़ा लिया और चारों ओर देखने लगे। हमने एक-दूसरे को मुस्कुराकर अभिवादन किया, कंधे पर थपथपाया। हमने साथ बिताए उन सालों को याद किया—पसीने में, आँसुओं में, गंदगी में। उन आधी छिपी सिगरेटों को याद किया जो हम बाथरूम में बगल-बगल बैठकर पीते थे, अपना काम करते हुए। उन ठंडे या गर्म सामूहिक स्नानघरों को याद किया जहाँ हम एक-दूसरे को खड़े रहने में मदद करते थे। उन रातों को याद किया जब हम एक-दूसरे के संक्रमणों का इलाज करते हुए जागते थे, कीमती रत्नों की तरह दवाइयाँ बदलते थे, अपने बच्चों, अपने माता-पिता और जीवन कैसा हो सकता था, इस बारे में बातें करते थे।
हम एक परिवार थे। एक अजीब, टूटा हुआ परिवार, बचे हुए लोगों का—लेकिन एक सच्चा परिवार। और उस रात, वह साधारण आधा बर्गर मुझे किसी भी दावत से कहीं ज़्यादा स्वादिष्ट लगा जिसकी मैं कल्पना कर सकता था।
मार्को मुस्कुराते हुए मेरी तरफ मुड़ा: “यार… अगर तुमने दोबारा कहा कि तुम्हें मैकडॉनल्ड्स पसंद नहीं है, तो मैं एक पल के लिए भी इस बात पर यकीन नहीं करूंगा।” हम सब ज़ोर से हंस पड़े। शांत रहने वाले भी खुलकर हंसने लगे। हमारे चारों ओर एक जीवंत माहौल छा गया, मानो एक पल ठहर सा गया हो। इसके तुरंत बाद, फ्रांसीसी दूतावास ने हमें बुलाया। उन्होंने हमें आंगन के एक कोने में इकट्ठा किया, जैसा कि वे आमतौर पर करते थे, और क्रिसमस के उपहार बांटे।
अंदर: वैक्यूम-सील्ड स्मोक्ड सैल्मन, सफेद ब्रेड, डार्क चॉकलेट, अंगूर के रस की एक छोटी बोतल, सूखे मेवे और एक मिनी नौगट बार भी। एक सच्चा उपहार। छोटा, लेकिन भावनाओं से भरा हुआ। इसका मतलब था: हम आपको भूले नहीं हैं।
और सबसे महत्वपूर्ण बात, उन्होंने हमें स्थानांतरण के बारे में खबर दी। नई सामाजिक कार्यकर्ता पेट्रीसिया—जो हमेशा सौम्य और ध्यान से सुनती थीं — ने शांत भाव से समझाया: “अगली स्थानांतरण समिति की बैठक मार्च में होनी है। चार वर्ष की अवधि पूरी कर चुके सभी लोग पात्र होंगे। स्वीकृति मिलने के बाद, आपको यहाँ आगमन के क्रम के अनुसार फ्रांस स्थानांतरित कर दिया जाएगा।”
हमने अपनी सांसें रोक लीं।

एड्रियान और जूलियन पहले होंगे, उसके बाद एक्सल और केविन, फिर मार्को और मैं। यूसुफ और रशीद, जो हमारे लगभग एक साल बाद आए थे, संभवतः अगली समिति में होंगे - शायद पतझड़ में।
यह स्पष्ट था। ठोस था। और अच्छा लगा। पहली बार, हमारे पास एक समयसीमा थी।
कोई अस्पष्ट वादा नहीं। कोई अंतहीन जल्द ही नहीं। एक वास्तविक मील का पत्थर। एक प्रकाश।
मार्को ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा: “हम लगभग पहुँच ही गए हैं, भाई।
इस बार यह सचमुच में होने वाला है।” और लंबे समय बाद पहली बार— मैंने उसकी बात पर विश्वास किया।
अब्देल और मोमो भी इंतज़ार कर रहे थे। उनकी फाइलें तैयार हो चुकी थीं, दस्तावेज़ जमा हो चुके थे। उनका नाम तबादलों की सूची में था। बस कुछ औपचारिकताएं बाकी थीं: थाई अधिकारी ही क्रम तय करेंगे। वे हमसे पहले या हमारे ठीक बाद भी जा सकते थे। यह सब समिति की मंजूरी और तबादलों में उपलब्ध स्थान पर निर्भर था।
लेकिन एक बात निश्चित थी: हमारा समूह धीरे-धीरे बिखरने वाला था। और मुक्ति की खुशी में भी, यह एक दर्दनाक विचार था।
नया साल आ गया। और इस बार, यह निराशाजनक नहीं था। कम से कम, बाकी सालों की तरह तो बिल्कुल नहीं। आप इसे महसूस कर सकते थे— हवा का रुख बदल रहा था।
यह सिर्फ एक नया कैलेंडर वर्ष नहीं था। यह एक चक्र का अंत था।
मौसम चाहे जो भी हो, हवा अभी भी भारी और घुटन भरी थी। हम अपने भूरे रंग के पजामे में पसीने से तरबतर थे, दिन भर की धूल हमारी त्वचा से चिपकी हुई थी। लेकिन हमारे दिल हल्के थे।
हमने कोठरी में छोटे-छोटे कोने बनाए, जैसे छोटे-छोटे वेदी हों, हर व्यक्ति ने कुछ प्रतीकात्मक चीज़ रखी: उनके बच्चों द्वारा बनाया गया चित्र, एक पुरानी तस्वीर, किसी आगंतुक द्वारा दिया गया कंगन, साबुन का एक पुराना टुकड़ा जिसकी खुशबू अभी भी अच्छी थी... ये हमारी मौन इच्छाएँ थीं।
मार्को मेरे बगल में दीवार के सहारे पालथी मारकर बैठ गया: “तुम्हें पता है? यह यहाँ हमारा आखिरी नया साल होगा… इंशाअल्लाह।” “इंशाअल्लाह, हाँ। बस उम्मीद है कि अगले साल हमें फिर से ऐसा नहीं कहना पड़ेगा…” वह धीरे से हँसा, फिर चुप हो गया: “जानते हो… यह बेवकूफी है, लेकिन मैं इन सालों को

[illegible]
[illegible]
[illegible]

सूचना नहीं होती। जैसे ही आप उस ठंडे मुलाक़ात कक्ष में कदम रखते हैं, आपको अपने आगंतुक के बारे में पता चल जाता है।
उस दिन, द्वार से अंदर कदम रखते हुए, मैं उत्सुक था। थोड़ा उत्साहित भी था।
और फिर मैंने उसे देखा।
मेरी पूर्व प्रेमिका, थाईलैंड से।
वहाँ खड़ी है।
स्टेफ़ान के बगल में।
स्टेफ़ान…
उस नाम को सुनते ही आज भी मेरा सीना कस जाता है।
वह मेरा दोस्त था—या कम से कम मुझे ऐसा ही लगता था। फ्रांस में बैंकिंग में काम करते समय का एक सहकर्मी। मैंने ही उसे थाईलैंड से परिचित कराया था। मैंने उसके लिए वह दुनिया खोल दी थी। मैंने अपनी कहानियाँ, अपनी यादें साझा की थीं। उसे थाईलैंड से प्यार हो गया था।
हम जल्दी ही एक-दूसरे के करीब आ गए, साथ में लंच करते थे, अपने सपनों और भविष्य की योजनाओं को साझा करते थे।
लेकिन जिस दिन मुझे जेल में बंद किया गया, उस दिन सब कुछ ध्वस्त हो गया। हाँ, वह शुरू में मुझसे मिलने आया था। लेकिन तब भी, उसकी मुलाकातों में एक तरह की आत्मसंतुष्टि झलकती थी, जो नकली मुस्कानों के पीछे छिपी होती थी। वह मुझे सांत्वना देने नहीं आया था। वह अपनी आज़ादी और मेरी कैद के बीच के अंतर का फायदा उठाने आया था। वह अपनी रातों की सैर, अपनी यात्राओं, जिन लोगों से वह मिला, उनके बारे में बातें करता था और बार-बार दोहराता रहता था कि बाहर की दुनिया कितनी खूबसूरत है। वह किसी कैफे की छत पर एस्प्रेसो पीते हुए पर्यटक की तरह बोलता था, न कि किसी जेल में बंद दोस्त की तरह। जूलिया ने मेरे लिए कुछ चीज़ें उसे सौंपी थीं। नटेला के जार, पत्र, कपड़े, छोटे-छोटे उपहार जो वह चाहती थी कि मेरे पास मेरी कोठरी में हों। स्टेफ़ान ने मुझे इनमें से कुछ भी नहीं दिया। उसने सब कुछ अपने पास रख लिया। उसने मेरा खाना, मेरा सामान, सब कुछ अपने पास रख लिया। वह मेरे घर भी गया और मेरे कंसोल, कुछ इलेक्ट्रॉनिक सामान ले गया—जैसे कि मेरी सारी चीज़ें अचानक उसकी हो गई हों।
और अब… वो वहीं था। मेरे पूर्व प्रेमी के साथ। वही महिला जिसने सालों से मुझसे एक बार भी संपर्क नहीं किया था।

और फिर भी, बैंकॉक की जेलों की इस उलटी दुनिया में, मुलाक़ातें हमेशा गुमनाम होती हैं। कोई नाम नहीं। कोई पूर्व सूचना नहीं। कोई निश्चितता नहीं। वे बस आपको पुकारते हैं: "आपसे मिलने आए हैं।" आप धड़कते दिल के साथ, उम्मीद से चिपके हुए नीचे जाते हैं। आप जूलिया, कोराली, शायद किसी चमत्कार की कल्पना करते हैं। और इसके बजाय, आप खुद को उनके आमने-सामने पाते हैं। स्टेफ़ान। मेरा पूर्व प्रेमी।
मेरा खून जम गया।
अब पीछे मुड़ने का कोई रास्ता नहीं था। उस मुलाकात कक्ष में, मैं बस एक संख्या थी। एक कैदी। मुझे क्रोध या अस्वीकृति व्यक्त करने की अनुमति नहीं थी। इसलिए मैंने सब कुछ अपने भीतर ही रखा। मैं मुस्कुराई। मैंने विनम्रता से बात की। उन्होंने मुझे बताया कि वे मेरे बारे में सोच रहे थे। उन्हें पता था कि मैं जल्द ही रिहा हो जाऊंगी। और अचानक सब कुछ समझ में आ गया। वे वापस इसलिए आए थे क्योंकि उन्हें आजादी के आने का आभास हो गया था। क्योंकि मैं फिर से उपयोगी बन रही थी। व्यवहारयोग्य। बैंक में काम आने लायक। यही शब्द था।
उनके स्वार्थ की शतरंज की बिसात पर मेरा महत्व फिर से बढ़ गया था।
मेरी थाई पूर्व प्रेमिका—जिससे मैं पटाया में अपने शुरुआती कुछ महीनों के बाद से नहीं मिला था—अचानक वहाँ मुस्कुराती हुई दिखाई दी। थोड़ी झिझक थी, लेकिन वह मौजूद थी। वह क्या चाहती थी? पहचान? फिर से साथ आने का एक आखिरी मौका? क्या उसे लगता था कि मैं फिर से उसका सहारा बनूँगा, आर्थिक रूप से उसकी मदद करूँगा, उसका जीवन फिर से संवारूँगा—जैसे कि चार साल की वह चुप्पी कभी थी ही नहीं?
और स्टेफ़ान... उसने बनावटी "दोस्त" वाले अंदाज़ में मेरी आँखों में देखते हुए कहा: "सच कहूँ तो, मैं उससे बस संयोग से मिल गया, कसम से। वह आना चाहती थी, मैंने सोचा, क्यों न..."
लेकिन मुझे इस पर यकीन नहीं हो रहा था। कुछ दिन पहले ही फ्रांसीसी दूतावास में उससे "संयोग से" मुलाकात? बिलकुल नहीं! यह सब कुछ बहुत सुविधाजनक था। बहुत ही बनावटी। और इस बात का क्या कि वह पटाया में मेरे जीवन से - मेरे सामान के साथ - गायब हो गया था? कंसोल, कपड़े, जूलिया द्वारा भेजे गए पैकेज... सब गायब। उसके साथ।

और अब, बस यूं ही, वह फिर से प्रकट हो गया। नहीं। यह संयोग नहीं था। लेकिन मैं शांत रहा। कूटनीतिक। मैंने केवल वही कहा जो आवश्यक था। विनम्र।
तटस्थ।
कमजोरी के कारण नहीं। क्षमा के कारण नहीं। बल्कि रणनीति के कारण।
मुझे पता था कि एक गलत कदम, एक कठोर शब्द—और वह सीधे अधिकारियों के पास जा सकती थी, दावा कर सकती थी कि मैंने उसे धमकी दी, उसका अपमान किया, कुछ भी।
और थाईलैंड में, एक शिकायत, चाहे वह निराधार ही क्यों न हो, आपको एक नए मामले में फंसाने के लिए काफी है। आपके तबादले में देरी हो सकती है। या फिर उसे रद्द भी किया जा सकता है।
मैं वह जोखिम नहीं उठा सकता था। अभी नहीं। जब मैं इतना करीब था तब नहीं। जब तक मैं फ्रांसीसी धरती पर कदम नहीं रख लेता तब तक नहीं। जब तक मैं किसी फ्रांसीसी अधिकारी से हाथ नहीं मिला लेता तब तक नहीं।
तो मैं मुस्कुराया। मैंने खुश होने का नाटक किया। मैंने हानिरहित सवाल पूछे। फिर मैं भारी मन से अपनी कोठरी में वापस चला गया, लेकिन मेरा रिकॉर्ड बरकरार था।
लेकिन अंदर से मैं पूरी तरह टूट चुकी थी। उनकी वजह से नहीं, बल्कि इसलिए कि मुझे पता था कि जूलिया गलत समझेगी।
और मैं सही था। मुझे ठीक-ठीक पता था कि उनके जाने के बाद क्या होगा। स्टेफ़ान कुछ पोस्ट करता था। एक छोटा सा स्टेटस। एक धुंधली सी तस्वीर। एक अस्पष्ट सा कैप्शन। कुछ ऐसा जिससे वह एक वफादार दोस्त, एक महान नायक जैसा लगे: “कठिन समय में भी अपने भाई से मिलने जा रहा हूँ। शक्ति और सम्मान।” और बेशक—उसने जूलिया को बताया। कि उसने मुझे देखा था। कि वह मेरे पूर्व प्रेमी के साथ आया था। और जाहिर है, कि मैं उसे देखकर खुश लग रही थी। लेकिन उसने उसे और क्या बताया?
क्या वह चाहती थी कि हम फिर से एक हो जाएं? क्या मेरी आँखों में आंसू थे? क्या मैं हर दिन उसके बारे में बात करता था? क्या मुझे उसे खोने का पछतावा था?
उसे जानते हुए... वो हर बात को बढ़ा-चढ़ाकर बताता था। उसे सबका ध्यान अपनी ओर खींचना बहुत पसंद है। हमेशा से ही।
मेरे तबादले से कुछ ही महीने पहले, उन्होंने ज़रूर उस सूक्ष्म बदलाव को महसूस किया होगा—वायुमंडल में वह बदलाव, जो तभी महसूस होता है जब कुछ

समाप्त होने वाला होता है। शायद यह सहज ज्ञान था, शायद सोच-समझकर लिया गया निर्णय, लेकिन किसी न किसी तरह उन्हें समझ आ गया था कि समय समाप्त हो रहा है, मौका हाथ से निकल रहा है। और इसलिए उन्होंने ठीक उसी क्षण कहानी में वापसी की, मानो उन्होंने इसे कभी छोड़ा ही न हो, मानो उनकी अनुपस्थिति केवल एक भ्रम थी। यह उनका कथा को फिर से लिखने का, खुद को नए सिरे से स्थापित करने का, यह जताने का तरीका था कि वे हमेशा से कहीं पृष्ठभूमि में मौजूद थे, प्रतीक्षा कर रहे थे।
लेकिन सच्चाई लोगों के कहे शब्दों में नहीं होती। यह उनके टालमटोल में, मौन में, अनकहे संदेशों में, दो वाक्यों के बीच अधूरी रह जाने वाली बातों में छिपी होती है। जूलिया की चुप्पी में, उसके अनकहे शब्दों के भार में, और मेरी निष्क्रियता में ही स्थिति की वास्तविक सच्चाई छिपी थी।
क्योंकि सच्चाई सीधी-सादी थी, लगभग बेरहमी से। मैं जेल में था। ज़्यादातर समय नंगे पैर, खुरदरी कंक्रीट पर चलता था, जिसने लंबे समय से मेरे सारे आराम को खत्म कर दिया था। उन ढीले-ढाले, फीके जेल के कपड़ों में लिपटा हुआ था, जिन्होंने मेरी पहचान, मेरी गरिमा, मेरे उस व्यक्तित्व का कोई निशान नहीं मिटाया था जो मैं कभी हुआ करता था। सब कुछ छीन लिया गया था—मेरी आज़ादी, मेरे विकल्प, मेरे जीवन के छोटे से छोटे पहलू को भी नियंत्रित करने की मेरी क्षमता।
उस वातावरण में जटिलता के लिए कोई जगह नहीं थी। भावनात्मक खेलों या अधूरी कहानियों के लिए कोई जगह नहीं थी। मैंने अपने जीवन को एक ही लक्ष्य तक सीमित कर लिया था, जो स्पष्ट और लगभग यांत्रिक था: जीवित रहना, बाहर निकलना, घर जाना और किसी तरह एक ऐसा जीवन फिर से बनाना जो सार्थक हो।
मैं वहां पुराने रिश्तों को फिर से ताज़ा करने या उन ज़ख्मों को कुरेदने नहीं गई थी जो अभी-अभी भरने शुरू हुए थे। मैं वहां भावनाओं से खेलने, ईर्ष्या से जूझने या अतीत के उन विश्वासघातों के जाल में फिर से उलझने नहीं गई थी, जिन्होंने पहले ही बहुत नुकसान पहुंचाया था। मेरे पास भावनात्मक उलझन में पड़ने का समय नहीं था। जेल इसकी इजाज़त नहीं देती। यह स्पष्टता को मजबूर करती है, कभी-कभी बेरहमी से।
और फिर भी, इन सब के बावजूद, मेरे इरादों के बावजूद, और उस दूरी के बावजूद जिसे मैंने बनाए रखने की कोशिश की, बहुत देर हो चुकी थी।

वह मुलाकात... वह एक पल, गलतफहमी और अनकहे तनाव से धुंधला, सब कुछ बदल देने के लिए काफी था। जो सीमाएँ स्पष्ट रहनी चाहिए थीं, वे अनिश्चित, विकृत और नाजुक हो गईं। जो सरल होना चाहिए था, वह जटिल हो गया। जो आश्वस्त करने के लिए था, उसने संदेह पैदा कर दिया।
जूलिया को गहरा दुख हुआ।
और चाहे मैंने समझाने की पूरी कोशिश की, चाहे मैंने सही शब्दों की तलाश की, चाहे मैंने बार-बार ज़ोर देकर कहा कि मैंने इनमें से कुछ भी प्लान नहीं किया था, मैंने इस स्थिति को नहीं रचा था, मैं भी उतनी ही हैरान थी जितनी वह थी… फिर भी, इनमें से किसी बात का कोई मतलब नहीं रह गया था। एक बार शक पैदा हो जाए, तो वह चुपचाप फैलता जाता है, जैसे कोई ऐसी चीज़ जिसे आप पूरी तरह से रोक नहीं सकते।
नुकसान तो पहले ही हो चुका था।
कुछ दिनों बाद, कोराली के आने के दौरान, आखिरकार सब कुछ ध्वस्त हो गया। कोई पूर्वाभास नहीं था, कोई चेतावनी नहीं थी। बस एक बदलाव। एक वाक्य। एक लहजा।
उसने जूलिया के संदेश मुझे एक-एक करके पढ़कर सुनाए, उसकी आवाज़ एकदम तटस्थ, लगभग उदासीन थी, मानो वह कोई साधारण सी बात पढ़ रही हो, कोई ऐसी बात जिसमें कोई भावनात्मक गहराई न हो। उसकी आवाज़ में कोई गर्माहट नहीं थी, कोई संकेत नहीं था कि जूलिया को ये शब्द लिखने में कितनी कठिनाई हुई होगी। न कोई झिझक, न कोई कंपन, न ही कोई संकेत कि उन पंक्तियों के पीछे आँसू, संदेह या दर्द हो सकता था। बस शब्द। साफ़। सीधे-सादे। उस भावना से रहित जो उन्हें पहली बार लिखते समय मौजूद रही होगी।
और उस क्षण मुझे एहसास हुआ कि सब कुछ कितना नाजुक हो गया है—कैसे एक कहानी, एक रिश्ता, वर्षों में बना एक जुड़ाव किसी नाटकीय विस्फोट में नहीं, बल्कि कहीं अधिक शांत... कहीं अधिक ठंडे तरीके से बिखर सकता है।
अंतिम निर्णय।
उसने बस इतना पढ़ा: “जूलिया कहती है कि वह अब और संपर्क न रखना पसंद करेगी।
उसे लगता है कि तुम अपनी पूर्व प्रेमिका के साथ वापस आना चाहते हो।”
मैं चुप था। जैसे सिर के पीछे हथौड़ा मारा गया हो।
वह मुझे छोड़कर जा रही थी। इतने सालों बाद। इतने सारे पत्रों के बाद। एक गलतफहमी के कारण।

और कोराली ने अनजाने में ही संदेश को पूरी तरह गलत तरीके से पहुँचा दिया था। शायद वह जूलिया की आवाज़ में छिपे भाव को समझ नहीं पाई। शायद उसने सही सवाल नहीं पूछा था। शायद उसने स्पष्टता पर ज़ोर नहीं दिया था।
लेकिन अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था।
नुकसान हो चुका है।
जूलिया मेरी सहारा थी। अंधेरे में मेरी रोशनी। उसने मुझे उम्मीद की किरण दिखाई थी कि इस सब के बाद भी कुछ अच्छा हो सकता है। उसने मेरा इंतज़ार करने का वादा किया था। और अब, सब कुछ बिखर रहा था—और मुझे समझाने का मौका भी नहीं मिला था।
यह सब… एक जबरन मुलाकात की वजह से हुआ। एक ऐसी स्थिति जिसे मैंने कभी नहीं चुना।
लेकिन जूलिया ने अपने दर्द, अपनी दूरी और अपनी तड़प में इसे अलग तरह से देखा। और मैं उसे दोष नहीं दे सकती थी। उसे चोट लगी थी। उसे यह विश्वासघात जैसा लगा। और मैं बेबस थी।
जब कोराली ने मुझे बताया कि जूलिया हमारा रिश्ता खत्म करना चाहती है, तो मैं इसे सहन नहीं कर पाई। मैंने अपना आपा खो दिया। मैं टूट गई। वर्षों का बंधन, उस अप्रत्याशित मुलाकात का सदमा, गुस्सा, उदासी, किसी इतने महत्वपूर्ण व्यक्ति को खोने का डर—ये सब एक साथ उमड़ पड़े, एक काली लहर की तरह जिसे मैं अब और रोक नहीं सकती थी।
और मामला शांत होने के बजाय, मैंने उसे और बिगाड़ दिया। मैंने एक कठोर संदेश लिखा। क्रूर। मैंने उसका अपमान किया। मैंने उस पर आरोप लगाए। ऐसे शब्द जिनका मेरा कोई इरादा नहीं था। ऐसे शब्द जिनका मुझे आज भी पछतावा है। और मेरे सामने बैठी कोराली, एक-एक शब्द टाइप कर रही थी... उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसने एक सेक्रेटरी की तरह, शब्द-दर-शब्द टाइप किया। बिना ऊपर देखे। बिना पूछे, "क्या आप निश्चित हैं?" बिना सहानुभूति की एक झलक दिखाए। बिना मेरे अंदर उमड़ रहे दर्द को कम करने के लिए कोई इशारा किए। और मुझे उस पर गुस्सा आ रहा था। थोड़ा सा। बस थोड़ा सा। इसलिए नहीं कि गलती उसकी थी। बल्कि इसलिए कि वह दो साल से हमारे साथ थी—हमारे प्रेम पत्र पढ़ती थी, हमारी बातें सुनती थी, हमारी योजनाओं, हमारे संदेहों, हमारी खामोशियों की गवाह थी। वह हमें जानती थी।

और उस पल में, जब मुझे सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी कि वह मुझे रोके, मेरा मार्गदर्शन करे—वह तटस्थ रही। पेशेवर ज़रूर, लेकिन ठंडी।
पीछे मुड़कर देखने पर मुझे एहसास होता है कि शायद उसका मुझ पर कोई और एहसान नहीं था। वह हमारे प्रेम जीवन में मध्यस्थता करने के लिए नहीं थी। वह परिवार का हिस्सा नहीं थी। वह दोस्त नहीं थी। कोई विश्वासपात्र भी नहीं थी। वह बस एक निरंतर उपस्थिति थी, हमारे और बाहरी दुनिया के बीच एक सेतु थी।
वह कागजी कार्रवाई, आदेशों और मुलाकातों के लिए वहां थी—दिल टूटने के लिए नहीं। हालांकि, यहां सब कुछ धुंधला हो जाता है। सीमाएं मिट जाती हैं। भूमिकाएं आपस में मिल जाती हैं। और जब कोई दो साल तक हर हफ्ते यहां आता है, आपकी आवाज़ को इन दीवारों के पार पहुंचाता है, तो वह आपके जीवन का हिस्सा बन जाता है।
फिर भी, उस क्षण उसने कुछ नहीं कहा। और संदेश बस यूं ही भेज दिया गया।
मुझे बहुत बुरा लगा। सचमुच बहुत बुरा।
लेकिन मेरे पास इस बारे में सोचने का समय नहीं था। मेरा ध्यान अब दूसरी तरफ़ चला गया था। मेरा अब सिर्फ़ एक ही लक्ष्य था: फ़्रांस लौटना।
मुझे पूरा यकीन था कि जूलिया और मैंने चार साल तक इस मुश्किल दौर से गुज़रते हुए, चिट्ठियों के ज़रिए, तय समय पर की गई फ़ोन कॉल्स के ज़रिए और दबी आवाज़ में किए गए वादों के ज़रिए, किसी तरह गुज़ार लिए थे। इसलिए मैंने खुद से कहा: कुछ और महीने हमें बर्बाद नहीं कर देंगे।
मैं उससे तब बात करूंगी जब मैं बाहर आ जाऊंगी। जब मैं सुरक्षित हो जाऊंगी। जब मैं खुद बोल सकूंगी, बिना किसी बिचौलिए, बिना किसी तनाव, बिना किसी देरी के सब कुछ समझा सकूंगी। फ्रांस में उतरते ही मैं उसे फोन करूंगी। और शायद तब हम आखिरकार एक-दूसरे को समझ पाएंगे।
मैं वापस अपनी कोठरी में गया। अपनी भूरी कमीज पहनी। अपना सामान समेटा। फिर से अपनी दिनचर्या में लौट आया।
लेकिन मेरे भीतर एक खालीपन था। मेरे दिल में एक और खामोशी छा गई थी। मेरे जीवन से एक प्यार कम हो गया था।
अब हम समिति की प्रतीक्षा कर रहे थे। निर्णायक क्षण। मंज़िल नज़दीक थी— पर हममें से किसी को नहीं पता था कि हम सचमुच उसे पार कर पाएंगे या नहीं।
समिति वह दिन था जब फ्रांस और थाईलैंड एक मेज पर बैठे, हमारे फाइलें उनके

सामने थीं, हमारा पूरा जीवन कुछ पन्नों में सिमटा हुआ था, और उन्होंने फैसला किया कि हमें घर वापस भेजा जाएगा या नहीं।
आपको कम से कम चार साल जेल में बिताने होते थे। हम सभी के लिए यह अवधि मार्च में पूरी हो चुकी थी। इसलिए, कागज़ पर तो हम पात्र थे। लेकिन असल में? कुछ भी निश्चित नहीं था। एक भी दस्तावेज़ गायब, एक भी कमी, और सब कुछ बिगड़ सकता था। और हम यह जानते थे।
मैं अपनी दिनचर्या पर कायम रही, लेकिन इंटरकॉम बजते ही मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगता था। मैंने पहले से भी ज़्यादा मेहनत से अभ्यास किया। अपने हर कदम पर नज़र रखी। हर किसी को देखकर मुस्कुराई। मददगार, विनम्र और हो सके तो अदृश्य बनने की कोशिश की। मैं ज़रा सा भी जोखिम नहीं लेना चाहती थी। कोई गड़बड़ नहीं। कोई चूक नहीं। मैं बस यहाँ से निकलना चाहती थी।
मेरी माँ मुझे अक्सर पत्र लिखती थीं। लंबे-लंबे पत्र, भावनाओं से भरे हुए, लेकिन साथ ही शांत, परिपक्व और दयालु भी। उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें आखिरकार सुरंग के अंत में रोशनी दिखाई दे रही है। कि दूरी और वर्षों के बावजूद, हम साथ मिलकर इस मुश्किल दौर से निकल आए हैं। और यह सच था। उनके साथ उस बंधन ने मुझे चार साल तक सहारा दिया।
वह अक्सर जूलिया के बारे में भी बात करती थी। उस झगड़े के बारे में। उस गलतफहमी के बारे में जिसने हमें अलग कर दिया था। हाल ही में उसकी जूलिया से भी ज्यादा बात नहीं हुई थी—लेकिन उसे उम्मीद बनी हुई थी।
उसने लिखा: “जानते हो, वो लड़की तो फरिश्ता है। ऐसा प्यार यूं ही खत्म नहीं हो जाता। ये बस एक गलतफहमी है। वो तुमसे प्यार करती है। तुम दोनों फिर मिल जाओगे। मुझे पता है।”
उन्होंने यह भी कहा: “उसके बिना मैं भी यह सब नहीं कर पाती। उसने मेरी बहुत मदद की। वह हमेशा मेरे साथ थी, मुझे फोन करती थी, मुझे दिलासा देती थी। मेरे बेटे, तुम अकेले नहीं थे।”
वो शब्द—उसकी मातृत्व भरी सहानुभूति—अंधेरे में रोशनी की किरण थे। मैं उन्हें हर रात दोबारा पढ़ती थी। मुझे वे शब्द कंठस्थ याद थे, लेकिन मुझे उनकी ज़रूरत थी।
एक्सल ने भी मुझसे बात की। उसका भी एक दर्दनाक ब्रेकअप हुआ था, लेकिन उसे अब भी उम्मीद थी कि जेल से छूटने के बाद वह अपनी मंगेतर से फिर मिल जाएगा। एक दिन उसने मुझसे कहा:

“भाई, हमें यहाँ से निकलना होगा। नए सिरे से शुरुआत करनी होगी, लेकिन इस बार पूरी ताकत के साथ। हम इन दीवारों को हमें अंदर से खा जाने नहीं दे सकते। हम यह नहीं भूल सकते कि हम भी कभी कोई थे।”
“हम बस कुछ समय के लिए रुके थे, चिंता मत करो। जब मैं बाहर आऊंगा, तो उसे ढूंढ लूंगा। और अगर वह नहीं मिली, तो कोई और मिल जाएगी। सबसे मुश्किल दौर बीत चुका है।”
उनके शब्द भले ही हल्के-फुल्के थे, फिर भी उनसे मदद मिली। हम सब एक अलग-थलग दुनिया में जी रहे थे, वास्तविक दुनिया से कटे हुए थे—और असली चुनौती तो फिर से जुड़ना सीखने की थी, यह याद करने की थी कि बाहर की दुनिया में कैसे जिया जाता है। लेकिन सबसे पहले, हमें समिति की परीक्षा पास करनी थी।
सेल में सारी बातचीत इसी के इर्द-गिर्द घूमती थी। हर किसी के अपने-अपने सिद्धांत थे: “क्या आपको लगता है कि वे डिप्लोमा देखते हैं?” “अगर हमारी फाइल अधूरी हो तो?” “अगर कमांडर ने समय पर हस्ताक्षर न किए हों तो?”
हमने एड्रियन की माँ के बारे में भी बहुत बातें कीं। वह हमारे लिए प्रकाशस्तंभ की तरह थीं। थाईलैंड में रहती थीं, हमेशा मौजूद रहती थीं, दूतावास में उनके अच्छे संपर्क थे, वह हर बात पर नज़र रखती थीं, उन्हें सब कुछ पता था। वह नियमित रूप से मिलने आती थीं, और उस अप्रैल में, हम सभी जानते थे कि अगर किसी को सबसे पहले खबर मिलेगी, तो वह वही होंगी।
मुझे वो सुबह बहुत अच्छे से याद है—मैं इमारत के दरवाजे के सामने ऐसे खड़ा था जैसे कोई बच्चा स्कूल के बाद अपनी माँ का इंतज़ार कर रहा हो। मैंने खुद को शांत रखने की कोशिश की, लेकिन मेरा दिल ढोल की तरह धड़क रहा था। हर कदम की आहट से मैं सहम जाता था। दूर से आती हर आवाज़, बाड़ के पीछे धुंधली सी दिखने वाली हर आकृति मुझे यही उम्मीद दिलाती थी कि काश वो मेरी माँ ही होती।
समय बिताने के लिए, मैंने और भी कड़ी मेहनत से अभ्यास किया। हर अभ्यास को पूरी कुशलता से किया। सभी का मुस्कुराकर अभिवादन किया। हर काम में कोई कमी न छोड़ने की पूरी कोशिश की।
अब गलतियों की कोई गुंजाइश नहीं थी। अभी नहीं। खासकर तब जब मंज़िल इतनी करीब थी।
और फिर… वो दिन आ गया।

एड्रियान की मां ने ही हमें यह खबर दी। वह जानकारी लेने के लिए सीधे दूतावास गई थीं और अपनी आदत के मुताबिक, हमें खुद यह खबर देने आई थीं।
मुझे वो सुबह ऐसे याद है जैसे कल ही की बात हो। अप्रैल का आखिरी हफ्ता। सूरज पहले से ही तेज़ चमक रहा था। मैं गेट के पास खड़ा था, मालिक का इंतज़ार करते कुत्ते की तरह। मैं हर आती हुई परछाई को देख रहा था, उम्मीद कर रहा था कि शायद वो वही हों।
जब वे इमारत में दाखिल हुए, तो मैंने एड्रियन और जूलियन के चेहरे देखे— बेजान, भावहीन। वे बिना कुछ बोले आगे बढ़ गए। मेरे सीने में एक अजीब सा दबाव उठने लगा, मानो कोई लहर हो जिसे मैं रोक नहीं पा रहा था।
मैं घबराते हुए उनके पास गया।
— “तो? क्या बात है?”
कोई जवाब नहीं। जूलियन की ओर से बस एक खाली नज़र। फिर, धीमी आवाज़ में उसने कहा: "चलो, जाकर बैठते हैं।"
मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। हम एक कंक्रीट की पटिया पर, थोड़ा किनारे पर बैठ गए।
— “बुरी खबर है? हम तो गए काम से?”
जूलियन ने लंबी सांस ली, उसकी आवाज कांप रही थी। "यह एक्सल है... उसका तबादला अस्वीकार कर दिया गया है।"
— “क्या?! क्यों?”
— “उनकी फाइल में एक दस्तावेज गायब है। फुकेत वाला वह मामला? वह तो सालों पहले बंद हो चुका है, लेकिन वकील ने इसे साबित करने वाला प्रमाण पत्र कभी पेश नहीं किया।”
मुझे चक्कर आने लगे। अचानक डर का एक सैलाब उमड़ आया। क्योंकि अगर यह एक्सल के साथ हो सकता है, तो हममें से किसी के साथ भी हो सकता है।
और अचानक एक्सल मुस्कुराते हुए, कंधे पर बैग लटकाए हुए प्रकट हुआ। — “तो? हम सब घर जा रहे हैं?”
जूलियन ने अपनी निगाहें झुका लीं। वह कह नहीं सका। इसलिए मुझे कहना पड़ा। — “एक्सल… एक कागज़ गायब है। तुम्हारा दाखिला नहीं हुआ।”
सन्नाटा छा गया। उसकी मुस्कान गायब हो गई। फिर बस एक शब्द: "धत् तेरे की..." वह वहीं जम कर खड़ा रहा। फिर चुपचाप उठा और रसोई की ओर चल दिया। उसे व्यस्त रहना ज़रूरी था। वह रसोई में ही अपना काम निपटाता था।

वह सिर ऊंचा करके बिना कुछ कहे चला गया। लेकिन उसके शरीर में निराशा, थकावट और हर कदम में छिपी उदासी साफ महसूस हो रही थी।
हम बाकी लोगों की बात करें तो, समिति ने हमारी फाइलों को मंजूरी दे दी थी।
यह आधिकारिक था—हमारा नाम तबादला सूची में था।
उस दिन मैं टूट गई। आँसू नहीं बहे। लेकिन अंदर से। उन चार सालों का सारा दबाव—डर, गुस्सा, अकेलापन—आखिरकार सब कुछ खत्म हो गया।
मैं आंगन के एक कोने में आंखें बंद करके बैठ गया। मैंने पेरिस की ठंडी हवा, पथरीली सड़कों, जानी-पहचानी आवाज़ों, मेरी माँ की आवाज़ और मेट्रो की गंध की कल्पना की।
एक थाई व्यक्ति पास आया और बोला: "अरे फ़ारंग, तुम ठीक हो?"
मैं मुस्कुराया।— “हाँ। मैं ठीक हूँ।”
उस रात कोठरी में हम सब इकट्ठा हुए थे। लेकिन माहौल अजीब सा था—एकाकीपन छा गया था। एक्सल के दिल टूटने से खुशी फीकी पड़ गई थी, फिर भी वह इस आघात के बावजूद गरिमा बनाए हुए था। और यूसुफ की चुप्पी, वह जानता था कि उसकी बारी आने में महीनों लगेंगे। हम जश्न नहीं मना सकते थे। न हंस सकते थे, न ही राहत की चीख निकाल सकते थे। इसलिए हमने बातें कीं। गंभीरता से। गहराई से।
अपनी चटाइयों पर लेटे हुए, छत को निहारते हुए या दीवारों पर पड़ती परछाइयों का पीछा करते हुए, हमने फ्रांस के बारे में बातें शुरू कीं। कि हमारा क्या इंतज़ार कर रहा है। फ्रांसीसी जेल के बारे में। मार्को को लगा कि हम फ्रेस्नेस या फ्लेरी में उतरेंगे। मैं राजधानी से दूर, किसी शांत जगह की जेल का सपना देख रही थी। हम सोच रहे थे कि क्या हमारा सामान हमारे साथ आएगा। क्या हमारे परिवार वाले वहाँ होंगे। क्या हमें नाश्ते में पनीर मिलेगा।
यूसुफ ने कड़वी हंसी के साथ बीच में ही बात काट दी: "क्या आप लोग रेब्लोचोन की बातें बंद कर सकते हैं? आप लोग मुझे सचमुच मार रहे हैं।"
सन्नाटा छा गया। वह सही था। हम जा रहे थे। वह नहीं जा रहा था। और वह अन्याय, भले ही अपरिहार्य था, फिर भी चुभ रहा था।
तो मैंने धीरे से कहा: “मुझे आपको कुछ बताना है। मैंने बिल्डिंग 9 समूह से अलग होने का फैसला किया है। बस इतना ही। मैंने अपना सब कुछ दे दिया। मैंने

उनके लिए, अपने लिए गाया। अब मैं अपने शरीर, अपने मन पर ध्यान देना चाहती हूँ। आगे क्या होगा, इस पर। मुझे तैयारी करनी है।”
उन लोगों ने सहमति में सिर हिलाया। यह तर्कसंगत था। इसे सम्मान भी दिया गया।
अगली सुबह, मैं कमांडर पाई नोंग से मिलने गया। उन्होंने मुस्कुराते हुए मेरा अभिवादन किया— “आप जा रहे हैं? घर जा रहे हैं?”
— “अभी नहीं। लेकिन जल्द ही। समय आ गया है।”
उन्होंने विदाई के समय अपनाई जाने वाली उस विशिष्ट थाई गंभीरता के साथ मेरा हाथ मिलाया। “आपने अच्छा गाया। आप एक अच्छे इंसान हैं। शुभकामनाएँ।” मैंने उन्हें धन्यवाद दिया, मेरी आवाज़ थोड़ी कांप रही थी—मैं अपनी भावनाओं को ज़ाहिर नहीं होने देना चाहती थी। यह एक कोमल विदाई थी। एक ऐसे अध्याय का अंत जिसने, तमाम तकलीफों के बावजूद, मुझे बहुत कुछ सिखाया था। और ठीक उसी समय, उन्होंने मुझे एक आखिरी प्रस्ताव दिया। “हम बिल्डिंग 9 में एक विशेष संगीत कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं। दूतावासों, परिवारों और अधिकारियों के लिए। यह एक दुर्लभ आयोजन है। क्या आप इसमें शामिल होना चाहेंगे? एक आखिरी बार?”
मैंने हाँ कह दी। यही मेरा विदाई गीत होगा। इन दीवारों के पीछे मेरी कलात्मकता की आखिरी साँस। यहाँ बिताए हर पल के लिए मेरी भेंट।
अगले ही दिन, मैंने उस परफॉर्मेंस की तैयारी ऐसे शुरू कर दी जैसे वो कोई विदाई पार्टी हो। हर सुर में आने वाली आजादी का एहसास होता था। स्थानांतरण का आभास लगभग शारीरिक रूप से महसूस हो रहा था। जैसे सीने में गहरी गड़गड़ाहट हो रही हो। एक ऐसा तनाव जिसे हममें से कोई भी अनदेखा नहीं कर सकता था। यह हमारी बातचीत में, हमारी हरकतों में, हमारे विचारों में झलक रहा था। जिसका हम वर्षों से इंतजार कर रहे थे, वह आखिरकार सच हो गया... और अजीब तरह से डरावना भी।
यह सिर्फ न जाने का डर नहीं था। यह सचमुच जाने का डर था। इस जगह को अलविदा कहने का डर था। यह जेल, चाहे कितनी भी असहनीय क्यों न हो, हमारी दिनचर्या, हमारा ढांचा बन चुकी थी। एक विकृत दिनचर्या जिसे हमने स्वीकार करना, यहाँ तक कि नियंत्रित करना भी सीख लिया था।
परिवर्तन का भय—भले ही इसका अर्थ स्वतंत्रता हो—बहुत वास्तविक होता है।

हम रात को अपनी चटाइयों पर लेटे रहते, छत को घूरते रहते। एक शाम मेरे बगल में लेटे मार्को ने फुसफुसाते हुए कहा: “तुम्हें वो अजीब सा एहसास होता है? जैसे... हम इस जीवन के आदी हो गए हैं।”
मैंने बिना कुछ कहे सिर हिला दिया। इसे कैसे समझाऊं? सुबह हाजिरी, सुबह 6 बजे उबलती हुई कॉफी, ट्रेनिंग के नियम, सैन्य अभ्यास, त्वचा से चिपकी गर्मी। यहां तक कि फर्श पर किसने ज्यादा जगह घेरी या कौन सफाई करना भूल गया, इस पर होने वाली हमारी बहसें भी इस उलझे हुए जाल का हिस्सा बन गईं। फिर भी, उस अजीब सी जान-पहचान के बावजूद, हर दिन पिछले दिन से ज़्यादा तनावपूर्ण लगता था। ज़रा सी भी बात—एक गलत शब्द, एक गलत समझी गई नज़र, या गलती से मिली कोई चीज़—सब कुछ तबाह कर सकती थी।
हम सभी को उस थाई कैदी की कहानी याद थी, जिसे अपने अंडरवियर में एक पुराना नोकिया फोन छिपाए हुए पकड़ा गया था। उसे पांच साल की सजा और बढ़ा दी गई। कोई मुकदमा नहीं चला। बस यूं ही।
तो हम बहुत ज़्यादा सतर्क हो गए। मैं दिन में दस बार अपना लॉकर चेक करती थी। अपने कपड़े। अपनी जेबें। मैं हर चीज़ को बेदाग रखने की कोशिश करती थी। सबके साथ ज़रूरत से ज़्यादा नरमी से पेश आती थी। हर गार्ड, हर कैदी, हर नए आदमी को देखकर मुस्कुराती थी। यहाँ तक कि उनसे भी जिनसे मेरी कभी नहीं बनती थी।
और फिर अनुरोध भी थे। लोग छोटी-छोटी चीज़ें माँगते थे, मानो कोई प्राचीन वस्तुएँ हों। मेरे स्नीकर्स। मेरे शॉर्ट्स। मेरी टी-शर्ट। जीन-पॉल, कोमल आँखों वाला नाइजीरियाई जो हमेशा नंगे पैर चलता था, मुझसे लगभग गिड़गिड़ाने लगा: “भाई… अगर आप जा रहे हैं… तो क्या आप मुझे अपने जूते दे सकते हैं? मैं बस एक बार असली स्नीकर्स पहनकर दौड़ना चाहता हूँ।”
मैंने उससे वादा किया था। और बेन्सन से मैंने अपने कॉफी बॉक्स का वादा किया था। उसकी एक छोटी बेटी थी, जो उसकी यादों में कैद थी। वह ज्यादा बोलता नहीं था, लेकिन उसकी आंखें सब कुछ कह देती थीं।
फिर बिल्डिंग 9 में कॉन्सर्ट हुआ। जून का महीना था। गर्मी दम घोटने वाली थी—नम, उमस भरी, जिससे निकलना नामुमकिन था। लेकिन उस दिन उमस भरी हवा का हम पर वैसा असर नहीं हुआ। वातावरण बिल्कुल अलग था। मानो जादुई।
सालों में पहली बार, यह जेल के दिन जैसा नहीं लग रहा था। यह एक उत्सव जैसा लग रहा था। हमारा उत्सव।

पूरी जेल में तनाव और खुशी का एक अजीब मिश्रण महसूस हो रहा था। आमतौर पर गंभीर और सख्त रहने वाले गार्ड भी कुछ ज़्यादा ही शांत और सहज लग रहे थे। मानो मुस्कुरा रहे हों। इमारतें, बाड़, जंग लगे लॉकर... सब कुछ धुंधला सा हो गया, मानो कुछ पल के लिए दीवारें अस्तित्वहीन हो गई हों।
अधिकारी वहां मौजूद थे। मैडम ला कॉन्सुल - सुरुचिपूर्ण, संयमित - अपनी टीम के साथ। पेट्रीसिया भी, हमेशा की तरह चौकस और दयालु। और सबसे महत्वपूर्ण... हमारे आगंतुक। हमारा समर्थन। हमारी शांत, वफादार परछाईं। वे महिलाएं जिन्होंने हमें पैकेज, पत्र, प्रोत्साहन के संदेश भेजे थे। आशा के छोटे- छोटे संदेश। महीनों से। वर्षों से। कोराली वहां थी - मुस्कुराती हुई, शांत, थोड़ी भावुक। और अन्य लोग भी, जिनकी लिखावट और फोन के माध्यम से सुनाई देने वाली आवाजें ही हमारे लिए एकमात्र पहचान थीं।
— “तो… सच में आप ही हैं,” उसने कोमल मुस्कान के साथ मेरे हाथ पकड़ते हुए कहा। “आपसे आखिरकार मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई… असल जिंदगी में। आपको शीशे के पीछे देखने या रिसीवर के जरिए सुनने से यह बिल्कुल अलग है।”
उसकी आँखों में सच्ची भावना की चमक थी। मैं बहुत भावुक होकर एक छोटी सी, असहज मुस्कान दी।
उसके आसपास अन्य आगंतुक भी थे। वे जिन्हें हम हमेशा से जानते थे। और नए लोग। जैसे राफेल।
कुछ महीने पहले ही वह स्वयंसेवकों की टीम में शामिल हुई थी—ऊर्जा और दयालुता से भरपूर। यह पहली बार था जब हमने उसे आमने-सामने देखा। और उसकी गर्मजोशी उतनी ही प्रबल थी जितनी उसके पत्रों में लिखे शब्द। वह कोमल स्वर में बोलती थी, जिज्ञासा से प्रश्न पूछती थी, मानो वह हमें टुकड़ों में जानने में बिताए गए समय की भरपाई करने की कोशिश कर रही हो।
यह अवास्तविक सा लगा। मानो हमारी बंद दुनिया खुल गई हो, और थोड़ी सी रोशनी — थोड़ी सी मानवता—अंदर आ गई हो।
यह अजीब था। और शक्तिशाली भी। वह साधारण मानवीय संपर्क, जो बाहर से इतना सामान्य लगता था, हमारे लिए पवित्र हो गया था। किसी से हाथ मिलाना। उनकी आँखों में बिना किसी रुकावट के देखना। बिना हेडफ़ोन के, बिना किसी शोर के, बिना किसी दूरी के, किसी की आवाज़ सुनना। यह चक्कर आने जैसा था।

हम सब वहाँ थे। हर इमारत से फ्रांसीसी लोग। हम सब अलग होने से पहले एक बड़े, अव्यवस्थित परिवार की तरह आखिरी बार इकट्ठा हुए थे।
केविन और एक्सल ने एक-दूसरे को गले लगाया। वे हँसे, लेकिन उनकी आँखों में कुछ और ही था। यह मीठा-कड़वा दर्द कि एक को दूसरे से पहले जाना पड़ेगा। कि एक को तीन महीने और इंतज़ार करना होगा।
लेकिन कोमलता भी थी। एक शांत समझ। गहरा सम्मान।
और मैं? मैं आंगन के बीचोंबीच बने छोटे से अस्थायी मंच पर खड़ा था। साफ सफेद पोलो शर्ट, पैरों में स्नीकर्स—यह पोशाक केवल "पाउचोई" (जेल के कैदी) ही पहन सकते थे। आज न तो फटे-पुराने भूरे जेल के पजामे थे, न ही सीने पर कोई नंबर सिला हुआ था।
मुझे इसे पहनने की अनुमति अभी भी थी, भले ही मैंने आधिकारिक तौर पर समूह से इस्तीफा दे दिया था। इस आखिरी कॉन्सर्ट के लिए, इस दुर्लभ क्षण के लिए, उन्होंने मुझे यह अधिक स्वतंत्र रूप धारण करने दिया... इससे पहले कि मैं हमेशा के लिए अपना एप्रन सौंप दूं।
मंच पर जाने से पहले, मैं उस थाई बैंड में शामिल हो गया जिसके साथ मैं वर्षों से बजा रहा था—जिनके साथ मैंने अभ्यास किया था, पसीना बहाया था, हँसा था। उन्होंने मेरा गर्मजोशी से स्वागत किया। कोई झिझक नहीं। मानो मैं उन्हीं में से एक था।
— “तैयार हो, लियो?” बास वादक पी'नेंग ने मेरी पीठ थपथपाते हुए और बड़ी मुस्कान के साथ कहा।
— “पहले से कहीं अधिक तैयार,” मैंने गले में जकड़न के साथ उत्तर दिया।
— “आज तो आप ही स्टार हैं,” हमारे गिटारिस्ट पाई डे ने हंसते हुए कहा।
मैंने उन्हें देखकर मुस्कुरा दिया। यह सिर्फ एक संगीत कार्यक्रम नहीं था।
यह एक विदाई थी। एक अध्याय का समापन था। यहां तक कि वे भी जानते थे - ये उदार हृदय वाले थाई संगीतकार - कि शायद यह आखिरी बार होगा जब हम एक साथ मंच साझा करेंगे।
उन्होंने जोर देकर कहा कि मैं ठीक से कपड़े पहनूं। साफ-सुथरे। पजामा नहीं।
"आज तुम एक गायिका हो, कैदी नहीं," पी'नेंग ने गहरी ईमानदारी से कहा था।
तो मैं मंच पर चढ़ गया, सबकी निगाहें भावनाओं और जिज्ञासा से भरी हुई थीं।
माइक के चारों ओर मेरे हाथ थोड़े कांप रहे थे। लेकिन जैसे ही पहला सुर गूंजा, सब कुछ धुंधला हो गया। बस संगीत था। और मैं।

मैंने थाई भाषा में गाना गाया—एक ऐसा गाना जिसे मैंने महीनों तक अभ्यास करके परिपूर्ण किया था। हर शब्द, हर उतार-चढ़ाव—मैंने उन्हें अपनी रग-रग में महसूस किया। श्रोतागण, जिनमें अधिकारी, आगंतुक, परिवार के सदस्य और कैदी शामिल थे, चुपचाप सुनते रहे। कुछ ने अपनी आँखें बंद कर लीं। कुछ अन्य गुनगुनाते रहे—शर्मीले, लेकिन उपस्थित।
फिर मैंने अंग्रेजी में एक गीत गाया—जो अधिक जोशीला और मुक्त था। मेरा दिल ढोल की तरह धड़क रहा था। हर सुर मुझे उन वर्षों के बंधन से मुक्ति का एहसास करा रहा था। मेरी सारी आशाएँ, घाव और सपने आँगन की घनी हवा में घुल गए।
मंच के नीचे, मैंने नम आँखों से निगाहें गूँजती देखीं। कुछ चुपचाप रो रहे थे। अन्य अपने पैर थपथपा रहे थे, ताल में सिर हिला रहे थे।
मेरी आंखों में आंसू उमड़ रहे थे। दुख से नहीं, बल्कि मुक्ति से।
दूसरे गाने के अंत में, पूरा प्रांगण तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।
यहां तक कि कुछ थाई सैनिक—जो आमतौर पर इतने सख्त रहते हैं—ने भी ताली बजाई।
पी'नेंग ने मंच के किनारे से मुझे आँख मारी: "देखा? आज तुमने एक स्वतंत्र व्यक्ति की तरह गाया।"
मैं कांपते हुए मंच से नीचे उतरा, मेरी सफेद पोलो शर्ट पसीने से भीगी हुई थी। मेरे कई फ्रांसीसी भाई - केविन, एक्सल, मार्को - मेरे पास आए, मेरी पीठ थपथपाई और मुझे गले लगा लिया।
— “भाई, तुमने कमाल कर दिया,” मार्को ने मेरे कंधों को पकड़ते हुए फुसफुसाया।
और भीतरी तौर पर, लंबे समय बाद पहली बार, मुझे कुछ ठोस महसूस हुआ। यह सब खत्म हो गया था।
अंत में, पेट्रीशिया ने मुझे अपनी बाहों में भर लिया। उसने मुझे कसकर गले लगाया और फुसफुसाते हुए कहा: “तुम्हें इस तरह देखना कितना अलग है… कोई बंधन नहीं… तुम पहले से कहीं अधिक जीवंत हो। तुमने यहाँ जो कुछ भी किया है, उसके लिए धन्यवाद। दूसरों के लिए भी और अपने लिए भी। मैं तुम्हें फ्रांस में एक खूबसूरत जीवन की कामना करती हूँ। इसका आनंद लो। तुम इसके हकदार हो।”

राफेल, जो इन सब चीजों में नई होने के कारण अभी भी थोड़ी शर्मीली थी, ने ठंडे पानी की बोतलें बांटीं और शो के लिए हमें बधाई दी: "आप लोगों को सुनना अविश्वसनीय था... सचमुच। मुझे बहुत खुशी है कि मैं उस पल का हिस्सा थी।" मैं जवाब भी नहीं दे पाई। मैंने बस सिर हिलाया, मेरा दिल भावनाओं से भर गया था। चारों ओर लोग गले मिल रहे थे, तस्वीरें खींच रहे थे, हंस रहे थे, रो रहे थे। यह विदाई, पुनर्मिलन और वादों का मिलाजुला दृश्य था।
हमने कुछ हल्के-फुल्के चुटकुले सुनाए, कुछ यादें साझा कीं, मानो पहली बार हम फिर से इंसान बन सके हों—न कि सलाखों के पीछे पड़े नंबर।
उस दिन, वर्षों में पहली बार, मुझे कैदी जैसा महसूस नहीं हुआ। बस एक इंसान।
एक ऐसा इंसान जो अपना जीवन वापस पाने वाला था।
एक आखिरी ठहराव का क्षण। एक छवि जो अंत तक मेरे दिमाग में बसी रही।
और फिर हम खामोशी से अपनी इमारतों में लौट आए। दिल हल्के हो गए थे। आँखें नम थीं। हमें पता था कि शायद यह आखिरी बार होगा जब हम एक-दूसरे को इस तरह देखेंगे। कैदियों के रूप में। आज़ाद होने से पहले।
अगले कुछ दिन मैंने प्रशिक्षण में बिताए, जरूरतमंदों की मदद की, और चुपके से अपने कनाडाई, ईरानी और अफ्रीकी दोस्तों के फोन नंबर लिख लिए। हमें कागज पर फोन नंबर लिखने की अनुमति नहीं थी, इसलिए मैंने उन्हें पत्रों में बदल दिया। यह हमारी कई तरकीबों में से एक थी।
और फिर... सब कुछ बहुत तेज़ी से होने लगा।
जब मोमो और अब्देल को पहचान पत्र के लिए बुलाया गया, तो हमारे सेल में सन्नाटा छा गया। हम सब स्तब्ध रह गए। हम जानते थे कि इसका क्या मतलब है। यह अंतिम चरण था। स्थानांतरण से ठीक पहले वाला चरण।
— “भाई… बस यही है। हम कामयाब हो गए,” मोमो ने धीरे से बैठते हुए फुसफुसाया, मानो उसे खुद भी यकीन न हो रहा हो।
उसने कांपते हाथों में छोटा सा प्लास्टिक का समन पकड़ा हुआ था। यहाँ तक कि वह भी—जो चट्टान की तरह अडिग था—की आवाज भी कांप रही थी। उसकी आँखें चमक उठीं। डर से नहीं, बल्कि राहत से, अविश्वास से।
— “मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं अपना नाम सुनूंगा। मुझे लगा था कि वे मुझे भूल गए हैं। कि वे चाहते हैं कि मैं यहीं सड़ जाऊं,” उसने फर्श की ओर देखते हुए कहा।

अब्देल की आँखें लाल थीं। उसने मुझे देर तक देखा, फिर मुझे एक मज़बूत, मौन आलिंगन में जकड़ लिया। उसने ऐसा पहली बार किया था। कोई मज़ाक नहीं, कोई हँसी नहीं। बस दो आदमी सालों के मौन समर्थन के बाद एक-दूसरे को थामे हुए थे।
— “भाई… तुम ही असली हो। हम वहाँ फिर मिलेंगे, ठीक है? फ्रांस, इंशाअल्लाह। मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगा। तुम देखोगे… मार्सिले, इससे बेहतर कुछ नहीं।”
वह हँसा, लेकिन अंत में उसकी आवाज़ लड़खड़ा गई। यह कोई मज़ाक नहीं था। यह एक वादा था।
उस रात कोई नहीं सोया। हम एक आखिरी रात साथ बिताने के लिए कोठरी में इकट्ठा हुए। कोई संगीत नहीं, कोई सिगरेट नहीं। बस बातें।
— “मोमो, वापस आने पर तुम सबसे पहले क्या करोगी?” एक्सल ने पूछा।
— “मेरे बच्चों को देखो। मांस भूनो। कोयले की खुशबू लो। असली बिस्तर पर सोओ। और अकेले नहाओ… बिना किसी की निगाहों के। समझ रहे हो ना?”
अब्देल ने छत की ओर देखते हुए कहा: “मैं बस समुद्र देखना चाहता हूँ। किसी समुद्र तट पर बैठना चाहता हूँ। साँस लेना चाहता हूँ। कुछ भी नहीं सोचना चाहता।”
हमने हर चीज़ के बारे में बात की। हमारे परिवार। बीते हुए साल। बचपन के सपने। और यह जेल जिससे हमें नफ़रत थी... लेकिन किसी अजीब तरीके से, हम जानते थे कि हमें इसकी कमी महसूस होगी। बस थोड़ी सी।
— “तुम लोगों की बहुत याद आएगी,” मार्को ने नज़रें झुकाए हुए धीरे से कहा। “कहना बेवकूफी है, लेकिन हां।”
मोमो ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा: “अब तुम मेरे परिवार हो। मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूंगी।”
अगली सुबह, उन्होंने अपने साफ कपड़े पहने, जिन्हें उन्होंने पिछली रात सावधानी से तह करके रखा था। भूरे रंग की वर्दी नहीं।
नहीं, उनके अपने कपड़े—जो उन्होंने इस दिन के लिए बचाकर रखे थे।
ऐसे कपड़े जिन्हें आप सालों तक संभाल कर रखते हैं, यह प्रार्थना करते हुए कि उन्हें कभी न कभी पहनने का मौका मिलेगा।

उन्होंने सभी से हाथ मिलाया। हुसैन को गले लगाया—जो पीछे रह गया था, थोड़ा खोया हुआ, थोड़ा टूटा हुआ। हमने उसका ख्याल रखने का वादा किया।
जाने से पहले, मोमो ने हमारी ओर मुड़कर कहा: “हार मत मानो। तुम्हारी बारी भी आएगी। हिम्मत रखो।”
और फिर वे चले गए।
कोठरी खाली-खाली सी लग रही थी।
बेहद खाली।
कुछ हफ्तों बाद, एड्रियन और जूलियन की बारी थी।
पिछले कुछ दिनों में उनके चेहरों पर यह साफ दिख रहा था। उनकी आँखों में एक नई चमक आ गई थी—कुछ अधिक तीक्ष्ण, अधिक जीवंत। मानो उन्हें आखिरकार यकीन हो गया था कि वे बच गए हैं। उनका हर कदम हल्का था। वे जोर से हँसते थे, खुलकर मजाक करते थे। उनमें आशा की खुशबू महसूस हो रही थी।
फिर एक सुबह, केंद्रीय इंटरकॉम पर उनके नाम सुनाई दिए।
हम सब चौंक गए। एक पल के लिए हमारी धड़कनें रुक गईं। यहाँ तक कि जिन्होंने दिखावा किया कि उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता, उन्होंने भी अपना सिर उठाया।
हम जानते थे कि वह पल—वे शब्द—सब कुछ बदल सकते हैं।
कुछ मिनट बाद वे वापस आ गए। एड्रियन सबसे पहले आया, उसका बैग उसके कंधे पर टंगा हुआ था और उसके चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कान थी। जूलियन उसके बगल में चुपचाप चल रहा था, मानो वह सपने में हो।
— “हम कल जा रहे हैं,” एड्रियन ने अपने बैग को अपने बिस्तर के बगल में रखते हुए घोषणा की।
वह घबराकर हँसा: “अरे यार… ये तो सच है, दोस्तों। ये सचमुच हो रहा है!” जूलियन दूर कहीं टकटकी लगाए बैठा रहा, मानो उसने अभी तक इस बात को पूरी तरह से समझा ही न हो। वह धीरे-धीरे, लगभग फुसफुसाते हुए दोहराता रहा: "हम जा रहे हैं... हम सचमुच जा रहे हैं..."
हम सब उछल पड़े। हमने उन्हें कसकर गले लगा लिया। हमने खुद को बिल्कुल भी नहीं रोका।
हम हंसे, थोड़ा रोए भी—इसमें कोई शर्म की बात नहीं है। वे हमारे परिवार थे। हमारे युद्ध भाई।
हमने उन्हें सलाहों की बौछार कर दी, उनसे वादा करवाया कि वे हमें लिखेंगे, हमें सब कुछ बताएंगे, और हमें कभी नहीं भूलेंगे।

उनके जाने से एक दिन पहले, एड्रियन की माँ उससे जेल केंद्र में मिलने आई। वह बेहद खुश थी, उसकी आँखें आँसुओं से भीगी हुई थीं जिन्हें वह रोकने की कोशिश कर रही थी। वह अपने बेटे से ऐसे लिपट गई मानो वह उसे फिर कभी जाने नहीं देगी।
मैंने उसे फुसफुसाते हुए सुना: “मेरे बेटे… मेरे प्यारे… तुम आखिरकार घर आ रहे हो।”
जूलियन, अपने स्वभाव के अनुरूप, संयमित और कुछ हद तक अपनी ही दुनिया में खोया रहा। अपनी सामान्य बेफिक्री के साथ, उसने हल्के-फुल्के अंदाज में कहा: "हाँ हाँ, मैं बैंकॉक हिल्टन से बच गया। कोई बड़ी बात नहीं।"
लेकिन हास्य के पीछे, जिस तरह से उसकी उंगलियां घबराहट में अपने बैग के पट्टे से खेल रही थीं, उसमें आप इसे महसूस कर सकते थे। भावना।
उत्साह के साथ मिला हुआ भय।
अधीरता।
वे बहुत छोटे थे… और फिर भी, इस अंतहीन कष्ट से गुजरने के बाद—हिरासत की इस खामोश हिंसा से—मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि उनके दिलों और दिमागों में क्या चल रहा होगा।
अज्ञात का भय। स्वतंत्रता का रोमांच। और इन विचित्र, अपरिभाषित बंधनों के लिए लगभग तात्कालिक उदासीनता... ऐसी उदासीनता जो केवल जेल ही पैदा कर सकती है।
अगली सुबह, बहुत जल्दी, हमने उन्हें फाटक से अंदर आते देखा। उनके कंधों पर थैले थे, आँखें सीधे सामने टिकी हुई थीं। उन्होंने होठों पर कांपती हुई मुस्कान के साथ सबको हाथ हिलाया। और जब उनके पीछे दरवाजे बंद हो गए, तो हमारे सीने में एक गहरी गड़गड़ाहट उठी। वे आज़ाद हो गए थे। वे बाहर आ गए थे। और हम... अंदर ही अंदर, हम जानते थे कि हमारा समय भी आने वाला है। यह सच था। यह सिर्फ एक सपना नहीं था, या पुराने कैदियों द्वारा फैलाई गई कोई अफवाह नहीं थी। यह संभव था।
और फिर— सन्नाटा छा गया।
मुलाकातें बंद हो गईं। अब कोई आगंतुक नहीं। बस चिट्ठियाँ।
गर्मियों की वो लंबी चिट्ठियाँ।
हम दूतावास की आखिरी मुलाकात का इंतज़ार कर रहे थे।

फिर से पेट्रीसिया ही थी, हमेशा की तरह, जो यह पुष्टि करने आई थी कि हमारा नाम सूची में है।
लेकिन कोई तारीख नहीं।
बस वही इंतज़ार।
रद्द होने का डर।
किस्मत के किसी क्रूर मोड़ का डर।
और फिर… 8 सितंबर।
केंद्र में बुलाया गया। तस्वीरें, उंगलियों के निशान। एक कमांडर, जिसे हमने पहली बार आने पर देखा था, ने हमसे हाथ मिलाया: - "कल।"
मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। मैंने कभी किसी फोटो के लिए इतनी चौड़ी मुस्कान नहीं दी थी।
और फिर भी… डर। क्या होगा अगर कोई नया कानून पारित हो जाए? क्या होगा अगर उस रात कोई लड़ाई छिड़ जाए? क्या होगा अगर वे हमें आखिरी समय में हटा दें? ऐसा पहले भी हो चुका है। हम सभी नेपालियों की कहानी जानते हैं। राजनीतिक मामले पर आखिरी समय में इनकार कर दिया गया। एक बुरा सपना।
हम पेट में अजीब सी घबराहट लिए इमारत में वापस गए। हर कोई हमें देख रहा था। उन्होंने हमसे हमारे शॉर्ट्स, हमारा सामान, हमारी यादगार चीजें मांगीं। हमने सब कुछ मीठे-कड़वे एहसास में दे दिया। मैंने अपने स्नीकर्स जीन-पॉल को दे दिए। वह रो पड़ा। मैंने अपनी कॉफी का डिब्बा बेन्सन को दे दिया। उसने चुपचाप मुझे कसकर पकड़ लिया।
हमने एक टी-शर्ट, एक शॉर्ट्स और नाश्ते के लिए बस उतना ही सामान रखा। और हम इंतज़ार करते रहे। दिल की धड़कन तेज़ हो रही थी। सांसें फूल रही थीं।
कल। कल, हम नरक छोड़ देंगे।
सुबह बाकी दिनों जैसी ही लग रही थी। धुंध छाई हुई थी। घना कोहरा था। सूरज धीरे-धीरे सलाखों के बीच से रोशनी बिखेर रहा था।
अचानक, इमारत भर में लाउडस्पीकर की कर्कश आवाज गूंजी: — “लियो! मार्को! एक्सल! प्रशासनिक केंद्र!”
हमने एक दूसरे को देखा। कोई शब्द नहीं। हम समझ गए। तुरंत।
तस्वीरें। उंगलियों के निशान। प्रस्थान।
मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। बिना सोचे समझे, हमने अपनी चप्पलें और शॉर्ट्स पकड़े और बच्चों की तरह प्रवेश द्वार की ओर दौड़ पड़े। कंक्रीट की

सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए मुझे ऐसा लगा जैसे मैं ज़मीन को छू ही नहीं रहा हूँ। मेरा खून इतनी तेज़ी से दौड़ रहा था कि मुझे अपनी कनपटी की धड़कन महसूस हो रही थी।
हम हांफते हुए आंगन में घुसे और वहां हमने कमांडर को देखा। वही अधिकारी जिसने दो साल पहले हमारा स्वागत किया था। वह व्यक्ति जिसका चेहरा गंभीर लेकिन सुंदर था।
उन्होंने हल्की सी मुस्कान के साथ हमारा अभिवादन किया, इस बार लगभग रहस्यमयी अंदाज़ में: "कल आप जा रहे हैं। तैयार हो जाइए।"
मुझे नहीं लगता कि मैंने पहले कभी ऐसा महसूस किया था। शुद्ध राहत और दिल दहला देने वाले डर का मिश्रण।
कल। कल, यह समाप्त होता है। कल—आज़ादी।
लेकिन मेरे भीतर कहीं गहरी आवाज़ फुसफुसा रही थी: “अगर कुछ गड़बड़ हो जाए तो क्या होगा? अगर आज रात कोई घोटाला सामने आ जाए तो क्या होगा? अगर कोई दस्तावेज़ गायब हो जाए तो क्या होगा?”
हमने अपनी तस्वीरें खिंचवाईं, अपने उंगलियों के निशान दिए। कैमरे की हर फ्लैश ऐसा लग रहा था मानो हमारी त्वचा पर एक अंतिम निशान उकेर रही हो—इस बात का सबूत कि हम यहाँ तक पहुँच गए हैं। कि हम अभी भी यहीं हैं। कि सब कुछ के बावजूद, हम घर जा रहे हैं।
मैंने फोटो के लिए कभी इतनी खुलकर मुस्कान नहीं दी थी। एक सच्ची मुस्कान। बनावटी नहीं। जबरदस्ती वाली नहीं। एक स्वाभाविक, जीवंत मुस्कान।
और फिर भी… इसके भीतर, भय पनप रहा था।
अगर लड़ाई छिड़ जाए तो क्या होगा? अगर कोई विदेशी हंगामा खड़ा कर दे तो क्या होगा? अगर... वे हमें भी रद्द कर दें तो क्या होगा?
हम सभी नेपालियों की कहानी जानते थे। राजनयिक गड़बड़ी के कारण अंतिम क्षण में उनका स्थानांतरण रद्द कर दिया गया था। इसे एक शहरी किंवदंती की तरह माना जाता था - लेकिन यह पूरी तरह से वास्तविक था।
फिर, बिना कुछ और कहे, हमें वापस हमारी इमारत में भेज दिया गया। धूल में चलते हुए, कागज की अपनी कीमती पर्ची को कसकर पकड़े हुए, चेहरे मुश्किल से रोकी जा सकने वाली उत्तेजना से जल रहे थे।
उस शाम, हम सभी को पता चल गया था कि कुछ बदल गया है। उलटी गिनती शुरू हो चुकी थी।

कल एक जीवन का अंत होगा… और दूसरे जीवन की शुरुआत होगी।
सब लोग हमें अलग नजरों से देखते थे। अब हम "लंबे समय से रहने वाले" नहीं थे। हम "जाने वाले" थे। बचे हुए लोग। भागने की कगार पर खड़े भाई।
हमारे थाई दोस्त झिझकते हुए हमारे पास आए और कपड़े, एक कमीज़, एक शॉर्ट्स, कुछ ऐसा जो हमें याद रखे। हमने उस अजीब, मीठे-कड़वे माहौल में सब कुछ उन्हें दे दिया।
बेन्सन ने मेरा पुराना कॉफी का डिब्बा ले लिया। उसने मेरी आँखों में देखा और बिना कुछ कहे, अपना हाथ मेरे कंधे पर रख दिया—भारी, भाईचारे वाला। हमने अगले दिन के लिए सिर्फ एक शॉर्ट्स, एक टी-शर्ट और मूंगफली का एक छोटा पैकेट ही रखा था।
वो दिन… पलक झपकते ही बीत गया।
किसी ने शिकायत नहीं की। चिलचिलाती धूप में खड़े होने की भी नहीं। अंतहीन कतारों की भी नहीं। गुनगुने, गंदे पानी की भी नहीं।
यहां तक कि भूख, मांसपेशियों में दर्द, छांव में बैठने पर प्रतिबंध—इनमें से किसी भी बात का अब कोई महत्व नहीं रह गया था।
हमें अपने बाल थोड़े से बढ़ाने की अनुमति दी गई थी—यह गार्डों की ओर से एक अलिखित विशेषाधिकार था जब उन्हें पता होता था कि आपकी रिहाई निकट है। एड्रियान और जूलियन के जाने के बाद से हमें उनसे कोई खबर नहीं मिली थी। उनकी माताएँ फ्रांस लौट गई थीं। आगंतुक भी चले गए थे। हमें बस इतनी फुसफुसाहट सुनाई दी थी कि अब्देल और मोमो विलेपिंटे पहुँच गए हैं, और वहाँ उनका पुनर्एकीकरण हो गया है। वहाँ उन्हें आने-जाने की आज़ादी, कोठरी की चाबियाँ और अच्छा खाना मिलता है। यहाँ की तुलना में वह जेल स्वर्ग जैसा है।
अगली सुबह हम जल्दी उठ गए। अलार्म की जरूरत नहीं पड़ी। हमारे दिल ने अपना काम कर दिया।
सेल में आखिरी कसरत—कुछ पुश-अप्स, क्रंचेस—चिंता को दूर करने के लिए। फिर ठंडे पानी से नहाना। हमेशा की तरह, बर्फीले पानी की पहली बौछार ने मेरी सांस रोक दी। लेकिन इस बार, मैंने उस कंपकंपी का आनंद लिया। मैंने खुद से कहा: “यहाँ यह तुम्हारा आखिरी स्नान है।”
मैंने हमेशा की तरह खुद को नहीं सुखाया। अभी भी टपकते हुए, मैंने खुद को गर्म हवा में सूखने दिया। यहाँ तक कि वे छोटी-छोटी दिनचर्याएँ—सबसे कठिन

वाली भी—एक निशान छोड़ने वाली थीं। क्योंकि, अंततः, वे अब मेरा हिस्सा बन चुकी थीं।
दोपहर होते-होते चिंता और बढ़ गई। हम तैयार थे। कपड़े पहने हुए थे। बैग पैक थे। मैंने अपने सबसे कीमती खजाने निकाल लिए थे: एक सफेद सैन फ्रांसिस्को टी-शर्ट, जो मेरी ताइवानी दोस्त ने उपहार में दी थी। एकदम नई जींस, जो किसी चमत्कार से मिली थी। और सबसे महत्वपूर्ण बात, एक जोड़ी बेदाग सफेद स्नीकर्स—कभी नहीं पहने गए।
मार्को भी तैयार था। उसके पास सामान कम था, लेकिन उसकी घबराहट भरी मुस्कान ने सब कुछ बयां कर दिया। हम पिंजरे में बंद शेरों की तरह बेचैनी से इधर-उधर घूम रहे थे। ऊपर, नीचे, बार-बार। हम बिल्डिंग के मुखिया से मिलने गए। “बॉस, क्या यह होने वाला है?” “शांत हो जाइए, आज ही है। लेकिन धैर्य रखिए, धैर्य रखिए…”
दोपहर के 2:00 बजने वाले थे। जल्द ही हाजिरी का समय होगा, और हमें अपनी- अपनी कोठरियों में वापस जाना होगा। अभी भी कुछ नहीं।
फिर… दोपहर 2:10 बजे, लाउडस्पीकर अचानक चालू हो गया।— “लियो! मार्को! केंद्र की ओर!”
हमारे दिल खुशी से भर उठे। हमने अपने साथी कैदियों को गर्मजोशी से, भावुकता से भरे, दिल को झकझोर देने वाले आलिंगन में गले लगाया। मैथ्यू, डैनी... वे सभी चेहरे जिन्हें मैं शायद फिर कभी नहीं देख पाऊँगी, लेकिन जीवन भर अपने साथ रखूँगी। यहाँ तक कि गार्डों ने भी - जो हमारे दर्द के मूक गवाह थे - हमें सच्चे दिल से प्रोत्साहन दिया।
मैथ्यू मेरे पास आया। उसकी आँखें नम थीं, लेकिन उसकी निगाहें स्थिर थीं। उसने मेरे कंधों को थाम लिया, एक ऐसा भाईचारा भरा भाव जो केवल एक साथी जीवित बचे व्यक्ति ही दे सकता है। “वादा करो भाई, हम संपर्क में रहेंगे, ठीक है?” वह धीरे से मुस्कुराया, मानो टूट न जाए। “जब भी हो सके मेरी प्रेमिका को फोन करना। उसे बताना कि मैं हिम्मत बनाए हुए हूँ… और मैं उससे प्यार करता हूँ। वह बहुत चिंतित है।”
मैंने उसका हाथ कसकर पकड़ा, बहुत कसकर, और मैंने वादा किया। दिल की गहराइयों से।
फिर डैनी आगे बढ़ा। शांत स्वर में, उसी सहज चाल के साथ। उसने मेरे कंधे पर एक दोस्ताना थपकी दी और धीरे से बोला: “जाओ, ज़िंदगी जियो, यार। हम सबके

लिए। तुमने नरक से पार पा लिया है। अब उनके लिए जियो जो अभी तक ऐसा नहीं कर सकते।”
मेरे गले में एक गांठ सी आ गई।
अत्यधिक भावुकता।
क्योंकि हम सभी जानते थे कि इसका क्या मतलब था।
हमने सबको गले लगाया।
सच्चे, दिल से गले लगाना। कोई बनावटीपन नहीं। कोई ढोंग नहीं।
यहां तक कि थाई अधिकारी भी—वे लोग जो हर सुबह चुपचाप हमारी गिनती करते थे — आ गए। उनमें से एक, जो आमतौर पर सबसे सख्त रहता था, ने सच्ची मुस्कान के साथ अपना हाथ बढ़ाया: “शुभकामनाएं, पौचोए। कभी वापस मत आना।”
मेरे गले में एक गांठ सी बन गई। फिर भी मैंने उसकी आँखों में सीधे देखा और सिर हिलाया। मैं फिर कभी यहाँ कदम नहीं रखूंगा। यह एक वादा था।
और अंत में, इमारत का विशाल द्वार हमारे सामने खुल गया। सूरज की रोशनी हमारे चेहरों पर पड़ी। और हमने दहलीज पार कर ली। आखिरी बार।
हर कदम मेरे दिमाग में बिजली की तरह गूंज रहा था। हर कदम कह रहा था: तुमने कर दिखाया। तुम ज़िंदा हो।
उस दरवाजे को—उस कुख्यात दरवाजे को—आखिरी बार पार करना शब्दों से परे था। दुनिया अलग सी लग रही थी। हवा हल्की थी। आजादी की ओर हर कदम मुझे इतनी गहरी, इतनी सहज खुशी से भर रहा था कि मुझे लगा जैसे मैं जीवन को फिर से खोज रहा हूँ।
हम कमांडर के पीछे-पीछे जेल के लंबे, धूल भरे गलियारों से गुज़रे। सलाखों के पार से निगाहें हमारा पीछा कर रही थीं—मुस्कानें, इशारे, फुसफुसाते हुए हौसलाअफजाई।— “हिम्मत रखो, भाई!”— “हमारे लिए आसमान का एक टुकड़ा वापस लाना!”
मेरा दिल ढोल की तरह धड़क रहा था।
जब हम केंद्रीय केंद्र पर पहुँचे, तो हम वर्षों के उपयोग से घिसी हुई पुरानी नीली प्लास्टिक की बेंचों पर बैठ गए। यह अजीब सा लगा। अवास्तविक सा। हमारे चारों ओर जेल का सामान्य शोर जारी था, लेकिन हमारे लिए—समय थम सा गया था। दुनिया थम सी गई थी।
हमने मूंगफली का अपना छोटा सा पैकेट खोला—जो हमने कल कैंटीन से अपने आखिरी बचे हुए बाहतों से खरीदा था। हम धीरे-धीरे, चुपचाप चबाते रहे,

अविश्वास भरी निगाहों से एक-दूसरे को देखते रहे। “क्या तुम इस पर विश्वास कर सकते हो, भाई?” मार्को ने फुसफुसाते हुए कहा। “हमने कर दिखाया।” मैं बस मुस्कुराया। शब्दों की कोई ज़रूरत नहीं थी। सब कुछ हमारी आँखों में झलक रहा था।
हम आजादी से बस एक धड़कन दूर थे। जीवन से बस एक सांस दूर।
ऐसा लगा मानो अनंत काल बीत गया हो, फिर कमांडर वापस लौटा।
— “चलो चलते हैं।”
हमने अपने बैग उठाए और उसके पीछे-पीछे जेल में आखिरी बार चक्कर लगाया।
केंद्रीय आंगन के पार, जंग लगे लॉकरों की कतारों, छोटी-छोटी दुकानों और प्रशंसा भरी निगाहों के बीच से गुज़रते हुए।
और फिर… हम प्रवेश द्वार पर पहुँच गए।
और वहाँ—हैरान कर देने वाला पल। वे हमें एक वातानुकूलित कमरे में ले गए।
एक असली कमरा। सामान्य। आरामदायक कुर्सियों के साथ। हल्की रोशनी। कोई कंक्रीट नहीं। कोई सलाखें नहीं। कोई नमी नहीं। नरक के बीचोंबीच बाहरी दुनिया का एक टुकड़ा।
हमारे बैग करीने से पैक करके वहाँ रखे हुए थे, मानो सब कुछ बड़ी सावधानी और सोच-समझकर योजनाबद्ध तरीके से किया गया हो। दूतावास ने साफ कपड़े उपलब्ध कराए थे, और वर्षों में पहली बार मेरे लिए अच्छे जूते रखे थे—असली जूते, न कि वो घिसी-पिटी सैंडल या पतली रबर की चप्पलें जिन्हें पहनने की मुझे आदत हो गई थी। लेकिन सबसे खास बात यह थी कि मुझे पता था कि वो कपड़े वास्तव में कहाँ से आए थे।
असल में, यह सिर्फ दूतावास की बात नहीं थी। यह हमारे परिवार की बात थी। यह मेरी माँ की बात थी।
उसने दूर से ही सारी तैयारी कर ली थी, अपनी सीमित जानकारी के आधार पर जितना हो सका उतना किया। उसे यह भी नहीं पता था कि मुझे कपड़ों से भरा पूरा सूटकेस ले जाने की अनुमति है। किसी ने उसे यह बात स्पष्ट रूप से नहीं समझाई थी। इसलिए उसने केवल ज़रूरी सामान भेजा, यह सोचकर कि इतना काफी होगा—एक जोड़ी जूते, एक ट्रैकसूट, कुछ साधारण कपड़े। उसने ये सामान कोराली को दे दिया, जिसने फिर सब कुछ दूतावास को सौंप दिया ताकि यह सही समय पर मुझ तक पहुँच सके।
और किसी तरह, इसी वजह से यह और भी अधिक सार्थक हो गया।

क्योंकि जब मैंने वह बैग खोला, तो उसमें सिर्फ कपड़े नहीं थे। वह उसका एक हिस्सा था। घर का एक टुकड़ा जो महाद्वीपों को पार करके ठीक उसी क्षण मुझ तक पहुंचा जब मुझे उसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी।
मैंने जल्दी से कपड़े बदले, लगभग घबराते हुए, मानो अगर मैंने जल्दी नहीं की तो कोई सब कुछ छीन लेगा। और जब मैंने वह ट्रैकसूट पहना, तो मुझे कुछ ऐसा महसूस हुआ जो मैंने सालों से महसूस नहीं किया था। त्वचा पर कपड़ा पहले तो अपरिचित सा लगा, लगभग अजीब सा, जैसे मेरा शरीर भूल गया हो कि आराम कैसा महसूस होता है। सालों से, मैंने जेल से मिले शॉर्ट्स के अलावा कुछ नहीं पहना था, खुरदुरे और एक जैसे, दिन-ब-दिन, महीने-दर-महीने, साल-दर-साल। मेरे पैर गर्मी, गंदगी और एक ऐसी नीरस जिंदगी के संपर्क में थे जिसमें मेरी व्यक्तिगत पहचान छिन गई थी।
अब अचानक, मैंने असली पैंट पहन ली थी।
बाहर से देखने पर यह मामूली, लगभग हास्यास्पद लग सकता है, लेकिन उस पल इसने सब कुछ बदल दिया। बस एक सही पैंट पहनना, अपने पैरों पर कपड़े का एहसास होना, मुझे वह आत्मसम्मान दे गया जिसे मैं लगभग भूल ही चुका था। मैंने मोज़े पहने—इतनी सरल चीज़, फिर भी एक ऐसा अनुभव जो मैंने इतने लंबे समय से नहीं किया था—और फिर स्नीकर्स। ज़्यादातर समय नंगे पैर या सस्ते फ्लिप-फ्लॉप में बिताने के बाद, असली जूतों में पैर डालना ऐसा लगा जैसे मैं किसी दूसरी दुनिया में लौट आया हूँ।
एक सामान्य जीवन।
और फिर मैंने वह सफेद टी-शर्ट निकाली।
जैसे ही मैंने इसे पास लाया, मैं जम गया।
वह गंध।
मेरी मां के कपड़े धोने के डिटर्जेंट की अनूठी खुशबू।
यह बात अचानक, बिना किसी चेतावनी के, मेरे भीतर वर्षों से बनी हर बाधा को तोड़ते हुए मुझ पर हावी हो गई। मैंने गहरी साँस ली, मानो सहज रूप से, जैसे मैं उसे अपने अंदर समा सकती हूँ, मानो इतने समय बाद उससे अलग रहने के बाद मैं उसके एक अंश को अपने भीतर ला सकती हूँ। और उस एक साँस में, सब कुछ वापस लौट आया—घर, बचपन, सुरक्षा, प्यार, वह दुनिया जो मेरे कैद में रहने के दौरान भी मेरे बिना अस्तित्व में रही।

मैंने अपनी आंखें बंद कर लीं और उस कमीज को जरूरत से एक सेकंड ज्यादा देर तक पकड़े रखा।
और मैंने इसे महसूस किया।
घर।
स्वतंत्रता।
प्यार।
मेरे भीतर कहीं गहरे से भावनाओं का एक सैलाब उमड़ उठा, जिसे मैं अब नियंत्रित या दबा नहीं सकती थी। मेरा गला सूख गया, सीने में भारीपन महसूस हुआ, और इससे पहले कि मैं इसे रोक पाती, मेरी आँखों में आँसू भर आए और बहने लगे।
मैंने जो कुछ भी सहा था, वर्षों तक संघर्ष करने, सहन करने और खुद को संभाले रखने के बाद, अंततः कपड़े का एक साधारण टुकड़ा—एक टी-शर्ट, एक ट्रैकसूट, जूतों की एक जोड़ी—ही मुझे तोड़ सका।
यह कितना आश्चर्यजनक है कि कोई इतनी छोटी, इतनी साधारण सी चीज आपके खुद को देखने के तरीके, आपके महसूस करने के तरीके और दुनिया में आपके अस्तित्व के तरीके को पूरी तरह से बदल सकती है।
लेकिन उस क्षण, यह सिर्फ कपड़ों की बात नहीं थी।
इससे मुझे याद आया कि मैं अब भी कोई हूं।
फिर, मानवता का एक दुर्लभ भाव दिखाते हुए, कमांडर ने पूछा: "क्या आप अपने परिवारों को फोन करना चाहेंगे?"
मार्को और मैंने एक दूसरे को देखा—हम अवाक रह गए।
मार्को ने इस मौके को लपक लिया। उसने अपने माता-पिता को फोन किया। फोन की तरफ से हंसी, आंसू और खुशी की आवाजें आ रही थीं।
फिर मेरी बारी आई। मैंने अपनी माँ का नंबर डायल किया—वीडियो कॉल। फ़ोन की घंटी बजी।
और फिर—उसने फोन उठा लिया। वह दंत चिकित्सक के पास थी, पूरी तरह से अचंभित। उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि वह मेरा चेहरा लाइव देखेगी।
वह खुशी के आंसू बहाने लगी। और मैं भी।
— “माँ, मैं आ रहा हूँ! हम निकलने ही वाले हैं! पुलिस जल्द ही यहाँ आ जाएगी — मैं आखिरकार घर आ रहा हूँ!”

मैंने उसके कांपते हाथ, उसकी मुस्कान, उसके आंसू देखे। सालों बाद मैंने उसे पहली बार देखा था। और जल्द ही—बहुत जल्द—यह सचमुच होने वाला था।
उस भावुक फोन कॉल के बाद, हम केंद्रीय केंद्र लौट आए। कमांडर ने हमसे थोड़ी देर और इंतजार करने को कहा।
— “फ्रांसीसी पुलिस जल्द ही आ रही है। आपके जाने से पहले एक छोटा सा विदाई समारोह होगा।”
एक ऐसा समारोह जहां थाई और फ्रांसीसी अधिकारी प्रतीकात्मक रूप से अपनी साझेदारी, अपने सहयोग और इन हस्तांतरणों की सफलता को देखकर अपने गौरव को उजागर करेंगे।
हमने बेशक इसे स्वीकार कर लिया। अब हमारी खुशी को कोई कम नहीं कर सकता था। हम आशा से भरे हुए थे, आज़ादी के विचार में मदहोश थे। अब बस एक ही काम बचा था: इंतज़ार। लेकिन इस बार, इंतज़ार बोझ नहीं था—यह एक तरह की मुक्ति थी जो प्रगति पर थी।
शाम करीब 5:30 बजे, हमारी उत्तेजना के कारण कई घंटे बीत जाने के बाद, कमांडर हमें लेने आए। उनका चेहरा गंभीर था, लेकिन औपचारिकता के पीछे हमें एक सूक्ष्म सम्मान का भाव महसूस हुआ।
— “अब समय आ गया है। मेरे साथ आओ।”
मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। हमने अपने बैग और थोड़ा-बहुत सामान उठाया। मार्को और मैंने एक-दूसरे को देखा—शब्दों की ज़रूरत नहीं थी। हम आखिरी बार उसके पीछे-पीछे जेल के प्रवेश द्वार से अंदर गए। लेकिन मुख्य द्वार की ओर जाने के बजाय, वह हमें एक गुप्त बगल के दरवाजे से ले गया। एक संकरी सीढ़ी, घिसी-पिटी सीढ़ियाँ, कंक्रीट और सीलन की जानी-पहचानी गंध। हम प्रशासनिक मंजिलों की ओर चढ़ रहे थे, उन दफ्तरों की ओर जिनके बारे में हमने अब तक सिर्फ कल्पना ही की थी।
ऊपर जाकर, उन्होंने हमें एक बड़े सम्मेलन कक्ष में पहुँचाया। जैसे ही हम अंदर दाखिल हुए, सामने का नज़ारा देखकर हम दंग रह गए। कमरे के बीचोंबीच दो कुर्सियाँ रखी थीं। उनके पीछे एक लंबी मेज़ थी। और उसके सामने एक मंच था, जिसके चारों ओर कैमरे, पत्रकार, थाई और फ्रांसीसी अधिकारी मौजूद थे। प्रोजेक्टरों की तेज़ रोशनी से हमारी आँखें चौंधिया गईं। हमने कुछ चेहरों को पहचाना: फ्रांसीसी वाणिज्य दूतावास के अधिकारी, जो मंच के पास खड़े थे, उनके साथ दूतावास के कर्मचारी भी थे। और सबसे ऊपर, हमें सुरक्षा देने के

लिए भेजे गए पाँच फ्रांसीसी पुलिस अधिकारी। साफ-सुथरे सूट पहने, गंभीर चेहरे। उन्होंने विनम्रता से सिर हिलाया, लेकिन उनमें कोई स्नेह नहीं था।
पेशेवर। गले मिलने का समय नहीं था।
उन्होंने हमें बीचोंबीच रखी दो कुर्सियों पर बैठने का इशारा किया। पीठ सीधी करके, सबकी निगाहें हम पर टिकी थीं। माहौल अजीब था—तनावपूर्ण। शत्रुतापूर्ण नहीं, लेकिन नियमों का सख्ती से पालन किया जा रहा था। हमें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। क्या मुस्कुराएं? या चेहरे पर कोई भाव न दिखाएं?
लेकिन हम खुद को रोक नहीं पाए। हमारे चेहरे स्वाभाविक, अनियंत्रित मुस्कान से खिल उठे। आखिर, हम जानते थे कि इस पल का क्या महत्व है। यह हमारी गिरफ्तारी के समय हुई प्रेस कॉन्फ्रेंस से बिलकुल उलट था, जिसमें सबूतों के ढेर के पीछे हमारे चेहरे दिखाए गए थे। अब, यह मुक्ति की प्रेस कॉन्फ्रेंस थी।
दस मिनट बीत गए। थाई और फ्रांसीसी प्रतिनिधियों के बीच भाषणों का आदान-प्रदान हुआ। एक थाई अधिकारी ने हिचकिचाते हुए अंग्रेजी में एक कागज से पढ़ा:
— “हम इस साझेदारी के लिए फ्रांस गणराज्य के आभारी हैं। यह हस्तांतरण न्याय और मानवाधिकारों के लिए हमारे देशों के बीच सहयोग को दर्शाता है।” फिर फ्रांसीसी कौंसल ने अधिक सहजता से और अधिक भावपूर्ण स्वर में बात की: — “हमें अपने नागरिकों को वापस लौटते देखकर खुशी हो रही है। फ्रांस उनके पुनर्एकीकरण में सहयोग देने और थाईलैंड के साथ इस ऐतिहासिक साझेदारी को जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध है।”
हमने शब्द तो सुने, लेकिन उन पर ध्यान नहीं दिया। हमारे सीने में भावनाएं उमड़ रही थीं। हर वाक्य एक और पुष्टि जैसा लग रहा था: सब खत्म हो गया है। भाषण समाप्त होने के बाद, कमांडर ने हमें इशारा किया। हम थोड़े अकड़े हुए खड़े हो गए और छोटे से जुलूस के साथ लेखा कार्यालय की ओर चल दिए।
एक सादे से छोटे कमरे में, जहाँ धूसर धातु की मेजें और जंग लगे पंखे रखे थे, हमें पैसे दिए गए। मुझे लगभग 2,500 बात मिले। उन पैसों को हाथों में पकड़ना एक अजीब सा अनुभव था। मैं सालों से कैंटीन से कॉफी के पैकेट और चुराए हुए बिस्कुट बेचकर गुज़ारा करता आ रहा था—और अब, ये। इस कागज़ का एक अलग ही महत्व था। ये प्रतीकात्मक था। आज़ादी का एक टुकड़ा।

उसके बाद सब कुछ तेज़ी से हुआ। हमें पीछे वाले निकास की ओर जाने को कहा गया। साँस फूल रही थी, हम आखिरी कुछ मीटर चले। और फिर, हमने उसे देखा—जेल का ट्रक। सफ़ेद, गंदा, विशालकाय।
- "यही है।"
हमें हथकड़ी पहनाई गई। यह एक सामान्य प्रक्रिया थी। काले रंग की वर्दी पहने, भारी हथियारों से लैस दो थाई गार्ड हमारे दोनों ओर खड़े थे। हमें शांत करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। भागने की कोई इच्छा नहीं थी। इस पल को टालने का कोई ख्याल नहीं था।
जेल के विशाल धातु के द्वार एक गहरी, भारी गड़गड़ाहट के साथ खुले। और ट्रक चलने लगा।
मेरे शरीर में एक झनझनाहट सी दौड़ गई, मानो शारीरिक आघात हो। हम क्लॉन्ग प्रेम को छोड़ रहे थे। दुःस्वप्नों और अस्तित्व की उस जगह को। दुख और टूटी हुई मानवता के उस कब्रिस्तान को।
मैंने ट्रक की छोटी सी खिड़की से बाहर देखा। जेल धीरे-धीरे मेरी नज़रों से ओझल होती चली गई—छोटी होती गई, जब तक कि वह पूरी तरह गायब नहीं हो गई। मेरे चेहरे पर एक मुस्कान फैल गई। एक सच्ची मुस्कान। बहुत बड़ी। बेहद आकर्षक।
— “मार्को… हमने कर दिखाया, भाई।”
— “हाँ। हमने कर दिखाया,” उसने थोड़ी रुंधी हुई आवाज़ में जवाब दिया। अगला पड़ाव: हवाई अड्डा। अगला पड़ाव: आज़ादी। अगला पड़ाव… ज़िंदगी। क्या एहसास था! एक अजीब सा चक्कर, पेट में अचानक एक गर्माहट। प्रोटोकॉल के अनुसार उन्होंने हमें हथकड़ी पहना दी थी, लेकिन इस बार वे हल्की लग रही थीं। मानो धातु का कोई वज़न ही न रह गया हो। मानो अब वह कोई बंधन नहीं, बल्कि एक प्रतीक हो। एक दहलीज। हम सुरक्षाकर्मियों और चारों ओर से घिरे हुए जेल बस में सवार हुए, लेकिन उस पल का स्वाद पहले जैसा नहीं था। सब खत्म हो गया था। या लगभग खत्म हो गया था।
जैसे ही हम बैठे, मार्को और मैंने एक-दूसरे को देखा। एक मुस्कान। फिर एक और। और अचानक, ऐसा लगा जैसे हमारे अंदर कुछ फिर से जाग उठा हो। जैसे हमारे अंदर लंबे समय से बसी उदासी एक ही पल में गायब हो गई हो। हम हँसे—सच्ची हँसी। शुद्ध, सच्ची, थोड़ी घबराहट भरी, लेकिन आनंदमय। हमने एक-दूसरे को छेड़ा, बेवकूफी भरे चुटकुले सुनाए, कल्पना की कि फ्रांस में सबसे पहले

क्या खाएंगे, वापस आने के पहले दिन क्या करेंगे। हम ज़िंदा थे। सचमुच ज़िंदा। मानो पुनर्जीवित हो गए हों।
मुझे बस की जालीदार खिड़की से बाहर देखना याद है। जेल के द्वार धीरे-धीरे, मशीनी ढंग से खुले, और फिर गाड़ी तेज़ी से आगे बढ़ी, मानो वह भी उस मनहूस जगह से भागने के लिए बेताब हो। उसकी रफ़्तार उम्मीद से कहीं ज़्यादा तेज़ हो गई। गलियारे में तैनात काले रंग की वर्दी पहने थाई गार्डों ने राइफलें अपनी जांघों पर टिका रखी थीं, वे सामने घूर रहे थे, उनकी उंगलियां राइफल की मूठ पर कसी हुई थीं। मानो उन्हें अब भी लग रहा हो कि हम भागने की कोशिश कर सकते हैं। लेकिन क्यों? हम अब क्यों भागेंगे? हम आख़िरकार जा रहे थे। आख़िरकार।
हवाई अड्डे पर पहुंचते ही सब कुछ पल भर में बदल गया। बैंकॉक की गर्म हवा— कंक्रीट की वजह से और भी घनी—तुरंत हमें घेर लिया। हमें एक शांत टर्मिनल की ओर ले जाया गया, जो थोड़ा किनारे पर था, लेकिन जीवंत था। पर्यटकों की चहल-पहल, उड़ानों की घोषणाएं, दूर से बच्चों के रोने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। जीवन। असली जीवन। बस उन दरवाजों के पीछे।
बस के बाहर, फ्रांसीसी पुलिस पहले से ही सैन्य अनुशासन के साथ कतार में खड़ी थी, स्पष्ट रूप से इस तरह के ऑपरेशन की आदी थी। उन्होंने थाई गार्डों से कुछ संक्षिप्त शब्द कहे और आगे बढ़े। हमारी जेल की जैकेटें उतारकर हमारे हथकड़ी लगे हाथों पर धीरे से रख दी गईं ताकि वे जनता की नज़रों से छिपी रहें। उन्होंने हर छोटी-बड़ी बात का ध्यान रखा था—एक शांत सम्मान और गरिमा के साथ, जिसने उस पल को फिर से मानवीय बना दिया।
— “गाड़ी को धक्का दो, इस तरह किसी को पता नहीं चलेगा,” फ्रांसीसी अधिकारियों में से एक ने धीरे से कहा।
हमने आज्ञाकारी और कृतज्ञता से सिर हिलाया। खाली सामान की ट्रॉलियों, प्लास्टिक की थैलियों, कुछ किताबों और नोटबुकों के साथ, हम दो अस्त-व्यस्त पर्यटकों की तरह दिख रहे थे। दो ऐसे आदमी जो घर जाने के लिए बेताब थे।
वे हमें थाई एयरवेज के फर्स्ट क्लास काउंटर पर ले गए—मज़े की बात यह है कि वे गोपनीयता बनाए रखने के लिए ऐसा कर रहे थे। फ्लाइट अटेंडेंट विनम्र, मुस्कुराते हुए और बेहद पेशेवर थे। उन्हें सब पता था। सबको पता था। लेकिन किसी ने भी इसे ज़ाहिर नहीं किया। सबने नियमों का पालन किया। ऐसा लग रहा था

जैसे हम किसी नाटक में हों और हम मुख्य किरदार हों—बस हमें अपने संवाद नहीं दिए गए थे।
फिर पहली अड़चन आई। नोटबुकों और सालों की लेखन सामग्री से भरा मेरा प्लास्टिक का थैला ले जाने की अनुमति नहीं थी। वह फट रहा था। मेरे मन में घबराहट दौड़ गई—मैं उन्हें खो नहीं सकती थी। वे मेरा काम थे। मेरी यादें थीं। मेरी पहचान थीं।
— “चिंता मत करो, हम आपके लिए एक डिब्बा ढूंढ लेंगे,” एक मेजबान ने विनम्रता से कहा।
वे जल्दी से इधर-उधर भागे, एक पुराना डिब्बा ढूंढा, उसे टेप से मज़बूत किया और उस पर मेरा नाम लिख दिया। फिर, धीरे से, उन्होंने मेरा सामान लिया और उसे मालवाहक डिब्बे में रख दिया। मेरा मन शांत हो गया।
फिर एक गुप्त रास्ता सामने आया—कोई छिपी हुई सीढ़ियाँ, एक अजीब सा तहखाना जो किसी जासूसी फिल्म के दृश्य जैसा लग रहा था। हर जगह कैमरे लगे थे। स्क्रीन, तार, पुलिस अधिकारी। एक अलग ही दुनिया। निरंतर निगरानी की दुनिया। वहीं मुझे एहसास हुआ कि यहाँ सब कुछ कितना कड़ाई से नियंत्रित था। यहाँ कोई भी किसी चीज़ से बच नहीं सकता था।
उन्होंने हमें फ्लोरोसेंट लाइट वाले एक कमरे में बिठा दिया। ठंडा, बेजान सा माहौल। तीन थाई अधिकारियों ने फ्रांसीसियों से बात की। और बस, चिंता फिर लौट आई: उन्होंने कहा कि एक दस्तावेज़ गायब है, हमारे पासपोर्ट में कुछ गड़बड़ है, कोई गलती हो गई है। फुसफुसाहट। शक।
— “चिंता मत करो,” मेरे बगल में बैठे फ्रांसीसी अधिकारी ने फुसफुसाते हुए कहा। — “हर बार ऐसा ही होता है। वे हमेशा कुछ गड़बड़ होने का नाटक करते हैं ताकि वे दिखा सकें कि वे अब भी मायने रखते हैं। सब कुछ हमेशा सुलझ जाता है।”
मैंने घबराहट में हल्की सी हंसी हंस दी। यह हास्यास्पद था। और बिल्कुल सच भी।
मिनट बहुत धीरे-धीरे बीत रहे थे। हम गलियारे में चहलकदमी करते, कमरे में लौटते, यही सिलसिला चलता रहा। थाई अधिकारी ऊंची आवाज़ में बोल रहे थे; फ्रांसीसी शांत बने रहे। बाहर, लोग नाश्ते के पैकेट खोल रहे थे। हमें भी बहुत भूख लगी थी, पर मुझे परवाह नहीं थी। मेरी बस एक ही भूख बची थी: आज़ादी।

दो लंबे घंटों के इंतज़ार के बाद, और मार्को के साथ संदेह और मौन निगाहों से भरे तीसरे घंटे के बाद, आखिरकार चीज़ें आगे बढ़ीं। हमें गेट की ओर ले जाया गया। वह पल आ गया था। मेरे पैर कांप रहे थे। हमारे सामने: हवाई जहाज। विशाल। भव्य। वह मशीन जो हमें घर ले जाएगी।
हथकड़ी अभी भी हमारे हाथों में थी, धातु की नहीं बल्कि सफेद प्लास्टिक की ज़िप टाई से—जो कम दर्दनाक तो थी, लेकिन ज़्यादा अपमानजनक—हम आगे बढ़े, हमारी जैकेटें अभी भी हमारी कलाइयों को ढके हुए थीं। हम दो शांत यात्रियों की तरह दिख रहे थे, जिनके पास कोई सामान नहीं था, और जो भीड़ में घुलमिल गए थे।
बोर्डिंग गेट पर, फ्रांसीसी अधिकारियों ने हमें सरसरी नजर से देखा। बिना कुछ कहे, उनमें से एक ने अपने स्विस आर्मी किट से एक छोटा सा चाकू निकाला, टाई काट दी और उन्हें स्टेनलेस स्टील के कूड़ेदान में फेंक दिया।
— “बस इतना ही। आप लोग अब आज़ाद हैं।”
मार्को और मैंने एक-दूसरे को देखा, और चार साल में पहली बार हम वहाँ खड़े थे—आज़ाद। कोई जंजीर नहीं। कोई धातु नहीं। कोई सलाखें नहीं। उस कतार में खड़े किसी को भी अंदाज़ा नहीं था कि हम किन-किन मुश्किलों से गुज़रे थे। हम सबसे पहले चढ़े। बाकी यात्री चुपचाप देखते रहे—कुछ उत्सुक थे, कुछ उदासीन। हमारे पास कुछ नहीं था। न पहियों वाले सूटकेस, न ही कोई फैंसी बैग। बस कृतज्ञता से भरे दिल।
विमान के पिछले हिस्से में, एक पंक्ति में तीन सीटों पर बैठे हुए—मार्को खिड़की के पास, मैं बीच में, हमारे बगल में एक फ्रांसीसी अधिकारी, आखिरकार हमने राहत की सांस ली। विमान ने उड़ान भरी। हमने चैन की सांस ली। और आंसू भी आ गए।
जब भी हम शौचालय जाने के लिए उठते, एक पुलिस अधिकारी हमारे पीछे-पीछे आता। लेकिन निगरानी से मुझे कोई परेशानी नहीं हुई। बल्कि, इससे मुझे सुकून मिला। इसका मतलब था कि हम करीब थे। सामान्य जीवन के करीब।
— “देखा?” मार्को ने फुसफुसाते हुए कहा। “हमने सच में कर दिखाया।”
मैंने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने अपना सिर उसके कंधे पर टिका दिया और आंखें बंद कर लीं।
और मैं सो गया।
दस घंटे की स्वप्नहीन नींद। दस घंटे अतीत को अलविदा कहने के लिए।

भाग III: मुक्ति

अध्याय 14: धुंधली वापसी
हम तभी जागे जब स्पीकर पर धीमी आवाज़ में पेरिस चार्ल्स डी गॉल हवाई अड्डे पर हमारे जल्द ही उतरने की घोषणा हुई। हम विमान से उतरने वाले आखिरी लोग थे और फ्रांसीसी अधिकारियों से अनौपचारिक बातचीत कर रहे थे। उनमें से एक, जो स्पष्ट रूप से खुश था, ने हमें बताया कि वह अपनी हर आधिकारिक यात्रा से ड्यूटी-फ्री की अनोखी चीज़ें इकट्ठा करता है।
आखिरकार हम विमान से उतरे—इस बार हथकड़ी नहीं थी—हवाई अड्डे के शांत गलियारों से गुज़रते हुए, सुरक्षा व्यवस्था की सूक्ष्मता और सर्वव्यापी उपस्थिति को देखकर हम मन ही मन प्रभावित हुए। एक अलग कमरे में, हम कुछ अन्य बंदियों के साथ अपने स्थानांतरण का इंतज़ार कर रहे थे। शांत और संयमित फ्रांसीसी अधिकारियों से घिरे, हम चुपचाप, शांति से बैठे थे, उस आज़ादी में कदम रखने के लिए तैयार थे जिसका हमने इतने लंबे समय से सपना देखा था।
जब विमान के पहिए रोइसी के रनवे पर उतरे, तो मेरे अंदर एक अजीब सी गर्माहट फैल गई। अविश्वास, राहत और उस अवास्तविक एहसास का मिश्रण, जैसे मैं उस दुनिया में वापस आ गई हूँ जिसे मैं पहचानती तो थी... लेकिन अब पूरी तरह से उससे जुड़ी हुई नहीं थी। हम अभी भी अपनी जगह पर जमे बैठे थे, तभी एक अधिकारी ने हमारी ओर मुड़कर शांत स्वर में कहा, "पेरिस में आपका स्वागत है, सज्जनों।"
मार्को और मैंने एक-दूसरे को देखा। कहने को कुछ नहीं था। हमारी आँखों ने ही सब कुछ कह दिया था। हम वापस आ गए थे। फ्रांस में। सचमुच।
बाकी सब लोग पहले ही उतर चुके थे। हम सबसे आखिर में निकले, चुपचाप गलियारे से होते हुए ले जाए गए। न हथकड़ी, न ज़बरदस्ती, लेकिन फिर भी एक अदृश्य तनाव मौजूद था—एक तरह की गंभीरता, एक शांत समझ कि हम सिर्फ़ यात्री नहीं थे। हम ऐसी जगह से लौट रहे थे जिसकी कल्पना भी ज़्यादातर लोग नहीं कर सकते थे।
जैसे ही हम विमान से उतरे, हवा ने हमें झकझोर दिया। ताज़ी, सूखी, ईंधन और डामर की गंध से भरी हुई। फ्रांस की हवा। मैंने इसे सालों से नहीं साँस लिया था। सुबह के 10 बज रहे थे, लेकिन रोशनी अलग सी लग रही थी—फीकी, धूसर... लेकिन अजीब तरह से सुकून देने वाली।

वे हमें चार्ल्स डी गॉल हवाई अड्डे के गुप्त पिछले गलियारों से ले गए, जो व्यस्त द्वारों और शुल्क-मुक्त दुकानों से बहुत दूर थे। उन गुमनाम दरवाजों के पीछे एक अलग ही हवाई अड्डा था, वह हवाई अड्डा जहाँ निर्वासन, स्वदेश वापसी और चुपचाप वापसी होती थी। अंत में हम सीमा पुलिस के अधिकार क्षेत्र में एक छोटे से कमरे में पहुँचे।
“यहाँ बैठ जाइए। हम बोबिग्नी के लिए वैन का इंतजार कर रहे हैं,” एक अधिकारी ने अपने फोन में स्क्रॉल करते हुए कहा।
कमरा शांत था। कुछ अन्य बंदी अपने-अपने हिरासत केंद्रों में स्थानांतरित होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। कुछ चुपचाप बैठे थे। कुछ दीवारों से टिके हुए थे, उनकी निगाहें कहीं टिकी हुई थीं। वातावरण शत्रुतापूर्ण नहीं था। बस... जमा हुआ सा। रुका हुआ सा।
पुलिस ने हमें थोड़ी जगह दी। मार्को और मैं आपस में फुसफुसाते हुए बातें कर रहे थे और ऊपर लगे फ्लैट स्क्रीन पर खबरें देख रहे थे। बस एक टीवी, एक साफ बेंच, तेज रोशनी—ये सब कुछ अवास्तविक सा लग रहा था। एक घंटे बाद, वे हमारे बैग लेकर आए—जो कुछ बचा था। मेरा गत्ते का डिब्बा किताबों और नोटबुकों से भरा था। मार्को के पास एक छोटा सा बैग था। मैंने अपने डिब्बे को घूरते हुए बुदबुदाया, "चार साल की जिंदगी। एक डिब्बे में।"
मार्को मुस्कुराया। "या फिर यह पता लगाने के लिए चार साल कि वास्तव में क्या मायने रखता है।"
टर्मिनल से बाहर निकलते ही ठंडी हवा मेरे शरीर को चुभ गई। मैंने पुराना ट्रैकसूट पहना हुआ था, जो बिल्कुल भी गर्म नहीं था, लेकिन मुझे इसकी परवाह नहीं थी। मेरे हाथ कांप रहे थे—ठंड से नहीं, बल्कि खुशी से। हवा में पुनर्जन्म की महक थी। धुले कपड़ों, डीजल और बारिश की महक। एक ऐसी महक जिसे मैं भूल चुका था, लेकिन जिसने मुझे तुरंत बचपन की याद दिला दी।
कुछ ही देर बाद एक वैन आकर रुकी। बिल्कुल सादी। उस पर कोई निशान नहीं थे। दो जेल अधिकारी बाहर निकले और फ्रांसीसी पुलिस से कुछ देर बात की। उनमें से एक ने मुझसे हाथ मिलाया।
“शुभकामनाएं। और इससे भी महत्वपूर्ण बात... आपका जीवन मंगलमय हो।” “धन्यवाद। सचमुच।”
मैं उसका चेहरा कभी नहीं भूलूंगा। वह खामोश सम्मान। मानो वह समझ गया हो कि हम सिर्फ एक जेल नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को पीछे छोड़ रहे हैं।

बोबिग्नी तक का सफर शांत था। मैं पीछे बैठा, खिड़की से धुंधली होती हुई जानी-पहचानी सड़कों को देखता रहा। एक अजीब सी उदासी से मेरा सीना कस गया।
साइनबोर्ड, राजमार्ग, इमारतें... सब कुछ एक ही समय में परिचित और दूर का सा लग रहा था, मानो किसी ऐसे जीवन की अधूरी यादें हों जिसके बारे में मुझे यकीन नहीं था कि वह अब भी मेरा ही है।
जब हम बोबिग्नी स्थित अदालत पहुंचे, तो हकीकत ने हमें ज़ोरदार झटका दिया।
धूसर इमारत। ठंड। कोई नहीं। हमें लोहे की सलाखों वाले एक हिरासत कक्ष में ले जाया गया, फिर अलग कर दिया गया। मार्को को दूसरी कोठरी में ले जाया गया। मेरी तलाशी ली गई। उन्होंने मेरे जूतों के फीते और मेरा थोड़ा-बहुत सामान ले लिया।
उन्होंने मुझे एक गंदे, तंग कमरे में डाल दिया—जो चार वर्ग मीटर से भी छोटा था—जहाँ पुराने पेशाब की बदबू आ रही थी और हवा आने-जाने का कोई इंतजाम नहीं था। मैं जम गया। थाईलैंड में भी मैंने इससे बदतर हालत शायद ही कभी देखी हो। दीवार से एक धातु की बेंच लगी हुई थी। उस पर एक अठारह साल का लड़का बैठा था, जो बिल्कुल खोया हुआ सा लग रहा था।
“तुम किसलिए अंदर हो?” उसने पूछा।
“थाईलैंड की जेल में चार साल बिताए। अभी हाल ही में वापस स्थानांतरित हुआ हूँ।”
वह अचंभित होकर मेरी ओर घूरने लगा।
“सच में? थाईलैंड? मतलब... फिल्मों में जैसा होता है?”
मैं मुस्कुराया। उसने नज़रें नीचे कर लीं।
मैंने तो अभी-अभी एक फोन चुराया है…
हमने कुछ शब्द कहे, लेकिन ज्यादातर चुपचाप बैठे रहे। दो घंटे बाद, उसे रिहा कर दिया गया। मैं वहीं रुका रहा। मैं ठंडी बेंच पर लेट गया, मेरी आँखें टूटी हुई छत पर टिकी थीं, मैं अपने परिवार, अपनी आज़ादी की कल्पना करके इस अंतहीन प्रतीक्षा से बचने की कोशिश कर रहा था—अब वह इतनी करीब थी कि मैं उसे लगभग छू सकता था।
शाम करीब 7 बजे एक पुलिस अधिकारी मुझे लेने आया। गलियारे में एक महिला इंतजार कर रही थी। काले बाल, तेज आंखें, काले रंग का चोला पहने हुए।
“हैलो महोदय। मेरे साथ आइए। मैं आपका वकील हूँ।”
हम एक छोटे से कमरे में दाखिल हुए। वह बैठ गई और अपने सामने एक फाइल रख ली।

“मैं महीनों से आपके मामले पर काम कर रहा हूँ। मैंने आपकी वापसी की रिपोर्ट तैयार कर ली है। हम आपको जल्द से जल्द रिहा कराने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे।”
वह शांत स्वर में बोली, लेकिन उसके शब्दों में दृढ़ निश्चय झलक रहा था। उसके शब्द किसी गहरे घाव पर मरहम की तरह लगे। फिर, बिना कुछ कहे, उसने मुझे अपना फोन थमा दिया।
बड़े ही शांत और उदार भाव से उन्होंने मुझे अपना फोन थमा दिया—एकांत का एक दुर्लभ और पवित्र क्षण प्रदान करते हुए: मेरी माँ का एक वॉइस मैसेज। उनकी जानी-पहचानी, प्रेम और चिंता से भरी आवाज़ को दोबारा सुनकर मेरा दिल खुशी और दुख के मिले-जुले भावों से भर गया।
यह उसकी आवाज़ थी। उसकी असली आवाज़। नाज़ुक। कांपती हुई। "मेरे बेटे... तुम आखिरकार घर आ गए। मुझे तुम पर बहुत गर्व है। मज़बूत रहो। मैं तुमसे प्यार करती हूँ।"
मेरी आंखों से एक आंसू बह निकला, और मैंने उसे पोंछा नहीं।
फिर उसने शांत भाव से, लेकिन दृढ़ता से समझाया कि विलेपिंटे—वह जेल जो आम तौर पर स्वदेश लौटे कैदियों के लिए निर्धारित है—में मरम्मत का काम चल रहा है। नए कैदियों के लिए यह अस्थायी रूप से बंद है। यह बहुत दुख की बात थी, क्योंकि विलेपिंटे को एक सुरक्षित ठिकाना माना जाता था। एक ऐसी जगह जहाँ विदेश से लौटने वाले लोग कुछ पल के लिए चैन की साँस ले सकते थे, उनका आकलन किया जा सकता था, और उनके साथ इंसानों जैसा व्यवहार किया जा सकता था। माना जाता था कि वहाँ ज़्यादा समझदारी और इंसानियत है। ऐसी जगह जो हम जैसे लोगों के लिए ही बनी है।
लेकिन नहीं। यह फ्लेरी-मेरोसिस होगा।
फ्लेरी। यह नाम ही मेरे किशोरावस्था के दौरान एक मंडराते खतरे की तरह गूंजता रहा। एक कुख्यात शब्द जो रैप गीतों में, पूर्व कैदियों की कहानियों में, दंगों और लॉकडाउन की खबरों में सुनाई देता था। यह भय का भार लिए घूमता था। फ्रांस की सबसे कठोर जेल व्यवस्था का प्रतीक। कंक्रीट का एक दानव।
यूरोप की सबसे बड़ी जेल।
जब उसने यह कहा, तो मैं कुछ नहीं बोला। मैंने बस सामान्य से थोड़ा अधिक जोर से निगल लिया।

उस बैठक के तुरंत बाद, मुझे अभियोक्ता का बुलावा आया। यह सब वहीं हुआ, हिरासत कक्षों के पास एक धुंधले गलियारे में खड़े-खड़े—अचानक, बिना किसी औपचारिकता के। उन्होंने मुझे औपचारिक रूप से हिरासत आदेश के बारे में बताया, मेरे अधिकारों, आगे क्या होगा, और प्रक्रिया के बारे में समझाया।
मुझे आधी बातें भी समझ नहीं आईं। सब कुछ बहुत ही प्रशासनिक और नीरस था। और फिर भी, भावनाओं के एक अजीब से उफान में, मैंने उन्हें धन्यवाद दिया। पूरे स्नेह के साथ।
वह मेरी तरफ देखकर अचंभित हो गया। शायद चिंतित भी। मुझे नहीं लगता कि उससे पहले किसी ने उसे उस क्षण में "धन्यवाद" कहा था। लेकिन मेरे मन में, यह स्वतंत्रता की राह पर एक और कदम बढ़ाने जैसा था। सब कुछ अधिक वास्तविक लगने लगा।
मैं वापस कोठरी में चला गया। उसी रात, लगभग 1 बजे, मार्को ने पूछा कि क्या उसे मेरे साथ कमरे में लाया जा सकता है। वे मान गए। अब हम तीन लोग उस छोटे से कमरे में ठसाठस भरे हुए थे। एक पतला गद्दा। एक बेंच। मैंने गद्दा मार्को को दे दिया। मैं ज़मीन पर लेट गया।
जब वह शामिल हुआ, तो मैंने उससे धीरे से कहा, "भाई... हम फ्लेरी जा रहे हैं।" उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। "क्या तुम सच कह रहे हो? फ्लेरी? धिक्कार है... उष्णकटिबंधीय दुःस्वप्न से सीधे शहरी दुःस्वप्न में आ गए।"
हम हँसे। घबराहट भरी, खोखली हँसी। लेकिन सच्ची हँसी। क्योंकि अंदर ही अंदर हम जानते थे कि एक अलग तरह का नरक हमारा इंतजार कर रहा है—भले ही वह फ्रांस में ही क्यों न हो।
"मैं कसम खाता हूँ, यार, विलेपिंटे बेहतर होता। लोग कहते हैं कि वह ज़्यादा व्यवस्थित है, और वहाँ से लोगों को वापस लाना आसान है।"
“हाँ, लेकिन चलो... हम हालात के हिसाब से ढल जाएँगे। हम यह कर लेंगे।”
और सच तो यह था कि हम किसी भी चीज़ के लिए तैयार थे। हम थाईलैंड में बच निकले थे। चूहे, त्वचा से चिपकी रहने वाली भीषण गर्मी, गंदगी, बेतुके नियम, और अपने परिवार को फिर कभी देखे बिना मरने का डर। इसलिए फ्लेरी, चाहे उसकी कैसी भी प्रतिष्ठा हो, हमें डरा नहीं पाया। सच में नहीं। यह फ्रांस था। हमारा देश। और कहानियों, घिसी-पिटी बातों के बावजूद, हम विश्वास करना चाहते थे। सब कुछ अभी भी अवास्तविक सा लग रहा था—जैसे मेरा शरीर यहाँ, इस

अदालत की कोठरी में था, लेकिन मेरा दिमाग अभी भी बैंकॉक और रनवे के बीच कहीं मंडरा रहा था।
लेकिन मैं यहाँ था। फ्रांस में। और यही अपने आप में एक जीत थी।
सुबह 4 बजे, एक गार्ड आया और हमें जगाया। जेल से स्थानांतरित करने का समय हो गया था। हमें जल्दी से हथकड़ी पहनाई गई और एक वैन में बिठाया गया, जिसमें छोटे-छोटे अलग-अलग पिंजरे बने हुए थे—जो लॉकर से मुश्किल से ही बड़े थे। मैं अपने पिंजरे में घुस गया—तंग था, लेकिन उस गंदी हवालात के बाद अजीब तरह से सुकून देने वाला था। मार्को ने मुझे एक अतिरिक्त स्वेटर दिया। तापमान बहुत गिर गया था।
वैन झटके से आगे बढ़ी और रात के अंधेरे में रफ्तार पकड़ ली। समय का पता ही नहीं चला। मानो अनंत सा लग रहा था। तभी एक घोषणा हुई: योजना में बदलाव हुआ है—विलेपिंटे अब उपलब्ध नहीं है। अब हमें फ्लेरी-मेरोसिस जाना था।
मेरे शरीर में सिहरन दौड़ गई। मैंने फ्लेरी के बारे में सुना था। हिंसा, तनाव, लगातार दबाव। फिर भी, मैंने मन ही मन खुद से कहा: थाईलैंड के बाद, मैं सब कुछ संभाल सकती हूँ।
जब हम पहुँचे, तो पाँच जेल गार्डों ने हमारा स्वागत किया। ठंडे, कुशल, बिना किसी आत्मीयता के—लेकिन अजीब बात यह थी कि उनकी पेशेवरता ने एक तरह का सुकून दिया। फ्रांसीसी व्यवस्था का वह भावहीन, नौकरशाही वाला चेहरा... लगभग आश्वस्त करने वाला लगा।
हम वैन बदलने के लिए बाहर निकले और तुरंत ही मुझे सुबह की तेज़ ठंड का सामना करना पड़ा। मैंने देखा कि मेरी साँसें मेरे सामने धुंध में बदल रही हैं। चेहरे पर चुभती ठंड अजीब लेकिन सुखद लग रही थी। जैसे मेरे अंदर कुछ पिघल गया हो। मैं घर आ गया था। यही तो फ्रांस था।
फ्लेरी-मेरोसिस सुरक्षा द्वार पर हमें अपना सारा सामान कन्वेयर बेल्ट पर रखने को कहा गया। किताबें, कपड़े, दस्तावेज़—यहाँ तक कि तस्वीरें भी। एक गार्ड ने थाईलैंड से लाई मेरी नोटबुक के पन्ने पलटे। अंदर: कुछ पहचान पत्र की तस्वीरें, प्रमाण पत्रों के टुकड़े, मेरे द्वारा बनाए गए रेखाचित्र… मेरी पृष्ठभूमि का छोटा लेकिन ठोस प्रमाण।
“क्या तुम सचमुच वहाँ रहते थे?” उसने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। “हाँ। चार साल। क्लॉन्ग प्रेम।” “अरे यार... खैर, यहाँ तुम्हारा स्वागत है। यह क्लब मेड तो नहीं है, लेकिन नरक भी नहीं है,” उसने हल्की मुस्कान के साथ कहा।

तलाशी पूरी तरह से ली गई। दखलंदाज़ी भरी। नग्न अवस्था में। बाहें फैलाकर। झुककर। वही पुरानी दिनचर्या। देश कोई भी हो, अपमान एक जैसा ही होता था। फिर कागजी कार्रवाई शुरू हुई: नाम, आपातकालीन संपर्क, स्वास्थ्य स्थिति, वर्तमान दवाएं। सब कुछ नीरस और मशीनी था—लेकिन इस बार कुछ अलग सा महसूस हुआ। थाईलैंड के विपरीत, यहाँ... मुझे लगा कि मेरा अस्तित्व है।
उस थका देने वाली प्रक्रिया के बाद, हमें हमारा सामान वापस सौंप दिया गया और प्रशासनिक प्रपत्रों का एक ढेर दे दिया गया। एक नीरस आवाज़ ने प्रश्नों को एक चेकलिस्ट की तरह दोहराया।
“क्या फ्रांस में आपका कोई परिवार है? क्या आपके पास कोई पैसा है? क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो आपसे मिलने आ सकता है?”
प्रत्येक उत्तर को सावधानीपूर्वक नोट किया गया, और इससे एक अजीब सी अनुभूति हुई जैसे कि मुझे एक ऐसी प्रणाली में फिर से एकीकृत किया जा रहा हो जो परिचित होने के साथ-साथ पराई भी महसूस हो रही थी।
सबसे चौंकाने वाली बात तो राशन का बिल था। हम आने से पहले अपने थाई बात को यूरो में नहीं बदल पाए थे, इसलिए हमारे पास बिल्कुल पैसे नहीं थे। लेकिन फ्रांस ने प्रशासनिक उदारता दिखाते हुए हममें से हर एक को 20 यूरो दिए। यह किसी खजाने से कम नहीं लगा। इससे कॉफी, साबुन और कुछ ज़रूरी सामान खरीदने के लिए काफी था। मैंने एक पल के लिए सोचा कि केतली लूँ या नहीं, लेकिन फिर ज़रूरी सामान ही लेने का फैसला किया।
फिर, अप्रत्याशित रूप से, देर रात होने के बावजूद गरमागरम भोजन परोसा गया। उसे देखते ही मेरी आँखें चमक उठीं: एक ताज़ा बैगेट का आधा टुकड़ा। गर्म, कुरकुरी फ्रेंच ब्रेड की खुशबू ने मेरे अंदर कुछ गहरा और सहज भाव जगा दिया। भावनाओं से अभिभूत होकर, मैंने चुपचाप एक गार्ड से पूछा,
"माफ़ कीजिए... क्या आपको थोड़ी और रोटी मिल सकती है?"
उनकी सौम्य, समझदारी भरी मुस्कान ने मुझे शब्दों में बयान न कर पाने की गहराई से छू लिया। उन्होंने मुझे एक साधारण से इशारे के साथ दूसरी ट्रे थमा दी,
“लो। लगता है तुम्हें इसकी जरूरत पड़ सकती है।”
पहरेदारों ने हमें एक अजीब सी कोमलता से देखा, मानो वे किसी तरह हमारे साथ हुई घटनाओं की गहराई को समझते हों।

फिर मुझे एक बिल्कुल नई कोठरी में ले जाया गया, जो नए कैदियों के लिए उनकी पहली रात के लिए आरक्षित थी। दीवारों पर नया रंग किया हुआ था। एक फ्लैट स्क्रीन टीवी था। एक असली शॉवर था। एक असली बिस्तर पर साफ चादरें थीं। यह सब कुछ अवास्तविक सा लग रहा था। आराम की इस लगभग भूली हुई अनुभूति ने मुझे अभिभूत कर दिया—जो जेल के अंदर अजीब तरह से बेमेल लग रही थी।
अंदर जाने से पहले, मार्को और मैंने एक-दूसरे को आश्वस्त करने वाली नजर से देखा।
“शुभ रात्रि, मार्को,” मैंने धीरे से कहा। “अच्छी नींद लो, दोस्त,” उसने थकी हुई लेकिन सच्ची आवाज़ में जवाब दिया।
मैंने एक लंबा, ताजगी भरा स्नान किया। ठंडे पानी ने यात्रा की सारी थकान दूर कर दी, कई दिनों की गंदगी और तनाव को धो डाला। फिर मैं बिस्तर पर बैठ गया, अपना भोजन जल्दी-जल्दी खाया और टीवी को बड़े चाव से देखता रहा। मैंने पूरे दस मिनट तक चैनल बदलते हुए बिताए—जब चाहे चैनल बदलने की आज़ादी मुझे बेहद लुभा रही थी।
सुबह 7:30 बजे एक गार्ड ने मुझे धीरे से जगाया।
“नाश्ता, महोदय। हॉट चॉकलेट या चाय?”
"एक हॉट चॉकलेट, कृपया," मैंने नरम लहजे से आश्चर्यचकित होकर उठते हुए कहा। कुछ मिनट बाद मार्को भी मेरे साथ आ गया, और हम दोनों को मेडिकल चेकअप के लिए ले जाया गया। डॉक्टरों ने नरमी से बात की और हमारे स्वास्थ्य की अच्छी तरह से जाँच की। उन्होंने हमारी कहानी को ध्यान से सुना, भले ही संक्षेप में ही सही। सालों में पहली बार, हमारे साथ इंसानों जैसा व्यवहार किया जा रहा था—सिर्फ़ संख्याओं जैसा नहीं।
यह जांच थाईलैंड में हमारे अनुभव से कहीं अधिक गहन थी—रक्तचाप, ईसीजी, आंखों की जांच, रक्त के नमूने। फिर घोषणा हुई: हमें उस सुविधा के एक वरिष्ठ अधिकारी के साथ प्रशासनिक बैठक करनी होगी। जिस तरह से यह बात कही गई, उससे इसमें एक अजीब तरह का औपचारिक, लगभग अशुभ सा स्वर आ गया।
हमें ऊपर एक रोशन लेकिन सादे ढंग से सजाए गए दफ्तर में ले जाया गया। खिड़कियों पर सलाखें थीं, लेकिन दफ्तर साफ-सुथरा था। अव्यवस्थित मेज के पीछे पचास साल का एक आदमी बैठा था, सिर मुंडा हुआ, आँखें तीखी। एक और अधिकारी कोने में चुपचाप हाथ बाँधे खड़ा था।

मुझे और मार्को को एक-एक करके बुलाया गया। जब मेरी बारी आई, तो मुझे बैठने का इशारा किया गया—लेकिन कुर्सी को जानबूझकर डेस्क से लगभग पाँच फीट दूर रखा गया था, मानो एक प्रतीकात्मक दूरी हो, पदानुक्रम का एक सूक्ष्म संकेत। उनकी आवाज़ शांत थी, लेकिन उसमें कुछ छिपा हुआ था। यह स्वागत नहीं था। यह एक परीक्षा थी।
“तो… श्री मारुइन, आप यहाँ किसलिए आए हैं?” उन्होंने अपने सामने रखी एक फाइल पर नज़र डालते हुए पूछा।
मैंने तथ्यों पर कायम रहते हुए, शांत भाव से मामले को समझाया।
"और आपको लगता है कि यह एक समझदारी भरा कदम था?" उसने बिना ऊपर देखे पूछा।
“नहीं, बिल्कुल नहीं,” मैंने अपनी आवाज को स्थिर रखते हुए उत्तर दिया।
"तो आप मानते हैं कि यह मूर्खतापूर्ण था?"
“मुझे लगता है कि मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। विदेश की जेल में चार साल बिताने से मुझे किसी भी व्याख्यान से कहीं अधिक ज्ञान प्राप्त हुआ। यह एक कठिन सबक था, लेकिन मैंने इसे दिल से स्वीकार कर लिया है।”
वह रुका। अब उसने मुझे थोड़ी देर तक देखा, लेकिन इस बार उसका संदेह कम था। वह लगातार सवाल पूछता रहा, अब और भी विश्लेषणात्मक तरीके से। वह मुझे समझने की कोशिश कर रहा था। क्या मैं मुसीबत खड़ी करने वाला व्यक्ति था? या नियमों का पालन करने वाला? उसने मेरी मानसिकता, मेरे दृष्टिकोण और मेरे सामने आई चुनौतियों के बारे में पूछा। मार्को की बारी आने पर उसे भी वैसा ही जवाब मिला। और सच कहूँ तो, भले ही कुछ पल ऐसे लगे हों जब लगा हो कि वह हमें फंसाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन यह लगभग एक दार्शनिक बहस जैसा था— अपराधबोध, जवाबदेही और मुक्ति के विचार पर एक तरह की मौखिक परीक्षा। “अच्छा… आपको बिल्डिंग नंबर 1 में जाना होगा,” उसने आखिरकार कहा।
मैंने पूछा, "क्या वहां शांति है?"
"अधिकांश इमारतों की तुलना में शांत। फिलहाल बिल्डिंग 5 से दूर रहें। आप अभी इसके लिए तैयार नहीं हैं।"
संदेश स्पष्ट था: यहाँ सब कुछ इस बात पर निर्भर करता था कि आप कहाँ रहते हैं। और भवन संख्या 1, संयोगवश या रणनीति से, बेहतर भवनों में से एक था। एक संक्रमणकालीन स्थान। एक प्रकार का पुनर्एकीकरण बफर ज़ोन।
हम बिना कुछ ज्यादा बोले, लेकिन मन में एक हल्की सी राहत लिए दफ्तर से निकल गए। हमारा अपमान नहीं हुआ था, न ही हमें नीचा दिखाया गया था। हमारी परीक्षा

हुई थी—और शायद, बस शायद, उन्होंने हममें कुछ देखा हो। थोड़ी सी स्पष्टता। थोड़ी सी बची हुई हिम्मत।
पहले दिन के हिसाब से यह उतना बुरा नहीं था।
वरिष्ठ अधिकारी से हमारी मुलाकात के बाद—जो एक दोस्ताना बातचीत के बहाने मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन जैसी थी—एक गार्ड हमें हमारे नए कार्यस्थल, भवन संख्या 1 तक ले जाने के लिए आया। हम पैदल नहीं गए—फ्लेरी-मेरोसिस में यह जगह इतनी विशाल है कि इमारतों के बीच आवागमन अक्सर वैन द्वारा किया जाता है। इससे ही आपको इस जगह के आकार का अंदाजा लग जाएगा। कंक्रीट, गलियारों और ऊंची दीवारों का एक विशाल जाल।
हम वैन में चुपचाप एक-दूसरे के बगल में बैठे थे, सलाखों वाली खिड़की से बाहर धूसर इमारतों, धातु की सीढ़ियों और निगरानी मीनारों की अंतहीन कतार को घूर रहे थे। वह जगह विशाल और लगभग अमानवीय लग रही थी। हर मोड़ एक नई दुनिया जैसा लग रहा था—या तो खोजबीन करने के लिए, या डर पैदा करने के लिए। हम खुद को छोटा महसूस कर रहे थे, एक ऐसे जेल शहर में समा गए थे जहाँ व्यक्ति व्यवस्था में विलीन हो जाता है।
जब हम बिल्डिंग नंबर 1 के सामने पहुँचे, तो हम वैन से बाहर निकले। प्रवेश द्वार बड़ा था, लेकिन साफ-सुथरा था, जो एक सुरक्षा द्वार से होते हुए दूसरे सुरक्षा द्वार तक जाता था। तीस वर्ष की आयु का एक अपेक्षाकृत युवा गार्ड हमारा इंतजार कर रहा था। उसका चेहरा भावहीन था और आवाज स्थिर थी।
"स्वागत है सज्जनों। मेरे साथ आइए। मैं आपको समझाता हूँ कि यह सब कैसे काम करता है।"
वह हमें एक केंद्रीय केंद्र में ले गया—एक गोलाकार नियंत्रण बिंदु जहाँ से कई गलियारे अलग-अलग भागों में बँटे हुए थे। प्रत्येक भाग में कई मंजिलें थीं जहाँ घुमावदार धातु की सीढ़ियों से पहुँचा जा सकता था। दाईं ओर, हमें मुख्य रसोई क्षेत्र दिखाई दे रहा था—शोरगुल भरा हुआ, जहाँ सहायक कैदी गाड़ियाँ लाद रहे थे—और आगे बढ़ने पर, एक भारी लोहे का दरवाजा आँगन की ओर जाता था।
चलते हुए उन्होंने कहा, "यह जगह शांत है। आप दाखिले वाले फ्लोर पर हैं। आपको यहां एक या दो हफ्ते रहना होगा—आराम से घुलमिलने, सामाजिक सेवा कर्मियों और पुनर्वास कर्मचारियों से मिलने का समय मिलेगा... फिर आपकी प्रोफाइल के आधार पर आपको कहीं और नियुक्त कर दिया जाएगा।"

उनका लहजा दृढ़ था लेकिन सम्मानजनक भी। थाईलैंड के बाद यह बात अपने आप में अजीब लग रही थी—जहां गार्ड का हर शब्द एक दहाड़, एक आदेश या एक धमकी जैसा होता था।
हम सीढ़ियाँ चढ़कर एक कोठरी के सामने रुके। गार्ड ने एक बड़ी चाबी से उसे खोला। कमरा सादा था, लेकिन उस पर नया-नया रंग किया हुआ था—हल्का हरा रंग जो देखने में बहुत ही खुशनुमा लग रहा था। साफ़-सुथरा। एक बंक बेड, चूल्हे और मिनी फ्रिज वाला एक छोटा सा किचन कॉर्नर, एक फिक्स टेबल और पर्दे के पीछे एक अलग शॉवर।
"ये आप दोनों हैं," उसने कहा। "आराम से बैठ जाइए।"
हमने अपना थोड़ा-बहुत सामान वहीं छोड़ दिया। मेरी किताबें, मार्को के कुछ कपड़े। यह आज़ादी नहीं थी—अभी तो नहीं—लेकिन जो कुछ हमने झेला था, उसके बाद वह कमरा, वे साफ़ दीवारें, वह शांति... ऐसा लग रहा था जैसे वह अपने आप में एक अलग ही दुनिया हो।
बिल्डिंग 1 में पहुँचने पर एक अजीब सी शांति का अनुभव हुआ। थाईलैंड में वर्षों के भय और यहाँ एक अधिक स्थिर जीवन की उम्मीद के बीच एक सुखद अंत। सामान खोलने के बाद, हमें लगभग सहजता से आंगन में अपनी पहली सैर के लिए आमंत्रित किया गया।
उसी विनम्र गार्ड ने हमें नीचे वाले द्वार की ओर इशारा किया। एक बड़ी जाली अपने आप खुल गई, और फ्रांस लौटने के बाद पहली बार हम बाहर निकले। हवा ताज़ी थी। हल्की हवा से दीवारों के उस पार दिखाई देने वाले कुछ पेड़ों से गिरे हुए पत्ते हिल रहे थे।
मैंने आसमान की ओर देखा—वही जाना-पहचाना पेरिस का धूसर आसमान। मैंने एक पल के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं। यह उन दुर्लभ पलों में से एक था जब आपका दिमाग बिल्कुल खाली हो जाता है। बस रोशनी। बस हवा। बस हवा का एहसास। आज़ादी, भले ही अभी भी पिंजरे में बंद हो।
हम लगभग तीस लोग आँगन में इधर-उधर घूम रहे थे, सभी नए आए हुए थे। लोग सहज रूप से समूह बना रहे थे। एक-दूसरे को देख रहे थे, दबी आवाज़ में बातें कर रहे थे—लेकिन कुछ भी शत्रुतापूर्ण नहीं था। यह आश्चर्यजनक रूप से शांत था। मुझे चेतावनियाँ, फ़िल्में, घिसी-पिटी बातें याद आ गईं। लेकिन नहीं, यह अराजकता नहीं थी। कोई भी दिखावा नहीं कर रहा था। यह लगभग… सभ्य जैसा लग रहा था।

मार्सिले से एक आदमी आया। भारी कदमों वाला, भारी लहजे वाला। वह भी अभी-अभी आया था। उसने थोड़ी कड़वाहट से बताया कि नशे में धुत होकर पत्नी को पीटने के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया था। वह शर्मिंदा लग रहा था, लेकिन फिर भी बेचैन था—जैसे कोई कुत्ता जो हद से ज़्यादा उकसाए जाने पर काट सकता है। हमने कुछ बातें कीं। फिर वह चला गया। मैंने उसे जाते हुए देखा—एक और टूटा हुआ इंसान, अपने ही घावों को समझने की कोशिश कर रहा था।
तभी मुझे फ़ोन कार्ड याद आया। दाखिले के सामान के साथ हमें एक प्रीपेड कॉलिंग कार्ड भी दिया गया था—दो यूरो का क्रेडिट। बस इतना ही काफी था।
मेरी माँ की आवाज़ सुनने के लिए काफी।
मैं आंगन के कोने में लगे पेफोन के पास गया। उसका धूसर प्लास्टिक का रिसीवर और कुंडलित तार किसी पुराने जमाने की चीज जैसा लग रहा था। उसका नंबर डायल करते समय मेरा हाथ थोड़ा कांप रहा था।
"नमस्ते?"
"मम्मी... ये मैं हूँ। मैंने कर दिखाया।"
सन्नाटा छा गया। फिर एक गहरी सांस सुनाई दी। फिर उसकी आवाज—कांपती हुई, भावनाओं से भरी हुई।
"हे भगवान... क्या तुम ठीक हो? क्या तुम आज़ाद हो? क्या तुम सचमुच ज़िंदा हो, मेरे बेटे?"
मेरी आँखों में आँसू आ गए। मैंने जल्दी से उड़ान, आगमन और हमारे साथ हुए बर्ताव के बारे में बताने की कोशिश की। फोन के ज़रिए मैं उसकी खुशी महसूस कर सकती थी, उसके सीने का तनाव आखिरकार कम हो रहा था।
"तुम मुझे फिर से फोन करोगे ना? मुझे अपडेट देते रहोगे? मैं मिलने के अधिकार का अनुरोध करने जा रहा हूँ। मैं हर संभव कोशिश करूँगा, सब कुछ!" "मुझे पता है, माँ... मुझे पता है। जूलिया को बता दो कि मैं यहाँ हूँ। उसे बता दो कि मैं समझना चाहती हूँ... मैं बात करना चाहती हूँ।"
लेकिन क्रेडिट खत्म हो रहा था। एक स्वचालित आवाज ने मुझे चेतावनी दी। "मेरे पास बस कुछ ही सेकंड बचे हैं। माँ, मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ। जल्द ही बात करेंगे।"
"मैं भी तुमसे प्यार करती हूँ... मेरे बेटे..."
फोन कट गया। उसके बाद जो सन्नाटा छाया, वह गहरा था। मैंने कुछ सेकंड तक रिसीवर पकड़े रखा, फिर धीरे से रख दिया। सालों में यह पहली बार था जब मैंने

अपनी माँ से खुलकर बात की थी—कोई निगरानी नहीं, कोई शीशा नहीं, कोई गार्ड मेरी गर्दन पर सवार नहीं।
मुझे मार्को फिर मिल गया। वह आंगन में इधर-उधर टहल रहा था, हाथ जेब में डाले, सोच में डूबा हुआ। मैंने मुस्कुरा दिया। उसने एक शब्द भी नहीं कहा, बस सिर हिलाया।
"इससे मदद मिली, है ना?"
"हाँ... जितना मैं समझा सकता हूँ उससे कहीं अधिक।"
हम थोड़ी देर और चलते रहे। फिर पहरेदारों ने हमें अंदर बुलाया। वापस हमारी कोठरी में। वही साफ़-सुथरा, सेब जैसे हरे रंग का कमरा। अभी भी ताज़ा पेंट की महक आ रही थी। छोटी रसोई, छोटा फ्रिज, बंक बेड, और पर्दे से ढका हुआ शॉवर।
हमने अपना सामान नीचे रख दिया। जो थोड़ा-बहुत हमारे पास था। मैंने अपनी किताबें मेज पर रख दीं। मार्को ने मुझे एक साफ स्वेटर उधार दिया—मुझे अभी तक स्टोर रूम से अपने कपड़े नहीं मिले थे।
दोपहर में, एक सहायक कैदी हमारे लिए हमारी थाली लेकर आया: गरमा गरम खाना, चिकन कॉर्डन ब्लू, पास्ता, एक मिठाई और रोटी का एक छोटा टुकड़ा। वह मुस्कुरा रहा था, मानो किसी कैफे में वेटर हो।
"पहला दिन? खाने का भरपूर आनंद लें, दोस्तों।"
"धन्यवाद, दोस्त," मार्को ने जवाब दिया।
हमने खामोशी से खाना खाया। हर निवाला अवास्तविक सा लग रहा था। खाना गरमागरम था। स्वादिष्ट था। असली था। खाने में कोई कीड़े-मकोड़े नहीं थे।
फफूंदी की बदबू भी नहीं थी।
"क्या तुम इस पर विश्वास कर सकते हो?" मैंने फुसफुसाते हुए कहा। "हम सचमुच खाना खा रहे हैं।"
"और हम इसके तुरंत बाद झपकी लेंगे," मार्को ने मुस्कुराते हुए कहा।
वो झपकी सालों में सबसे मीठी थी। बहुत लंबे समय बाद, मुझे सोने से डर नहीं लग रहा था। चाकू लगने का कोई डर नहीं। कोई अलार्म नहीं। अंधेरे में कोई चीख-पुकार नहीं। बस... शांति। बस नींद। जीने का अधिकार।
और जिस तरह से मैं जागा—हे भगवान! ऐसा लगा जैसे कोई सपना हो। एक असली बिस्तर। एक मुलायम गद्दा। एक साफ कंबल। खिड़की से आती हल्की हवा। ऐसी सुबह मैंने बहुत दिनों से नहीं देखी थी, मैं तो भूल ही गया था कि ऐसी सुबह भी

होती है। हवा में साफ धुले कपड़ों और आज़ादी की खुशबू थी। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं हवा में तैर रहा हूँ, जैसे समय थम गया हो और हमें फिर से सांस लेने का मौका मिल रहा हो।
मार्को ने भी उसी समय अपनी आँखें खोलीं जब मैंने खोलीं। उसने अपना सिर थोड़ा सा घुमाया, अभी भी आधी नींद में था, और मुझे एक हल्की सी मुस्कान दी। "भाई, क्या तुम अच्छे से सोए?"
मैंने सिर हिलाया। "कंक्रीट के फर्श से तो बेहतर है, लेकिन मुझे लगता है मेरी पीठ इससे सहमत नहीं है..."
हम सब खिलखिलाकर हंस पड़े। विडंबना यह थी कि हमारे शरीर कंक्रीट की कठोरता के इतने आदी हो चुके थे कि गद्दे का आराम हमें चुभ रहा था। लेकिन यह एक सुखद दर्द था। ऐसा दर्द जिसका मतलब था कि हम धीरे-धीरे एक मानवीय जीवन की ओर लौट रहे हैं।
"क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि वे लोग अभी वहाँ क्या कर रहे होंगे?" मार्को ने बुदबुदाते हुए कहा, उसकी निगाहें छत पर टिकी हुई थीं।
"वे शायद घंटों की गिनती कर रहे होंगे... बिल्कुल वैसे ही जैसे हम किया करते थे," मैंने धीमी आवाज़ में जवाब दिया, मेरा गला सूख रहा था।
हम वहाँ कुछ देर रुके, चुपचाप लेटे रहे, बातें करते रहे, बीते दिनों को याद करते रहे और सोचते रहे कि थाईलैंड में फंसे हमारे दोस्त क्या कर रहे होंगे। मुझे डैनी, मैथ्यू, बेन्सन, जीन-पॉल... उन सभी दोस्तों की याद आई जिन्हें हम पीछे छोड़ आए थे, जो अभी भी अपने आने का इंतज़ार कर रहे थे। मुझे उन्हें चिट्ठी लिखनी थी, और जल्द ही। मुझे उन्हें बताना था कि हम यहाँ पहुँच गए हैं, कि हम उन्हें भूले नहीं हैं।
मैंने मार्को से कहा, "मुझे कुछ लिफाफे और कागज चाहिए। मुझे उन लोगों को लिखना है, उन्हें बताना है कि सब कुछ ठीक रहा।"
“मैं भी,” उसने जवाब दिया। “मैं अपनी बहन को फोन करने जा रहा हूँ। उसने कहा था कि वह खाते में कुछ पैसे भेज देगी।”
हमें अपने पहले कमिसरी फॉर्म मिल गए थे, लेकिन हमारे पास पैसे कम थे। साबुन और कॉफी खरीदने के बाद, हमारे पास मुश्किल से कुछ यूरो ही बचे थे—ज्यादा कुछ खरीदने के लिए काफी नहीं। हमें पैसे ट्रांसफर होने का इंतजार करना पड़ा। शुक्र है, गार्डों ने बताया कि हर मंजिल पर पेफोन हैं, जिन्हें

मांगने पर इस्तेमाल किया जा सकता है। आपको बस एक गार्ड से पूछना था, और आप अपने परिवार को कॉल कर सकते थे।
दोपहर के करीब, हम अभी भी अपने बिस्तरों पर लेटे हुए थे और हर छोटी-बड़ी बात पर चर्चा करने लगे, जेल के उस अजीब से माहौल को अपने ऊपर हावी होने दे रहे थे—ऊब और हल्के तनाव का एक विचित्र मिश्रण। अचानक, खुली खिड़की से एक तेज़ आवाज़ आई, जिसने हमारी खामोशी तोड़ दी।
“अरे, नए लोग! तुम लोग वहाँ ठीक हो?”
आश्चर्यचकित होकर हमने एक-दूसरे को देखकर मुस्कुरा दिया। मार्को सहज रूप से बेहतर सुनने के लिए खिड़की के पास चला गया।
“हाँ, हम ठीक हैं। और आप?”
“सब ठीक है,” आवाज ने प्रसन्नता से जवाब दिया। “आप अभी-अभी अंदर आए हैं?” "हां, आज सुबह।"
वह आवाज़ हमारे ठीक ऊपर वाली कोठरी में बंद एक आदमी की थी। नए आने वालों का अभिवादन करने का यह उसका तरीका था, ताकि उस ठंडी और बेजान जगह में थोड़ा सा जुड़ाव पैदा हो सके। उसने तुरंत ही आश्चर्यजनक रूप से दयालुता से जवाब दिया:
“आप लोगों को कुछ चाहिए? शायद थोड़ा गर्म पानी?”
“जी हाँ,” मार्को ने उत्साह से जवाब दिया। “हम अभी कॉफी बनाने ही वाले थे, लेकिन हमारे पास केतली नहीं है। क्या आप हमारी मदद कर सकते हैं?”
"हिलो मत, दोस्तों। मैं तुम्हारे साथ हूँ।"
कुछ ही क्षणों बाद, हमने आश्चर्य से देखा कि उबलते पानी से भरी एक प्लास्टिक की बोतल एक अस्थायी रस्सी से बंधी हुई हमारी खिड़की के सामने नीचे उतारी जा रही है। बोतल उठाते हुए मैंने मार्को की ओर मुस्कुराया, इस सरल और उदार भाव से मैं बहुत प्रभावित हुआ। हमने तुरंत अपनी चिकोरी-फ्लेवर वाली कॉफी बनाई और मानवीय स्नेह के इस छोटे, अप्रत्याशित क्षण का आनंद लिया।
आवाज फिर से लौटी, उत्साह से भरी हुई:
“क्या तुम लोग कुछ पीना चाहते हो? थोड़ी सी गांजा?”
“नहीं, लेकिन धन्यवाद,” मैंने धीरे से हंसते हुए कहा। “हम ठीक हैं।”
“आप यहाँ कैसे आ गए?” उसने उत्सुकता से पूछा।
“हम थाईलैंड में थे। नकली नोटों के जुर्म में चार साल की सजा काटी। आप?”

कुछ देर का सन्नाटा छा गया। फिर आवाज वापस आई, आँखें चौड़ी और उत्साहित थीं:
“क्या आप सच कह रहे हैं? थाईलैंड? चार साल? यह तो पागलपन है!”
हमने कुछ मिनटों में उसे अपनी कहानी का संक्षिप्त सारांश दिया। वह मंत्रमुग्ध हो गया और बार-बार दोहराता रहा कि यह सब कितना अजीब लग रहा है। हमारे समाप्त होने से पहले ही उसने एक बार फिर कहा:
"सच में, अगर आपको किसी चीज की जरूरत हो, तो बस मुझे बता देना। मैं आपकी मदद करूंगा।"
मैं उत्सुकता से कैदियों के बीच सहयोग की उस चतुर व्यवस्था को देखता रहा— वे प्रसिद्ध "यो-यो" (एक खिड़की से दूसरी खिड़की तक लटकती डोरियाँ), जिनका इस्तेमाल भोजन, पेय पदार्थ, सिगरेट और यहाँ तक कि प्रतिबंधित सामान भेजने के लिए किया जाता था। यह एकजुटता पर आधारित एक पूरी भूमिगत अर्थव्यवस्था थी।
जैसे ही मैंने अपनी कॉफी खत्म की और उसकी गर्माहट का आनंद लिया, हमारी कोठरी का दरवाजा धीरे से खुला। एक गार्ड ने दोस्ताना मुस्कान के साथ अपना सिर अंदर डाला।
“दोपहर के समय बाहर घूमने चलते हैं, सज्जनों। आप तैयार हैं?”
मार्को और मैंने शांत आत्मविश्वास भरी नज़रों से एक-दूसरे को देखा। लोगों से मिलने का यह एक और मौका था, उस खोई हुई आज़ादी की अनूठी खुशबू को थोड़ा और महसूस करने का। हम खड़े हो गए, इस नई दुनिया को और अधिक जानने के लिए तैयार, एक सरल सच्चाई से आश्वस्त होकर: अब हम अकेले नहीं थे।
आंगन बिल्कुल अलग ही दुनिया थी। सचमुच।
जब कोठरी का दरवाजा खुला, तो गलियारे में पहले से ही पहरेदारों की एक कतार इंतज़ार कर रही थी। एक-एक करके कैदी एक-एक करके बाहर निकले। हर व्यक्ति की सरसरी तलाशी ली गई, जैसे हवाई अड्डे की सुरक्षा जांच हो रही हो, न कि पूरी तलाशी। यह अब एक नियमित प्रक्रिया बन चुकी थी। पहरेदार ने हमारी कमर और टांगों को छुआ, हमारी जेबें जाँचीं, और फिर हमें आगे जाने का इशारा किया। सीढ़ियाँ अंतहीन लग रही थीं। हम एक के बाद एक सीढ़ियाँ उतरते गए, जब तक कि हम एक मोटे धातु के दरवाजे तक नहीं पहुँच गए। जैसे ही वह खुला, हम बाहर निकल आए।

आंगन बहुत विशाल था। अचानक, हमारे ऊपर आसमान खुल गया। उस जगह की विशालता देखकर हम दंग रह गए। हम अब किसी तंग, घुटन भरे ब्लॉक में नहीं थे—हम एक ऐसे स्थान पर थे जो किसी शहर के चौक जैसा लग रहा था, जो मोटी दीवारों से घिरा हुआ था और जिसके ऊपर कांटेदार तार लगे थे। जालीदार बाड़ के पार, हमने— शायद हमेशा के लिए पहली बार—असली निगरानी मीनारें देखीं। वो काल्पनिक मीनारें नहीं जो फिल्मों में दिखाई देती हैं। असली मीनारें।
अंतर स्पष्ट था। थाईलैंड में, आंगन छोटे, अंधेरे और बहुत अधिक खंडित थे। टावर अदृश्य थे, मानो वे मौजूद तो थे लेकिन थे नहीं। यहाँ, सब कुछ खुला हुआ था। दिखाई दे रहा था। और रोशनी—यह हमारे लिए बहुत अच्छी थी।
पूरा आंगन चहल-पहल से भरा हुआ था। दर्जनों कैदी वहां मौजूद थे। कुछ टहल रहे थे, कुछ बातें कर रहे थे, कुछ धातु की छड़ों पर पुल-अप्स कर रहे थे। कुछ लोग धीरे-धीरे बाड़े के चारों ओर दौड़ रहे थे। हमने इतनी चहल-पहल की उम्मीद नहीं की थी।
और बहुत जल्दी ही हमने बातचीत शुरू कर दी। लोगों से मिलना-जुलना शुरू कर दिया।
ड्रग्स के मामले में जेल में बंद ब्राज़ीलियाई जॉनी सबसे पहले हमारे पास आया। बड़ी मुस्कान, सहज स्वभाव। हमारी तुरंत दोस्ती हो गई। उसके साथ लामिन, रायन और सेबेस्टियन भी थे—ये सभी ड्रग्स से जुड़े आरोपों में जेल में थे। सीधे-सादे लोग। कोई नकारात्मक सोच नहीं, कोई दिखावा नहीं। लामिन की सज़ा ज़्यादा थी और उसे लंबी अवधि की जेल में स्थानांतरित किए जाने का इंतज़ार था। वह थका हुआ लग रहा था, लेकिन समझदार था। बाकी लोग जल्द ही रिहा होने वाले थे—कुछ तो एक साल से भी कम समय में।
और फिर आए कामेल। एक पिता, लगभग हमारी ही उम्र के। उन्होंने हमसे अपने बेटे और अपनी पत्नी के बारे में बात की, जिनसे वे जल्द ही दोबारा मिलने की उम्मीद रखते थे। उनकी बेहतर करने, फिर से सब कुछ संवारने और इस अध्याय को पीछे छोड़ने की इच्छा साफ महसूस हो रही थी। हमारा उनसे गहरा जुड़ाव हो गया।
हमारी कहानी सुनकर वे चौंक गए। आँखें फाड़कर वे बार-बार यही दोहरा रहे थे: “थाईलैंड में चार साल? और आप जिंदा वापस आ गए?!”
उनमें से किसी ने भी कभी किसी ऐसे व्यक्ति से मुलाकात नहीं की थी जिसने विदेशी जेल में सजा काटी हो। और उससे भी कम लोगों ने किसी ऐसे फ्रांसीसी

कैदी से मुलाकात की थी जिसे स्वदेश वापस भेज दिया गया हो। उन लोगों के लिए जो व्यवस्था को अच्छी तरह से जानते थे, जो वर्षों से जेल आते-जाते रहे थे, हमारी वापसी किसी यूएफओ के उतरने जैसी थी।
उन्होंने हमें स्थानीय बोलचाल की भाषा सिखाई। उदाहरण के लिए, "baveux" शब्द।
“तुम्हारे दोस्त, उसने क्या कहा?”
"मेरी क्या है?"
“तुम्हारा वकील, भाई!”
हम हँसे। हमें जल्दी ही बात समझ आ गई।
हम फिल्मों की तरह आंगन में गोल-गोल घूमने लगे। चलते-चलते बातें करते, अपने शरीर को फिर से तरोताज़ा होने देते। हम कसरत करने की कोशिश नहीं कर रहे थे—बस सांस लेना, एक-दूसरे से जुड़ना चाहते थे। इतना ही काफी था। अंदर जाने से पहले, हम सबने अगले यार्ड टाइम में फिर मिलने का वादा किया। नए साथियों के बीच एक मौन समझौता।
किसी ने दयालुता दिखाते हुए हमें लिफाफे और कागज दिए। यह हमारे लिए किसी वरदान से कम नहीं था। हमने तुरंत पत्र लिखना शुरू कर दिया—अपने परिवार को, थाईलैंड में मौजूद अपने दोस्तों को, और अपने उन साथियों को जो इस मुसीबत में फंसे थे।
गार्डों ने पुष्टि की कि बैंक से प्राप्त धनराशि आमतौर पर दो दिनों के भीतर पहुँच जाती है। इसलिए हम बेसब्री से पहले यूरो के आने का इंतजार करने लगे।
और वाकई, तीन दिन बाद पैसे आ गए। और साथ ही, खाने-पीने का सामान भी आ गया। हर सुबह कैदी मजदूर एक बड़ी धातु की गाड़ी को धकेलते हुए सामान पहुंचाते थे— डिब्बाबंद खाना, किराने का सामान, स्नैक्स, ताज़ी सब्जियां और फल। यह अली बाबा की गुफा जैसा था।
हमें एक छोटी इलेक्ट्रिक हॉट प्लेट और दो सॉस पैन भी मिले। उसी शाम हमने एक साधारण, गरमागरम खाना बनाया। और बस इतना ही—यह किसी विलासितापूर्ण अनुभव जैसा लगा।
कुछ ही दिनों में मेरा वज़न पाँच किलो बढ़ गया। ये तो अविश्वसनीय था। सालों तक भूखे रहने के बाद, मेरा शरीर हर संभव चीज़ वापस पा रहा था। रोज़ का खाना तो पहले से ही ठीक-ठाक था, लेकिन अब हम खाना भी बनाने लगे थे। खुद

को खुश करने के लिए। और हर रात, टीवी के सामने, हमारा अपना एक छोटा सा रिवाज़ था—हममें से हर कोई एक चॉकलेट खाता था। मिठास का एक नया अनुभव। जेल में हमें दिन में दो या तीन ब्रेड मिलती थीं। नाश्ता एक दावत जैसा बन गया: आधी ब्रेड, हेज़लनट स्प्रेड, पीनट बटर। जो चीज़ें पहले साधारण लगती थीं, अब पवित्र लगने लगीं।
हमारे पहुंचने के दस दिन बाद मेरी वकील मुझसे मिलने आई। उसने मुझे आश्वस्त किया।
“सब कुछ आगे बढ़ रहा है। लेकिन पैरोल के लिए आवेदन करने से पहले, आपको एक या दो दिन की छुट्टी के लिए आवेदन करना होगा। यह बहुत ज़रूरी है। इससे जज को पता चलता है कि आप समाज में फिर से घुल-मिल सकते हैं, कि बाहर आपके लिए कुछ अच्छा इंतज़ार कर रहा है।”
"इतनी सारी परेशानियों के बाद भी?"
“जब तक आपको यह साबित करने का ठोस सबूत नहीं मिल जाता कि आप तैयार हैं, तब तक जज कोई फैसला नहीं सुनाएंगे। आपको अपना पक्ष मजबूत करना होगा। यह दिखाइए कि आप अपने जीवन में क्या करना चाहते हैं।”
वह मुस्कुराई। वह कपड़ों से भरा एक थैला लाई थी जो मेरी माँ ने उसे भेजा था — साफ़, एकदम नए कपड़े। मेरी आँखों में लगभग आँसू आ गए। कपड़े प्रतीकात्मक होते हैं। वे कहते हैं: बाहर कहीं तुम्हारा ठिकाना है। कोई तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है।
मार्को ने अपना मामला एक पुराने पारिवारिक वकील को सौंप दिया था। उसे बताया गया था कि फ्रांस में चल रहे उसके पुराने मामलों में से एक को फिर से खोला जाएगा, लेकिन उस पर कड़ी निगरानी रखी जाएगी। उसका लक्ष्य वही था: जल्द से जल्द बाहर निकलना।
दो सप्ताह बाद, हमें बताया गया कि अब प्रवेश इकाई छोड़ने का समय आ गया है। अब कोई अभिविन्यास चरण नहीं था। हम अब "वास्तविक" कैदी बन चुके थे, पूरी तरह से व्यवस्था में एकीकृत हो चुके थे।
उन्होंने हमें चौथी मंजिल पर, एक ऐसे विंग में भेज दिया जो अलग-अलग कोठरियों में बंद कैदियों के लिए आरक्षित था—विशेषज्ञ, वे लोग जो किसी के साथ रहना बर्दाश्त नहीं कर सकते थे, या संवेदनशील मामलों वाले कैदी। हमने साथ रहने पर जोर दिया। हम अलग होने के लिए तैयार नहीं थे।

गार्ड मान गए। हमें बंक बेड वाला एक डबल सेल दिया गया। यह पहले वाले से थोड़ा पुराना था, लेकिन फिर भी ठीक-ठाक था।
अभी तक टीवी नहीं आया है—हमने अनुरोध किया है।
उस शाम, सारी भावनाओं, कागजी कार्रवाई और इस नए तरह के जीवन में तेजी से ढलने की प्रक्रिया से थककर, हम शाम 7 बजे सो गए। और हमेशा के लिए पहली बार, रात की खामोशी में डर की चीखें नहीं गूंज रही थीं, बल्कि आशा की शांतिपूर्ण सांसें सुनाई दे रही थीं।
अगली सुबह, भोर होते ही, हम उठ खड़े हुए, तैयार—एक बेचैन दृढ़ संकल्प से भरे हुए। हम काम ढूंढना चाहते थे। यह सिर्फ व्यस्त रहने या पैसे कमाने की बात नहीं थी—यह बेहद ज़रूरी था। थाई जेल में इतने लंबे समय तक रहने के बाद, जहाँ हर पल कुछ न कुछ करना, प्रतिक्रिया देना, ज़िंदा रहने के लिए संघर्ष करना पड़ता था—पानी के लिए भागना, उसे उबालना, कपड़े धोना, शावर में जगह पाने के लिए या एक कॉफी के पैकेट के लिए लड़ना—यह नया, धीमा, शांत, लगभग निष्क्रिय फ्रांसीसी जीवन… भारी लग रहा था। इसने हमें अंदर तक झकझोर दिया।
यूनिट 1 में आने के बाद से हमने फिर से अपनी लय हासिल कर ली थी—लंबी रातों की नींद, हर भोजन के बाद झपकी, तरोताज़ा शरीर, भरा पेट। हमारा वज़न भी बढ़ गया था, आँखों में चमक लौट आई थी, और यहाँ तक कि कोठरियों में आवाज़ें भी कर्कश के बजाय ज़्यादा चंचल हो गई थीं। टीवी पर समाचार और खेल कार्यक्रम लगातार चलते रहते थे, और रेडियो पर ऐसा संगीत बजता था जिसे हम मुश्किल से ही पहचान पाते थे। यह मधुर था—पर बहुत धीमा था।
फिर भी, हम थाईलैंड के बारे में सोचते रहे। वहाँ मौजूद लोगों के बारे में। उन लोगों के बारे में जिन्हें हम कंक्रीट और सन्नाटे की उस भट्टी में पीछे छोड़ आए थे। हमारे फ्रांसीसी भाइयों के बारे में। हमारे कनाडाई दोस्तों के बारे में। हमने उन्हें चिट्ठियाँ लिखीं। बहुत सारी। लंबी-लंबी चिट्ठियाँ, जिनमें विस्तार, आशा, साझा यादें और प्रोत्साहन भरा था। लेकिन लिखना ही काफी नहीं था। यहाँ हमारे जीवन को अर्थ की ज़रूरत थी। हमें फिर से खड़ा होना था, कुछ यूरो कमाना था, अपने परिवारों से आर्थिक मदद लिए बिना— लगभग पाँच साल में पहली बार।
तो उस सुबह, जब राशन की गाड़ी ठीक 10 बजे पहुंची, तो हमने लगभग गिड़गिड़ाते हुए महिला गार्ड को पुकारा:

“मैडम, हम काम करना चाहते हैं। हम गंभीर हैं। हम यहाँ समय बर्बाद करने नहीं आए हैं।”
उसने हमारी तरफ देखा, थोड़ा आश्चर्यचकित होकर। शायद उसने पहले कभी किसी काम के अनुरोध में इस तरह की ऊर्जा नहीं देखी थी। हमने अपनी कहानी, अपना अतीत, जेल में बिताए अपने अनुभव को दोहराया। वह मुस्कुराई।
मैं देखता हूँ कि मैं क्या कर सकता हूँ। मैं आपको बाद में सूचित करूँगा। संक्षिप्त, लेकिन आशाजनक।
आंगन में हमने अपनी दिनचर्या बना ली थी। हम अक्सर मैक्स, कामेल और लारबी के साथ समय बिताते थे। वे सब असली मर्द थे, दयालु, कहानियों से भरे हुए—हर किसी का अपना अंदाज़, अपनी आवाज़। उस सुबह, पूरी इमारत में यह खबर फैल गई: "चीनी आदमी" पकड़ा गया।
सब लोग उसे "चीनी" कहकर पुकारते थे, और वह केंद्र में सबसे सक्रिय फ़ोन डीलरों में से एक था। एक छोटा-सा गिरोह, जो बहुत ही गुप्त तरीके से चल रहा था—लेकिन उस दिन तक। आईआरआईआईएस ने सुबह-सुबह दखल दिया। यह विशिष्ट जेल हस्तक्षेप इकाई—जो जेल जगत के लिए जीआईएनजी की तरह है—बिना किसी कारण के कभी नहीं आती। उन्होंने उसकी कोठरी को इंच-इंच करके छान मारा, गद्दा, टाइलें, पाइप सब कुछ उलट-पलट कर देखा… और आखिरकार कई फ़ोन बरामद किए। किसी ने उसकी मुखबिरी कर दी थी। नतीजा? तुरंत अलग-थलग कर दिया गया। वह रातोंरात गायब हो गया। हमने उसे फिर कभी नहीं देखा। हर कोई हाई अलर्ट पर था।
लेकिन मेरा ध्यान कहीं और था।
मेरी माँ मुझसे मिलने आ रही थीं। तीन दिन बाद। इतने सालों बाद। मैं उन्हें फिर से देखने जा रही थी। मैं उन्हें अपनी बाहों में भर लूँगी, उनकी गर्माहट, उनकी खुशबू महसूस करूँगी, उनकी आवाज़ बिना किसी रुकावट, बिना नेटवर्क, बिना फ़ोन के सुनूँगी। बस इस सोच से ही मैं भावुक हो गई।
और उसी सुबह, बगीचे में समय बिताते हुए, मैं आखिरकार जूलिया को फोन कर पाया। मैंने अपने कार्ड में पैसे डाल दिए थे, मेरे पास पर्याप्त क्रेडिट था, मैं तैयार था।
स्वचालित संदेश शुरू हुआ:
“यह कॉल रिकॉर्ड की जा रही है। आप इस पते से कॉल कर रहे हैं…”
फिर एक क्लिक की आवाज।
"नमस्ते?"

उसकी आवाज़। ठंडी, दूर की, लगभग कांपती हुई।
“जूलिया! मैं हूँ… मैं वापस आ गया हूँ। आखिरकार! यह सब खत्म हो गया!”
मौन।
“हां, मैंने सुना। यह तो बहुत अच्छी बात है… आपके लिए।”
उसकी आवाज़ मुझे किसी धारदार हथियार की तरह चुभी। यह वह जूलिया नहीं थी जिसे मैं जानती थी।
“सुनो, मैं तुमसे साफ-साफ कहता हूँ: मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा। हमारे बीच क्या हुआ? क्या बदल गया? हम यहाँ तक कैसे पहुँच गए?”
“तुम अपने पूर्व प्रेमी के पास वापस आ गए, है ना? तुम्हारा तबादला होने वाला था, तुम्हें मेरी अब जरूरत नहीं थी…”
“तुम ये क्या बात कर रहे हो? तुम्हें पता है ये सच नहीं है। स्टेफ़ान मुझे बिना बताए उसके साथ आ गया! तुमने खुद ही गलत निष्कर्ष निकाल लिया! मैं तुम्हें कभी छोड़ना नहीं चाहता था… बिलकुल भी नहीं।”
सन्नाटा। फिर उसकी दर्द भरी आवाज़:
"तो तुम मुझे वो सब बता रही हो जो कोराली ने मुझे बताया था... कि तुम अपनी आज़ादी चाहती थी, नए सिरे से शुरुआत करना चाहती थी... वो सब झूठ था?"
“बेशक ऐसा ही था। संदेशों को गलत समझा गया, उनकी गलत व्याख्या की गई। कागज़ पर सब कुछ गलत लगता है। मैंने कभी नहीं कहा कि मैं तुमसे अलग होना चाहता हूँ। तुम मेरी सहारा थीं, जूलिया। तुम आज भी हो।”
मुझे नहीं पता कि यह मेरी आवाज थी, मेरी चुप्पी थी, या मेरे शब्दों के पीछे की सच्चाई थी... लेकिन उसके लहजे में कुछ बदलाव आया।
“क्या आप फिर से कोशिश करना चाहते हैं… हमारे साथ?”
“बिल्कुल। मैंने पहले भी कहा है। तुम मेरे जीवन का प्यार हो। मैं तुम्हें कभी नहीं छोडूंगा।”
मुझे उसकी साँसें काँपती हुई महसूस हुईं, उसके भाव फोन पर छलकते हुए सुनाई दिए। उस पुराने जेल के फोन से भी मैं उसकी मुस्कान सुन सकता था।
उसने मेरी माँ से संपर्क करने, मुझसे मिलने आने की प्रक्रिया शुरू करने और फिर से जुड़ने का वादा किया। हमने पत्र लिखने का वादा किया। फिर से रिश्ते जोड़ने का।
और जब मैंने आखिरकार अपना सारा क्रेडिट खत्म करके फोन रखा, तो मैं बस वहीं खड़ा होकर हैंडसेट को घूरता रहा। उस साधारण से फोन ने, जो एक ठंडी दीवार से

चिपका हुआ था... मेरे अंदर उस चीज़ को फिर से ज़िंदा कर दिया था जिसे मैं खो चुका था।
बहुत लंबे समय के बाद पहली बार… मुझे आजादी का एहसास हुआ।
खेल-कूद स्वाभाविक रूप से हमारे जीवन में वापस आ गया। उसी सुबह, मार्को नींद से भरी आँखों के साथ अंगड़ाई लेते हुए उठा और हल्की मुस्कान के साथ बोला:
“भाई… अगर हम इसी तरह खाते रहे तो आखिर में हम दो बूढ़े सरकारी टीवी क्लर्कों की तरह दिखने लगेंगे।”
और वह गलत नहीं था। यहाँ आने के बाद से हमारा वजन फिर से बढ़ गया था। शायद ज़रूरत से ज़्यादा। भरपूर खाना, लंबी नींदें, घंटों पढ़ना या टीवी देखना, इन सबने हमें एक ऐसे आराम में डाल दिया था जिसकी हमें अब आदत नहीं थी। थाईलैंड में, हमारे दिन भागदौड़, मेहनत और ज़िंदा रहने की जद्दोजहद में बीतते थे। यहाँ, स्थिति बिल्कुल उलट थी। और निष्क्रियता का यह आराम अब हम पर भारी पड़ने लगा था।
कैंटीन में हमारा बहुत अच्छे से ख्याल रखा जाता था। कैदी कर्मचारी, जो हमारी कहानी जानते थे, हमारे साथ सम्मान और जिज्ञासा दोनों भावों से पेश आते थे। हर बार खाना मिलने पर हमें अतिरिक्त मात्रा में मिलता था— मानो एक तरह से मौन स्वीकृति हो। फ्रिज में दस आमलेट, मांस की ट्रे में सोलह चिकन कॉर्डन ब्लू या पूरे छात्रावास को खिलाने लायक दही होना अब कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। हमारे पास युद्धकालीन भंडार था। हम तो काला बाज़ार में किराने की दुकान भी खोल सकते थे।
फिर भी, कैद का असर दिखने लगा था। दिन में अठारह घंटे एक कोठरी में इधर-उधर घूमना—भले ही वह अच्छी कोठरी ही क्यों न हो—हमारे मनोबल को तोड़ रहा था। कुछ कैदियों ने चोरी-छिपे फोन खरीदे, कुछ ने गेम कंसोल। कुछ ने खूब कसरत की। हमें बस ताजी हवा, चहलकदमी और धूप की बहुत ज़रूरत थी।
मेरी माँ आने वाली थीं। मंगलवार, सुबह 8 बजे।
वह दिन आ गया, और मैं पहली बार मुलाक़ात कक्ष के प्रतीक्षालय में पहुँच गया। एक बड़ा, नीरस, बेजान सा कमरा। हम सब एक साथ बंद थे, बस कैदी, बुलाए जाने का इंतज़ार कर रहे थे। बाहर, दर्जनों बैग हवाई अड्डे के टर्मिनल में

सामान की तरह ढेर लगे थे—परिवारों द्वारा लाए या ले जाए गए कपड़े। दो दुनियाओं के बीच एक खामोश नृत्य।
जब मेरा नंबर पुकारा गया, तो मेरा दिल जम गया। मैं एक लंबे गलियारे से गुज़रा, जहाँ चारों ओर बंद दरवाजे थे, और हर दरवाजे पर एक छोटी खिड़की थी। और उनमें से एक के पीछे... मैंने उसे देखा। मेरी माँ। उसकी आँखें। मुझे देखते ही उसकी आँखों में वो चमक आ गई। समय थम गया।
मैं रोई नहीं। नहीं। यह उदासी नहीं थी। यह शांति, गर्माहट और राहत थी। हम बस गले मिले। बहुत देर तक। एक भी शब्द नहीं। हमारे शरीर ने हमारे मुंह से कहीं बेहतर तरीके से बात की।
जब हम आखिरकार उस छोटे से तीन मीटर चौकोर कमरे में आमने-सामने बैठे, जिसके बीच में एक छोटी सी मेज थी, तो मैंने उसके हाथ थाम लिए। एक गार्ड कभी उसकी तरफ तो कभी मेरी तरफ से गुजरता था, लेकिन कोई सुन नहीं रहा था। वह खामोशी अनमोल थी।
"तुम ठीक हो?" उसने आखिरकार पूछा, उसकी आवाज थोड़ी कांप रही थी।
“हां, मां। मैं यहीं हूं। मैं जिंदा हूं। और मैं इससे बाहर निकल आऊंगा।” उसने मुझे ऐसे देखा जैसे उसे लगा हो कि उसने मुझे खो दिया है। उसकी भावुक आँखें मेरे चेहरे को टटोल रही थीं।
“तुम अब भी मेरे छोटे बेटे हो, जानते हो ना। तुम बिल्कुल नहीं बदले हो।” और तुम अब भी दुनिया की सबसे अच्छी माँ हो।
हम धीरे से हँसे। मैंने उसे कुछ ही मिनटों में सब कुछ बता दिया - आगमन, कोठरियाँ, इमारत, अन्य कैदी, मार्को, कैंटीन, फ़ोन, प्रांगण... मैंने सब कुछ बताने की कोशिश की।
“मैं तुम्हें कुछ पैसे भेज दूंगी,” उसने कहा। “बस इतने कि तुम्हारी पहली तनख्वाह आने तक तुम्हारा गुजारा चल जाए। तुम्हें पता है ना कि मैं तुम्हारे साथ हूं? तुम अकेली नहीं हो।”
मुझे पता है। और जूलिया? क्या तुमने उससे बात की?
उसने सिर हिलाया।
“हां। उसने मुझे फोन किया था। वह आपकी फाइल का हिस्सा बनना चाहती है। वह आपकी मदद करेगी।”
मैंने कुछ नहीं कहा। बस उसके हाथों को थोड़ा और कसकर पकड़ लिया।
दरवाजे पर दस्तक। अभी से।

“मैं वापस आऊंगी,” उसने खड़े होते हुए कहा। “जब भी आप फोन कर सकें, मैं आपको अपडेट देती रहूंगी। और हम आपको यहां से निकाल लेंगे। मैं वादा करती हूं।” उसने मेरे गाल पर चुंबन किया, मुझे कसकर गले लगाया और चली गई। गार्ड ने मुझे इशारा किया। बाहर कपड़ों से भरा एक बड़ा थैला मेरा इंतज़ार कर रहा था। धुले कपड़ों की खुशबू मेरी नाक में आई—घर की वो अनोखी खुशबू। प्यार की खुशबू। ऐसा लगा जैसे मैं अपनी ज़िंदगी का एक टुकड़ा अपनी बाहों में थामे हुए हूँ।
वापस कोठरी में आकर मैंने मार्को को सब कुछ बता दिया। वह मुस्कुराया, मेरे लिए खुश था।
“मेरे माता-पिता अगले हफ्ते आ रहे हैं। लेकिन वे नैन्सी से हैं… इसलिए यह थोड़ा मुश्किल है।”
मैंने उससे कहा, "चिंता मत करो यार। वे आएंगे। उन्हें आना ही होगा।"
हमने अपने कपड़े छोटी सी अलमारी में तह करके रख दिए। कुछ टी-शर्ट, दो जींस, और करीने से तह किए हुए मोज़े। मार्को नाश्ता बना रहा था। कॉफ़ी गर्म हो रही थी। कोठरी में अच्छी खुशबू आ रही थी। ज़िंदगी वापस पटरी पर आ रही थी। उसी दिन बाद में, यूनिट का सबसे भरोसेमंद आदमी अहमद हमारे दरवाजे पर आया। "अरे दोस्तों, मुझे आप लोगों के लिए एक टीवी मिला है। पुराना है, लेकिन चलता है।"
वह अंदर आया—लंबा, शांत, हमेशा उसकी जेब में वह पेचकस रहता था। वह आधिकारिक तौर पर हर काम में माहिर था। वह फ्रिज, टीवी, इमारत में चलने वाली हर चीज़ की मरम्मत करता था।
“यह थोड़ा नखरे वाला है,” उन्होंने कहा। “लेकिन मैं इसे कनेक्ट कर दूंगा। और 4.50 यूरो प्रति माह में आपको सभी चैनल मिल जाएंगे। अगर आप चाहें तो मैं कल से ही सब्सक्रिप्शन शुरू कर दूंगा।”
हमने सिर हिलाया। उसने केबल लगाए और तस्वीर को समायोजित किया।
“आप लोग थाईलैंड से हैं, है ना? मैंने आपके बारे में पुस्तकालय में सुना था। बड़ी दिलचस्प कहानी है।”
“हां,” मैंने कहा। “और यह तो अभी आधी बात भी नहीं है।”
उसी शाम हमने पुस्तकालय में अपना नाम लिखवाया। एक बड़ा कमरा, अलमारियों से भरा हुआ। सैकड़ों-हजारों किताबें। उपन्यास, शब्दकोश, हर तरह की किताबें। लाइब्रेरियन? एक बूढ़ा आदमी, पतली दाढ़ी और खाली निगाहों वाला। हमें

बताया गया था कि उसने अपनी पत्नी को कुल्हाड़ी से मार डाला था। वह मुश्किल से ही बोलता था। अपना दिन अलमारियों के बीच किताबों को छांटते हुए बिताता था, जैसे कोई अटारी में यादों को व्यवस्थित कर रहा हो।
“तुम्हें क्या पसंद है?” उसने सरलता से पूछा।
“इतिहास। और थोड़ा-बहुत अपराध कथा।”
“जो चाहो ले लो। बस उसे वापस ले आना।”
उन्होंने हमें एक प्लास्टिक की थैली दी। हमने उसे किताबों से भर दिया। अगले दिन, ठीक सुबह 8 बजे, दो गार्डों ने हमारे दरवाजे पर दस्तक दी। हम चौंक गए।
“तुम दोनों हमारे साथ आओ। लेफ्टिनेंट तुमसे मिलना चाहते हैं।”
हम उनके पीछे-पीछे वरिष्ठ अधिकारियों के विंग तक गए। वहाँ का माहौल बिलकुल अलग था। अधिक शांत। अधिक गंभीर। एक कमांडिंग ऑफिसर एक विशाल डेस्क के पीछे बैठे इंतज़ार कर रहे थे। उनके सामने एक अकेली कुर्सी थी, जो बहुत दूर और नीची रखी थी। एक अन्य अधिकारी कोने में हाथ बांधे खड़े थे।
तो, आप दोनों कैंटीन में काम करना चाहते हैं?
“जी हाँ, महोदय,” मार्को ने उत्तर दिया। “सचमुच।”
"क्या आप हर दिन सुबह 7 बजे उठने के लिए तैयार हैं?"
“बिल्कुल,” मैंने कहा। “हम यही तो उम्मीद कर रहे हैं।”
लेफ्टिनेंट ने हल्की सी मुस्कान दी। उन्होंने हमें एक कागज का टुकड़ा थमा दिया।
“अपनी पैंट का साइज़ यहाँ लिख लें। तीन दिन में काम शुरू करना है। वेतन: आपके काम के घंटों के आधार पर 150 यूरो से 300 यूरो के बीच होगा।”
हम बेहद खुश थे। हमें वो मशहूर हल्के नीले रंग की पैंट पहनने को मिलेगी। वो पास। वो बैज। वो प्रतीक जो कहता था: “मैं उपयोगी हूँ। मैं मायने रखता हूँ।” हम धड़कते दिल के साथ उस ऑफिस से बाहर निकले।
मैंने मार्को के हाथ पर थप्पड़ मारते हुए कहा, "भाई, हम वापस आ गए हैं। हम काम कर रहे हैं। हम आगे बढ़ रहे हैं।"
वह मुस्कुराया।
“हां। और इस बार, हम अपने ही मैदान पर पुनर्निर्माण कर रहे हैं…”
अगली सुबह, हम तैयार थे। हम अभी-अभी फिर से शिफ्ट हुए थे, इस बार दूसरी मंज़िल पर, जो कैदी कामगारों के लिए आरक्षित थी। हमारी नई कोठरी, 22B, बाईं

ओर के बिल्कुल आखिरी छोर पर थी। इसे हाल ही में फिर से रंगा गया था— चमकीला, सेब जैसा हरा रंग, लेकिन चौथी मंज़िल की पुरानी दीवारों से कहीं ज़्यादा चमकदार। अंदर कदम रखते ही मुझे लगा जैसे हमें एक नई शुरुआत मिल रही हो। अभी भी ताज़े पेंट की महक आ रही थी, और फर्श हाल ही में पॉलिश होने से चमक रहा था। कोठरी इतनी साफ़-सुथरी लग रही थी कि मानो असली ही न हो। दीवार पर एक नया टीवी लगा हुआ था, और फ्रिज पहले से ही रखा हुआ था। हमें सचमुच एक सुरक्षित कोठरी मिली थी।
एक गार्ड और एक बड़ी धातु की गाड़ी की मदद से, हमने अपना सामान चौथी मंजिल से जल्दी से नीचे उतार लिया। बस कुछ थैले, हमारी किताबें, कपड़े, एक-दो खाने-पीने के सामान से भरे बैग और कुछ निजी सामान। ज़्यादा कुछ नहीं था, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे हम एक नई ज़िंदगी शुरू कर रहे हों। सितंबर का महीना खत्म हो रहा था, फिर भी हमें ऐसा लग रहा था जैसे हम यहाँ कई मौसम जी चुके हों।
हर सुबह हम 6:30 बजे उठ जाते थे। हल्के नीले रंग की फिटिंग वाली पैंट, एक सादी टी-शर्ट, मुलायम स्वेटशर्ट और हमारे पुराने स्नीकर्स। एक साधारण पहनावा—पर अर्थपूर्ण। कैदी कामगारों की वर्दी। वे लोग जिन्हें यार्ड के समय के बाद भी घूमने-फिरने, काम करने और जीने की अनुमति थी। एक विशेषाधिकार।
हमारे आने के बाद से, पहरेदार हमारी समयबद्धता और ऊर्जा देखकर थोड़े हैरान थे। हर दिन, ठीक 7:15 बजे, वे कूड़ा उठाने के लिए कोठरियों के ताले खोलते थे। आपको तैयार रहना पड़ता था। कोई देरी नहीं, कोई बहाना नहीं। बैग गलियारे में सौंपे जाते थे, मानो हाथ फैलाकर, मानो कोई रस्म हो। कुछ कैदी, बहुत आरामदेह होकर, अपने बैग अंदर ही छोड़ देते थे, यह सोचकर कि पहरेदार उन्हें उठा लेंगे—जो कभी-कभी अच्छे अधिकारियों के साथ होता भी था। लेकिन हाल ही में हुई एक झड़प ने सब कुछ बदल दिया। एक घटना, एक बदतमीज़ कैदी, और माहौल ही बदल गया: अगर आप अपना बैग बाहर नहीं रखते, तो उसे उठाया ही नहीं जाता। बस। आपको अगले दिन तक इंतज़ार करना पड़ता था।
और फिर वो कुख्यात "ज़िंदा होने की दस्तक" थी। एक तरह की भयावह लेकिन ज़रूरी जाँच। आधी रात से सुबह 6 बजे के बीच, एक गार्ड चुपचाप आपके दरवाजे पर दस्तक देता था। आपको जवाब देना होता था—कोई आवाज़ निकालना, "ज़िंदा हूँ" कहना, या हाथ उठाना—जीवन का कोई संकेत देना। क्योंकि इससे पहले भी

कैदी सोते-सोते मर चुके थे, और यह रस्म यह सुनिश्चित करने के लिए थी कि हम अभी भी जीवित हैं। एक अजीब आदत, लेकिन जिसकी हमें जल्दी ही आदत हो गई। ज्यादा देर तक सोने से बचने के लिए, हमने टीवी के बिल्ट-इन अलार्म क्लॉक का इस्तेमाल किया। यह एक कम ज्ञात फीचर था, लेकिन इसकी मदद से हम म्यूजिक चैनल को सुबह 6:30 बजे चालू होने के लिए सेट कर सकते थे। स्क्रीन चालू हो जाती, आर एंड बी या फ्रेंच पॉप के गाने बजने लगते, और हम एक अलग ही दुनिया की आवाज़ों से जाग उठते।
हर सुबह एक तरह की दिनचर्या बन गई थी। मार्को बिस्तर से उछलकर सीधे नहाने चला जाता। इस बीच, मैं कुछ पुश-अप्स करती, स्ट्रेचिंग करती और कचरा बाहर फेंक देती। फिर मेरी बारी आती, जबकि वह बढ़िया नाश्ता बनाता—टोस्ट, न्यूटेला, पीनट बटर, गर्म कॉफी—एक ऐसी विलासिता जो हमें सालों से नहीं मिली थी। खाने के बाद, मैं फर्श पर पोछा लगाती और वह बर्तन धोता। हम अपनी कोठरी को एकदम साफ रखना चाहते थे, न केवल अपने सम्मान के लिए, बल्कि उन गार्डों के लिए भी जो किसी भी क्षण आ सकते थे। हम चाहते थे कि उन्हें पता चले कि वे किन लोगों से निपट रहे हैं—साफ-सुथरे, व्यवस्थित और भरोसेमंद लोग।
ठीक सुबह 8:00 बजे दरवाजे पर दस्तक हुई।
गार्ड लंबा, थोड़े गंजे सिर वाला और ऊर्जा से भरपूर था। हम उसे बस "सर्विलांस गार्ड" या "शेफ" कहकर बुलाते थे। यहाँ गार्डों के पहले नाम किसी को नहीं पता होते थे। यह एक अलिखित नियम था। वे एक-दूसरे को बस "सहकर्मी" कहकर बुलाते थे, कभी नाम नहीं लेते थे। हमें पूरा यकीन था कि उन्होंने इसके लिए प्रशिक्षण लिया था। हमने एक बार भी उनसे नाम की कोई गलती नहीं सुनी।
उस सुबह, उन्होंने खुलकर मुस्कुराते हुए हमें बाहर जाने का इशारा किया: “ठीक है, लड़कों, चलो चलते हैं। आज तुम लोग प्लास्टिक की ट्रे में खुशियाँ बाँटने वाले हो।”
हम इमारत की सीढ़ियों से नीचे उतरे। बाहर निकलते समय, हम उसी पहले गार्ड के पास से गुज़रे जिसने हमारे आगमन के दिन हमारा स्वागत किया था। हमें देखकर वह हँस पड़ा:
“अरे! तुम दोनों! अभी से नीले रंग के कपड़े पहन लिए? बिल्कुल भी समय बर्बाद नहीं किया, है ना?”

हमने उसे एक समझदारी भरी मुस्कान दी—जैसे कि अब हम भी टीम का हिस्सा हों। बाहर, सर्दियों की तेज़ हवा हमारे गालों को चुभ रही थी। हवा हमारे स्वेटरों को चीर रही थी। यह सूखी, ताज़गी भरी ठंड थी—थाईलैंड की उमस भरी उमस से बिल्कुल अलग। ऐसी ठंड जो आपको जगा देती है, जो आपको चुभती है, लेकिन साथ ही यह याद दिलाती है कि आप आख़िरकार फ़्रांस में हैं।
हम आंगन पार करके सामने एक विशाल भूरे रंग की इमारत की ओर बढ़े—एक बहुत बड़ा गोदाम, लगभग किसी कारखाने जैसा। बाईं ओर एक बड़ा सा धातु का डिब्बा था। अंदर जाते ही माहौल बदल गया। ऐसा लगा जैसे किसी सुपरमार्केट का गोदाम हो: अलमारियों पर बक्सों के ढेर लगे थे, डिब्बाबंद सामानों के पैलेट, पानी की बोतलों के ढेर, और प्लास्टिक में लिपटी औद्योगिक पेस्ट्री के डिब्बे। दाईं ओर, गार्डों के लिए दो कार्यालय हैं, जो कंप्यूटर, कागजों के ढेर और लॉगबुक से सुसज्जित हैं।
वहीं हमारी मुलाकात दो और गार्डों से हुई—एक पुरुष और एक महिला—दोनों ही स्टोर के प्रभारी थे। अच्छे, गंभीर और कुशल। और सबसे अच्छी बात यह थी कि हमारी मुलाकात कामेल से हुई, जो हमारा दोस्त था और कुछ महीनों से यहाँ काम कर रहा था, और जोआओ से भी, जो हमारा सबसे पसंदीदा ब्राज़ीलियाई था और हमेशा की तरह बेहद खुशमिजाज था। हमने एक-दूसरे का अभिवादन फ्रांसीसी तरीके से किया—जल्दी से गले मिले, एक-दूसरे को प्यार भरी निगाहों से देखा।
"आप लोग देखेंगे, यह शारीरिक मेहनत का काम है, लेकिन यह बहुत अच्छा काम है," कामेल ने हमें गरमागरम कॉफी का कप देते हुए कहा।
उन्होंने कार्यों को समझाया: प्रत्येक मंजिल के लिए डिलीवरी कार्ट तैयार करना, शीट पर ऑर्डर की दोबारा जांच करना, उत्पादों को श्रेणी के अनुसार व्यवस्थित करना, और सबसे महत्वपूर्ण बात - सब कुछ अच्छी तरह से टेप से चिपका देना ताकि डिलीवरी के दौरान कुछ भी गिर न जाए।
“दही और पनीर तो तुम्हारे हैं,” जोआओ ने आँख मारते हुए मुझसे कहा। “ये सबसे आसान हैं, तुम देख लोगे। लेकिन पानी की बोतलें – शुभकामनाएँ।”
और वह सही था। सबसे भारी सामान उठाना ही सबसे मुश्किल था—दूध के डिब्बे, कैन, पानी के पैकेट। गाड़ियाँ पुरानी थीं, पहिए लड़खड़ाते थे और लिफ्टें भी ठीक से काम नहीं करती थीं। हमें इन भारी-भरकम गाड़ियों को लंबी-लंबी गलियों से धकेलना या घसीटना पड़ता था, कभी-कभी तो कई मंजिलों तक ले जाना पड़ता था।

लेकिन मन ही मन हम खुश थे। हमें उपयोगी, सक्रिय और स्वतंत्र महसूस हो रहा था—उस सीमित दायरे में जो हमें दिया गया था। काम दोपहर 1 बजे तक चलता था। सुबह के अंत तक हम थके-हारे—लेकिन मुस्कुराते हुए—अपनी कोठरी में लौट आते थे।
और सबसे अच्छी बात... आखिरकार हमें वेतन मिल गया। घंटों के हिसाब से वेतन 150 यूरो से 300 यूरो तक था। वाकई बहुत बड़ी बात थी। अब हमें अपने प्रियजनों से आने-जाने के लिए भीख नहीं मांगनी पड़ती थी। हम आखिरकार अपने दम पर गुजारा कर सकते थे।
क्षतिग्रस्त या गिरी हुई कोई भी वस्तु हमें रखने को मिलती थी। फटा हुआ दही, पिचका हुआ डिब्बा, पिचकी हुई ब्रेड—सब कुछ हम आपस में बाँट लेते थे। कैदी को कैंटीन से सामान खरीदने के लिए पैसे देकर मुआवज़ा दिया जाता था।
सब कुछ सुचारू रूप से चल रहा था।
दिन एक के बाद एक बीतते गए, जिनमें कैंटीन में काम, सुबह जल्दी उठना, अलग-अलग मंजिलों पर सामान पहुँचाना और साथी कैदियों के साथ मिलकर खाना खाना शामिल था। फिर भी, इस दिनचर्या के बावजूद, मैं सतर्क रहता था, किसी भी नाम पुकारे जाने या दरवाजे पर दस्तक की प्रतीक्षा करता रहता था—किसी संकेत, किसी संदेश, किसी बात की उम्मीद में। और उस सुबह, जैसे ही हम पहली गाड़ियाँ भरने लगे, मैंने अपना नाम सुना:
— “मारुइन, आओ! तैयार हो जाओ।”
अभी आठ बजे भी नहीं थे। दुकान अभी-अभी खुली थी। उस दिन सबसे पहले बुलाए गए लोगों में मैं भी शामिल था। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। तुरंत ही मुझे जूलिया की याद आ गई। इतनी सुबह... ज़रूर वही होगी।
मेरे शरीर में एड्रेनालाईन का एक तेज़ झटका लगा। मैंने जल्दी से हाथ धोए, अपना दाग लगा एप्रन उतारा, अपनी आस्तीन से माथे का पसीना पोंछा और चुपचाप गार्ड के पीछे चल दिया। जैसे ही हम गलियारों से गुज़रे, मुझे लगा जैसे मेरा सीना कस रहा हो। मैं खुश तो थी ही, लेकिन साथ ही घबराई हुई भी थी। हमने एक-दूसरे को इतने लंबे समय से नहीं देखा था। सालों से। एक जीवनकाल से।
जब मैं मुलाकात कक्ष में पहुंचा, तो वे मुझे एक हल्के भूरे रंग के कमरे में ले गए, जिसमें फर्श पर प्लास्टिक की एक मेज और दो जर्जर कुर्सियाँ लगी हुई थीं। मैं छोटी गोल खिड़की से बाहर देखता रहा, मेरी सांसें थम सी गईं।
और फिर मैंने उसे देखा।

जूलिया। शीशे के पीछे उसका चेहरा। वो नज़र। उसकी आँखें थकी हुई थीं, भावनाओं से चमक रही थीं—फिर भी उनमें एक अलग ही तीव्रता थी। उसने बेज रंग का कोट पहना था, हवा से उसके बाल थोड़े बिखरे हुए थे। और जैसे ही उसने मुझे देखा, वो मुस्कुराई—एक ऐसी मुस्कान जो इतनी पवित्र, इतनी भावुक थी कि मैं थम सा गया। मानो समय थम गया हो।
हम बैठ गए। हमने एक-दूसरे का हाथ थाम लिया। काफी देर तक। कोई शब्द नहीं। बस हमारी हथेलियाँ एक-दूसरे से सटी हुई थीं, आँखें एक-दूसरे में खोई हुई थीं। — “तुम जल्दी उठ गए,” मैंने हल्की सी मुस्कान के साथ चुप्पी तोड़ते हुए कहा।
— “मैंने पहली ट्रेन पकड़ी। ज्यादा नींद नहीं आई… लेकिन मैं काम पर जाने से पहले यहाँ पहुँचना चाहता था। मैं और इंतजार नहीं कर सकता था।”
— “तुम पागल हो… इतनी दूर तक आए हो?”
— “मुझे तुम्हें देखना था। तुम्हें निहारना था। तुमसे बात करनी थी। यह जानना था कि तुम जीवित हो।”
उसने अपनी निगाहें नीचे कीं, फिर ऊपर उठाईं।
— “मुझे अब जाकर एहसास हो रहा है… तुम सचमुच यहाँ हो। तुम वापस आ गए हो। यह सब खत्म हो गया है—या लगभग खत्म हो गया है।”
— “मुझे लगा था कि मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देख पाऊँगी। कि हमारे बीच जो कुछ भी था… हमने जो कुछ भी सहा… वो सब कुछ यूँ ही बिखर जाएगा।”
— “लगभग हो ही गया था। मुझे शक था। लेकिन तुम यहाँ हो। और मैं भी। तो शायद हम फिर से शुरुआत कर सकते हैं।”
मैंने तुरंत जवाब नहीं दिया। मैंने अपना हाथ उसके गाल पर रखा—गर्म, मुलायम। हमारे हाथ हल्के से कांप रहे थे। भावनाएँ, थकान, यादें।
— “हम सब कुछ फिर से बनाएंगे, जूलिया। साथ मिलकर। अगर तुम अब भी ऐसा चाहती हो।”
— “हाँ, मैं चाहती हूँ। लेकिन… यह आसान नहीं होगा। मुलाक़ात का इंतज़ाम जटिल है—मुझे आज सुबह 7 बजे फ़ोन करना पड़ा, वो भी समय पाने के लिए। यह थाईलैंड जैसा नहीं है। यहाँ आपको खाली समय ढूँढ़ना पड़ता है, और वो बहुत कम मिलते हैं।”
— “मुझे पता है। उन्होंने मुझे बताया था। लेकिन तुमने कर दिखाया। और वो… वो किसी भी चीज़ से ज़्यादा मायने रखता है।”

उसने शनिवार सुबह वापस आने का वादा किया। उसने इसके लिए छुट्टी लेने का फैसला किया था। हमने नए सिरे से शुरुआत करने का वादा किया। धीरे-धीरे, लेकिन पूरी ईमानदारी से।
जब मुलाकात खत्म हुई, तो एक गार्ड ने धीरे से दरवाजे पर दस्तक दी। उसने आखिरी बार मेरी तरफ देखा, खड़ी हुई और मुझे कसकर गले लगा लिया।
— “हिम्मत रखो,” उसने लड़खड़ाती आवाज में कहा।
— “तुम भी। मैं तुमसे प्यार करता हूँ।”
- "मैं भी आपसे प्यार करता हूँ।"
मैं दिल में खुशी लिए कमरे से बाहर निकली। सांस लेना मुश्किल हो रहा था।
लेकिन मैं खुश थी। सचमुच।
कोठरी में वापस आकर सन्नाटा छा गया। मार्को कपड़े तह कर रहा था। उसने मुस्कुराते हुए मेरी तरफ देखा।
— “तो? क्या यह वही थी?”
- "वह ये थी।"
- "और?"
— “यह बिल्कुल वैसा ही था जैसा मैंने उम्मीद की थी। वह शनिवार को वापस आ रही है।”
दिनचर्या जल्दी ही फिर से शुरू हो गई। काम, स्नान, भोजन। अब दिन तेज़ी से बीतने लगे, मानो कोई उद्देश्य हो। हमने अनिवार्य चिकित्सा जाँच भी करवाई: बूस्टर टीके, रक्त परीक्षण, सामान्य जाँच। चिकित्सा कर्मचारी पेशेवर और सम्मानजनक थे। थाईलैंड में हमने जो देखा था, उससे बिल्कुल अलग। यहाँ हमारे साथ इंसानों जैसा व्यवहार किया गया। हमारी बात सुनी गई, गोपनीयता बरती गई, और नियमित रूप से जाँच की गई। मुझे अपनी नींद की समस्याओं, ज़मीन पर सोने के कारण होने वाले कमर दर्द के बारे में भी बताने का मौका मिला, और उन्होंने मुझे एक फिजियोथेरेपिस्ट से मिलने का सुझाव दिया।
फिर वो दिन आया जब मेरी पहली मुलाकात मेरी जेल सलाहकार से हुई, जो मेरे पुनर्वास और परिवीक्षा के लिए मेरी परामर्शदाता थीं। तीस वर्ष की एक महिला—संयमित, शांत, बालों को पोनीटेल में बांधे हुए, आँखें स्थिर और सीधी।
— “हैलो, मैं एमिलि हूँ। मैं आपको आपके वाक्य में मार्गदर्शन करूँगी।” उसने मुझे बैठने के लिए कहा और एक मोटी फाइल खोली।

— “मुझे आपके वकील से पहले ही काफी जानकारी मिल चुकी है। वह इस पर काम कर रही हैं—उन्होंने मुझे आपके आवास का विवरण, नौकरी का इतिहास, पुराने वेतन पर्ची… सब कुछ भेजा है।”
मुझे आश्चर्य हुआ। और साथ ही तसल्ली भी मिली।
— “आपने काफी लंबा सफर तय किया है… मैंने आपकी फाइल पढ़ी, और सच कहूं तो, आप खुद को बहुत अच्छे से व्यक्त करते हैं।”
— “धन्यवाद… मैं आगे बढ़ना चाहती हूँ। मैंने नरक जैसी जिंदगी जी है। अब मैं फिर से एक सामान्य जीवन जीना चाहती हूँ। अपनी माँ से मिलना, काम करना, प्यार करना। बस इतना ही।”
— “क्या आपने अभी तक अस्थायी छुट्टी के लिए आवेदन किया है?”
— “मैं ऐसा करने ही वाला था। मुझे लगभग यकीन ही नहीं हो रहा। बस कुछ घंटे बाहर रहना… यह तो पागलपन होगा।”
वह धीरे से मुस्कुराई।
— “छुट्टी एक अधिकार है—लेकिन यह उचित और सुव्यवस्थित होनी चाहिए। यदि मुझे आपका अनुरोध ठोस लगता है, तो मैं इसे न्यायाधीश के समक्ष प्रस्तुत कर सकता हूँ। छुट्टी एक गंभीर ज़िम्मेदारी है। लेकिन यदि आप समय पर वापस आ जाते हैं, यदि सब कुछ ठीक रहता है, तो पैरोल के लिए आवेदन करते समय इसका बहुत महत्व होता है।”
उसने कुछ नोट्स लिखे।
— “हम मिलकर आपकी योजना बनाएंगे। आपके पास आवास है, परिवार का सहयोग है, नौकरी की संभावनाएं हैं… यह अच्छी बात है। वाकई बहुत अच्छी बात है।” मीटिंग से निकलते समय मैं पहले से कहीं ज़्यादा प्रेरित थी। मैं वो अर्जी दाखिल करने वाली थी। मुझे नहीं पता था कि मुझे वो मिलेगी या नहीं—लेकिन मैं तैयार थी। यह दिखाने के लिए तैयार थी कि मैं क्या बन चुकी हूँ। व्यवस्था का भरोसा फिर से जीतने के लिए तैयार थी। और सबसे बढ़कर… अपनी आज़ादी को धीरे-धीरे वापस पाने के लिए तैयार थी।
दिन हमारी कल्पना से भी तेज़ी से बीत गए। CPIP से मिलने के बाद, मुझे एक नई लय मिल गई थी। कैंटीन में काम करने से हम सक्रिय रहते थे। इतने अजीब माहौल में भी, लोगों से संपर्क धीरे-धीरे सामान्य होता जा रहा था। मार्को और मैंने जेल में अपनी एक अलग जगह बना ली थी। दूसरे कैदी हमें जानते थे, हमारा अभिवादन करते थे। कुछ हमारा सम्मान करते थे। कुछ सतर्क रहते थे। इसमें कोई

आश्चर्य की बात नहीं है—जेल में विश्वास कमाया जाता है, और एक गलत कदम सब कुछ छीन सकता है।
एक सुबह, जैसे ही हमने तीसरी मंजिल पर सामान पहुँचाना समाप्त किया, लिफ्ट के सामने दो कैदियों के बीच झगड़ा छिड़ गया। उनमें से एक, दुबला-पतला, बेचैन और धूर्त आँखों वाला आदमी—जिसका उपनाम मौफू था—ने दूसरे आदमी पर अपने कैंटीन के ऑर्डर से टूना मछली का डिब्बा चुराने का आरोप लगाया। कुछ ही सेकंड में, गाली-गलौज शुरू हो गई।
— “अरे गंदे चूहे! अब चोरी कर रहे हो क्या?!”
— “चुप रहो, ये मैंने नहीं किया! ये तुम्हारी बेवकूफ सहायक की गलती है जो सब कुछ गलत तरीके से बांट रही है!”
मार्को, जिसका इस मामले से बिल्कुल भी कोई लेना-देना नहीं था, बीच में फंस गया। उसने मामले को शांत करने की कोशिश की, लेकिन मौस्तिक ने उसे धमकी भरी निगाहों से देखा।
— “हो सकता है कि तुम अभी इसे ज़ेन की तरह पेश कर रहे हो, लेकिन यहाँ हम गलतियों को नहीं भूलते, चचेरे भाई।”
तुरंत ही गार्ड ने हस्तक्षेप किया, उन्हें अलग किया और हम आगे बढ़ गए। लेकिन ऐसे दृश्य आपको याद दिलाते हैं कि यह अभी भी जेल है। यहाँ कभी भी पूरी तरह से शांति नहीं होती, भले ही सब कुछ नियंत्रण में लगे।
उस शाम हमने अपनी कोठरी में इस बारे में बात की। मार्को तनाव में था, हालाँकि उसने इसे छिपाने की कोशिश की।
— “वो मौस्तिक नाम का आदमी पहले भी मुसीबत खड़ी कर चुका है। गांजा बेचता है, फोन बूथों में गड़बड़ी करता है। हमें उसके आसपास संभलकर रहना चाहिए।” खुशकिस्मती से, इस अफरा-तफरी के बीच, सच्चे रिश्ते भी बन रहे थे—वैसे रिश्ते जो हम अच्छे लोगों के साथ बनाना शुरू कर रहे थे। जैसे कामेल, हमेशा की तरह वफादार, जो कभी-कभी चुपके से हमें नुटेला का एक जार या कुछ उबले अंडे दे देता था। या बिलाल, 93 बैच का एक बंदा, हथियारबंद डकैती के जुर्म में जेल में था, लेकिन दिल से बहुत अच्छा इंसान था। वह चित्रकारी में बेहद माहिर था। एक दिन उसने मुझे बिक पेन से मेरे चेहरे का एक स्केच दिया—बेहद बारीकी से, एकदम साफ-सुथरा।
— “भाई, तुम्हारा चेहरा किसी उपन्यास जैसा है,” उसने हंसते हुए कहा। “तुम्हें कभी अपनी कहानी लिखनी चाहिए। तुमने तो मानो एक फिल्म जी ली है।”

अचानक किए जाने वाले व्यायाम सत्रों, आंगन में फुटबॉल या समसामयिक घटनाओं पर अंतहीन बहसों और समाचार चैनलों को देखते हुए बिताई गई लंबी शामों के बीच, समय तेजी से बीतने लगा। लेकिन मेरे मन में हमेशा एक ही धुन सवार रहती थी: बाहर निकलना।
अगले गुरुवार को मुझे पूरी जांच के लिए बुलाया गया। मैं अस्पताल गया। गलियारे एकदम ठंडे थे—लगभग क्लीनिकल माहौल था। एक डॉक्टर ने मेरा स्वागत किया, उनके गले में स्टेथोस्कोप लटका हुआ था, वे थोड़े ऊबे हुए लग रहे थे लेकिन फिर भी पेशेवर थे।
— “वजन बढ़ रहा है। यह अच्छी बात है। लेकिन अपने कोलेस्ट्रॉल पर नज़र रखें। क्या आप सही खान-पान अपना रहे हैं?”
मैं मुस्कुराया।
— “एक राजा की तरह। शायद कुछ ज़्यादा ही अच्छी तरह।”
उन्होंने कुछ नोट्स लिखे, थोड़ा और खून लिया, मुझे वैक्सीन का बूस्टर डोज दिया। फिर उन्होंने मेरी आंखों में सीधे देखा।
— “आप जानते हैं, यहाँ असल में जो चीज़ फर्क डालती है, वह आपकी शारीरिक सेहत नहीं है। बल्कि, आपके दिमाग में क्या चल रहा है, वह मायने रखता है। अगर आप मानसिक रूप से मजबूत हैं, तो आप किसी भी चीज़ का सामना कर सकते हैं।” मैं गहरी सोच में डूबा हुआ वहां से चला गया। वह सही था।
उस शनिवार की सुबह, जैसा उसने कहा था, जूलिया वापस आ गई। मैंने अपनी सबसे अच्छी स्वेटशर्ट पहन ली थी—वही जो मेरी माँ ने मुझे दी थी। मैं सुबह 8 बजे से बेचैनी से इधर-उधर घूम रही थी। जब वह मुलाकात के लिए बनी खिड़की के पीछे आई, तो वह पहली बार से ज़्यादा शांत और कम झिझकती हुई लग रही थी। उसने मुझे गले लगा लिया।
— “इस बार मैंने अपना पूरा शनिवार खाली कर दिया है। हमारे पास दुनिया का सारा समय है।”
हमने हर बात पर चर्चा की—उसकी नौकरी, मेरी योजनाएँ। वह चाहती थी कि हम बाद में साथ मिलकर एक छोटा व्यवसाय शुरू करने के बारे में सोचें। कोई ऑनलाइन दुकान। मैं तो बस उसके साथ बाहर घूमने, ताज़ी हवा में सांस लेने और किसी चहलकदमी की छत पर बैठकर स्वादिष्ट भोजन करने का सपना देख रहा था। उसने वादा किया कि जैसे ही मुझे पहली छुट्टी मिलेगी, वह सारी योजना बनाना शुरू कर देगी।

अगले हफ्ते मुझे अपने CPIP से मिलने के लिए वापस बुलाया गया।
— “अच्छी खबर है,” उसने मुझे एक कागज़ देते हुए कहा। “जज ने आपकी पहली छुट्टी मंज़ूर कर दी है। एक दिन की। शनिवार, दो हफ्ते बाद। सुबह 9 बजे से शाम 7 बजे तक। आपको उसी रात वापस आना होगा, लेकिन… आप बाहर जा रहे हैं।” मैं उसे देखकर स्तब्ध रह गया।
- "वास्तव में?"
— “इस पर हस्ताक्षर हो गए हैं। बधाई हो।”
मैं लड़खड़ाते पैरों से बाहर निकला। मार्को आंगन में मेरा इंतजार कर रहा था।
- "कुंआ?"
मैंने एक शब्द भी नहीं कहा। मैंने बस कागज़ ऊपर उठा दिया। वह खुशी से चिल्लाया और मुझे ज़ोर से गले लगा लिया। हमारे आस-पास के लोग ताली बजाने लगे—सचमुच खुश थे।
बेशक, अभी लंबा सफर तय करना बाकी था। लेकिन उस दिन, मुझे फिर से कुछ चिंगारी सी महसूस हुई।
आशा। सच्ची आशा। ऐसी आशा जो अब कल्पना से नहीं, बल्कि वास्तविक दुनिया से आती है।
ठंड अब सचमुच अपना असर दिखाने लगी थी। हर सुबह, जब हम खिड़की खोलकर थोड़ी हवा अंदर आने देते, तो हवा का एक तेज़ झोंका अंदर आता और हमारी त्वचा को चुभता, यह याद दिलाता कि अक्टूबर लगभग खत्म हो चुका है। सूरज की रोशनी भी अब फीकी, कुछ पतली सी सी लगने लगी थी।
हमने अपनी थाई आदतें, यानी अत्यधिक स्वच्छता, बरकरार रखीं। हर सुबह, मार्को और मैं कोठरी को ऐसे साफ करते थे जैसे वह हमारा निजी अपार्टमेंट हो: एकदम साफ फर्श, करीने से बिछे बिस्तर, और करीने से तह किए हुए कपड़े। जब भी पहरेदार आते, वे हमेशा हैरान रह जाते थे।
— "यह क्या है, किसी मैगज़ीन के लिए फोटोशूट है क्या?" उनमें से एक नियमित रूप से साफ-सुथरी जगह को देखकर मुस्कुराते हुए मजाक करता था।
मार्को के पास हमेशा एक तीक्ष्ण उत्तर तैयार रहता था:
— “बस थाईलैंड की आदतें हैं, बॉस। हम चूहों को दूर रखने के लिए इस तरह सफाई करते थे।”

इससे अक्सर खूब हंसी आती थी। लेकिन असल में, यह हमारे जीवन के इस छोटे से हिस्से पर अपना नियंत्रण बनाए रखने की हमारी ज़रूरत के बारे में था।
हमने नई दिनचर्या बना ली थी। मेरी माँ हर हफ्ते धुले हुए कपड़ों से भरा थैला लेकर आती थीं, और जूलिया भी जब भी हो सकता था, मिलने आती थीं। हमारे दोस्त नहीं आ पाते थे—मुलाकात के नियम बहुत सख्त थे—लेकिन उनके पत्रों ने हमारे रिश्ते को कायम रखा।
हमने कुछ नए लोगों से जान-पहचान बनाई थी—कुछ से अच्छी जान-पहचान, जैसे कामेल और जोआओ, और कुछ से थोड़ी परेशान करने वाली, जैसे कि प्लंबर। वह जेल में हर जगह काम करता था। उसका जुर्म बहुत भयानक था: उसने अपनी पत्नी की गैरमौजूदगी में अपनी सौतेली बेटी को पार्किंग गैरेज में बंद कर दिया था और उसके साथ दुष्कर्म किया था। उसे बीस साल की सज़ा मिली। जब हमने गार्डों से यह कहानी सुनी, तो मार्को और मैंने उससे दूर रहने का फैसला किया। और वह यह जानता था। वह हमसे दूरी बनाए रखता था, क्योंकि उसे पता था कि उसकी मौजूदगी से हर कोई घृणा करता है।
हर रविवार सुबह, हम जेल के अंदर बने छोटे से चैपल में प्रार्थना सभा में शामिल होते थे। हमें पहले से पंजीकरण कराना पड़ता था, और गार्ड सुबह लगभग 8 बजे हमें लेने आते थे ताकि हम शांति और आत्मीयता के इस अनमोल पल का आनंद ले सकें, जो 11 बजे तक चलता था। फादर फ्रांस्वा, एक सौम्य और मृदुभाषी व्यक्ति थे, वे अपनी आवाज़ में गर्मजोशी और आँखों में दया भाव के साथ हमारा स्वागत करते थे।
“अंदर आओ, अंदर आओ, मेरे बच्चों। यहाँ तुम्हें शांति मिलेगी। अपनी चिंताओं को दरवाजे पर ही छोड़ दो।”
प्रवचन के दौरान मार्को कभी-कभी मुझसे फुसफुसाता था, आधा मज़ाकिया अंदाज़ में, आधा गंभीरता से। "क्या तुम्हें विश्वास है कि हम इतने धार्मिक हो गए हैं?" और मैं हमेशा सीधे चेहरे से जवाब देता था, "सच में? आस्था के बिना, हम बहुत पहले ही हार मान चुके होते।"
चिट्ठियाँ आने लगीं। हमेशा कुछ न कुछ देरी होती थी—बाहरी दुनिया और हमारे बीच लगभग दो सप्ताह का फासला होता था—लेकिन किसी परिचित लिखावट वाली चिट्ठी खोलना किसी खजाने की पेटी मिलने जैसा लगता था। मेरी माँ मीठे, दिलासा देने वाले पत्र भेजती थीं, कभी-कभी तस्वीरों के साथ या अपने दिन की मज़ेदार कहानियाँ भी। जूलिया भी लिखती थी, हमेशा लंबे नहीं, लेकिन उसके

शब्द सच्चे होते थे। हम उन चिट्ठियों को बार-बार पढ़ते थे। वे अनमोल वस्तुएँ बन गईं। दीवारों के बाहर की दुनिया के प्रतीक।
मेरी माँ हर हफ्ते आती थीं, कभी नहीं चूकती थीं। वो हमेशा अपने साथ ताज़े, साफ़-सुथरे कपड़ों से भरा एक बड़ा थैला लाती थीं, जिन्हें वो बड़े सलीके से तह करके रखती थीं। जूलिया भी जितना हो सके उतनी बार आने की पूरी कोशिश करती थीं। वो सुबह 7 बजे से ही फोन करना शुरू कर देती थीं, फोन लगने की कोशिश करती थीं और दुआ करती थीं कि लाइन पहले से ही भरी न हो। एक शनिवार को उन्हें किसी तरह समय मिल गया, और मुझे पता था कि इसके लिए उन्हें कितनी मेहनत करनी पड़ी थी—भोर से पहले उठना, ट्रेन का सफर तय करना, तलाशी से गुज़रना, उन साफ़-सुथरे कमरों में इंतज़ार करना... और ये सब उन्होंने मेरे लिए किया।
मार्को और मैं शाम को बहुत बातें करते थे, आमतौर पर खाना खाने के बाद, कभी- कभी चॉकलेट बार के टुकड़े तोड़ते हुए।
“यार, छह महीने पहले हम सड़े हुए चावल खा रहे थे और अधमरे गार्ड हम पर चिल्ला रहे थे...” “और अब मैं बैगेट पर न्यूटेला लगा रहा हूँ... मेरी आँखों में आंसू आ रहे हैं।” “क्या तुम्हें सच में लगता है कि हम बच निकलेंगे?” “हम तो बच ही रहे हैं। बाकी सब तो बोनस है।”
हमने भी खूब मेहनत की। कैंटीन के कर्मचारी आपस में बहुत मिलजुल कर काम करते थे। कामेल हमेशा मज़ाक करता रहता था, जिससे सबका मूड अच्छा हो जाता था, भले ही भारी बक्से उठाने से हमारे हाथ कांप रहे हों। हमें हर समय नए-नए चेहरे देखने को मिलते थे। कुछ अच्छे, कुछ... थोड़े... गंभीर।
वहाँ एक आदमी था—"प्लंबर"। शांत, हमेशा अपने आप में मग्न, सिंक, शावर, पाइप ठीक करता रहता था। कागज़ पर, बस एक और कैदी जिसे नौकरी मिल गई थी। लेकिन असल में… एक भयानक इंसान। एक गार्ड, जो साफ़ तौर पर परेशान था, ने हमें उसकी कहानी सुनाई। उस आदमी ने अपनी सौतेली बेटी को एक पार्किंग गैरेज में बंद कर दिया था और उसके साथ दुर्व्यवहार किया था। उसे बीस साल की सज़ा मिली। जब वह पास से गुज़रा तो मार्को और मैंने बस सिर हिलाया। उसने हमारे अविश्वास को भांप लिया। और उसने इसे स्वीकार कर लिया, जैसे सज़ा के अंदर एक और सज़ा हो।
रविवार का दिन हमेशा प्रार्थना सभा के लिए होता था। आध्यात्मिकता, शांति और मानवता का एक दुर्लभ क्षण। पादरी, जो एक पूर्व सैनिक थे और बाद में धर्म

के सेवक बन गए थे, उनकी आवाज़ गहरी और मधुर थी। वे दृढ़ता, क्षमा और आशा के बारे में उपदेश देते थे।
"यहां, इन दीवारों के भीतर, आप शायद गिर गए हों... लेकिन आप अभी भी खड़े हैं।"
इसका गहरा असर हुआ। इसने हमें हर हफ्ते याद दिलाया कि सब कुछ होने के बावजूद, हम अभी भी पुरुष हैं।
ठंड धीरे-धीरे बढ़ने लगी। अब हम ज़्यादातर समय खिड़कियाँ बंद ही रखते थे। ठंडी हवा हमारी त्वचा को चुभ रही थी। हमने अपने सबसे गर्म कपड़े निकाले— स्वेटशर्ट, मोटे जॉगर्स। पतझड़ धीरे-धीरे अपना असर दिखा रहा था। और तभी खबर आई।
मुझे सुनहरा मौका मिल गया था: अस्थायी रिहाई। दो दिन के लिए। मुझे यकीन नहीं हो रहा था। मार्को मेरी खुशी से पागल हो गया।
“भाई! ये तो बहुत बड़ा है! तुम्हें अपने चेहरे पर तेज़ हवा का एहसास होगा!” मैंने आधे मजाक में और आधे घबराते हुए कहा, "मुझे तो यह भी नहीं पता कि मैं कैसे प्रतिक्रिया दूंगी... मुझे डर है कि मैं फुटपाथ पर सीधे चलना ही भूल जाऊंगी।"
“चिंता मत करो। सब ठीक हो जाएगा। तुम तो सड़क पार करने के लिए हरी बत्ती का भी इंतजार करोगे—बिल्कुल एक असली आज़ाद आदमी की तरह!”
मेरी रिहाई से एक रात पहले, मैं मुश्किल से सो पाया। मेरी कोठरी एकदम साफ थी। मैंने हर कोने को अच्छी तरह से साफ किया था, अपने कपड़ों को बड़ी सावधानी से तह किया था, और अपनी धातु की अलमारी में हर चीज़ को ऐसे सजाया था जैसे कोई व्यक्ति अपनी गरिमा साबित करने के लिए अपनी छाप छोड़ रहा हो। मार्को भी जल्दी उठ गया था, उसने ज्यादा कुछ नहीं कहा, लेकिन उसकी आँखों ने सब कुछ बयां कर दिया।
आप सबसे पहले क्या करने वाले हैं?
मुझे नहीं पता... शायद बस हवा में सांस लेना। लोगों को देखना। चलना।
"अगर मैं होता, तो मैं एक लजीज कबाब लेता, जिसमें खूब सारी चीजें हों—सफेद सॉस, हरीसा और फ्रेंच फ्राइज़।"
तुम तो बिलकुल बेवकूफ हो...
हम हँसे। एक छोटी, घबराहट भरी हँसी। लेकिन वह सच्ची हँसी थी।

सुबह 8 बजे दरवाजे पर दस्तक हुई। एक गार्ड हाथ में कागज का एक टुकड़ा लिए इंतजार कर रहा था।
"अब समय आ गया है, लियो।"
मार्को ने मुझे कसकर गले लगा लिया। उसने कुछ नहीं कहा। उसकी आँखों ने ही सब कुछ बयां कर दिया।
मैं गार्ड के साथ बाहर निकला। बस एक साधारण ट्रैकसूट, एक काली हुडी, और घिसे-पिटे स्नीकर्स। न कोई बैग, न घड़ी, न फोन। बस मैं और दो दिन की आज़ादी, जिसे मैंने किसी नाज़ुक चीज़ की तरह संभाल कर रखा था।
वे मुझे मुख्य द्वार तक ले गए। हफ़्तों पहले मुझे निगल जाने वाले वे विशाल स्टील के दरवाजे धीरे-धीरे खुलने लगे। बहुत धीरे-धीरे। मेरा दिल युद्ध के ढोल की तरह धड़क रहा था।
और फिर मैंने उसे देखा। मेरी माँ। वहीं, बाहें फैलाए, आँखों में आँसू भरे।
उसके बगल में, डैनियल—मेरा जीवन भर का दोस्त, हमेशा की तरह शांत और दृढ़। मैं बाहर निकला, मेरे पैर ऐसे काँप रहे थे जैसे कोई छोटा बच्चा चलना सीख रहा हो। और मैं दौड़कर उसकी बाहों में जा गिरा।
“माँ...” “मेरा बेटा... मेरा बेटा...”
हमने एक-दूसरे को गले लगाया। शब्दों की कोई ज़रूरत नहीं थी। पाँच साल का दर्द, इंतज़ार, प्रार्थना, अन्याय और अकेलापन, सब उस आलिंगन में बिखर गया। मैं रो पड़ी। कोई शर्म नहीं, कोई रोक-टोक नहीं। बस आँसू बहते रहे—गर्म, सच्चे, अनियंत्रित।
डैनियल ने हमें कुछ पल का समय दिया, फिर कार का दरवाजा खोला। यात्री सीट पर एक बड़ा बक्सा रखा था।
मुझे लगा कि आपको यह पसंद आएगा।
गरमा गरम क्रोइसैन। पेन औ चॉकलेट। कटी हुई ब्रियोश। ताज़ा संतरे का रस।
“ये सब गली के उस पार वाली बेकरी से हैं। वही बेकरी जहाँ से तुम बचपन में जाया करते थे।”
मैं जन्मदिन पर बच्चे की तरह मुस्कुरा रहा था।
मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं सपना देख रहा हूँ...
हाईवे पर, मैं चुपचाप खिड़की से बाहर देखता रहा। सड़क के संकेत, इमारतें, कारों में बैठे लोग। वो दुनिया जो मेरे बिना चलती रही। मुझे लगा जैसे मैं

एक भूत हूँ। किसी दूसरे युग की कोई उपस्थिति, जो समय में वापस आने की कोशिश कर रही है।
आसमान नीला था, जिसमें कुछ हल्के सफेद बादल बिखरे हुए थे। वह फीका धूसर रंग नहीं था जो हमने कांटेदार तारों के बीच से देखा था। एक असली आसमान—खुला, विशाल, जीवंत। इसने मुझे याद दिलाया कि जीवन अभी भी आगे बढ़ रहा है।
माँ के अपार्टमेंट में वापस आकर, सब कुछ पहले जैसा ही लग रहा था। वही तस्वीरों के फ्रेम, वही सोफे के तकिए। उन्होंने मेरे पसंदीदा स्नीकर्स भी अलमारी में रखे हुए थे। मैं अपने पुराने कमरे में गई। बिस्तर लगा हुआ था। मैंने नाइटस्टैंड का दराज खोला और उसमें एक पुरानी नोटबुक मिली। थाईलैंड जाने से पहले मैंने उसमें कुछ लिखा था। मेरे शरीर में एक सिहरन दौड़ गई, मानो मेरा ही कोई दूसरा रूप मुझे घूर रहा हो।
“क्या तुम्हें भूख लगी है?”
“मुझे अब हमेशा भूख लगती है। यह मेरे स्वभाव में ही है।”
वह राहत भरी हंसी हंसी। वह रसोई में चली गई और झटपट तले हुए अंडे, पनीर, सलाद और बची हुई लज़ान्या बनाने लगी। मैंने सब कुछ ऐसे खाया जैसे अभी-अभी रेगिस्तान से निकला हो। हर निवाला एक यादगार अनुभव था। नमक, मक्खन, जड़ी- बूटियाँ... जेल की कैंटीन के फीके खाने से बिलकुल अलग। यह तो मानो प्यार की थाली थी।
उस दोपहर मैं अकेले ही मोहल्ले में टहलने निकल गया। मैंने जाने-पहचाने चेहरे देखे, उत्सुक निगाहों से घूरते लोगों को देखा, लेकिन मैं रुका नहीं। मुझे बस ताज़ी हवा चाहिए थी। मैं घंटों चलता रहा, हाथ जेब में डाले, कैफे की छतों पर लोगों को हंसते हुए, एक बच्चे को साइकिल चलाते हुए, एक कुत्ते को अपनी रस्सी खींचते हुए देखता रहा।
मुझे थाईलैंड की याद आई। तिलचट्टों से भरी कोठरियों की, पसीने और सड़न की दुर्गंध की, रातों की चीखों की। मुझे मार्को की याद आई। हमारे वादे, हमारा संघर्ष, नरक के बीच हमारी बेतुकी हंसी। और मैंने खुद से वादा किया—मैं कभी नहीं भूलूंगी।
अगली शाम, मेरी माँ ने कुछ करीबी दोस्तों को रात के खाने पर बुलाया। बस कुछ ही लोग थे। उन्होंने ढेरों सवाल पूछे, लेकिन ज़बरदस्ती नहीं की। मैंने जब मन किया तब बोला। उन्होंने मुझे अपना समय दिया। वे बस मुझे देखकर खुश थे।
ज़िंदा। यहाँ। खड़ा हुआ।

मंगलवार को, फ्लेरी में मेरी वापसी से ठीक एक दिन पहले, आखिरकार मेरी मुलाकात जूलिया से दोबारा हुई।
हम दोनों ने रिपब्लिक में मिलने का तय किया था, जैसे कोई पुराना पेरिसियन जोड़ा फिर से एक-दूसरे के साथ समय बिता रहा हो। मैंने उसे दूर से ही पहचान लिया—पतली काया, काले स्वेटर के ऊपर बेज रंग का कोट खुला हुआ, बाल हल्के से पीछे बंधे हुए। उसने भी मुझे देख लिया। और बस, पल भर में समय थम गया। न कोई शब्द, न कोई जल्दबाजी। बस एक नजर। एक कदम। फिर दूसरा। और एक ऐसा आलिंगन जिसने सब कुछ मिटा दिया: वर्षों का सन्नाटा, दूरी, दर्द, खामोशी। मैंने अपना चेहरा उसकी गर्दन में छिपा लिया और उसकी खुशबू को महसूस करते हुए खुद को यकीन दिलाने की कोशिश की कि यह सब सच है।
“तुम बिल्कुल नहीं बदली हो…” मैंने फुसफुसाते हुए कहा। “तुम भी नहीं बदले… तुम बस… ज़्यादा जीवंत लग रहे हो,” उसने धीरे से जवाब दिया।
हम दबी आवाज़ में बात कर रहे थे, मानो सड़क पर सब हमें सुन रहे हों। मानो यह नाज़ुक पल किसी भी क्षण हमसे छिन सकता हो। मैं लगातार फुटपाथ पर, गुज़रते लोगों पर, आस-पास की इमारतों पर नज़र गड़ाए हुए थी। मैं वहाँ थी, लेकिन मेरा एक हिस्सा अब भी फ्लेरी की धूसर दीवारों के पीछे फंसा हुआ था। मैं पूरी तरह से आराम नहीं कर पा रही थी, पूरी तरह से खुद को छोड़ नहीं पा रही थी। मेरे मन में एक छोटी सी आवाज़ बार-बार पूछ रही थी कि क्या मैं सचमुच वहाँ, उस शहर में, उसके साथ, उस जीवन में रहने लायक हूँ।
“तुम कहीं और हो,” उसने धीरे से कहा और अपना हाथ मेरे हाथ पर रख दिया। “मुझे पता है… मुझे माफ़ करना।” “कोई बात नहीं। कोई बात नहीं।”
मैंने उसे काफी देर तक देखा। "मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैंने कोई धोखा दिया हो। जैसे मैंने यह दिन चुरा लिया हो। जैसे मुझे इसे जीने का हक ही नहीं था।"
उसने मेरा हाथ थोड़ा और कसकर पकड़ लिया। “तुमने कुछ भी नहीं चुराया। तुम्हें दोषी महसूस करने की कोई ज़रूरत नहीं है। तुम इस दिन के हकदार हो। और जानते हो क्या? मुझे बस खुशी है कि तुम यहाँ हो।”
मैं मुस्कुराई—सचमुच मुस्कुराई—काफी समय बाद। बच्चों जैसी मुस्कान। ऊपर नारंगी पत्तों से छनकर आती धूप उसकी आधी खाली कॉफी के कप पर हल्की परछाईं बना रही थी। उसके बाद हम धीरे-धीरे, हाथ में हाथ डालकर चलने लगे। हम ले माराइस में टहल रहे थे। उसने ज़िद की कि मुझे एक टी-शर्ट खरीदकर दे, "इस

पल की याद के तौर पर," उसने कहा। मैंने उसे खरीदने दिया। मुझे थोड़ी झिझक भी हुई, पर खुशी भी हुई।
दुकान के अंदर, सेल्सगर्ल को टहलते हुए एक आम जोड़े के अलावा कुछ नहीं दिखा, जो आपस में हंस रहे थे। उसे कुछ पता नहीं था। उसे पता ही नहीं चल सकता था। लेकिन मैं—मैं हर गली के मोड़ पर पीछे मुड़कर देखती रही। मैं वर्दी पहने लोगों को ढूंढती, हर चेहरे को गौर से देखती। मेरे मन में कहीं न कहीं यह विश्वास था कि कोई मुझे वापस ले जाने आएगा, मुझे बताएगा कि यह सब एक गलती थी, बस एक सपना था। लेकिन कोई नहीं आया। आज़ादी का स्वाद अजीब था— बहुत मीठा, बहुत हल्का। ऐसा लग रहा था जैसे वह उड़ जाएगी।
हमने दोपहर एक छोटे से पार्क में बेंच पर साथ बैठकर बिताई। वह मेरे करीब सिमट गई। मेरा दिल ऐसे धड़क रहा था जैसे मैं भाग रहा हूँ। लेकिन असल में, यह बस शांति थी। खामोशी। प्यार।
शाम करीब छह बजे, मैं उसे स्टेशन तक छोड़ने गया। उसे वापस जाना था—अगली सुबह उसकी शिफ्ट थी। हमने काफी देर तक एक-दूसरे को चूमा, उस पल को संजोकर रखा। उसे प्लेटफार्म पर जाते हुए देखते ही मेरे पेट में वही जानी-पहचानी टीस उठी।
बुधवार बहुत जल्दी आ गया। बहुत जल्दी। मैंने नहाया और साफ कपड़े पहने। मेरी माँ ने मेरे लिए एक बैग पैक किया था—मार्को के लिए नए कपड़े, रसोई में काम करने वाले लड़कों के लिए कुकीज़ का एक डिब्बा, और उस हेड गार्ड के लिए एक हाथ से लिखा पत्र जिसे सब लोग पसंद करते थे।
हम वापस कार में बैठ गए। सफ़र एकदम शांत था। न कोई संगीत, न कोई बातचीत। बस विदाई का गहरा एहसास। जब हम फ्लेरी पहुंचे, तो मैंने दीवारों को देखा— ऊँची, धूसर और जानी-पहचानी सी। मैं बाहर निकली। डैनियल ने मुझसे हाथ मिलाया। मेरी माँ ने मुझे आखिरी बार गले लगाया।
“यह आखिरी बार है। अगली बार जब तुम बाहर जाओगे… तो हमेशा के लिए जाओगे।” मैंने सिर हिलाया। कोई वादा नहीं। बस मेरी आँखों में एक ऐसी ज्वाला थी जो कह रही थी कि मुझे उस पर विश्वास है।
मेरे पीछे दरवाजे उसी मशीनी गड़गड़ाहट के साथ बंद हो गए। वही अंतिम विराम।
एक गार्ड ने मेरी ओर सिर हिलाया।
“तो, आज़ाद दुनिया कैसी रही?” “बहुत तेज़। बहुत खूबसूरत। लेकिन मैं वापस आऊंगा। इस बार हमेशा के लिए।”

[illegible]

अध्याय 15: फिर से जीना सीखना
आज़ादी के उन दो अनमोल दिनों के बाद अपनी कोठरी में वापस आकर, मैं पहले से ज़्यादा मज़बूत महसूस कर रहा था—ज़्यादा केंद्रित, हमेशा के लिए बाहर निकलने का ज़्यादा दृढ़ निश्चय। मैं बिल्कुल समय पर लौटा था, कोई अड़चन नहीं आई, और अपनी छुट्टी की हर शर्त का पूरी तरह से पालन करने के लिए प्रतिबद्ध था। गार्डों ने एक छोटे से, लगभग मिलीभगत भरे इशारे से मेरा अभिवादन किया। उनमें से एक ने मज़ाक में कहा, “ज़्यादा देर तक रुके तो नहीं, है ना? हमें चिंता होने लगी थी...” मैं मुस्कुराया, यह देखकर राहत मिली कि कोठरी वैसी ही थी जैसी हमने छोड़ी थी—सही सलामत, साफ़-सुथरी, व्यवस्थित। मार्को के चेहरे पर थकी हुई नज़र के अलावा कुछ भी नहीं बदला था।
जैसे ही मैंने अंदर कदम रखा, मार्को ने मेरा गर्मजोशी से स्वागत किया, वह बाहर की दुनिया की हर बात जानने के लिए उत्सुक था। “तो? मुझे सब कुछ बताओ! बाहर कैसा है?” “यार… यह तो बिल्कुल अद्भुत था। मैं गलियों में ऐसे घूम रहा था जैसे कोई बच्चा पहली बार दुनिया को खोज रहा हो—खुशबू, आवाज़ें, यहाँ तक कि मेरे चेहरे पर हवा भी… मैं भूल ही गया था कि साधारण चीजें भी कितनी खूबसूरत हो सकती हैं।” “और तुम्हारी माँ? जूलिया? वे कैसी हैं?” “खुश हैं। लेकिन इस सब के खत्म होने को लेकर चिंतित हैं। जूलिया ने वादा किया है कि जब तक मैं हमेशा के लिए बाहर नहीं निकल जाता, वह हर कदम पर मेरे साथ रहेगी।”
मार्को मुस्कुराया, लेकिन मैंने उसकी आँखों में चिंता की एक झलक देखी। “काश मेरे लिए भी चीजें इतनी ही तेजी से आगे बढ़तीं। मेरा वकील अब मुश्किल से ही कोई अपडेट देता है। हमेशा एक ही बात कहता है: ‘धैर्य रखें, मामला आगे बढ़ रहा है।’ लेकिन यार... इससे मैं बहुत परेशान हो गया हूँ।” “उम्मीद बनाए रखो, मार्को। मुझे यकीन है कि जल्द ही सब ठीक हो जाएगा। फ्रांसीसी नौकरशाही धीमी है, लेकिन काम करती है।”
हम कामेल और जोआओ के साथ रसोई में अपनी दिनचर्या में वापस लौट आए। माहौल बहुत बढ़िया था—आपस में घनिष्ठता और हल्का-फुल्का उत्साह। हर सुबह, जब हम खाने की गाड़ियाँ भरते थे, कामेल कोई पुराना फ्रांसीसी गाना बजाता था— जैसे अज़नावूर, पियाफ़—और हम सब उसे नशे में धुत नाविकों की तरह ज़ोर-ज़ोर से गाते थे। यहाँ तक कि पहरेदार भी रुक जाते थे, कभी हँसते हुए, कभी

उत्सुकता से। एक बार मुखिया ने मज़ाक में कहा, “सज्जनों, लगता है हमारे पास एक बढ़िया बैंड है।” जोआओ ने जवाब दिया, “बिल्कुल सही, बॉस! हम जल्द ही आँगन में संगीत कार्यक्रम करने वाले हैं!”
उस नादानी ने हमें उन दीवारों के अंदर चैन की सांस लेने में मदद की। पहरेदार हमें पसंद करते थे। वे हमारे काम का सम्मान करते थे और हम पर भरोसा करते थे। वे अब गाड़ियों की जाँच भी नहीं करते थे—वे जानते थे कि हम चीजों को सावधानी से संभालते हैं। हमारी प्रतिष्ठा लगभग किंवदंती बन चुकी थी। तभी मैंने दूसरी छुट्टी की अर्जी दाखिल करने का फैसला किया। मेरे वकील, आत्मविश्वास से भरे हुए, ने तो यहाँ तक सुझाव दिया कि हमें और आगे बढ़ना चाहिए। “लियो, तुम्हारी माँ ने तुम्हारे लिए एक बढ़िया नौकरी का प्रस्ताव ढूंढ लिया है। और तुम्हारी वापसी के बाद से तुम्हारा रिकॉर्ड कितना साफ रहा है, इसे देखते हुए, हम पैरोल के लिए अर्जी दाखिल कर सकते हैं।” “क्या तुम्हें सच में लगता है कि जज मान जाएँगे?” “हाँ, मुझे पूरा यकीन है। लेकिन यह काफी हद तक तुम्हारी काउंसलर - एमिली - की रिपोर्ट पर निर्भर करेगा। तुम जो कर रही हो, वही करती रहो, और मुझे लगता है कि हमारे पास मौका है।”
मुझे थोड़ी उम्मीद थी, लेकिन साथ ही थोड़ी सतर्कता भी थी। आज़ाद होकर घूमने का ख्याल अब भी अवास्तविक सा लग रहा था—लेकिन मैंने उस उम्मीद को मजबूती से थामे रखा।
इस बीच, मार्को अपने वकील की चुप्पी के बावजूद आशावान बना रहा। हमारी शामें जेल से निकलने के बाद के जीवन के बारे में लंबी बातचीत में बीतती थीं — वह दिन जब हम आखिरकार इन बर्फीली दीवारों से दूर, अपने जीवन को फिर से हासिल कर लेंगे।
इसी बीच, मैंने एमिली के सुझाव पर कुछ अलग करने के लिए साइन अप किया: फ्लेरी डज़ सिनेमा। यह एक शानदार विचार था। हफ्ते में कुछ बार, हम एक अस्थायी स्क्रीनिंग रूम में चुनिंदा कान्स फिल्म फेस्टिवल की फिल्में देखते थे, और फिर आधिकारिक निर्णायकों की तरह उनका मूल्यांकन करते थे। हर दूसरे दिन एक नई फिल्म। कभी-कभी, कोई निर्देशक या अभिनेता वीडियो कॉल के माध्यम से हमारे साथ जुड़ते थे—या संभव होने पर व्यक्तिगत रूप से भी। मुझे निर्वासन पर बनी एक मोरक्कन फिल्म याद है—अविश्वसनीय रूप से प्रभावशाली। फिल्म खत्म होने के बाद, कमरा एकदम शांत हो गया। किसी ने बोलने की हिम्मत नहीं की। फिर कामेल ने धीरे से कहा, “धत् तेरे की… ऊपर

मेरी ज़िंदगी भी कुछ ऐसी ही थी।” और हम सबने सहमति में सिर हिलाया। वो पल? वो अनमोल था—जेल की सलाखों के पीछे भी।
हम हँसे, हमने सीखा, हमने आपस में बातें कीं। कुछ स्क्रीनिंग के बाद, मेहमान हमसे बातचीत करते थे—वास्तविक बातचीत। एक दोपहर, एक जानी-मानी फ्रांसीसी अभिनेत्री ज़ूम पर हमसे जुड़ीं। “आप जानते हैं,” उन्होंने भावुक होकर कहा, “मुझे यह देखकर बहुत खुशी हुई कि इतनी कठिन परिस्थितियों में भी, सिनेमा हमें सुकून, भावना और अर्थ दे सकता है।” “धन्यवाद,” मैंने सहज रूप से उत्तर दिया, “इसे संभव बनाने के लिए। यह हमें याद दिलाता है कि हम अभी भी इंसान हैं। चाहे कुछ भी हो जाए।”
वह मुस्कुराई, उसकी आँखों में नमी आ गई। इस तरह का आदान-प्रदान? अनमोल। अप्रत्याशित और अविस्मरणीय।
मेरी CPIP, एमिलि, शांत और अनुशासित तरीके से मेरा समर्थन करती रहीं। वह समर्पित थीं, मेरे हर शब्द, हर शंका, हर उम्मीद की किरण पर ध्यान देती थीं। एक दिन उन्होंने मुझसे कहा, “लियो, तुम्हारा मामला बहुत मजबूत है। तुम्हारी माँ ने मुझे नौकरी का प्रस्ताव दिलवाया है। मुझे लगता है हमें सशर्त रिहाई के लिए आवेदन करना चाहिए।” “सच में?” “हाँ। मैं एक सकारात्मक रिपोर्ट लिखूँगी। लेकिन ज़ाहिर है, फैसला तो जज का ही होगा। तुम्हें बस अपनी प्रतिबद्धता और निरंतरता बनाए रखनी है।” “क्या तुम्हें सच में लगता है कि मुझे मौका मिलेगा?” “अगर तुम इसे जारी रखते हो, तो हाँ। हर दिन तुम नियमों का पालन करते हो, हर अनुमति को सही तरीके से संभालते हो—ये सब तुम्हारे पक्ष में सबूत हैं। इस तरह की निरंतरता अदालत में मायने रखती है।”
मैं कुछ देर तक वहीं बैठा रहा, अवाक, भावुक। सच्ची आजादी का ख्याल... घर जाना, जूलिया के साथ रहना, फिर से काम करना, धीरे-धीरे एक स्वतंत्र इंसान बनना—इसने मुझे झकझोर दिया।
उस रात, वापस कोठरी में आकर, मैंने मार्को को सुडोकू पर झुका हुआ देखा। “अरे… मैं पैरोल के लिए आवेदन कर रहा हूँ,” मैंने कहा।
उसने ऊपर देखा, एक पल के लिए चुप रहा। फिर, “अच्छा। तुम्हें करना चाहिए।
तुम तैयार हो।” “तुम्हारा क्या?” “मैं? मुझे लगता है मैं भी तैयार हूँ। बस अपने वकील के उस फ़ोन का इंतज़ार कर रहा हूँ।” “आएगा, मार्को। हम साथ में

बाहर निकलेंगे। और हम मेरे घर पर पिज़्ज़ा खाएँगे।” “असली पिज़्ज़ा? बर्राटा और सब कुछ के साथ?” “पक्का। और मिठाई भी।”
वह हँसा। मैं भी हँसी। और शायद वही हँसी, स्वतंत्रता का पहला वास्तविक अनुभव था।
इस बीच, कैंटीन में रोज़मर्रा की गतिविधियाँ चलती रहीं। फिर भी, मेरा मन बार-बार पैरोल के विचार पर लौट रहा था। मैं मार्को से लगातार इस बारे में बात करता रहता था, उसे अपनी लड़ाई में प्रेरित रखने की कोशिश करता था। “मार्को, सुनो… जैसे ही मैं बाहर आऊँगा, मैं तुम्हारे मामले को आगे बढ़ाने में हर संभव मदद करूँगा। अब तुम मेरे भाई हो। मैं तुम्हें कभी अकेला नहीं छोड़ूँगा।” “मुझे पता है, लियो,” उसने कहा। “बस… कभी-कभी मेरा धैर्य टूट जाता है। लेकिन जैसा कि तुम हमेशा कहते हो—उम्मीद बनाए रखें।”
अक्टूबर की रातें ठंडी होती जा रही थीं, और हीटर बढ़ती नमी को रोकने के लिए संघर्ष कर रहे थे। हम ज़्यादा समय बातें करने, ताश खेलने और पढ़ने में बिताते थे। मार्को इतिहास की किताबों में मग्न रहता था, रोमांच की कहानियों का दीवाना, जबकि मैं अपराध उपन्यासों में डूबी रहती थी, यह भूलने की कोशिश करती थी कि हम कहाँ हैं, और उस दिन का सपना देखती थी जब वह दरवाज़ा हमेशा के लिए खुल जाएगा।
एक रात, अपने बिस्तर पर लेटे हुए, मैंने ज़ोर से कहा, “जानते हो मार्को… अगर मुझे पैरोल मिल जाती है, तो मुझे लगता है कि सबसे पहले मैं समुद्र तट पर जाऊँगी। समुद्र की हवा में साँस लूँगी, लहरों की आवाज़ सुनूँगी, रेत पर नंगे पैर चलूँगी…” “अगर तुमने मेरे बिना ऐसा किया,” उसने हँसते हुए जवाब दिया, “मैं कसम खाता हूँ कि मैं तुमसे इसका बदला लूँगा!”
मैं भी ज़ोर से हंस पड़ी—लेकिन मन ही मन जानती थी कि जब तक मार्को यहाँ है, मैं अपनी आज़ादी का पूरा आनंद नहीं ले पाऊंगी। फिर भी, मुझे विश्वास रखना था। अपने लिए। अपनी माँ के लिए। जूलिया के लिए। उन सभी के लिए जो मुश्किल समय में मेरे साथ खड़े रहे। हर रात, जब मैं अपनी आँखें बंद करती, तो मैं उस दरवाजे के हमेशा के लिए खुलने की कल्पना करती। और मैं इस शांत विश्वास से चिपकी रहती कि जल्द ही, बहुत जल्द, यह सब मेरे पीछे छूट जाएगा।
लेकिन जेल तो जेल ही थी। वही दिनचर्या। वही तनाव।
एक रात, इमारत में एक अफवाह आग की तरह फैल गई। कैंटीन के गार्डों में से एक — एक नेक और आमतौर पर शांत स्वभाव का व्यक्ति—अपना आपा खो बैठा था। उसने

कथित तौर पर अपने ही लेफ्टिनेंट को घूंसा मार दिया था। आधिकारिक कारण? छुट्टी न मिलना। किसी को भी सटीक जानकारी नहीं थी, लेकिन खबर पक्की थी: उसे तुरंत निलंबित कर दिया गया था और चुपचाप बाहर निकाल दिया गया था।
उस दिन दरवाजे बंद रहे। कोई काम नहीं। बाहर घूमने का समय नहीं। पूरी तरह लॉकडाउन। और विडंबना यह थी कि पूरा परिसर हंसी से गूंज रहा था। "रुको... क्या गार्ड ने अपने बॉस को घूंसा मारा था?" "मजाक कर रहे हो क्या? हम लॉकडाउन में हैं और ये लोग दफ्तरों में हाथापाई कर रहे हैं?" "इस रफ्तार से तो ये लोग सेल नंबर 34 में सोएंगे!"
आमतौर पर गंभीर रहने वाला मार्को भी मुस्कुरा उठा। "देखा? यहाँ भी, जीवन आपको आश्चर्यचकित कर देता है।"
लेकिन हर बात मजाक नहीं थी।
एक और दिन, यार्ड टाइम के दौरान, तीसरी मंजिल के दो लड़कों के बीच झगड़ा हो गया - कैंटीन के बकाया को लेकर विवाद था। एक जोरदार घूंसा पड़ा, सिर दीवार से टकराया, खून बहने लगा। गार्ड तुरंत बीच में कूद पड़े। जब माहौल शांत हुआ, तो एक नौजवान हमारे पास आया—नया आया हुआ, साफ़ तौर पर घबराया हुआ। “आप लोग… थाईलैंड से लौटे हैं ना?” “हाँ, हम ही हैं।” “सुना है, आपको इस जगह का तरीका पता है। मुझे बस कुछ सलाह चाहिए… पहली बार यहाँ आया हूँ। मैं खो गया हूँ।” मार्को ने उसके कंधे पर हाथ रखा। “शांत रहना। साफ-सुथरा रहना। सम्मान से पेश आना। नौकरी ढूंढ लेना। और जिनसे बात करते हो, उनके बारे में बहुत सावधान रहना।” “धन्यवाद…” और वह शांत होकर चला गया।
यह लगभग हर सुबह की तरह ही एक आम सुबह थी। हम कैंटीन में ठेले पर सामान लाद रहे थे कि तभी यह खबर फिर से फैल गई: "दो कमांडिंग ऑफिसर्स के बीच एक घटना हुई है।"
पहले तो हमें लगा कि कैदियों और गार्डों के बीच मामूली झड़प है—ऐसा तनावग्रस्त वार्डों में अक्सर होता रहता है। लेकिन नहीं। इस बार तो गार्डों के बीच ही झड़प हुई थी। कैंटीन के नियमित अधिकारियों में से एक— वही आदमी जिसे हम जानते थे, शांत स्वभाव का, थोड़ा रूखा लेकिन हमेशा निष्पक्ष—ने अपने लेफ्टिनेंट को घूंसा मार दिया। सीधे चेहरे पर। क्यों? स्पष्ट नहीं। अफवाहें उड़ने लगीं। जाहिर तौर पर, वह हफ्तों से छुट्टी मांग रहा था, आखिरी मिनट में उसकी छुट्टी नामंजूर कर दी गई... और वह आपा खो बैठा। झट से। एक जोरदार घूंसा।

इसका असर तुरंत देखने को मिला: आपातकालीन लॉकडाउन। सभी कैदियों को उनकी कोठरियों में वापस भेज दिया गया। काम रद्द कर दिया गया। मुलाकातें रोक दी गईं। पूरा विंग ठप्प हो गया। हम पूरा दिन फंसे रहे, चिढ़ते रहे, लेकिन खूब हँसते रहे। “क्या आप इस बकवास पर विश्वास कर सकते हैं? हम भी इससे बेहतर व्यवहार करते हैं!” “लेफ्टिनेंट का चेहरा देखा? उस चोट के साथ गश्त लगाने में उसे बहुत मुश्किल होगी!”
पूरे दो सप्ताह तक, जेल में हर तरफ यही कहानी गूंजती रही। हम मज़ाक करते, उस दृश्य को दोहराते, कैंटीन में नाटक बनाते। यह बेतुका था। अवास्तविक। किसी उलझे हुए सिटकॉम की तरह—ऐसी जगह पर जो पहले से ही विकृत थी।
और फिर हमने उस गार्ड को कभी नहीं देखा। क्या उसे नौकरी से निकाल दिया गया? उसका तबादला हो गया? या उसने खुद को जेल में बंद कर लिया? कौन जाने। वह हमेशा हमारे साथ सम्मान से पेश आता था। लेकिन यहाँ तो शांत से शांत व्यक्ति भी भड़क उठता है।
कुछ दिनों बाद, आखिरकार मुझे वो खबर मिली जिसका मैं बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था, मानो ऊपर से कोई इशारा मिला हो: मेरी पेशी की तारीख तय हो गई थी। 2 दिसंबर। 2 दिसंबर को, मैं पैरोल बोर्ड के जज के सामने पेश होऊंगा। यह कहना भी अवास्तविक सा लग रहा था। महीनों की चुप्पी, इंतज़ार और कानूनी अनिश्चितता के बाद—आखिरकार मैं बोलने जा रहा था। समझाने जा रहा था। अपना बचाव करने जा रहा था।
थाईलैंड में, उन्हें इस बात की परवाह ही नहीं थी कि हम क्या कहना चाहते हैं। शब्द बेकार थे। बल्कि खतरनाक भी। यहाँ, वे मेरी आवाज़, मेरी कहानी, मेरा सच जानना चाहते थे। मेरे वकील ने मुझे पूरी जानकारी दी: “आप ही जज से सीधे बात करेंगी। ईमानदार रहें। स्पष्ट रहें। अभिनय करने की कोशिश न करें। बस आप जैसी हैं वैसी ही रहें।” उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि मैं एक साफ, इस्त्री की हुई कमीज़ भेजूँ। “संस्था का सम्मान करने का मतलब है अपनी छवि का भी सम्मान करना।”
और मैं? शांत क्षणों के बीच, मुझे कुछ अजीब सी हलचल महसूस हुई—तीव्र, बेचैन करने वाली।
क्योंकि अंदर ही अंदर मैं ठीक नहीं थी। कई हफ्तों से मैं थकी हुई महसूस कर रही थी। मेरी ऊर्जा तेजी से खत्म हो रही थी। फिर एक सुबह, मेरी माँ ने मुझे बिठाया और मुझे सच बताया।

मेरे छोटे भाई जीन-पियरे का निधन हो गया था। जनवरी 2016 में। बीमारी से जंग हारकर वह इस दुनिया से चला गया था। मुझे किसी ने नहीं बताया था। न थाईलैंड में, न ही मेरे वापस आने पर। शायद मुझे बचाने के लिए, ताकि मैं पूरी तरह से टूट न जाऊं। लेकिन अब, सच्चाई मेरे सामने थी—कठोर और क्रूर। मेरा छोटा भाई... चला गया था।
मुझे ऐसा आघात लगा जैसे सीने पर हथौड़ा पड़ा हो। मैं रोई नहीं। मैं बस चुपचाप बैठी रही। और मैंने सोचा, उन्होंने अपना जीवन इसलिए दिया ताकि मैं जीवित रह सकूँ। यह बात समझ से परे थी—लेकिन इसी तरह मैंने उन्हें अपने करीब रखा।
सारे वीडियो। यादें। हंसी—ये सब थाई पुलिस ने जब्त कर लिया था। सब कुछ। सौभाग्य से, मार्को मेरे साथ खड़ा रहा। एक सच्चे भाई की तरह। और जूलिया भी, इतनी दूरी के बावजूद, अभी भी मेरे साथ है। उन्होंने मुझे सहारा दिया। लेकिन मैं इनमें से कुछ भी अदालत में नहीं लाना चाहता था। कोई सहानुभूति नहीं, कोई दुखभरी कहानी नहीं। मैं चाहता था कि न्यायाधीश एक ऐसे व्यक्ति को देखें जो अपने पैरों पर खड़ा हो—न कि घुटनों के बल बैठकर भीख मांगता हो।
मैंने कीमत चुका दी थी। और मैं आगे बढ़ने के लिए तैयार था।
मेरी केस वर्कर, एमिली ने मेरे अनुरोध का समर्थन किया था। उनकी रिपोर्ट स्पष्ट थी: लचीलापन, परिपक्वता, अच्छा व्यवहार, सकारात्मक मानसिकता। एक ठोस मामला। एक वास्तविक मौका।
मैंने मार्को को सुझाव दिया कि वह मेरे वकील से संपर्क करे—अपने वकील को छोड़ दे, जिसने उससे लगभग संपर्क तोड़ दिया था। खर्च के कारण वह हिचकिचाया। लेकिन मन ही मन वह जानता था। “वह अपना काम बखूबी करती है, तुम्हारी वकील। वह बहुत तेज है।” “अपने पिताजी से कहो कि उसे फोन करें। वह तुम्हारा ख्याल रखेगी।” उसने सिर हिलाया।
और फिर वह दिन आ गया।
मुझे और चार अन्य कैदियों को एक छोटी सी कोठरी में अपनी बारी का इंतजार करने के लिए बुलाया गया, मानो दो दुनियाओं के बीच एक एयरलॉक हो। वे लोग आराम से थे—पसीने से भीगी हुई पैंट और सिकुड़ी हुई टी-शर्ट पहने हुए।
उनमें से कुछ नियमित कैदी थे। “पांचवीं बार कोशिश कर रहा हूँ। मुझे सब पता

है।” “बस जज से कह दो कि तुम्हें भगवान मिल गए हैं और तुम एक बेकरी खोलना चाहते हो। हर बार काम करता है।”
मैंने उन पर एक नज़र डाली, थोड़ा असहज महसूस करते हुए। मैंने एक साफ सफेद कमीज के बटन लगा रखे थे। कॉलर दबा हुआ था। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। और फिर मैंने अपना नाम सुना।
मैंने कदम रखा।
कमरा सादा था, लेकिन माहौल डरावना था। जज एक विशाल लकड़ी की मेज के पीछे ऊँची जगह पर बैठी थीं। उनके बगल में एक युवती बैठी थी—शायद प्रशिक्षु। एक क्लर्क उनसे थोड़ा पीछे बैठा था। मैं छोटी मेज पर बैठ गया, मेरा वकील पहले से ही मेरे बगल में बैठा था।
लगभग पचास वर्ष की न्यायाधीश, शांत और संयमित, ने मेरी आँखों में सीधे देखते हुए कहा, “शुभ प्रभात महोदय। मैं एक प्रशिक्षु न्यायाधीश हूँ जो सुनवाई का अवलोकन कर रही हूँ। कृपया अपना परिचय दें और मुझे बताएँ कि आप पैरोल का अनुरोध क्यों कर रहे हैं।”
मैं दंग रह गया। वे मुझे बोलने का मौका दे रहे थे। मुझे—आरोपी को। मुझे— एक पूर्व विदेशी कैदी को, जिस पर एक दूर देश में बिना बचाव के मुकदमा चलाया जा रहा था।
मैंनें एक गहरी साँस ली।
मैंने अपनी कमीज़ पर नज़र डाली। फिर ऊपर देखा। और मैंने बोलना शुरू किया। मैं धीरे से खड़ी हुई, एक गहरी साँस ली, दिल ज़ोर से धड़क रहा था। मुझे पता था कि यह एक निर्णायक क्षण है। मैं यहाँ दिखावा करने या भीख मांगने नहीं आई थी। मैं यहाँ वास्तविक होने आई थी। संपूर्ण। ईमानदार।
“माननीय न्यायाधीश महोदय…” मैंने स्थिर, लगभग शांत स्वर में कहना शुरू किया। “मैंने एक गलती की। एक मूर्खतापूर्ण गलती। एक ऐसी गलती जिसे मैं उस समय समझ नहीं पाया था—एक ऐसी गलती जिसका एहसास मुझे बहुत देर बाद हुआ।” मैंने कुछ भी छिपाया नहीं। मैंने उसे थाईलैंड में हुई गिरफ्तारी के बारे में बताया। सदमा। अपमान। उन शुरुआती दिनों की क्रूरता। चीखें। अफरा-तफरी। भीड़भाड़ वाली कोठरी की दम घोंटने वाली गर्मी। मैंने डर, चुप्पी, खाली निगाहों के बारे में बताया। हमारे टखनों में जंजीरें। फर्श पर फेंका गया खाना। गरिमा का पूर्ण अभाव।

“माननीय न्यायाधीश, मैंने नरक भोगा है। और मैं यह बात आपको कुछ महसूस कराने के लिए नहीं कह रहा हूँ। मैं यह इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि इसने मुझे आज आपके सामने खड़ा इंसान बनाया है।”
मैंने उसे फ्रांसीसी होने के असाधारण विशेषाधिकार के बारे में बताया। इसका असल मतलब क्या है—दूतावास का अटूट समर्थन मिलना, नियमित मुलाकातें होना, अपनी बात सुनाना, मदद मिलना… और अधिकारों का होना। मैंने दूतावास को दिल से धन्यवाद दिया—उनकी खामोश मदद के लिए, मेरे मामले में डटे रहने के लिए, और कभी हार न मानने के लिए। उन्हीं की बदौलत मैं उस दिन वहाँ खड़ी थी, आत्मविश्वास से भरी, एक सम्मानजनक जीवन को फिर से पाने के लिए तैयार। “अब मुझे उन चीजों का महत्व समझ में आ गया है जिन्हें मैं हमेशा हल्के में लेता था: एक छत, एक नाम, एक देश। अब मैं जानता हूँ कि मानवता को खोने और फिर से पाने का क्या अर्थ होता है। और आज, मैं बस यही चाहता हूँ... जीना। अपने प्रियजनों के साथ रहना। काम करना। योगदान देना। एक ऐसा इंसान बनना जिस पर मुझे गर्व हो।”
मैंने अंत में बस इतना कहा: “मैं फ्रांस का आभारी हूं। मैं न्याय व्यवस्था का आभारी हूं जिसने मुझे जीवित और स्वस्थ वापस लौटाया। मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं मांग रहा हूं, बस मुझे आगे बढ़ने का मौका दिया जाए।”
न्यायाधीश जरा भी विचलित नहीं हुईं। उन्होंने नोट्स लिए। कमरे में सन्नाटा छाया हुआ था—पर शत्रुतापूर्ण नहीं।
फिर मेरे वकील ने हस्तक्षेप किया। शांत, पेशेवर और सटीक। “मेरे मुवक्किल को रेस्तरां उद्योग में नौकरी का पक्का प्रस्ताव मिला है। वह गंभीर और समर्पित हैं—उन्होंने इस क्षेत्र में पहले ही अपनी काबिलियत साबित कर दी है। उनका कार्य अनुभव शानदार है: पंद्रह वर्षों से अधिक का निरंतर रोजगार। कोई गिरफ्तारी नहीं। कोई आपराधिक रिकॉर्ड नहीं। उन्हें परिवार का पूरा समर्थन प्राप्त है और उनके पास रहने के लिए स्थिर आवास है। उनकी माँ भी उनके साथ हैं और उनका घर में स्वागत करने के लिए तैयार हैं।”
उन्होंने मेरी वापसी के बाद से मेरे बेदाग रिकॉर्ड, जेल कार्य कार्यक्रम के प्रति मेरे समर्पण, पुनर्एकीकरण गतिविधियों में मेरी भागीदारी और मेरे सम्मानजनक रवैये के बारे में बात की। उन्होंने कहा, "हाँ, उन्होंने गलती की थी। लेकिन उन्होंने इसकी कीमत चुका दी है - फ्रांसीसी कानून के अनुसार जितनी कीमत चुकानी चाहिए थी, उससे कहीं अधिक।"

जज ने सिर हिलाया, हमें धन्यवाद दिया और कहा कि वह जल्द ही अपना फैसला सुनाएंगी। मुझे जाने की इजाजत मिल गई।
अदालत से निकलते समय मुझे चक्कर आने लगा था। मैं रोई तो नहीं थी, लेकिन मेरे पैर लड़खड़ा रहे थे। सब कुछ हल्का लग रहा था—लेकिन साथ ही नाजुक भी। जैसे हवा ही बदल गई हो। गलियारे में मेरे वकील ने मुझे देखकर हल्की मुस्कान दी।
“तुम बिल्कुल सही थे। ईमानदार। गरिमापूर्ण। मैं जज से इस बारे में लगातार बात करता रहूंगा। अभी के लिए, अपनी कोठरी में वापस जाओ। जैसे ही हमें कोई खबर मिलेगी, हम तुमसे संपर्क करेंगे।”
मैंने उन्हें दिल से धन्यवाद दिया। फिर चुपचाप एक गार्ड के पीछे-पीछे गलियारे से नीचे चला गया।
कोठरी में वापस आकर, सब शांत था। मार्को पालथी मारकर चारपाई पर बैठा साफ कपड़े तह कर रहा था। मेरे अंदर आते ही वह उठ बैठा। "तो?" मैंने राहत और अनिश्चितता के बीच एक लंबी आह भरी। "हो गया। मुझे जो कहना था कह दिया। अब... हमें इंतजार करना होगा।"
उसने सिर हिलाया, मुझे एक सिगरेट दी, और हम टूटी हुई खिड़की के पास बैठ गए, आसमान के बदलते रंगों को देखते हुए।
मुझे अजीब सा एहसास हुआ। बोलने से मन को शांति मिली। इंतज़ार से बेचैनी भी हुई। उम्मीद भी जगी—लेकिन सावधानी से। पहली बार मुझे ऐसा लगा कि मैं सचमुच किसी ऐसे व्यक्ति के सामने मौजूद हूँ जिसके हाथ में सारी चाबियाँ हैं। और कंक्रीट और स्टील के उस छोटे से चौकोर ढांचे में, आंगन से गूंजती दबी हुई हंसी के बीच, मुझे बस—जीवित होने का एहसास हुआ।
दिसंबर की ठंडी और शुष्क हवा में जीवन फिर से अपनी लय में लौट आया। सुबह जल्दी उठना, ठेला चलाना, दोस्तों के साथ हंसी-मजाक करना। कामेल ने आखिरकार डिलीवरी का काम छोड़ दिया—वह डगमगाते पहियों पर डिब्बाबंद खाने के क्रेट धकेलते-धकेलते थक गया था। उसने रसोई का काम करने के लिए साइन अप कर लिया। अब वह अपने मोहल्ले के लिए खाना तैयार कर रहा था, कमर पर सफेद एप्रन बांधे, उस शांत चेहरे के साथ जैसे उसने अपनी राह पा ली हो। हम उससे मिलने रुक जाते — जब भी मौका मिलता, वह हमें एक-दो अतिरिक्त ट्रे चुपके से दे देता, हमेशा शरारती अंदाज में आँख मारते हुए।

मेरी माँ हर हफ्ते समय पर, बिलकुल घड़ी की तरह, साफ कपड़ों से भरा थैला लेकर आती रहती थी। जूलिया जब भी समय मिलता, आती थी। दृढ़ निश्चयी, हमेशा चमकती हुई। हमारी योजनाएँ आकार ले रही थीं: एक अपार्टमेंट, एक नौकरी, एक नई शुरुआत। मुझे पता था कि कुछ भी आसान नहीं होगा—लेकिन किसी वास्तविक चीज़ के बारे में सपने देखना अच्छा लगता था।
एक सुबह, दोस्तों के साथ कॉफ़ी पीते हुए मुझे पता चला कि मेरे बचपन के एक दोस्त की दूसरी बेटी हुई है। मैं तो उसकी पहली बेटी से कभी मिला भी नहीं था। बाहर समय तेज़ी से बीत रहा था। और मैं—मैं अभी भी यहीं फंसा हुआ था, इस कंक्रीट के घेरे में जम गया था।
जज के जवाब का इंतज़ार मुझे थका रहा था। कई हफ़्ते बीत चुके थे। मैं क्रिसमस पर अपने परिवार के साथ रहने के लिए फिर से अस्थायी छुट्टी के लिए आवेदन करने के बारे में सोच रहा था। ठंड ज़ोरों पर थी—सूखी और चुभने वाली — लेकिन कोठरियाँ काफ़ी गर्म थीं। हम किसी तरह गुज़ारा कर रहे थे। थाईलैंड से स्थानांतरित हुए कुछ लोगों के साथ मेरा लगातार पत्रों का आदान-प्रदान होता रहा। हम सभी पैरोल के लिए आवेदन करने की प्रक्रिया से गुजर रहे थे। हम एक-दूसरे से सुझाव, किस्से और यादें साझा करते थे। यह बचे हुए लोगों का एक छोटा सा नेटवर्क बन गया था, जो अपने-अपने अनुभवों से हमेशा के लिए जुड़े हुए थे।
और फिर, एक आम सी सुबह, किस्मत ने दस्तक दी।
मैं बाकी लोगों के साथ कैंटीन के गोदाम में था और ठेलों में सामान भर रहा था। मैं एक गार्ड से बातें कर रहा था, जिससे मेरी अच्छी दोस्ती हो गई थी। कॉफी पीते हुए मैंने उसे अपनी सुनने की क्षमता के बारे में बताया। उसने भौंहें चढ़ा लीं।
“यहीं रुकिए। मुझे कुछ जाँचने दीजिए।”
वह अपने कंप्यूटर के पास गई और कीबोर्ड पर टाइप करने लगी। कमरे में एक अजीब सी खामोशी छा गई।
"यहाँ आओ।"
मैं आगे बढ़ा। स्क्रीन पर मेरी कैदी प्रोफ़ाइल खुल गई। और वहाँ, सबसे नीचे लिखा था: "रिहाई की तारीख: 20 दिसंबर।"
मैं स्तब्ध रह गया। मेरा गला सूख गया। उसने नम आँखों से मुस्कुराते हुए मेरी ओर देखा।

बस हो गया, यार। यह सिस्टम में दर्ज हो गया है। यह आधिकारिक है।
मुझे लगता है कि मैंने घबराहट भरी हंसी और आंसू रोकने की कोशिश में लड़खड़ाते हुए धन्यवाद कहा। उसने एक और गार्ड को बुलाया। वे दोनों मेरे लिए सचमुच खुश थे।
“हम तुम्हें बहुत याद करेंगे, लियो। तुम हमारे आधिकारिक कॉमेडियन थे,” उसने मेरी पीठ थपथपाते हुए कहा।
जब मैंने मार्को को यह खबर बताई - वह दही से भरी एक ठेलागाड़ी को धकेल रहा था - उसने सब कुछ छोड़ दिया और मुझे गले लगा लिया।
“तुमने कर दिखाया, भाई। तुमने अंत तक डटे रहे।”
मैंने उनसे वादा किया कि मैं उनका केस लड़ती रहूंगी, और अपने वकील के संपर्क में रहूंगी। उन्होंने पहले ही उनका केस ले लिया था। दस दिन बाद उनकी छुट्टी तय थी। अब उन्हें इस पर भरोसा हो गया था। आखिरकार।
मैं फोन बूथ तक गई। मेरी माँ को पहले से ही पता था। जूलिया को भी। मेरी केस वर्कर ने उन्हें एक दिन पहले ही फोन करके बता दिया था। वे बस यही चाहती थीं कि मैं खुद उन्हें बताऊँ।
“तुम क्रिसमस पर हमारे साथ रहोगे, लियो। क्या तुम विश्वास कर सकते हो? तुम हमारे साथ मेज पर बैठोगे,” मेरी माँ ने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा।
20 दिसंबर मेरी उम्मीद से कहीं जल्दी आ गया। मैंने अपना सामान मार्को के पास छोड़ दिया। हम काफी देर तक गले मिले। एक ऐसा शांत आलिंगन जिसमें बिना एक भी शब्द कहे सब कुछ कह दिया गया।
“हमने कर दिखाया, भाई। पटाया से यहाँ तक। हमने कर दिखाया।”
“हमने कर दिखाया, मार्को। और हम फिर मिलेंगे, कहीं बाहर। मैं वादा करता हूँ।”
और मैं बाहर निकल गया। गहरी साँस ली। मानो मेरे फेफड़े ताजी हवा का एहसास दोबारा सीख रहे हों। विशाल कारागार के दरवाजे मेरे सामने खुल गए। आखिरी बार।
बाहर निकलते समय, मेरी मुलाकात फ्लेरी मेक्स मूवीज़ कार्यक्रम के सांस्कृतिक समन्वयकों से हुई। हमने एक-दूसरे का अभिवादन किया।
मैंने उनसे कहा, "हर चीज़ के लिए धन्यवाद। इस सब के बीच मानवता के उन छोटे- छोटे अंशों के लिए धन्यवाद।"

मेरी माँ और जूलिया बाहें फैलाए, आँखों में चमक लिए मेरा इंतज़ार कर रही थीं। हमने गले लगाया। ज़ोर से। सच्चा। मैं लगभग भूल ही गई थी कि सच्चे प्यार का एहसास कैसा होता है। हम एक-दूसरे का हाथ थामे, बिना कुछ बोले, कार की तरफ़ चल पड़े। बस जमी हुई बजरी पर हमारे कदमों की चरमराहट सुनाई दे रही थी।
और बाकी?
बाकी सब वर्तमान से संबंधित है।
और जीवन से।
जीवन अमर रहे।
सलाखों के पीछे – एक फोटोग्राफिक गवाही

क्लॉन्ग प्रेम स्थित बिल्डिंग 1 की फैक्ट्री टीम। एक घनिष्ठ समूह, मजबूत संबंधों से बंधा हुआ। कुछ लेडीबॉय भी इस दल का हिस्सा थे—पूरी तरह से एकीकृत और सम्मानित।

पटाया या चोनबुरी की एक कोठरी के अंदर का दृश्य - बिल्कुल वैसी ही कोठरी जैसी मैंने पटाया के तथाकथित वीआईपी विंग में देखी थी। बिल्कुल पीछे शौचालय - पूरी तरह खुला हुआ, बिना किसी विभाजन के, बिल्कुल भी गोपनीयता नहीं।

अदालत में मेरी पहली पेशी के दौरान, मैं जंजीरों में जकड़ा हुआ, सिर मुंडा हुआ, पसीने से तरबतर, कैदी की वर्दी पहने खड़ा था। उस हालत में दया की भीख मांगना या यह समझाना लगभग नामुमकिन था कि उस संख्या के पीछे एक इंसान है - एक ऐसा व्यक्ति जिसकी अपनी जिंदगी है, अपनी कहानी है, न कि सिर्फ सूची में दर्ज एक और कैदी।

क्लॉन्ग प्रेम के फ्रांसीसी दल के सदस्य। हमारे साथ हमारे ईरानी मित्र रेज़ा और नाइजीरियाई टैसी भी थे - दोनों ही इस यात्रा का हिस्सा थे। कठिनाइयों में बनी इस अनूठी भाईचारे की बदौलत ही हम दिन-प्रतिदिन डटे रहने में कामयाब रहे।

[illegible]

nutella
nutella
nutella
NESCAFE
Casino
Palmiers
Casino
Palmiers
Casino
COUSCOUS
Casino
COUSCOUS
Casino
NESCAFE
GOLD
NESCAFE

[illegible]

टन और बैंग, जो बिल्डिंग 4 के दो सम्मानित मुक्केबाज और रक्षक थे।
वे निस्संदेह मित्रवत थे, लेकिन हमें प्रशिक्षण देने और अपने समूह का हिस्सा बनने देने के बदले में हमेशा किसी न किसी रूप में कुछ न कुछ पाने की उम्मीद रखते थे - चाहे वह भोजन हो या सिगरेट।

मुलाकात कक्ष में, मैं चुपके से जूलिया को कागज का एक छोटा सा टुकड़ा दिखाता था ताकि वह वकीलों के फोन नंबर लिख सके और जितनी जल्दी हो सके उनसे संपर्क कर सके।
दुर्भाग्य से, इन प्रयासों का कोई नतीजा नहीं निकला — न कोई जवाब मिला, न कोई आगे की कार्रवाई हुई। बस और भी निराशाजनक परिणाम।

अपने नियमित दौरे के अनुरूप, पादरी एक बार फिर हमारे लिए शांति और आशा का संदेश लेकर आए।

"टू बी नंबर वन" समूह के सभी गायक और नर्तक एक यादगार प्रदर्शन के लिए बैंकॉक में एकत्रित हुए।

पटाया जेल के अंदर आयोजित पहले टूर्नामेंट में हमारी फुटबॉल टीम।
जर्सी का पूरा खर्च एंटोनियो ने उठाया था, जो हमें थोड़ी सी सामान्य जिंदगी का एहसास दिलाना चाहता था।

जब भी हमें अदालत ले जाया जाता, हम एक छोटी सी तरकीब अपनाते थे: जंजीरों के चारों ओर एक धागा बांध देते थे ताकि वे थोड़ी ऊपर उठी रहें। इससे हमें चलते समय झुकना नहीं पड़ता था, जंजीरें जमीन पर नहीं घिसटती थीं और हर कदम पर चोट लगने से बचाव होता था।

मार्को और मैं, निड के बगल में खड़े हैं—जो पटाया रिमांड जेल में हमारे पहले "परिवार" के मुखिया थे।

उपसंहार
आपने अभी जो कुछ भी पढ़ा है, वह सब सच है। कुछ विवरण छोड़ दिए गए हैं, सरल कर दिए गए हैं या भुला दिए गए हैं—उन्हें छिपाने के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि सब कुछ बताना बहुत लंबा, बोझिल और कभी-कभी अनावश्यक रूप से कष्टदायक होता। मैंने कुछ नाम, तिथियां और स्थान बदल दिए हैं। सम्मान के कारण। दूसरों के लिए। और अपने लिए भी। यह पुस्तक हिसाब बराबर करने या क्षमा मांगने के बारे में नहीं है। यह एक गवाही है। जीवन का एक अंश है। एक ऐसे व्यक्ति की पुकार है जो मौत के मुंह से वापस आया है।
कई साल बीत गए। मैं अब भी इसके बारे में सोचती हूँ। लहरों की तरह। पल भर में। एक प्रेत पीड़ा की तरह। बस एक गंध, एक लंबा विराम, ताले में चाबी की आवाज़—और सब कुछ वापस आ जाता है। मैं उन लोगों से संपर्क में नहीं रहती जिनके साथ मैंने समय बिताया। जीवन ऐसा ही चलता है। आप हमेशा जुड़े रहने का वादा करते हैं... और फिर समय अपना काम करता है। यह नरम कर देता है। यह मिटा देता है। यह आपको अलग कर देता है। मार्को और मैं अब भी कभी-कभी बात करते हैं। जितनी बार मैं चाहती हूँ उतनी बार नहीं, लेकिन इतना ज़रूर कि हम एक-दूसरे को भूले नहीं हैं। अब हम एक ही शहर में नहीं रहते। हमारी जिंदगियां अलग-अलग रास्तों पर चली गईं। लेकिन हमारा एक हिस्सा वहीं रह गया। और हमेशा रहेगा।
मुझे गहराई से पता है कि हममें से कोई भी कभी पूरी तरह से भूल नहीं पाता। कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं जिन्हें आप तोड़ नहीं सकते। कुछ घाव ऐसे होते हैं जिन्हें आप देख नहीं सकते—लेकिन फिर भी दर्द देते हैं। कभी-कभी मैं खुद को ट्रैफिक में शिकायत करते हुए, बेवजह परेशान होते हुए पाता हूँ… और फिर मुझे याद आ जाता है। मुझे कैद, पटाया की चिपचिपी गर्मी, अंतहीन रातें, खाली निगाहें, इंतजार की खामोशी याद आती है। और मैं सांस लेता हूँ। मैं शुक्रगुजार होता हूँ। मैं खुद को याद दिलाता हूँ कि इंसान कितने अविश्वसनीय रूप से मजबूत होते हैं। कभी-कभी भूलने की ताकत। लेकिन ज्यादातर, आगे बढ़ते रहने की ताकत।
आज मैं गर्व से खड़ा हूँ। संपूर्ण। मैं अनेकों में से एक हूँ। एक सुखी पिता। जूलिया आज भी मेरे साथ है—पहले से कहीं अधिक मजबूत। हम काम करते हैं। हम जीते हैं। हम सुबह जल्दी उठते हैं, हँसते हैं, बहस करते हैं, प्यार करते हैं। और हर एक दिन एक शांत उपहार है। मुझे पता है मैं कहाँ से आया

[illegible]
[illegible]
[illegible]